॥ ठाणं सूत्र ॥

[एगट्ठाणं.]

श्री सुधर्मा स्वामी जंबूनामा शिष्य प्रते
ई छे—

अर्थ-सु० सांभळ्युं मे० मे आ० हे आयुष्मन
तां आउपावंत शिष्य ते० ते श्री महावीर
० ज्ञानवंते ए० एम अ० कह्युं वार परिखदा
गल

सुयं मे आउसं तेणं भगवया. एवं क्खायं ॥

भावार्थ-सुधर्मास्वामि पोताना जंबू ना-
ना शिष्यने कहेता हवा के हे चीरंजीवी
बू ? श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवे ठाणां-
शास्त्रनो अर्थ आ प्रमाणे कहेल छे
हुं तुज प्रत्ये कहुंछुं ते तुं सांभळ ? (इहां
रंजीवी शब्द कहेल छे ते जीवतव्य ना-
दीक १० प्रकारे होय छे ते कहे छे.

१ नाम जीवतव्य, २ स्थापना जीवत-
य, ३ सचेतनादीक द्रव्य जीवतव्यना हेतु-
णाथी द्रव्य जीवतव्य, ४ नारकीयादीनुं
शेष विना आयु ते द्रव्य मात्र सामान्य
ीवतव्य, ५ नारकीयादीक भव ते विशेष
हित जीवतव्य ते भवजीवतव्य, ६ पूर्वभ-
नुं तुल्य जातिपणे जीवीत ते तद्भव जीव-
व्य, ७ चक्रवर्त्यादीकनुं भोग जीवतव्य, ८
ाधुनुं संयम जीवतव्य, ९ यशजीवतव्य,
१० किर्ति जीवतव्य, ए दश प्रकारनुं जीव-
व्य कहेल छे, ते मांही इहां सुधर्मास्वामीए
जंबूस्वामिनुं यश १ किर्ति २ संयम ३ ए त्रण
प्रकारनुं जीवतव्य भलुं ने घणुं होवाथी हे
आयुष्मन् शिष्य ? एम गुरुए शिष्यने आमंत्रण
वचन कहेल छे, त्यां महावीरदेवनुं पुर्वोक्त
जीवतव्य इच्छेल छे.)

अर्थ-ए० एक आ० आत्मा समुचय थकी

१. एगे आया ॥ १ ॥

भावार्थ-चैतन्यलक्षण रुप तथा ज्ञानद-
र्शन चारित्ररुप आत्मा एकज छे.

अर्थ-ए० एक दं० दंड

एगे दण्डे ॥ २ ॥

भावार्थ-दुष्ट मन वचन कायाये करी
जीव दंडाय ते रुप दंड एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० किया

एगा किरिया ॥ ३ ॥

भावार्थ-मन वचन कायाथी पाप लाग-
वा रुप क्रिया एकज छे.

अर्थ-ए० एक लो० एक चौद राजलोक

एगे लोए ॥ ४ ॥

भावार्थ-छ द्रव्यनुं स्थानक चौद राज
रुप लोक एकज छे.

अर्थ-ए० एक अ० अनंतो अलोक

एगे अलोए ॥ ५ ॥

भावार्थ-जेहमां अनंतो आकाश छे एह-
वो अलोक एकज छे.

अर्थ-ए० एक ध० धर्मास्तिकाय

एगे धम्मे ॥ ६ ॥

भावार्थ–दरेक जीवाजीवने चलण सहायरुप धर्मास्तीकाय एकज छे.

अर्थ–ए० एक अ० अधर्मास्तिकाय

एगे अधम्मे॥ ७ ॥

भावार्थ–सर्व जीवाजीवने स्थीर सहायरुप अधर्मास्तीकाय एकज छे.

अर्थ–ए० एक बं० बंध

एगे बन्धे ॥ ८ ॥

भावार्थ-कषायादीक प्रकृतियोथी कर्म बंधावा रुप बंध एकज छे.

अर्थ–ए० एक मो० मोक्ष

एगे मोक्खे ॥ ९ ॥

भावार्थ–सर्व कर्म क्षय रुप मोक्ष एकजछे.

अर्थ–ए० एक पु० पुन्य

एगे पुण्णे ॥ १० ॥

भावार्थ–बेंतालीस प्रकारे शुभ कर्म प्रकृति भोगववारुप पुन्य एकज छे.

अर्थ–ए० एक पा० पाप

एगे पावे ॥ ११ ॥

भावार्थ–ब्याशी प्रकारे अशुभ कर्म प्रकृति भोगववारुप पाप एकज छे.

अर्थ–ए० एक आ० कर्म आवे ते आश्रव

एगे आसवे ॥ १२ ॥

भावार्थ–बेंतालीस प्रकारे अशुभ कर्म आववारुप आश्रव एकज छे.

अर्थ–ए० एक सं० कर्म आवतां रोके ते संवर

एगे संवरे ॥ १३ ॥

भावार्थ–अशुभ कर्म आवतां रोकवारुप सत्तावन प्रकारे संवर एकज छे.

अर्थ–ए० एक वे० कर्मनुं भोगववुं ते वेदना

एगा वेयणा ॥ १४ ॥

भावार्थ–जीवने आठ कर्म भोगववारुप वेदना एकज छे.

अर्थ–ए० एक नि० कर्म टालवारुप निर्जरा

एगा निज्जरा ॥ १५ ॥

भावार्थ–बार प्रकारनी तपश्चर्यावडे आत्माना प्रदेशथी थोडां थोडां कर्मक्षय थवारुप निर्जरा एकज छे.

अर्थ–ए० एक जी० जीव पा० प्रगट बादर स० शरीरे प्रत्येके जुजूए शरीरे जीव

एगे जीवे पाडिकएणंसरीरएणं ॥

भावार्थ–प्रत्येक (जुदां जुदां) शरीरनो धरनार प्राणधारी जीव एकज छे (अहिआं प्रत्येक शरीर कहेवानुं कारण एटलुंज के साधारण शरीरी जीव तमाम कर्मक्षय करी शकता नथी ने प्रत्येक शरीर जीव सर्व कर्मक्षय करी शके छे तेथी प्रत्येक शरीरी जीव कहेल छे.)

अर्थ–ए० एक जी० जीवने अ० बाहिरला पुद्‌गल अणलाधे वि० विकुर्व्वणा पुद्गल

एगा जीवाणं अपरियाइत्ता विउव्वणा ॥ १ ॥

भावार्थ–देवता बाहीरनां पुद्गल ग्रह्या विना भवधारणी शरीर बांधे ते प्रत्येके एकज बंधाय पण घणां बंधाय नहीं, ते आश्री जीवने एकज विकुर्वणा छे.

अर्थ–ए० एक म० मन जाणीए जेणेंत

एगे मणे ॥ २ ॥

भावार्थ–संज्ञी पंचेंद्री जीवना व्यापाररुप मन एकज छे.

अर्थ–ए० एक व० वचन समुचय थकी

एगा वई ॥ ३ ॥

भावार्थ–अनेक प्रकारे बोलवा रुप वचन एकज छे.

अर्थ-ए० एक का० काया वा० व्यापार

एगे कायवायामे ॥ ४ ॥

भावार्थ-उदारीकादीक सात प्रकारे कायाना व्यापाररुप काया एकज छे.

अर्थ-ए० एक उ० उपजवुं

एगा उप्पा ॥ ५ ॥

भावार्थ-एक समये उपजवुं एकज छे.

अर्थ-ए० एक वि० मरवुं

एगा वियई ॥ ६ ॥

भावार्थ-एक समये विनाश एकज छे.

अर्थ-ए० एक वि० विचर्चा ते मुवानुशरीर

एगा वियच्चा ॥ ७ ॥

भावार्थ-जीवने परभवे उपजतां उदारीक तथा वैक्रिय शरीर एकज छे.

अर्थ-ए० एक ग० गती

एगा गई ॥ ८ ॥

भावार्थ-मनुष्यादीकमांथी नरकादीके जवारुप गती एकज छे.

अर्थ-ए० एक आ० आगती

एगा आगई ॥ ९ ॥

भावार्थ--नर्कादीकमांथी मनुष्यादीकमां आववारुप गती एकज छे.

अर्थ-ए० एक च० मरण

एगे चयणे ॥ १० ॥

भावार्थ-देवतानुं मर्ण ते चववुं एकज छे.

अर्थ-ए० एक उ० उपजवुं

एगे उववाए ॥ ११ ॥

भावार्थ-देवता नारकीनो जन्म ते उपजवुं एकज छे.

अर्थ-ए० एक त० विचारणा

एगा तका ॥ १२ ॥

भावार्थ-मस्तक प्रमुख खजवाळवादीक विचार करवारुप वितर्क एकज छे.

अर्थ-ए० एक स० संज्ञा

एगा सन्ना ॥ १३ ॥

भावार्थ-श्रवणादीक कर्या पछी विचार करवारुप संज्ञा एकज छे.

अर्थ-ए० एक म० बुद्धि

एगा मन्ना ॥ १४ ॥

भावार्थ-सुक्ष्म अर्थ विचारवानी बुद्धि ते मति एकज छे.

अर्थ-ए० एक वि० पंडित

एगा विन्नू ॥ १५ ॥

भावार्थ-पंडीतपणुं ते विज्ञान एकज छे.

अर्थ-ए० एक वे० वेदना ते कर्म भोगववुं

एगा वेयणा ॥ १६ ॥

भावार्थ-ज्वर प्रमुख कर्म वेदना (भोगववुं) एकज छे.

अर्थ-ए० एक छे० छेदवुं

एगे छेयणे ॥ १७ ॥

भावार्थ-खडकादीक शस्त्रेथी करी शरीर प्रमुखनुं छेदवुं ते एकज छे.

अर्थ-ए० एक भे० भेदवुं

एगे भेयणे ॥ १८ ॥

भावार्थ-भालादीकेकरी भेदवुं ते एकज छे.

अर्थ-ए० एक म० मरण अ० चरम सा० शरीरने

एगे मरणे अन्तिमसारीरियाणं ॥१९॥

भावार्थ-छेल्लुं शरिर मुकी तेहज भवे मोक्ष जाय ते जीवने एकजवार मर्ण छे.

अर्थ-ए० एक सं० कषाय रहित संशुद्ध अ० यथाभूत प० पात्र शुद्ध चारित्रनुं पात्र

एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते ॥२०॥

भावार्थ-जे तत्वना जाण केवळी तीर्थं

करतेहज उत्तम पात्ररुप शुद्ध चारित्रीयो एकज छे.

अर्थ–ए० एक दु० दुःख जी० जीवने

एगे दुक्खे जीवाणं ॥ २१ ॥

भावार्थ–जे जन्ममां मोक्ष जवानुं होय ते जीवने छेल्ला भवनुं दुःख एकज छे.

अर्थ–ए० एक भू० भूत प्राणी

एगे भूए ॥ २२ ॥

भावार्थ–सर्व जीवनो आत्मारुप स्वभाव एकज छे.

अर्थ–ए० एक अ० अधर्मनी प० प्रतिज्ञा जं० जेणे से० करी आ० आत्मा प० अतिशे क्लेश पामे

एगा अधम्मपडिमा जं से आया परिकिलेसइ ॥ २३ ॥

भावार्थ–जे अधर्मथी आत्मा क्लेश पामे ने दुःख भोगवे ते पापरुप अधर्म करनार शरीर एकज छे.

अर्थ–ए० एक ध० धर्मनी प० प्रतिज्ञा जं० जेणे क० करी आ० आत्मा जीव प० पर्याय उपना निर्मल थाय ते

एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जुवज्जाए ॥ २४ ॥

भावार्थ–जे धर्मे आत्मा ज्ञानादीक गुण पामीने सुखी थाय ते धर्म जे शरीरे करीये ते धर्मनुं शरीर एकज छे.

अर्थ–ए० एक म० मन दे० देवता अ० भवनपती म० मनुष्यनुं तं० ते तं० ते स० समयने विषे मन एक

एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥ २५ ॥

भावार्थ–भुवनपती १. वाणव्यंतर २. जोतिषी ३. वैमानीक ४. ए चार जातीना देवता मनुष्यने दरेक समय समय प्रत्ये शुभ के अशुभ मनोयोग एकज छे, अर्थात् एक समये शुभ के अशुभ बेमांहीथी एकज मनोयोग होय छे पण बे योग होय नहि.

अर्थ–ए० एक व० वचन दे० वैमानीक अ० भवनपती म० मनुष्यनुं तं० ते तं० ते बोलवाना सं० समयने विषे

एगा वई देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥ २६ ॥

भावार्थ–देवता मनुष्यने दरेक समय समय प्रत्ये शुभ के अशुभ वचनयोग एकज छे (अर्थात एक समे शुभ के अशुभ एकज भाषा बोलाय पण बे भाषा बोलायज नहि.)

अर्थ–ए० एक का० कायानो वा० व्यापार दे० देवता अ० भवनपती० म० मनुष्य तं० ते तं ते० स० समयने विषे.

एगे कायवायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥ २७ ॥

भावार्थ–देवता मनुष्यने दरेक समयसमय प्रत्ये शुभ के अशुभ काययोग एकज छे (अर्थात एक समये एकज काययोग होय पण बे योग होय नहि.)

अर्थ–ए० एक उ० उठवुं क० कर्म ते चालवुं प्रमुख व० शरीरनुं समर्थपणुं वी० वीर्य ते जीवथी उपनुं पु० पुरुषकार अहंकार प० पराक्रम दे० देवता अ० भवनपती म० मनुष्यने तं० ते तं० ते स० समयने विषे.

एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसकारपरक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि ॥ २८ ॥

भावार्थ–उठाण ते गमेते कार्य करवा उठवुं १, कर्म ते प्रमाणादीक क्रीया २, बळ ते श-

रीरनी समर्थाइ ३, विर्यने जीवनुं वळ एटले धारेलुं कार्य पुर्ण करवानी हिंमत ४, पुरुषाकार पराक्रम ते, अहंकारथी उपन्युं पोतानुं पराक्रम ५, ए पांचे वस्तु देवता मनुष्यने दरेक समय समय प्रत्ये एकज होय छे (अर्थात् एक समे बे होय नहीं.)

अर्थ–ए० एक ना० ज्ञान

एगे नाणे ॥ २९ ॥

भावार्थ–ज्ञानावर्णि कर्मना क्षय थकी उत्पन्न थयेलुं ज्ञान केवळज्ञान एकज छे.

अर्थ–ए० एक दं० दर्शन

एगे दंसणे ॥ ३० ॥

भावार्थ–दर्शनावर्णि कर्मना क्षयथकी उत्पन्न थयेलुं सामान्यथी जाणवुं ते केवळ दर्शन एकज छे.

अर्थ–ए० एक च० चारित्र

एगे चरित्ते ॥ ३१ ॥

भावार्थ–सामान्यथी देशविर्ति सर्व विर्ति रुप चारित्र एकज छे.

अर्थ–ए० एक स० समयकाल

एगे समए ॥

भावार्थ–जेहमां वीजो भेद नथी ने समयथी सुक्ष्मकाळ मान वीजुं नथी एवो समय काळ एकज छे.

अर्थ–ए० एक प० प्रदेश

एगे पएसे ॥ १ ॥

भावार्थ–एक मांहीथी वीजो भाग थाय नही ते धर्मास्ति काय १ अधर्मास्ति काय २ आकास्तिकाय ३ जीव ४ अजीव ५ ए पांचेना अवयवते प्रदेश एकज छे.

अर्थ–ए० एक प० परमाणु

एगे परमाणू ॥ २ ॥

भावार्थ–एकना बे भाग थाय नही ते परमाणुं पुदगळ एकज छे.

अर्थ–ए० एक सि० सिद्धसिला

एगा सिद्धी ॥ १ ॥

भावार्थ–पीस्तालीस लाख जोजन प्रमाणे सिद्ध सिला एकज छे.

अर्थ–ए० एक सि० सिद्ध

एगे सिद्धे ॥ २ ॥

भावार्थ–सर्व सरीखा स्वरूपे सिद्धना जीव एकज छे.

अर्थ–ए० एक प० अतिशे णि० निर्वाणक हेता स्वस्थ थापवुं.

एगे परिणिव्वाणे ॥ १ ॥

भावार्थ–फरी दुःखमां आववुं नही ने सर्वे सुखनी प्राप्ति थवी केजे कर्मरूपी दावानल ओलवी शितळी भुत थवा रूप निर्वाण पद एकज छे.

अर्थ–ए० एक प० अतिशे णि० दुःख रहित थावुं.

एगे परिणिव्वुए ॥ २ ॥

भावार्थ–सर्व प्रकारे शरीर अने मननी अशांतानुं रहितपणुं ते मोक्ष एकज छे.

अर्थ–ए० एक स० शब्द

एगे सद्दे ॥ १ ॥

भावार्थ–जीवनो शब्द १ अजीवनो शब्द २ मिश्रनो शब्द ३ एत्रणे मळी काननो विषय ते शब्द एकज छे.

अर्थ–ए० एक रु० रुप

एगे रूवे ॥ २ ॥

भावार्थ–काळो. १ पीळो. २ धोळो. ३ रातो. ४ लीलो. ५ ए पांचेरंग मळी आंखनो विषय ते रूप एकज छे.

अर्थ–ए० एक ग० गंध

एगे गन्धे ॥ ३ ॥

भावार्थ–सुगंध. १ दुर्गंध. २ ए बे मळी नाशीकानो विषय ते गंध एकज छे.

अर्थ–ए० एक र० रस

एगे रसे ॥ ४ ॥

भावार्थ–खाटो. १ मीठो. २ तीखो. ३ कडवो. ४ कसायलो. (तुरस्यो.) ए पांचे मळी जीभनो विषय ते रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक फा० फर्श

एगे फासे ॥ ५ ॥

भावार्थ–हळवो. १ भारे. २ टाढो. ३ उष्ण ४ खरखरो. ५ सुहाळो. ६ लुखो. ७ चोपडयो. ८ ए आठे मळी कायानो विषय ते स्पर्श एकज छे.

अर्थ–ए० एक सु० मनोज्ञ स० शब्द

एगे सुब्भिसद्दे ॥ ६ ॥

भावार्थ–मधुर वचन बोलवा रूप भलो शब्द एकज छे.

अर्थ–ए० एक दु० अमनोज्ञ स० शब्द

एगे दुब्भिसद्दे ॥ ७ ॥

भावार्थ–कडवुं वचन बोलवारूप भुंडो शब्द एकज छे.

अर्थ–ए० एक सु० मनोज्ञ रू० रूप

एगे सुरूवे ॥ ८ ॥

भावार्थ–चित्तने हरण करे एवुं भलुं रूप एकज छे.

अर्थ–ए० एक दु० अमनोज्ञ रू० रूप

एगे दुरूवे ॥ ९ ॥

भावार्थ–चित्तने उद्वेग करे एवुं भुंडुं रूप एकज छे.

अर्थ–ए० एक दी० लांबु

एगे दीहे ॥ १० ॥

भावार्थ–लाकडीनी पेरे लांबु संस्थान (आकार) एकज छे.

अर्थ–ए० एक र० टुंकुं

एगे रहस्से ॥ ११ ॥

भावार्थ–टुंको आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक व० वाटलु पुदगल

एगे वट्टे ॥ १२ ॥

भावार्थ–लाडवाने आकारे गोळ आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक तं० त्रिपुणो

एगे तंसे ॥ १३ ॥

भावार्थ–सीघोडोने आकारे त्रीखुणीयो आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक च० चौपुणो

एगे चउरंसे ॥ १४ ॥

भावार्थ–चोरसाने आकारे चौखुणो आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक पि० पहोलुं

एगे पिहुले ॥ १५ ॥

भावार्थ–विस्तारवंत पहोळो आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक प० परिमंडल वलयाकार

एगे परिमण्डले ॥ १६ ॥

भावार्थ–हाथनी चुडीने आकारे गोळ आकार एकज छे.

अर्थ–ए० एक कि० कालो

एगे किण्हे ॥ १७ ॥

भावार्थ–सर्व जातिनो काळो वर्ण (रंग) एकज छे.

अर्थ–ए० एक नी० नीलो

एगे नीले ॥ १८ ॥

भावार्थ–सर्व जातिनो लीलो वर्ण एकज छे.

अर्थ–ए० एक लो० रातो

एगे लोहिए ॥ १९ ॥

भावार्थ–सर्व जातिनो रातो वर्ण एकज छे.

अर्थ–ए० एक हा० पीलो

एगे हालिद्दे ॥ २० ॥

भावार्थ–सर्व जातिनो पीलो वर्ण एकज छे

अर्थ–ए० एक सु० धोलो

एगे सुक्किले ॥ २१ ॥

भावार्थ–सर्व जातिनो धोलो वर्ण एकज छे.

अर्थ–ए० एक सु० सुगंध

एगे सुब्भिगन्धे ॥ २२ ॥

भावार्थ–कस्तुरी प्रमुख सर्व जातिनी सुगंधी एकज छे.

अर्थ–ए० एक दु० दुर्गंध

एगे दुब्भिगन्धे ॥ २३ ॥

भावार्थ–हींग प्रमुख सर्व जातिनी दुर्गंधी एकज छे.

अर्थ–ए० एक ति० तीखो

एगे तित्ते ॥ २४ ॥

भावार्थ–मरी प्रमुख सर्व जातिनो तीखो रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक क० कडुओ

एगे कडुए ॥ २५ ॥

भावार्थ–कालीजीरी प्रमुख सर्व जातिनो कडवो रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक क० कसायलो

एगे कसाए ॥ २६ ॥

भावार्थ–हलदर प्रमुख सर्व जातिनो कसायलो रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक अं० खाटो

एगे अम्बिले ॥ २७ ॥

भावार्थ–लींबु प्रमुख सर्व जातिनो खाटो रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक म० मीठो

एगे महुरे ॥ २८ ॥

भावार्थ–शेलडी प्रमुख सर्व जातिनो मधुरो रस एकज छे.

अर्थ–ए० एक क० खरखरो फरस जा० यावत लु० लुखो.

एगे कक्खडे जाव लुक्खे ॥२९॥

भावार्थ–पाषाणादिक सर्व कठण स्पर्श एकज छे. एमज हळवो. १ भारे. २ टाढो. ३ उष्ण. ४ खरखरो. ५ सुंहालो. ६ लुखो. ७ ए सर्व स्पर्श एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक पा० प्राणातिपात हिंसा. ए० एक मु० मृषावाद जूठ ए० एक अ० अदत्तादान ते चोरी. ए० एक मे० मैथुन ते स्त्रीसेवा जा० यावत् ए० एक प० परिग्रह ते धन.

एगे पाणाइवाए जाव एगे परिग्गहे ॥ १ ॥

भावार्थ–प्राणातिपात जीवहिंशा. १ मृषावाद (जुठं) २ अदत्तादान अणदीधेलुं लेवुं ते चोरी ३ मैथुन (विषय) ४ परिग्रह ५ ए सर्वे एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक को० क्रोध ए० एक मा० मान ए० एक मा० माया जा० यावत् ए० एक लो० लोभ

एगे कोहे जाव लोभे ॥ २ ॥

भावार्थ–क्रोध (रिस) अहंकार कपट लोभ ए सर्व एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक पे० राग

एगे पेज्जे ॥ ३ ॥

भावार्थ–स्नेह रूप प्रेम एकज छे.

अर्थ–ए० एक दो० द्वेष जा० यावत ए० एक प० पारको प० अपवाद

एगे दोसे जाव एगे परपरिवाए ॥ ४ ॥

भावार्थ–दोष रूप द्वेष ते एकज छे. एमज कलेश. १ अभ्याख्यान. (आळदेवुं ते) २ पीशुन (चाडी करवीते) ३ पारकी नींद्या ४ ए सर्व एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक अ० अरती र० रती.

एगा अरइरई ॥ ५ ॥

भावार्थ–अरति (उद्वेग) १ रती (आनंदहर्ष) २ ए एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक मा० माया मो० मृषा

एगे मायामोसे ॥ ६ ॥

भावार्थ–कपट सहित जुठुं बोलवुं तेएकज छे

अर्थ–ए० एक मि० मिथ्यात्वे द० दर्शन स० सल्य

एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥ ७ ॥

भावार्थ–शल्य (कांटो) नीपेरे दुःखदाइ ते मिथ्यात्वदर्शन शल्य एकज छे. (ए अढार पाप स्थानक जाणवा.)

अर्थ–ए०एक पा० प्राणनु पाडवो तेथी वे० विरमवुं जा० यावत प०परिग्रहथी वे० विरमवुं

एगे पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे ॥ १ ॥

भावार्थ–जीवहिंसाथी निवर्तवुं ते एकज छे. एमज मृषावाद. १ अदत्तादान. २ मैथुन. ३ परिग्रह. ४ एहथी निवर्तवुं ते सर्व एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक को० क्रोधनो वि० त्याग जा ०यावत मि० मिथ्यात्व दं० दर्शन स० सल्य वि० त्याग

एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे ॥ २ ॥

भावार्थ–क्रोधनो त्याग करवो ते एकजछे. एमज मान. १ कपट. २ लोभ. ३ राग. ४ द्वेष. ५ क्लेश. ६ कलंक. ७ चुगली. ८ निंद्या. ९ रती. १० अरती. ११ कपट सहित जुठुं वाक्य. १२ मिथ्यात्व दर्शन सल्य. १३ ए सर्वे पापथी नीवर्तवुं ते सर्वे एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक ओ० अवसर्प्पिणी काल

एगा ओसप्पिणी ॥ १ ॥

भावार्थ–जीहां आयुष प्रमुख सर्व भाव दीनप्रतिदीन हांणी पामताजाय ते अवसर्पिणी (पडतो) काळ एकज छे.

अर्थ–ए० एक सु० सुषमा सु० सुषमा पेहेलो आरो जा० यावत ए० एक दू० दुषमा दु० दूषमा छठो आरो

एगा सुसमसुसमा जाव एगा दूसमदूसमा ॥ २ ॥

भावार्थ–ए अवसर्पिणी काळमां छ आरा होय छे, ते मांही पहेला आरामां सुखनी अंदर पण अत्यंत सुख. १ बीजामां एकलुं सुखज. २ त्रीजामां सुख घणुं ने दुःख थोडुं. ३ चोथामां दुःख घणुं ने सुख थोडुं. ४ पांचमामांही एकलुं दुःखज. ५ छठामांही दुःखनी अंदर पण अत्यंत दुःख. ६ ए सर्वे छ आरा एकेकज छे.

अर्थ–ए० एक उ० उत्सर्प्पिणी काल

एगा उस्सप्पिणी ॥ ३ ॥

भावार्थ–जीहां आयुष्य प्रमुख सर्वभाव दीनप्रतिदीन चढताजाय ते उत्सर्पिणी काळ एकज छे.

अर्थ—ए० एक दू० दुषमा दू० दुषमा पहेलो आरो जा० यावत ए० एक सु० सुषमा सु० सुषमा छठो आरो.

एगा दूसमदूसमा जाव सुसमसुसमा ॥ ४ ॥

भावार्थ—ए उत्सर्पिणीकाळमां छ आरा होय छे, ते मांही पहेला आरामां, दुःखमां अत्यंत दुःख. १ बीजामां एकलुं दुःखज. २ त्रीजामां दुःख घणुं ने सुख थोडुं. ३ चोथामां सुख घणुं ने दुःख थोडुं. ४ पांचमामां एकलु सुखज. ५ छठामां सुखनी अंदर पण अत्यंत सुख. ६ ए सर्व छ आरा एकेकज छे ('दश क्रोडाक्रोडी सागरोपमनो उत्सर्पिणी काळ अने दश क्रोडाक्रोडी सागरोपमनो अवसर्पिणीकाळ ए वे मळी वीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमनुं एक काळचक्र कहेवाय छे.)

अर्थ—ए० एक ने० नारकीनो व० समुदाय.

एगा नेरइयाणं वग्गणा ॥ १ ॥

भावार्थ—साते नर्कना नारकी जीवनी वर्गणा (समुदाय) एकज छे.

अर्थ—ए एक अ० असुर कुमारनो व० समुदाय च० चउवीस दंडकनो समुदाय जा० यावत ए० एक वे० वैमानीकनो व० समुदाय

एगा असुरकुमाराणं वग्गणा । चउवीसदण्डओ जाव एगा वेमाणियाणं वग्गणा ॥ २ ॥

भावार्थ—असुरकुमार. १ नागकुमार. २ सुवर्णकुमार. ३ विद्युत्कुमार. ४ अग्नीकुमार ५ द्वीपकुमार. ६ उद्धीकुमार. ७ दिशाकुमार ८ वायुकुमार. ९ स्थनीतकुमार. १० ए दशे प्रकारना भुवनपति देवतानी वर्गणा एकेकीज छे. एमज पृथ्वी. १ पाणी. २ अग्नी. ३ वायु. ४ वनस्पति. ५ वे इंद्रीजीव. ६ तेइंद्रीजीव. ७ चौइंद्रीजीव. ८ तिर्यंचपचेंद्री. ९ मनुष्यपचेंद्री. १० वाणव्यंतर ११ जोतिषी. १२ वैमानीक. १३ नारकीथी मांडी वैमानीकसुधी चोवीस दंडकना सर्वे जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक भ० भव्यजीवनो व० समुदाय

एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा ॥३॥

भावार्थ—जे अनंते भवे पण छेवट मोक्ष जशे ते भव्य जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक अ० अभव्य जीवनो व० समुदाय.

एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा ॥४॥

भावार्थ—जे अनंतेभवे पण कोइ वखत मोक्षनेविषे नहि जाय एवा अभव्य जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक भ० भव्यजीव ने० नारकीनो व० समुदाय.

एगा भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा ॥ ५ ॥

भावार्थ—भव्य सिद्धिक नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक अ० अभव्यजीव ने० नारकीनो व० समुदाय ए० एम जा० यावत ए० एक भ० भव्यजीव वे० वैमानीकनो व० समुदाय.

एगा अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा । एवं जाव भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ ६ ॥

भावार्थ—अभव्य सिद्धिक नारकीनी वर्गणा एकज छे. एम यावत् वैमानीक सुधी चौ-

विस दंडकना सर्व भव्यसिद्धिकजीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ–ए० एक अ० अभव्य जीव वे० वैमानीकनो व० समुदाय.

एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ ७ ॥

भावार्थ–एमज चोविस दंडकना वैमानीक साथे सर्वे अभव्यसिद्धिक जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ–ए० एक स० सम्यग द्दि० द्रष्टी जीवनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥८॥

भावार्थ–मिथ्यात्व मोहनी कर्मना क्षयोपशमथी जीनप्रणीत वचन सत्य करि जाणे ते सर्वे समकित द्रष्टि जीवनी वर्गणा एकजछे.

अर्थ–ए० एक मि० मिथ्या द्दि० द्रष्टी जीवनो व० समुदाय.

एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥ ९ ॥

भावार्थ–मिथ्यात्व मोहनी कर्मना उदयथी जीनप्रणीत वचनने विप्रीत रीते मांने ते मिथ्यात्वी जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक स० सम्यग मि० मिथ्या द्दि० द्रष्टी जीवनी व० वर्गणा समुदाय.

एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥ १० ॥

भावार्थ–जेने जीनप्रणीत वचन उपर राग नहीं तेम द्वेष पण नहीं ने सर्वे धर्मना कथन सत्य करि माने ते मिश्रद्रष्टि जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक० स० सम्यग द्दि० द्रष्टी जीव ने० नारकीनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा ॥ ११ ॥

भावार्थ–समकितद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक मि० मिथ्यात्व द्दि० द्रष्टी जीव ने० नारकीनो व० वर्गणा.

एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा ॥ १२ ॥

भावार्थ–मिथ्यात्वद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक स० सम्यग मि० मिथ्या द्दि० द्रष्टी ने० नारकीनी व० वर्गणा. ए० एम जा० यावत थनितकुमारनो समुदाय.

एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ १३ ॥

भावार्थ–मिश्रद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे. एमज दशे भुवनपति देवता समकीत. १ मिथ्यात्व. २ मिश्र. ३ ए त्रणे द्रष्टीवाळा जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ–ए० एक मि० मिथ्यात्वी पु० पृथ्वीकाईयानो व० समुदाय ए० एम जा० यावत व० वनस्पतीकायना जीवने जाणवो.

एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं पुढविकाइयाणं वग्गणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ १४ ॥

भावार्थ–मिथ्यात्वद्रष्टि पृथ्वीकाय जीवनी वर्गणा एकज छे. एमज मिथ्यात्वद्रष्टि पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिकाय जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए०एक स० समकित दि० द्रष्टी वे० वेइन्द्री जीवनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्दिट्ठियाणं वेइन्दियाणं वग्गणा ॥ १५ ॥

भावार्थ-समकित वमतो वेइंद्रि मांही आवे ते वारे उपजती वेळाए छ आवलीका सुधी सास्वादान समकित होय, ते समकितद्राष्टि वेइंद्री जीवनी वर्गणा एकज छे. (छ आवळीका पछी जरुर मिथ्यात्वद्राष्टि थइ जाय छे.)

अर्थ-ए० एक मि० मित्थ्यात्वी वे० वेइन्द्रीजीवनो व० समुदाय ए० एम ते० तेइन्द्री ने वि० पण जाणवुं च० चउरिन्द्रीनी वर्गणा वि० पण एमज से०बीजा ज० जेमने० नारकीनी पेरे जाणवा जा० यावत ए० एक स० सम्यग मि० मित्थ्या दि० द्रष्टी वे० वैमानीकनी व० वर्गणा त्रणेते एक.

एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं वेइन्दियाणं वग्गणा। एवं तेइन्दियाण वि चउरिन्दियाण वि। सेसा जहा नेरइया जाव एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ १६ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्वद्राष्टि वेइंद्री जीवनी वर्गणा एकज छे. (वेइंद्रीमां मिश्रद्रष्टी होय नहीं.) एमज समकीतद्राष्टि तेइंद्री जीवनी एक वर्गणा. मिथ्यात्वद्राष्टि तेइंद्री जीवनी एक वर्गणा. समकीतद्राष्टि चौइंद्री जीवनी एक वर्गणा. मिथ्यात्वद्राष्टि चौइंद्री जीवनी पण एक वर्गणा छे. शेष ते गर्भज तिर्यंच पंचेंद्री. १ तथा मनुष्य. २ व्यंतर. ३ जोतीषी. ४ वैमानीक ५ ए सर्वमां नारकीनी पेरे समकितद्राष्टि. १ मिथ्यात्वद्राष्टि. २ मिश्रद्राष्टि ३ ए त्रणे भेदनी एकेकी वर्गणा छे. अने ए सर्वमां सम्यकदर्शन. १ मिथ्यात्वदर्शन. २ मिश्रदर्शन. ३ ए त्रणे दर्शन छे.

अर्थ-ए० कि०कृष्ण प० पक्षिया जीवनी व० वर्गणा.

एगा किण्हपक्खियाणं वग्गणा ॥ ॥ १७ ॥

भावार्थ-जेहने अर्ध पुदगल परावर्तनथी अधीको संसार परिभ्रमण करवानुं होय एटले व्होळा (घणा) संसारीजीव ए कृष्णपक्षीया जीवनी वर्गणा एकज छे.

(इहां अर्ध पुद्गळ परावर्तन कहेल छे ते आ प्रमाणे कहेवाय छे.

उदारीक. १ वैक्रेय. २ तेजश. ३ कार्मण. ४ मन. ५ वचन. ६ सासोश्वास. ७ ए सात प्रकारना पुदगळ परावर्तन छे ते द्रव्यथी. १ क्षेत्रथी. २ काळथी. ३ भावथी. ४ ए चार प्रकारे चौविस दंडकना सर्व प्राणी करे ते चोवीस दंडके १३४ वर्गणा थाय तेहना नाम कहेछे. एकेंद्री जीवनी २१ वर्गणा ते. पृथ्वी. १ पाणी. २ अग्नी. ३ वनस्पती. ४ ए चारेने उदारीक. १ तेजश. २ कार्मण ३ सासोश्वास. ४ ए चार वर्गणा तेथी चार चोकुं १६ थइ अने वायुने पुर्वोक्त चार अने एक वैक्रेय ए पांच वर्गणा मली कुल २१ तथा साधारण वनस्पतिने उदारीक. १ तेजस. २ कार्मण. ३ ए त्रण वर्गणां, ए कुल मळी २४ एकेंद्रीनी वर्गणा.

वेइंद्री १. तेइंद्री २, चौइंद्री ए त्रणेने उदारीक १. तेजश २ कार्मण ३. सासोश्वास४. ए चार चार वर्गणा गणतां बार वर्गणा विगलेंद्रीनी (इहां विगलेंद्रीने भाषा छे पण असंज्ञी होवाथी गणी नथी.)

नारकी १. दशभूवनपति ११. वाणव्यंतर १२. जोतीषी १३. वैमानीक १४. ए चौदेने उदारीक वर्जिने छ छ वर्गणा गणतां चौदेछके ८४ थइ. मनुष्य १ तिर्यंचने २ सात सात वर्गणा गणतां १४ थइ कुल सर्वे मळी १३४ वर्गणा जाणवी.

ए १३४ वर्गणाए करीने लोकमांही पुर्वोक्त सात प्रकारना जेटलां पुदगळछे तेटलां लइलइने मुके तेवारे एक द्रव्यथी बादर पुदगळ परावर्तन थाय, अने एज १३४ वर्गणाये करिने अनुक्रमे लोकमांहिथी पुदगळ ग्रहीग्रहीने मुके पण वचे बीजा पुदगल लीये ते न गणवां तेहने शुक्ष्म पुदगळ परावर्तन कहीये. ए द्रव्यथी पुदगळ परावर्तन कह्युं. १

हवे क्षेत्रथी पुदगळ परावर्तन कहे छे.

क्षेत्रथी पुदगळ परावर्तनना बे भेद, शुक्ष्मने बादर, तेमांही बादर ते जंबूद्वीपना मध्यभागे मेरु पर्वत छे, ते मेरुना मध्यभागे आकाशना आठ रुचक प्रदेश छे, ते रुचकप्रदेशथी दिशीने विदिशी लोकना अंतसुधी मंडाणी तिहां जेटला आकाश प्रदेश छे तेटला भव करे तेहने क्षेत्रथी बादर पुदगळ परावर्तन कहीये १. अने जे रुचक प्रदेशथी माडीने अनुक्रमे दरेक प्रदेशे प्रदेशे भव करे तेहज लेखामां गणाय, पण अनेरे अनेरे प्रदेशेभव करे ते गणत्रीमां नहीं तेहने क्षेत्रथी शुक्ष्म पुदगळ परावर्तन कहीये २.

हवे काळथी पुदगळ परावर्तन कहेछे.

इहां प्रथमकाळनुं प्रमाण कहे छे. झडपथी आंख मिंचीने उघाडे तेमांही असंख्याता समय जाय. ते असंख्याता समयनी एक आवळीका थाय १. संख्याती आवळीकाए एक उश्वास तथा निश्वास थाय. २ एक उश्वास निश्वासे एक प्राणु थाय. ३ सात प्राणुए एक थोव थाय. ४ सात थोवे एक लव (घासनी पुळी पकडी तिक्षण दातरडाये झडपथी एक कडलो कापे ते) थाय. ५

सीतोतेर लवे एक मुहुर्त (बे घडी) थाय, अथवा ३७७३ श्वासोश्वासे एक मुहुर्त (बे घडी) थाय. ६ त्रीस मुहुर्ते एक अहो (दीवस) रात्री थाय. ७ पन्नर अहो रात्रीए एक पखवाडीयुं थाय. ८ बे पखवाडीये एक मास थाय. ९ बे महीने एक रुतु थाय. १० त्रण रुतुये एक अयन थाय ११ बे अयने एक वरस थाय. १२ पांच वर्षे एक युग थाय. १३ विस युगे सो वर्ष थाय. १४

हवे पल्योपम सागरोपमनुं प्रमाण कहे छे.

अनंता सुक्ष्म परमाणुंए एक व्यवहार परमाणुं थाय. १ अनंता व्यवहार परमाणुं ए एक उस्नसण्हियो थाय. २ आठ उस्नसण्हिये एक सण्ह सण्हियो थाय. ३ आठ सण्ह सण्हिये एक उर्द्धरेणुं थाय. ४ आठ उर्द्धरेणुंये एक त्रसरेणुं थाय. ५ आठ त्रसरेणुंए एक रथरेणुं थाय. ६ आठ रथरेणुये एक त्रण पल्योपमना आयुषवाळा देवकुरु उत्तरकुरु युगळीया मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. ७ आठ देवकुरु उत्तरकुरु युगळीया मनुष्यना वाळाग्रे, बे पल्योपमना आयुषवाळा हरिवास रम्यकवास युगळीया मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. ८ आठ हरीवास रम्यकवास युगळीआ मनुष्यना वाळाग्रे एक पल्योपमना आयुषवाळा हेमवय, एरणवय, युगळीया मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. ९ आठ हेमवय एरणवय युगळीआ मनुष्यना वाळाग्रे, पूर्व पश्चिम महाविदेहनां सात दीवसनां जन्मेलां मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. १० तेहना पूर्व पश्चीमना मनुष्यना आठ वाळाग्रे एक लीख थाय. ११ आठ लीखे एक जुं थाय. १२

आठ जुंये एक जवनो मध्यभाग थाय. १३ आठ जवना मध्यभागे एक उत्सेधांगुळ थाय. १४ एवां छ उत्सेधांगुळे एक पगनुं पहोळपणुं थाय. १५ एवां वे पगे एक वेंत थाय. १६ वे वेंते एक हाथ. १७ वे हाथे एक कुक्षी थाय. १८ वे कुक्षीए एक धनुष्य थाय. १९ वे हजार धनुष्ये एक गाउथाय. २० चार गाउए एक जोजन थाय. २१ तेवा एक जोजन प्रमाणे लांवो पोहोळो एक कुवो कल्पीए. एक वाळना असंख्यातासंड (कडका) कल्पीए. तेवाळाग्रे ते कुवो ठांसीठांसी भरीए ते एटले सुधीके ते कुवाउपर चक्रवर्तिनुं सैन्य ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोडा, ८४ लाख रथ, ९६ करोड पायदल जाय तोपण दबाय नहीं, पछी ते कुवामांथी सोसो वरसे अकेको वाळाग्र काढतां जेवारे ते कुवो तदन खाली थाय ते वारे एकपल्योपम थाय. एवा दशक्रोडा क्रोडी पल्योमे एक सागरोपम थाय. एवा दशक्रोडा क्रोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी अने एक अवसर्पिणी काल थाय, एवां वीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमे एक कालचक्र थाय. हवे काळथी पुद्गल परावर्तन तेहना वे भेद सुक्ष्मने वादर तेमांही वादर ते उत्सर्पिणीना पहेला समयथी ते अवसर्पिणी ना छेल्ला समय सुधी एटले एक काळचक्र ना जेटला समय थाय तेटला भवकरे तेहने काळथी वादर पुद्गल परावर्तन कहीये. १ उत्सर्पिणीना जेसमे पहेलो भवकरे ने अवसर्पिणीना वीजे समे भवकरे तेज लेखमां गणाय पण अनेरेसमे भवकरे ते गणत्रीमां नही तेहने काळथी सुक्ष्म पुदगळ परावर्तन कहीये. ३

हवे भावथी पुद्गळ परावर्तन कहे छे.

भावथी पुद्गळ परावर्तनना वे भेद. सुक्ष्मने वादर तेमांही वादर ते जीवना भ्रणामना असंख्यातां स्थानक छे ते अकेक भ्रणामने स्थानके भव करे तेहने भावथी वादर पुद्गळ परावर्तन कहीये. १ अने सुक्ष्म ते जीवनां एहज भ्रणामना स्थानके अनुक्रमे लगता भव करे तेहज लेखामां गणाय पण अनेरे भ्रणामे भव करे ते गणत्रीमां नही, तेहने भावथी सुक्ष्म पुद्गळ परावर्तन कहीये. ४

चौविस दंडकना सर्व जीवे अतीतकाळे साते प्रकारना पुद्गळ परावर्तन अनंतअनंतवार कर्यां, अने आगळ कोइ करशे ने कोइ नही करे, करशे तेजधन्य एक वे ने त्रण उत्कृष्टा अनंता करशे.

अनंताकाळचक्र जाय त्यारे एक कार्मण पुद्गळ परावर्तन थाय. १ अनंताकार्मण पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक तेजस पुद्गळ परावर्तन थाय. २ अनंता तेजस पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक उदारीक पुद्गळ परावर्तन थाय. ३ अनंताउदारीक पुद्गळपरावर्तन जाय त्यारे एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन थाय. ४ अनंताश्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक मन पुद्गळ परावर्तन थाय. ५ अनंतामन पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक वचन पुद्गळपरावर्तन थाय. ६ अनंतावचन पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक वैक्रेय पुद्गळ परावर्तन थाय. ७

एक कार्मण पुद्गळ परावर्तनमांही अनंताकाळचक्र वहीजाय तथा तेमांज एक तेजस पुद्गळ परावर्तन वहीजाय. १ एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तनमांहि अनंताउदारीक पुद्गळ परावर्तन तथा अनंता कारमण पुद्गळ परावर्तन वहीजाय. २ एक उदारीक पुद्गळ परावर्तनमांही अनंतातेजस पुद्गळपरावर्तन वही जाय. ३ एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन-

ओ पञ्चेन्दियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छ लेसाओ जोइसियाणं एगा तेउलेसा वेमाणियाणं तिण्णि उवरिमलेसाओ ॥ २३ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळानारकीनी वर्गणा एकजछे. एमज निललेस्या, कापुतलेस्याळा नारकीनी पण एकेकीज वर्गणा छे. (नारकीने वीषे ए त्रणज लेस्या छे.) एम जे दंडकमां जेटली जेटली लेस्या होय तेटली तेटली एकेक नामे वर्गणा जाणवी. भूवनपती. १ वाणव्यंतर. २ एहने विषे प्रथमनी चार लेस्या छे. पृथ्वी. १ पाणी. २ वनस्पतीमां उपजती वेळाए अपजाप्ता वेळाए प्रथमथी चार लेस्या छे अने प्रजाप्तामां त्रण लेस्या छे. १ तेउकाय. २ वायुकाय. ३ वेइंद्री. ४ त्रेइंद्री. ५ चौइंद्रीमां प्रथमनी त्रण लेस्या छे. पचेंद्री त्रीयंच अने मनुष्यमां छ लेस्या छे. जोतीषीमां एक तेजुलेस्या छे. वैमानिकमां तेजु. १ पद्म. २ शुकल ३ ए त्रण लेस्या छे. तेमांही पहेले वीजे देवलोके एक तेजुलेस्या छे. त्रीजे, चोथे ने पांचमे देवलोके एक पद्मलेस्या छे. छठा देवलोकथी नवग्रिवेयक सुधी एक शुक्ललेस्या छे. पांच अनुत्तरविमानमां पर्म शुक्ललेस्याछे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना भ० भव्य जीवनी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा ॥ २४ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावंत भव्य जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्णलेश्याना अभव्यजीवना व० वर्गणा. ए० एम छ० छ वि० विषे ले० लेश्याने विषे दो० वे दो० वे प० पद भव्य, अभव्यना भा० जाणवा.

एगा किण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा । एवं छसु वि लेसासु दो दो पयाणि भाणियव्वाणि ॥ २५ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावंत अभव्य जीवनी वर्गणा एकज छे. एम छए लेस्यामां भव्य अने अभव्य बन्ने भेदनी एकेकी वर्गणा जाणवी.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना भव्य जीव ने० नारकीनी व० वर्गणा

एगा किण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा ॥ २६ ॥

भावार्थ-कृष्ण लेस्यावंत भव्य सिधिक नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना अ० अभव्य जीवनाने० नारकीनी व० वर्गणा. ए० एम ज० जे दंडकने ज० जेटली ले० लेश्याछे त० तेहने त० तेटली भा० जाणवी वर्गणा जा० यावत वे० वैमानीक लगे.

एगा किण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा । एवं जस्स जइ लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियव्वाओ जाव वेमाणियाणं ॥ २७ ॥

भावार्थ-कृष्ण लेस्यावंत अभवसिधिक नारकीनी वर्गणा एकज छे. एम चौवीस दंडकसुधी जेजे दंडकमां जेटली जेटली लेस्या होय तेटली तेटली भव्य सिधिक अने अभव्य सिधिकनी एकेकी वर्गणा जाणवी.

अर्थ–ए० एक कि० कृष्ण लेश्यानो स० सम्यकदृष्टी जीवनी व० वर्गणा

एगा किण्हलेसाणं सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥ २८ ॥

भावार्थ–कृष्णलेस्यावाळा समकितद्रष्टीवंतनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना मि० मित्थ्यात द्रष्टीनी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा ॥ २९ ॥

भावार्थ–कृष्णलेस्यावाळा मिथ्यात्वद्रष्टीवंतनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना स० समा मित्थ्या द्रष्टीनो व० समुदाय. ए० एक छ० छ वि० पण ले० लेश्याने विषे जा० यावत वे० वैमानीक लगे जे० जेहने ज० जेटली दि० दृष्टी छे तेटली वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा । एवं छसु वि लेसासु जाव वेमाणियाणं जेसिं जइ दिट्ठीओ ॥ ३० ॥

भावार्थ–कृष्णलेस्यावाळा मिश्रद्रष्टीवंतनी वर्गणा एकज छे. एमज नील १, कापुत २, तेजु ३ पदम ४ शुकल ५ एलेस्याने विषे चौविस दंडकसुधी त्रणे द्रष्टीमां जेहने जेटली जेटली द्रष्टी होय तेहने तेटली तेटली वर्गणा जाणवी. पांच एकेंद्रीमां एक मिथ्यात्वद्रष्टी छे, त्रण विगलेंद्री नवग्रेवेगमां समकीत अने मिथ्यात्व ए बे द्रष्टी छे, पांच अनुतरविमानमां एक समकितद्रष्टी छे, बाकी तमाममां त्रणत्रण द्रष्टी छे.

अर्थ–ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना कि० कृष्ण पक्षीयानी च० वळी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं किण्हपक्खियाणं च वग्गणा ॥ ३१ ॥

भावार्थ–कृष्णलेस्यावाळा कृष्णपक्षीया जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एक कि० कृष्ण लेश्यानो सु० शुक्ल पक्षीया जीवनो व० समुदाय जा० यावत वे० वैमानीक लगे जाणवो ज० जेहने ज० जेटली ले० लेश्याहोय तेटली वर्गणा ए० ए अ० आठ बोल च० चउवीसे दं० दंडके जाणवा.

एगा किण्हलेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा जाव वेमाणियाणं जस्स जइ लेसाओ एए अट्ठचउवीसदण्डया ॥ ३२ ॥

भावार्थ–कृष्णलेस्यावाळा शुक्लपक्षीया जीवनी वर्गणा एकज छे. एम वैमानीकसुधी चौवीस दंडकमां जेहने जेटली जेटली लेस्या होय तेहमां तेटली तेटली कृष्णपक्षीया ने शुक्लपक्षीया जीवनी एकेकी वर्गणा जाणवी. पहेलो समुचय चौवीस दंडकना नामरूपनो बोल १ भवी अभवीनो २. द्रष्टीनो ३ कृष्ण शुक्लपक्षीनो ४ लेस्यानो५ लेस्या साथे भव्य अभव्यनो ६ लेस्या साथे द्रष्टीनो, लेस्या साथे पक्षीनो ८ ए आठ बोल चौवीस दंडकपर पुर्वोक्त प्रमाणे जाणवा.

अर्थ–ए० एक ति० संघथापना कीधा पछी मुक्ति गया तेनी व०वर्गणा.

एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा ॥३३॥

भावार्थ–तिर्थंकरदेवने केवळज्ञान उत्पन्न थया पछी साधु १ साध्वी २ श्रावक ३ श्रावीका ४ ए चार तीर्थनी स्थापना कर्यापछी

मुक्ति जाय ते तिर्थसिदधा कहीये. जेम रुषभदेव भगवंतने केवळज्ञान उत्पन्न थया पछी पुंडरिक त्रण गणधरादीक मुक्ती गया एवा तिर्थ सिद्धा जीवनी वर्गणा एकज छे. १

अर्थ–ए०एक अ०अतिर्थसिद्धनी व०वर्गणा ए० एक जा० यावत ए० एक सि० सिद्धनी व० वर्गणा अ० अनेक सिद्धनी व० वर्गणा

एगा अतित्थसिद्धाणं वग्गणा । एवं जाव एक्कसिद्धाणं वग्गणा अणेक्कसिद्धाणं वग्गणा ॥ ३४ ॥

भावार्थ–तिर्थ स्थाप्यां पहेलां जाति स्मर्णादिक ज्ञान थये पुर्व जन्म जोइ केवलज्ञान पामि ऋषभदेव भगवंतनी माता मरुदेवीनीपेरे मुक्तीजाय एवां अतिर्थसिद्धा जीवनी वर्गणा एकज छे. २

एम तिर्थंकर भगवंतसिद्धनी वर्गणा एकज छे. ३ अतिर्थंकर ते सामान्य केवळी सिद्धनी वर्गणा एकज छे. ४ पोतानी मेळे तत्वज्ञान पामी मोक्ष जाय तेवा स्वयंबुधासिद्धनी वर्गणा एकज छे. ५ कांइपण वस्तु देखी तत्वज्ञान पामी मुक्ति जाय एवा प्रत्येक बुद्धसिद्धनी वर्गणा एकज छे. ६ गुरुपासे प्रतिबोध पामी मुक्ति जाय ते बुद्धबोही सिद्धनी वर्गणा एकज छे. ७ स्त्रीलिंग (आकार) ८ पुरुषलिंग ९ नपुंसकलिंग १०. ए त्रणे लिंगे सिद्धनी वर्गणा एकेकीज छे. (इहां लिंग ते स्त्री पुरुष नपुंसकपणाना विषयविकारथी रहीत फक्त आकारमात्र जाणवुं. जेम कोइ नदी मांहेथी पाणी सुकाइजवाथी फक्त आकारमात्र नदी कहेवाय तेनीपेरे आपण समजवुं) मुखपती रजोहरणादीक जैनमुनीना वेस सहित मुक्ति जायते स्वलिंगे सिद्धनी वर्गणा एकज छे. ११ अन्य लिंग ते तापशवेशे वल्कलची वरधारी सिद्धनी वर्गणा एकज छे. १२ मरुदेवी प्रमुख ग्रहस्थलिंग सिद्धनी वर्गणा एकज छे. १३ (इहां अन्यलिंग तथा ग्रहस्थलिंग कहेल छे ते कोइ जैनधर्मनो द्वेषी राजा जैनमुनीने कहे कांतो तमारो धर्म छोडो नहींतो जीवथी मारवा हुकम करेल होय ते वखते ए उपशर्ग सहन करवा समर्थ होय ते मुनी तो प्राण जवा कुरवान करे पण संयमथी डगे नहि, पण जे मुनीथी ते सहन थइशके नहि ने संयमनुं रक्षण करवा पूर्ण अभिलाषा होय ते मुनी माथे फेंटो बांधवो विगेर ग्रहस्थनो वेश तथा अन्यधर्मि तापस विगेरेनो वेश पहेरि, अंदर मुनीनी क्रियामां प्रवर्ति ते राजाना राज्यनी सीमाओ बधी जतां ते रस्तामां हीज केवळज्ञान उत्पन्न थये कोइ मुक्तिमां जाय ते आश्री ग्रहस्थलिंगे तथा अन्य लिंगे सिद्धा कहेल छे, पण ग्रहस्थी तथा अन्यलिंगि सिद्धा कहेल नथी. भगवतीमां संज्याने अधीकारे अन्यलिंगे तथा ग्रहस्थलिंगे पांच लाभे ते पण पुर्वोक्त अपेक्षायेज कहेल छे, तथा अशोच्या केवळी ते जीनेंद्रप्रणीत एक वाक्य पण बीलकुल श्रवण करेल न होय एवा अन्य धर्मना कोइ तापसादीक घणी निर्वद्य कमाणी करतां विभंग ज्ञान उत्पन्न थाय तेमांथी समकीत पामवे अवधीज्ञान उपजे ने तेमांथी तत्काळ आयुष्यनी समाप्तीये केवळज्ञान उपजवे मुक्तिमां जाय, आयुष्य पुर्ण थवानी तैयारीये आ सर्वे ज्ञान उत्पन थये मुक्तीमां जाय तेथी ते अन्य धर्मनो वेश बदलवानो वखत मळे नही ते आश्री पण अन्य लिंगे सिद्धा कहेल छे.) एक समे एकज मुक्तिमां जाय ते सिद्धनी वर्गणा एकज छे. १४ एक समे उत्कृष्टा एकसोने आठ मुक्तीमां जाय ते अनेक सिद्धनी वर्गणा एकज छे. १५ ए पंनर भेदे सिद्ध कह्या.

अर्थ-ए० एक अ० अप्रथम स० समय सिद्धनी व० वर्गणा ए० एम जा० यावत अ० अनंतसमय सिद्धातेहनी व० वर्गणा.

एगा अपढमसमयसिद्धाणं वग्गणा। एवं जाव अणन्तसमयसिद्धाणं वग्गणा ॥ ३५ ॥

भावार्थ-विरहकाल व्यतित थया बाद पहेलो जे जीव मुक्तिमां जाय ते प्रथम समयना सिद्धनी वर्गणा एकज छे. तेमज बीजे त्रीजे यावत् संख्याता असंख्याता अनंता समय सुधी जे जीव मुक्तिमां जाय ते अप्रथम समयना सिद्धनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक प० परमाणु पो० पुदगलनी व० वर्गणा ए० एम जा० यावत ए० एक अ० अनंत प० प्रदेशिक ख० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा। एवं जाव एगा अणन्तपएसियाणं खन्धाणं वग्गणा ॥ ३६ ॥

भावार्थ-हवे द्रव्यथी पुदगळ कहे छे जे शस्त्रथी छेदाय नहि, अग्निमां बळे नहि, पाणीमां पलळे नहि, चर्म चक्षुनी नजरे आवे नहि, एवा परमाणुं पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. बेपरमाणुं भेगा थाय ते द्विप्रदेशी स्खंधनी तेमज त्रीप्रदेशी, चौप्रदेशी, यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशी स्खंधनी एकेकीज वर्गणा छे.

अर्थ-ए० एक ए० एक प० प्रदेशी गा० अवगाही रह्या पो० ते पुदगलनी व० वर्गणा जा० यावत ए० एक अ० असंख्याता क्षेत्र प० प्रदेश गा० आश्री रह्या ते पो० पुदगलनी एक व० वर्गणा.

एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असङ्खेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥३७॥

भावार्थ—हवे क्षेत्र आश्री पुदगळ कहे छे. जे पुद्गळ एक प्रदेश जग्या रोकी रहेल एवा पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. एमज बे त्रण यावत् असंख्यात पुद्गळ जग्या रोकी रहेल एवा पुद्गळनी वर्गणा एकेकीज छे. चौद राजलोक क्षेत्रना असंख्यात प्रदेश छे तेथी अनंतप्रदेश रोकी रहेल पुद्गळनी वर्गणा होय नहीं.

अर्थ-ए० एक ए० एक स० समयनी ठि० स्थिति छे ते पो० पुदगलनी व० वर्गणा जा० यावत अ० असंख्यात समयनी ठि० स्थितिना पो० पुदगलनी व० वर्गणा.

एगा एगसमयट्ठिइयाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव असङ्खेज्जसमयट्ठिइयाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥ ३८ ॥

भावार्थ-हवे काळथी पुद्गल कहे छे. परमाणुंपणे तथा क्षेत्रना एक प्रदेश आश्रीतपणे एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. एमज बे, त्रण यावत् असंख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गळनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक ए० एक गु० गुणकाला पुदगलनी व० वर्गणा जा० यावत ए० एक अ० असंख्यात गुणकाला पुदगल व० वर्गणा

एगा एगगुणकालगाणं वग्गणा जाव एगा असङ्खेज्जगुणकालगाणं वग्गणा ॥ ३९ ॥

भावार्थ-हवे भावथी पुद्गल कहे छे, जेम

पाणीनुं वासण भरेल होय तेमांही काळा रंगनुं एक टीपुं नाखीये ते अल्पथी काळाश होवाथी जणाय नहीं, पण अंदर काळोरंग छे, एवां एक गुण काळा पुद्‌गळनी वर्गणा एकज छे, एमज वे गुण, त्रीगुण यावत् असंख्यात गुण काळा पुद्‌गळनी वर्गणा एकजछे.

अर्थ–ए० एक अ० अनंतगुणकाला पुद्‌गलनी व० वर्गणा ए० एम व० वर्ण ग० गंधर० रस फा० फरस ए आटेनी एकेकी वर्गणा भा० जाणवी० जा० यावत ए० एक अ० अनंत गुण लु० लुखा पो० पुद्‌गलनी व० वर्गणा.

एगा अणन्तगुणकालगाणं वग्गणा। एवं वण्णगन्धरसफासा भाणियव्वा जाव एगा अणन्तगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥ ४० ॥

भावार्थ–एक अनंतगुण काळां पुद्‌गळनी वर्गणा एकेकीज छे. एमज एज रीते, पीळां, धोळां, रातां, लीलां पुद्‌गळ, सुगंधी, दुर्गंधी ए वे गंधना पुद्‌गळ खाटो १ मीठो २ तीखो ३ कडवो ४ कसायलो (हरम्यो) ५ ए पांचे रसना पुद्‌गळ, हलको १ भारे २ टाढो ३ उष्ण ४ लुखो ५ चोपड्यो ६ खरखरो ७ सुंहाळो ८ ए आठे स्पर्शना पुद्‌गळ ए सर्वे पुद्‌गळनी काळां पुद्‌गळनी पेरे एकेकीज वर्गणा छे.

अर्थ–ए० एक ज० जघन्य प० प्रदेशिक ख० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा जहन्नपएसियाणं खन्धाणं वग्गणा ॥ ४१ ॥

भावार्थ–जेह्मां परमाणुंआ थोडा होय एवां मे प्रदेशी स्कंधादीक जघन्य प्रदेशनी वर्गणा एकज छे.

ए० एक उ० उतकृष्ट प० प्रदेशिक ते अनंता परमाणुआनो ख० खंध तेहनी व० वर्गणा.

एगा उक्कोसपएसियाणं खन्धाणं वग्गणा ॥ ४२ ॥

भावार्थ–जेह्मां अनंता परमाणुंआ प्रदेश होय ते उत्कृष्ट प्रदेश स्वंधनी वर्गणा एकजछे.

अर्थ–ए० एक ज० मध्यम प० प्रदेशिक ख० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा जहन्नुक्कोसपएसियाणं खन्धाणं वग्गणा ॥ ४३ ॥

भावार्थ–मध्यम प्रदेश स्वंधनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ–ए० एम ज० जघन्य उ० अवगाहनाना उ० उतकृष्टी अवगाहनाना अ० मध्यम प्रदेशावगाढ ज० जघन्य एक समय ठि० स्थितिना पंधनी एक वर्गणा उ० उतकृष्ट असंख्यातासमय ठि० स्थितिना खंधनी अ० मध्यम ठि० स्थितिना प्रदेशनी वर्गणा ज० जघन्य गु० गुण का० कालापरमाणुना उ० उतकृष्ट गुणकाला पुद्‌गलनी अ० मध्यम गुणकाला प्रदेशनी एक वर्गणा ए० एम व० वर्ण गं० गंधर० रस फा० फर्शनी एकेकी व० वर्गणा भा० जाणवी जा० यावत ए० एक अ० मध्यम गु० गुण लु० लुषा पो० पुद्‌गलनी व० वर्गणा.

एवं जहन्नोगाहणगाणं उक्कोसोगाहणगाणं अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नट्ठिइयाणं उक्कोसट्ठिइयाणं अजहन्नुक्कोसट्ठिइयाणं जहन्नगुणकालगाणं उक्कोसगुणकालगाणं अजहन्नुक्कोसगुणकाल-

गाणं। एवं वण्णगन्धरसफासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव एगा अजहन्नुक्कोसगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥४४॥

भावार्थ–एम जघन्य अवगाहना (थोडामां थोडा प्रदेश रोकी रहेल) ना स्खंधनी १ मध्यम अवगाहना स्खंधनी २ उत्कृष्ट अवगाहनाना स्खंधनी ३ वर्गणा एकेकीज छे ए क्षेत्रथी कह्युं. काळथीजघन्य एक समयस्थितिनां स्खंधनी वर्गणा एकज छे. एम मध्यम स्थितिना स्खंधनी २ उत्कृष्ट स्थितिना स्खंधनी वर्गणा एकेकीज छे. एमजघन्य एक गुण काळा प्रदेश (पुदगळ) परमाणुआनी १ मध्यम गुण काळा प्रदेशनी. २ उत्कृष्ट अनंत गुण काळा प्रदेशनी वर्गणा एकेकीज छे. एम शेष चार वर्णनी, वे गंधनी, पांच रसनी, आठ स्पर्शनी, ए सर्वेनी काळानी पेरेजघन्य, मध्यम, उत्कृष्टनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ–ए० एक ज० जबूद्वीप नामे द्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्रने जा० यावत मध्य भागे अ० अर्द्ध अंगुल च० वळी कि० कांइक वि०विशेषाधिक प० परिधि एहवो एकज छे.

एगे जम्बुद्दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धङ्गलगं च किंचिविसेसाहिं परिक्खेवेणं ॥

भावार्थ–जे सर्व द्वीपथी नानो जंबूवृक्षे करीने सहित तेलना पुडलाने आकारे तथा पुन्यमना चंद्रमाने आकारे गोळ, एक लाख जोजननो लांबो ने पहोळो, जेहनी त्रणलाख सोळ हजार बसेंने सतावीस जोजन, त्रण गाउ, एकसोने अठावीस धनुष्य, साडातेर आंगुल, एक जव, एक जु, एक लींख, छवाळाग्र झाझेरी परिधी छे, एवो सर्व द्वीप समुद्रने मध्यभागे जंबूद्विप नामे द्विप एकज छे. (वीजा जंबूद्वीप तो घणाय छे पण आटला प्रमाणवाळो सर्वेने मध्यभागे तो आ एकज जंबुद्वीप छे वीजो नथी.)

अर्थ–ए० एक स० श्रवण भ० भगवंत म० महावीर इ० आ ओ० अवसर्पिणीकाले च० रुषभादिक चोवीस ति० तिर्थंकरमांही च० छेहला ति० तिर्थंकर सि० कृतार्थ थया बु० केवली मु० कर्मथी मुकाणा स० सर्व दु० दुःखथकी प० रहीत थया एकलाज मोक्ष गया.

एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

भावार्थ–आ अवसर्पिणी काळमां ऋषभादिक तेवीस तिर्थंकर निर्वाण पधार्या बाद चौथा आराना त्रण वर्ष अने साडाआठ मास बाकी रह्या त्यारेछेल्ला चोवीसमा तिर्थंकर श्रमणभगवंत श्री महावीरदेव तत्वज्ञान पामी कर्मथी मुक्त थइ कर्मरुप दावानळ ओलवी शीतळीभुत थइ, सर्व दुःखथी रहित थइ एकलाज सिद्ध थया (तेविस तिर्थंकरनीसाथे वीजा घणाय जीवो मुक्ति गया छे पण महावीरदेवनी साथे बीजुं कोइ मुक्ति गयेल नथी.)

अर्थ–अ० अनुत्तर वेमानना दे० देवतानी काया ए० एक र० हाथनी उ० उर्ध्व उ० उंचपणे प० कही.

अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥

भावार्थ-पांच अनुत्तरविमान ते विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजीत ४ ए चार विमानना देवतानी काया एक हाथनीज उंची छे अने पांचमा स्वार्थसिद्ध विमानना देवतानी मुंढा हाथनी काया छे.

अर्थ-अ० आद्रा न० नक्षत्रनो ए० एक तारो प० कह्यो. १ चि० चित्रा न० नक्षत्रनो ए० एक तारो प० कह्यो. २ सा० सांति न० नक्षत्रनो ए० एकतारो प० कह्यो. ३

अद्दानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥ १॥
चित्तानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते॥ २॥
साइनक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥ ३ ॥

भावार्थ-आर्द्रा १ चित्रा २ स्वाती ३ ए त्रणे नक्षत्रनो अकेकोज तारो छे.

अर्थ-ए० एक प० प्रदेश आश्री गा० रह्या ते परमाणु पो० पुद्गल अ० अनंता प० कह्या ए० एम ए० एक स० समयनी ट्टि० स्थितिना पुदगल ए० एक गु० गुणकाला पो० पुदगल अ० अनंता प० कह्या छे. जा० यावत ए० एक गुण लु० लुखा पो० पुद्गल अ० अनंता प० कह्या तिर्थकरे.

एगपएसोगाढा पोग्गला अणन्ता पन्नत्ता । एवं एगसमयट्ठिइया एगगुणकालगा पोग्गला अणन्ता पण्णत्ता जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणन्ता पण्णत्ता ॥

भावार्थ-एक क्षेत्र प्रदेशे आश्रीत रहेलां परमाणुंरुप स्कंधरुप पुद्गळ अनंता छे. एम एक समयनी स्थितीनां पुद्गळ, एक गुण काळां पुद्गळ भगवंते अनंता कहेल छे. एम यावत् शेष चारे वर्णनां, बे गंधनां, पांच रसनां, आठ स्पर्शनां एक समयनी स्थितीना पुद्गळ अनंतां भगवंते कहेल छे.

ए० एक ठा० ठाणुं नामे अध्ययन स० संपूर्ण थयुं.

॥ एगट्ठाणं समत्तं ॥

(इतिश्री ठाणांगसूत्रना प्रथम ठाणांनो भावार्थ संपूर्ण थयो.) १.

॥ दुट्ठाणं ॥

[दुट्ठाणस्स प्रथमो उद्देसओ ।]

अर्थ-ज० जे पदार्थ अ० छे. ण० विषे लो० लोकने तं० ते स० सर्व दु० बे प्रकारे छे तं० ते बे प्रकार ज० कहे छे.

जदत्थि णं लोगे तं सव्वं दुपडोयारं । तं जहा ॥ १ ॥

भावार्थ-सुधर्मास्वामी पोताना जंबू नामना शिष्यने कहेता हवा के हे जंबू ? आ लोकने विषे सर्व पदार्थ बे प्रकारेछे ते कहुं छुं.

अर्थ-जी० जीव चेतना लक्षण चे० निश्चे अ० अजीव चेतना रहित चे० निश्चे.

जीवा चेव अजीवा चेव॥ २ ॥

भावार्थ-चैतन्य लक्षण रुप जीव अने चैतन्य लक्षण रहीत अजीव.

अर्थ–त० त्रस वेइन्द्री प्रमुप चे० निश्चे था० थावर पृथ्वी प्रमुप चे० निश्चे.

तसा चेव थावरा चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–हरता फरता वेइंद्रीयादीकत्र सजीव १ स्थीर रहे ते प्रथ्वी १ पाणी २ अग्नी ३ वायु ४ वनस्पति. ५ ए पांच स्थावर जीव. २ एवा बे प्रकारना जीव छे.

अर्थ–स० योनि सहित संसारी जीव चे० निश्चे अ० सिद्धना जीव चे० निश्चे.

सजोणिया चेव अजोणिया चेव ।२।

भावार्थ–एक योनी सहीत संसारी चौरासीलाख जीवा जोनीना जीव १ बीजा योनीरहीत सिद्धना जीव. २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–सा० आऊपा सहित चे० निश्चे अ० सिद्ध आऊपा रहित चे० निश्चे.

साउया चेव अणाउया चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–एक आयुष्य सहीत संसारी जीव. १ बीजा आयुष्य रहीत सिद्धना जीव २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–स० इंद्री सहित संसारी चे० निश्चे अ० अनेंद्री कहेतां सिद्ध चे० निश्चे.

सइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव ।४।

भावार्थ–एक इंद्रीयो सहीत संसारी जीव १ बीजा इंद्रीयो रहीत सिद्धना जीव २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–स० वेद सहित जीव चे० निश्चे अ० वेद रहित सिद्ध चे० निश्चे.

सवेयगा चेव अवेयगा चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–एक स्त्री, पुरुष, नपुंसक ए त्रण वेद सहीत संसारी जीव १ बीजा वेद रहीत सिद्धना जीव २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–स० शरीर सहित संसारी जीव चे० निश्चे अ० अरुपी सिद्ध चे० निश्चे.

सरूवी चेव अरूवी चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–एक शरीरादिके करी रुपी संसारी जीव. १ बीजा शरीरादिके रुप रहीत सिद्धना जीव. २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–स० पुद्गल सहित संसारी चे० निश्चे अ० अपुदगली सिद्ध चे० निश्चे.

सपोग्गला[1] चेव अपोग्गला चेव।७।

भावार्थ–एक कर्मादिक पुद्गल सहीत संसारी जीव. १ बीजा कर्मादीक पुद्गल रहीत सिद्धना जीव २ एवा बे प्रकारे जीव छे.

अर्थ–सं० भवनुं करवुं छे ते जीव चे० निश्चे अ० नथी भव करवा ते सिद्ध चे० निश्चे.

संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ–एक संसारे आश्रीत् भवभ्रमण रुप संसारी जीव. १ बीजा भवभ्रमण रहीत असंसारी सिद्धना जीव २ ए बे प्रकारे छे.

अर्थ–सा० सास्वतां सिद्ध चे० निश्चे अ० संसारी चे० निश्चे.

सासया चेव असासया चेव ॥ ९ ॥

भावार्थ–एक जन्म मर्ण रहीत सास्वता सिद्धना जीव. १ बीजा जन्म मर्ण सहीत असास्वता संसारी जीव ए बे प्रकारे छे.

अर्थ–आ० आकाशस्तिकाय चे० निश्चे नो० धर्मास्तिकायप्रमुप पाच चे० निश्चे.

आगासे चेव नोआगासे चेव ॥१॥

ए प्रमाणे जीवना भेद कथा, हवे अजीवना भेद कहे छे.

भावार्थ–धर्मास्तिकाय. १ अधर्मास्तिकाय.

२ पुद्गलास्तिकाय. ३ जीवास्तिकाय. ४ काळ. ५ ए पांच जेहने विषे बीलकुल नथी ते आकास्तिकाय. १ अने जेहने विषे धर्मास्तिकाय प्रमुख पांच छे तेनो–आकास्तिकाय, एवा वे प्रकारे अजीव छे.

अर्थ–ध० चालता आधार आपे तथा विरतिरुप धर्म चे० निश्चे अ० स्थिर राखे ते अथवा पाप चे० निश्चे.

धम्मे चेव अधम्मे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–पाणीमां जग्या नहीं छतां मच्छने जेम हरवा फरवानी मदद मळी शके छे तेज प्रमाणे आ चौदराज लोक जीव अने अजीवे करि संपुर्ण भरेला छे. कांइ पण जग्या खाली नथी तेनी अंदर जीव अजीवने हरवा फरवा वास्ते मदद करे छे एवा प्रकारनो आ लोकमां एक पदार्थ छे तेनुं नाम धर्मास्तिकाय १ अथवा विरतीरुप ते व्रत पचखाणरुप धर्म. १ सर्व वस्तुने स्थीर राखवा मदद करे तेवो आ लोकमां एक पदार्थ छे ते अधर्मास्तिकाय. २ अथवा पापने अधर्म०२ एवा वे भेद छे.

अर्थ–ब० कर्मनो बंध चे० निश्चे मो० कर्मनो छोडवो चे० निश्चे

बन्धे चेव मोक्खे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–जीवना असंख्यात प्रदेशे कर्म पुद्गळना संचयनुं मजबुत थवुं ते बंध १ अने ते कर्म पुद्गळनुं आत्म प्रदेशथी मुक्त थवुं ते मोक्ष. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–पु० दानादिक चे० निश्चे पा० हिंसादिक चे० निश्चे.

पुण्णे चेव पावे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–दानादीक शुभ कृत्ये करी सुखरुप शुभ कर्मनां पुद्गळोनो संचय ते पुन्य. १ जीव हिंसादीक अशुभ कृत्ये करी दुःखरुप अशुभ कर्मनां पुद्गळोनो संचय ते पाप. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–आ० कर्मनुं आववुं चे० निश्चे सं० कर्मनो रुंधवो चे० निश्चे.

आसवे चेव संवरे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–वीस तथा बेंताळीस प्रकारे कर्मनुं आववुं ते आश्रव. १ वीस तथा सतावन प्रकारे करी आवतां कर्मने रोकवुं ते संवर. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–वे० कर्मनी पीडा चे० निश्चे नि० तपे करि कर्मनुं सडवुं ते चे० निश्चे.

वेयणा चेव निज्जरा चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–ज्वरादिक कर्मनी पीडानुं भोगववुं ते वेदना १ बार प्रकारनी तपश्चर्याए करी आत्माना प्रदेशथी थोडां थोडां कर्मनुं दूर थवुं ते निर्जरा. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वे कि० क्रिया प० कहीछे तं० ते ज० कहेछे जी० जीवनो व्यापार छे जिहांते जीव क्रिया चे० निश्चे अ० अजीव क्रिया चे० निश्चे.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–जीहां जीवनो व्यापार छे ते जीवक्रीया १ कर्म पुद्गळनुं परगमवुं ते अजीवक्रीया. २ एवी वे प्रकारनी क्रीया श्री भगवंते कही छे.

अर्थ–जी० जीवनी क्रिया दु० वे प्रकारे प० कही तं० तेज कहे छे स० साचा तत्वनुं सद्दवुं ते चे० निश्चे मि० खोटातत्वनुं सद्दहवुं ते चे० निश्चे.

जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा । सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्तकिरिया चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–जीवक्रिया (जीवनो व्यापार ते) वे प्रकारे श्री भगवंते कहेली छे ते कहे छे साचा तत्वनुं श्रद्धवुं ते सम्यक्त्वक्रिया १ खोटा तत्वनुं श्रद्धवुं ते मिथ्यात्वक्रिया. २ एवी वे प्रकारनी जीवक्रिया जाणवी.

अर्थ–अ० अजीव क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहे छे इ० मार्गे चालवानी क्रिया चे० निश्चे सं० संजलना कषायनी क्रिया चे० निश्चे.

अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा । इरियावहिया चेव संपराइगा चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–अजीवक्रिया (अजीवनो व्यापार) ते वे प्रकारे श्रीभगवंते कही छे ते कहे छे, मार्गे चालतानी क्रिया ते इर्या पथीकी क्रिया कहीए (चालतां कर्म बंधाय ते कर्म अजीव छे अने चालवुं ते जीवनो व्यापारछे तो पण इहां अजीवनुं प्रधान्य (श्रेष्ट) पणुं कह्युं ते माटे ए अजीवक्रिया एम समजी जाणवुं) १ संजलनी कषायथी उपनी क्रिया अजीव कर्म पुद्गळनी रासी ते संपराइ क्रिया २ एवी वे प्रकारनी क्रिया जाणवी.

अर्थ–दो० वे क्रिया प० कही तं० तेज० कहे छे का० कायाना व्यापारथी लागे ते क्रि० चे० निश्चे आ० हल मूसपथी पापलागे ते क्रिया चे० निश्चे.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । काइया चेव आहिगरणिया चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारनी क्रिया अजीव छे पण वारमा गुण ठाणा सुधी जीवने लागे छे एम श्री भगवंते कहेल ते कहे छे, कायाना व्यापारथी लागे ते कायाकी क्रिया १ धातु काष्ट पथरादिकनां शस्त्रोथी पापलागे ते अधीकरणनी क्रिया २ ए वे भेदछे.

अर्थ–का. कायानी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं अ० पापथी निवर्त्यो नथी ते चे० निश्चे दु० माठे परिणामे काया प्रवर्तावेते चे० निश्चे.

काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा । अणुवरयकायकिरिया चेव दुप्पउत्तकायकिरिया चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–काइया क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेलछे ते कहे छे. आ काया गया जन्ममां घणा काळथी वोसीराव्या वीना आव्यो छे ते कायानां शस्त्रादीक वनवे जे जे हिंसा थाय छे तेनी क्रिया लागे छे ते १ आ काया हजु मिथ्यात्व अव्रतादीक पापथी निवर्तावीनथी तेथी ते काइया क्रिया मिथ्यात्वीने तथा समकीतदृष्टीने पण लागे तथा पांच इंद्रीयोने आश्रीने इष्ट आनिष्ट वस्तुथी जे सुख दुःख उपजे अथवा मनना माठा संकल्प करवे प्रमत्त (ममाटी) साधुने पण लागे छे. घणा काळथी गया जन्मनी कायाओ वोसीराव्या वीना आव्यो छे ते कायाना शस्त्रादीक वनवे जे जे हिंसा थाय छे तेनी क्रिया लागे छे. २ ए वे भेद काइया क्रियाना जाणवा.

अर्थ–आ० अधिकरणी कि० क्रिया दु० वेप्रकारे प० कही तं० तेज० कहुंछुं सं० संयोजनाधिकरणनी क्रिया पडगने मूठिए संजोगना चे० निश्चे नि० वंदी प्रमुख सजकरी राखे चे० निश्चे.

आहिगरणिया किरिया दुविहा पण्ण-

त्ता तं जहा । संजोयणाहिगरणिया चेव निव्वत्तणाहिगरणिया चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–अधीकरणनी क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. खडगने मुंठ जोडवी, पाळीने हाथो जोडवो इत्यादीक शस्त्रोनो संयोग मेळववो तेनी क्रिया लागे १ खडगादीक शस्त्रो नवां कराववां अथवा जुनां घंटी, मुसल (सांबेलु) हळादीक फरी सज कराववां तेनी क्रिया लागे छे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहे छे पा० मिश्र अदेखाइ करे ते चे० निश्चे पा० परले दुःख उपजे ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । पाओसिया चेव पारियावणिया चेव ।७।

भावार्थ–हवे अजीव पुद्गळनी बे प्रकारे क्रिया भगवंते कहेल छे ते कहे छे, कोइना उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे १ कोइने ताडनादीके करी परिताप उपजावे तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–पा० प्रद्वेष कि० क्रिया दु० बे प्रकारे प० कही त० ते ज० कहुं छुं. जी० कोइ जीवनो द्वेष करे ते चे० निश्चे अ० भींत थांभला प्रमुखे अथडाय ने ते उपर रीस चढावे ते चे० निश्चे.

पाओसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । जीवपाओसिया चेव अजीवपाओसिया चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ–हवे कोइना उपर द्वेष करे ते पाउसीया क्रियाना बे भेद कहेल ते कहे छे कोइ जीव उपर द्वेष करे तो तेनी क्रिया लागे १ भींत थांभले अथवा पाषाण प्रमुखे अथडाय त्यारे ते अजीव उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ए बे भेद छे.

अर्थ–पा० परने दुःख उपजे ते कि० क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० परने तथा पोताना शरीरने दुःखदीए ते चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पोताना परना पा० प्राण हणे ते चे० निश्चे.

पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया चेव ॥९॥

भावार्थ–परने परिताप उपजावे ते पारितावणीया क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे पोताने हाथे पोते तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे १ परने हाथे पोताने तथा परने परिताप करे तेनी क्रीयालागे २ ए बे भेदछे,

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज. कहुंछुं पा० जीवहिंसाथी पाप कर्म बंधाय ते चे० निश्चे अ० अविरतिथी कर्म बंधाय ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । पाणाइवायकिरिया चेव अपच्चक्खाणकिरिया चेव ॥ १० ॥

भावार्थ–हवे बे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे प्राणातिपातनी क्रिया १ व्रत पचखाण नहीं करवाथी अप्रत्याख्याननी क्रियालागे २ ए बे भेदछे.

अर्थ–पा० प्राणातिपातनी क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते ज. कहुंछुं स० पोताने ह० हाथे पा० प्राणी हणेने चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पा० पोतानापरना प्राणहणे ते चे. निश्चे.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता। तं जहा। सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव॥ ११ ॥

भावार्थ–प्राणातिपातनी क्रियाना बे भेद, पोताना हाथे पोताना प्राणने तथा क्रोधे करी परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे १ तेमज परना हाथे पोतानां तथा परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–अ० अपत्याखानकी क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं जीव० सचितना अ० पचखाण विना कि० कर्म बांधे ते चे०निश्चे अ० अजीव मदिरादिकना अ० पचखाण विना कि० कर्म बांधे ते चे० निश्चे

अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता। तं जहा। जीवापच्चक्खाणकिरिया चेव अजीवापच्चक्खाणकिरिया चेव॥१२॥

भावार्थ–अपत्याख्याननी क्रियाना बे भेद कहेल छे ते कहे छे, जीवनां पचखाण कर्या नथी तेनी क्रिया लागे १ अजीवनां पचखाण कर्या नथी तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं०ते ज० कहुं छुं आ० आरंभकी चे० निश्चे पा० परिग्रहीकी चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। आरम्भिया चेव पारिग्गहिया चेव॥१३॥

भावार्थ–हवे बे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे एक आरंभनी १ बीजी परिग्रहनी २ ए बे भेद छे.

अर्थ–आ० आरंभकी कि० क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं जी० सचित्तना आरंभथी कर्म बंधाय ते चे० वळी अ० अचित्त वणवा प्रमुख आरंभनी क्रिया चे०वळी,

आरम्भिया किरिया दुविहा पन्नत्ता। तं जहा। जीवआरम्भिया चेव अजीवआरम्भिया चेव॥ १४ ॥

भावार्थ–आरंभीया क्रियाना बे भेद कहेल छे ते कहे छे, जीवनो आरंभ करे तेनी क्रिया लागे १ जीव रहीत कलेवरने अग्नीसंस्कार अथवा वस्त्रादी वणवानो आरंभ करे तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम पा० परिग्रहनी बे जीव अजीव वि० वळी.

एवं पारिग्गहिया वि॥ १५॥

भावार्थ–एमज परिग्रहनी क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेलछे ते कहेछे, मनुष्यादिक जीवनो परिग्रह मेळवे तो क्रिया लागे १ सुवर्ण तथा ग्रहादीक अजीवनो परिग्रह मेळवे तो तेनी क्रियालागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं मा० कपट करवाथी, लागे ते चे० वळी मि० मिथ्यात्व करणीथी कर्म बंधाय ते चे० वळी

दो किरियाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। मायावत्तिया चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव॥ १६॥

भावार्थ–बे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे एक कपटथी क्रिया लागे ते १ बीजी मिथ्यात्व करणी करवे क्रिया लागे २ ए बे भेदछे.

अर्थ–मा० मायाकपटनी कि० क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुं छुं आ० अभ्यंतर बांका चाग रुडा परिणाम देखाडे ते चे० वळी प० परनेवंचे कुडा लेखादिके ते चे० वळी.

मायावत्तिया किरिया दुविहा पन्न-

त्ता तं जहा । संजोयणाहिगरणिया चेव निव्वत्तणाहिगरणिया चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–अधीकरणनी क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. खडगने मुंठ जोडवी, पाळीने हाथो जोडवो इत्यादीक शस्त्रोनो संयोग मेळववो तेनी क्रिया लागे १ खडगादीक शस्त्रो नवां कराववां अथवा जुनां वंटी, मुसल (सांबेलु) हळादीक फरी सज कराववां तेनी क्रिया लागे छे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहे छे पा० मिश्र अदेखाइ करे ते चे० निश्चे पा० परने दुःख उपजे ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा। पाओसिया चेव पारियावणिया चेव ।७।

भावार्थ–हवे अजीव पुद्गळनी बे प्रकारे क्रिया भगवंते कहेल छे ते कहे छे, कोइना उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे १ कोइने ताडनादीके करी परिताप उपजावे तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–पा० प्रद्वेष कि० क्रिया दु० बे प्रकारे प० कही त० ते ज० कहुं छुं. जी० कोइ जीवनो द्वेष करे ते चे० निश्चे अ० भीत थांभला प्रमुखे अथडाय ने ते उपर रीस चडावे ते चे० निश्चे.

पाओसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । जीवपाओसिया चेव अजीवपाओसिया चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ–हवे कोइना उपर द्वेष करे ते पाउसीया क्रियाना बे भेद कहेल ते कहे छे कोइ जीव उपर द्वेष करे तो तेनी क्रिया लागे १ भींत थांभले अथवा पाषाण प्रमुखे अथडाय त्यारे ते अजीव उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ए बे भेद छे.

अर्थ–पा० परने दुःख उपजे ते कि० क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० परने तथा पोताना शरीरने दुःखदीए ते चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पोताना परना पा० प्राण हणे ते चे० निश्चे.

पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया चेव ॥९॥

भावार्थ–परने परिताप उपजावे ते पारितावणीया क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे पोताने हाथे पोते तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे १ परने हाथे पोताने तथा परने परिताप करे तेनी क्रीयालागे २ ए बे भेदछे,

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज. कहुंछुं पा० जीवहिंसाथी पाप कर्म बंधाय ते चे० निश्चे अ० अविरतिथी कर्म बंधाय ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । पाणाइवायकिरिया चेव अपच्चक्खाणकिरिया चेव ॥ १० ॥

भावार्थ–हवे बे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे प्राणातिपातनी क्रिया १ व्रत पचखाण नहीं करवाथी अप्रत्याख्याननी क्रियालागे २ ए बे भेदछे.

अर्थ–पा० प्राणातिपातनी क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते ज. कहुंछुं स० पोताने ह० हाथे पा० प्राणी हणने चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पा० पोतानापरना प्राणहणे ते चे. निश्चे.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ–प्राणातिपातनी क्रियाना वे भेद, पोताना हाथे पोताना प्राणने तथा क्रोधे करी परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे १ तेमज परना हाथे पोतानां तथा परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अप्रत्याखानकी क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं जीव० सचितना अ० पचखाण विना कि० कर्म वांधे ते चे०निश्चे अ० अजीव मदिरादिकना अ० पचखाण विना कि० कर्म वांधे ते चे० निश्चे

अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । जीवापच्चक्खाणकिरिया चेव अजीवापच्चक्खाणकिरिया चेव ॥१२॥

भावार्थ–अप्रत्याख्याननी क्रियाना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, जीवनां पचखाण कर्यां नथी तेनी क्रिया लागे १ अजीवनां पचखाण कर्यां नथी तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे

अर्थ–दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं०ते ज० कहुं छुं आ० आरंभकी चे० निश्चे पा० परिग्रहीकी चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । आरम्भिया चेव पारिग्गहिया चेव॥१३॥

भावार्थ–हवे वे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे एक आरंभनी १ बीजी परिग्रहनी २ ए वे भेद छे.

अर्थ–आ० आरंभकी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं जी० सचित्तना आरंभथी कर्म बंधाय ते चे० वळी अ० अचित वणना प्रमुख आरंभनी क्रिया चे०वळी.

आरम्भिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । जीवआरम्भिया चेव अजीवआरम्भिया चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ–आरंभीया क्रियाना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, जीवनो आरंभ करे तेनी क्रिया लागे १ जीव रहीत कलेवरने अग्नीसंस्कार अथवा वस्त्रादी वणवानो आरंभ करे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–ए० एम पा० परिग्रहनी वे जीव अजीव वि० वळी.

एवं पारिग्गहिया वि ॥ १५ ॥

भावार्थ–एमज परिग्रहनी क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेलछे ते कहेछे, मनुष्यादिक जीवनो परिग्रह मेळवे तो क्रिया लागे १ सुवर्ण तथा ग्रहादीक अजीवनो परिग्रह मेळवे तो तेनी क्रियालागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहुं छुं मा० कपट करवाथी, लागे ते चे० वळी मि० मिथ्यात्व करणीथी कर्म बंधाय ते चे० वळी

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । मायावत्तिया चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ–वे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे एक कपटथी क्रिया लागे ते १ बीजी मिथ्यात्व करणी करने क्रिया लागे २ ए वे भेदछे.

अर्थ–मा० मायाकपटनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुं छुं आ० अभ्यंतर वांकां बाह्य रुडा परिणाम देखाडे ते चे० वळी प० परनेवंचे कुडा लेखादिके ते चे० वळी.

मायावत्तिया किरिया दुविहा

त्ता । तं जहा । आयभाववङ्कणया चेव परभाववङ्कणया चेव ॥ १७ ॥

भावार्थ–मायावतीया ते कपटथी लागे ते क्रियाना बे भेद कहेल छे ते कहेछे, अंदर पोते वांकां आचरण आचरे अने बाहीर रुडां करी देखाडे तो पोताना आत्माने छेतरवा रुप क्रिया लागे १ पोते खोटा लेखादीके करी परने छेतरे तथा पोते परनी पासे वांकां आचरण आचरावे तो क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–मि० मिथ्यात्व दर्शन कर्म कि० क्रिया दु० बे प्रकारे प० कही तं० तेज० कहुं छुं उ० जिनवचनथी ओछुं अधिकमांने परुपे ते तथा पोताना शरीर प्रमाणे आत्मा न माने ते चे० वळी त० जीव न माने पंच भूत मल्याछे एम कहे ते चे० वळी.

मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव तवइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव ॥ १८ ॥

भावार्थ–मिथ्यात्वदर्शनवतिया क्रियाना बे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, जे जीवनुं जेटलुं शरीर होय तेटलो जीव मानवानुं भगवंते कहेल छे, तेम छतां कोइ अंगुठाना पर्व जेवडो जीव माने, कोइ सामलीय धानना कण जेवडो माने. कोइ पांचसे धनुष्यथी पण मोटो माने, एवी रीते न्युनाधीक श्रद्धेने न्युनाधीक परुपे तेनी क्रिया लागे १ केटलाक कहे जे न्युनाधीक आत्मा छेजनहीं. पृथ्वी १ पाणी २ अग्नी ३ वायु ४ आकाश ५ ए पांच भूत मल्यां छे एथी आ हलवाफलवादी सर्व क्रिया थाय छे. ज्यारे पंचभुत विखराइ जइ पोतपोताना स्वरुपमां मळी जशे त्यारे पुन्य पाप कांइ भोगववानुं छेज नहीं, ए पंचभूतथी जुदो छठो आत्मा कोइ नथी इत्यादीक विपरित श्रद्धेने विपरितपरुपे तेनी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहुं छुं दि० दृष्टि जोवाथी कर्म बंधाय ते पु० पाप कथानुं पुछवुं तथा फरसवुं.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चेव ॥१९॥

भावार्थ–हवे बे क्रीया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, इंद्रीये जोवाथी क्रिया लागे १ बीजी हाथ प्रमुख स्पर्शवाथी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दि० द्रष्टिनी कि० क्रिया दु० बे प्रकारे पं० कही तं तेज० कहुं छुं जी० जीवनुं रुपादिक जोतां लागे ते चे० वळी अ० चित्रामण जोतां पाप बंधाय ते चे० वळी.

दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा । जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव ॥ २० ॥

भावार्थ–द्रष्टिये जोवाथी क्रिया लागे तेना बे भेद कहेल छे ते कहे छे. हाथी, घोडा, स्त्री, पुरुष, भवाइया प्रमुख जीवने जोवाथी तथा पापनुं प्रश्न पुछवाथी क्रिया लागे १ चित्रामण प्रमुख अजीवने जोवाथी क्रिया लागे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम पु० जीव फरसनाथी अजीव फरसनाथी वि० पण.

एवं पुट्ठिया वि ॥ २१ ॥

भावार्थ–एमज पुठीया क्रियाना बे भेद कहेल छे ते कहेछे. जीवने स्पर्शवाथी क्रिया लागे १ अजीवने स्पर्शवाथी तथा राग द्वेष

जीव अजीवनुं प्रश्न पुछे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहुंछुं पा० प्राणाति प्रातित्यकी क्रिया वाद्य वस्तु ने आश्रीने चे०वळी सा० सर्व प्रकारे लोकना मेलावाथी उपनी ते चे० वळी.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । पाडुच्चिया चेव सामन्तोवणिवाइया चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया कहेल छे ते कहेछे, कोइनुं भुंडुं वांछे तो क्रिया लागे १ वस्तुनो समुदाय मेळववाथी क्रिया लागे २ ए वे भेदछे.

अर्थ—पा० प्रातित्यकी कि० किया दु० वे प्रकारे प० कही तं० तेज० कहुं छुं जी० जीवने आश्रीने कर्म बंधाय ते चे० वळी अ० अजीवथी राग द्वेष उपजे ते चे० वळी.

पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा । जीवपाडुच्चिया चेव अजीवपाडुच्चिया चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ—हवे परनुं भुंडुं वांछे ने क्रियाना वे भेद कहेलछे ते कहेछे. कोइ जीवनुं भुंडुं वांछे तथा स्त्रीयादिक जीवने आश्रीने कर्म बंधाय तेनी क्रिया लागे १ अजीवनुं भुंडुं वांछे तथा घर सुवर्णादीक अजीव आश्री रागद्वेषथी जे कर्म बंधाय तेनी क्रिया लागे. २ ए वे भेदछे.

अर्थ—ए० एम सा० सामंत उपनीत क्रिया जाणवी जीव अजीव आश्रीने वि० पण

एवं सामन्तोवणिवाइया वि ॥ २४ ॥

भावार्थ—एमज वस्तुनो समुदाय मेळववाथी क्रिया लागे तेना वे भेद कहेल छे ते कहेछे पोताना घोडा, हाथी, स्त्री, प्रमुख रुपवंत देखीने जेम जेम लोक वखाणे अथवा जोवे तेम तेम तेहनो धणी खुशी थाय अथवा एवा जीवनो समुदाय मेळवे तेनी क्रिया लागे १ तेमज घर प्रमुख नवां रमणीक वनावेल होय तेने जोइ लोक वखाणे त्यारे तेनो धणी खुशी थाय अथवा एवां घराकीक अजीवनो समुदाय मेळवे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया प० कही तं० तेज० कही सा० पोताने हाथेथी उपनी ते चे० वळी ने० नाखवाथी उपनी ते चे०वळी

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । साहत्थिया चेव नेसत्थिया चेव ॥ २५ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्रीभगवंते कहेल छे ते कहेछे पोताना हाथथी पाप करे तेनी क्रिया लागे १ पाषाणादीक नाखवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—सा० स्वहस्तकी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुं छुं जी० जीवने पोताने हाथे हणे ते चे० वळी अ० अजीव पोताने हाथे खडगादिक करी हणे ते चे० वळी.

साहत्थिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव ॥ २६ ॥

भावार्थ—पोताना हाथथी पाप करे ते क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, पोताना हाथे झाली जीवे करी जीवने हणे तेनी क्रिया लागे १ खड्गादि शस्त्रथी अजीव करी जीवने हणे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम ने० नाखवुं पाणी प्रमुख अजीव बाण प्रमुख वि० पण.

एवं नेसत्थिया वि ॥ २७ ॥

भावार्थ–एमज पाषाणादिक नाखवाथी क्रिया लागे तेना पण बे भेद श्री भगवंते कहेल छे कहेछे, राजादीकनी आज्ञाथी फुआरा प्रमुख यंत्रद्वाराए करी पाणी उछाळवुं तेम जीवने नाखीदीये तेनी क्रिया लागे १ नाळ प्रमुख मेळवीने धनुष्य बाणनुं नाखवुं, तेम कोइ जीवनी विराधना थाय एवी रीते अजीवने नांखीदीये तेनी क्रिया लागे २ एने सथियाक्रियाना बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे प्रकारे कि० क्रिया प० कही तं० तेज० कहुं छुं आ० स्वामीनी आज्ञाथी कर्म बंध ते चे० वळी वे० विदारवुं छेदवुं तेहथीकर्म बंध ते चे० वळी.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । आणवणिया चेव वेयारणिया चेव ॥ २८–२९ ॥

भावार्थ–हवे बे प्रकारनी क्रिया श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे. स्वामी (मालीक) नी आज्ञाथी कर्म बंधाय ते आज्ञापनी क्रिया कहीए १ कोइने विदारे छेदे तो तेहथी कर्म बंधाय ते विदारणि क्रिया २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ज० जेम ने० नेसथिया कही तेम ए पण.

जहेव नेसत्थिया ॥ ३० ॥

भावार्थ–जेम नेसथिया क्रियाना बे भेद कहेलछे तेमजविदारणि क्रियाना पण बेभेदजाणवा

अर्थ–दो० बे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहुं छुं अ० उपयोग विना निद्धंसपणे अज्ञानपणाथी कर्म बंधाय ते चे० वळी अ० पोताना शरीरनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते चे० वळी,

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । अणाभोगवत्तिया चेव अणवकङ्खवत्तिया चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थ–वळी बीजी बे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. अज्ञानपणाथी उपयोग विना निधंस (पापनी सुगरहीत) पणे कर्म बंधाय ते अना भोगवतिया क्रिया १ पोताना शरीरनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते अणवकांक्षावतिया क्रिया २ ए बे भेद छे.

अर्थ–अ० उपयोग विना अज्ञानपणाथी कर्म बंधाय ते कि० क्रिया दु० बे प्रकारे प० कही तं० तेज० कहे छे अ० उपयोग विना वस्त्रादिकनुं लेवुं ते चे० वळी अ० उपयोग विना पुजवुं तेथी कर्म बांधे ते चे० वळी.

अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । अणाउत्तआयणया चेव अणाउत्तपमज्जणया चेव ॥३२॥

भावार्थ–अनाभोगवतिया क्रियाना बेप्रकार श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे उपयोग विना वस्त्रादीक लेवा मुकवाथी १ उपयोग विना पुंजवा प्रमार्जवाथी २ ए बे भेद छे.

अर्थ–अ० पोताना शरीरनी अपेक्षा विना कि० क्रिया लागे ते दु० बे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं आ० आत्म शरीरथी पापलागे तेहवां कर्म करेने चे० वळी प० परना शरीरथी अं० पाप करतां क्रियालागे ते चे० वळी

अणवकङ्खवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । आयसरीरअणवकङ्खवत्तिया चेव परसरीरअणवकङ्खवत्तिया चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थ–अणवकांक्षावतिया क्रियाना बे

भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे पोताना शरीर थकी पाप लागे तेहवां कर्म करे १ परना शरीरथी पाप कर्म करतां पाप लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं पे० प्रेम स्नेहथी क्रिया चे० वळी दो० द्वेषकोपनी क्रिया चे० वळी.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ॥ ॥ ३४ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारनी क्रिया श्रीभगवंते कहेल छे ते कहेछे. कोइना उपर प्रेम करवाथी क्रिया लागे १ कोइना उपर द्वेष करवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–पे० प्रेमनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं मा० माया कपटनी प्रेम क्रिया चे० वळी लो० लोभथी रागधरे ते द्वेषनी क्रिया चे० वळी.

पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ॥ ३५ ॥

भावार्थ–प्रेमथी लागे ते क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. कपटथी कर्म बंधाय १ लोभथी कर्म बंधाय २ (अर्थात् जे वस्तु उपर प्रिति थइ त्यां कपट लोभ करेज) ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० द्वेष कोपनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं को० क्रोधथी कर्म बंध ते चे० वळी मा० मानथी कर्म बंध ते चे० वळी.

दोसवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । कोहे चेव माणे चेव ॥३६॥

भावार्थ–द्वेष करवाथी क्रिया लागे तेहना वे भेद श्री भगवंते कहेलछे ते कहेछे क्रोधथी कर्म बंधाय १ मानथी कर्म बंधाय २ (अर्थात् जे वस्तु उपर द्वेष थाय त्यां त्यां क्रोधमान करेज. जेम कोणिक राजाए विशाळानगरी भांगी ते निरीयावळीकासुत्रथी जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ–दु० वे प्रकारे ग० गरहणा छे (पापनी निंदा) पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मनेकरी वे० एक ग० पापने निंदे व० वचने करीने वे० एक पापने ग० निंदे.

दुविहा गरहा पणत्ता । तं जहा । मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ ॥ १ ॥

भावार्थ–पुर्वोक्त सर्व क्रिया निंदनीक छे तेथी हवे वे प्रकारे गर्हा (निंद्या) कहेल छे ते कहेछे, एक करेल पापनो पस्तावो पोताना मनथी करी ते पापने निंदे १ एक लोकने रीझववा फक्त वचनथीज करेल पापने निंदे पण मनथी निंदे नहीं २ ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अथवा ग० पापनी निंदा दु० वे प्रकारे प० कही छे तं० ते ज० कहुंछुं दी० जन्म पर्यंत पे० एक अ० काळनां ग० पापनिंदे र० थोडा पे० एक अ० काळनां पाप ग० निंदे.

अहवा गरहा दुविहा पणत्ता । तं जहा । दीहं पेगे अद्धं गरहइ रहस्सं पेगे अद्धं गरहइ ॥ २ ॥

भावार्थ–अथवा वळी वे प्रकारे निंद्या श्री भगवंते कहेल छे ते कहेछे. एक प्राणी दीर्घ (लांबा) काळ ते जन्म पर्यंत अनुक्रमे करेल पापने निंदे १-एक प्राणी थोडा काळना ते दश पंदर वर्षना करेल पापने निंदे २ ए वे भेदछे.

अर्थ–दु० बे प्रकारे प० पचखाण० प० कह्या तं० तेज०कहुंछुं,म० मनथी शुद्ध वे० एक जीव प० पचखाण करे (समकिति) व० वचनेकरी वे० एकजीव प० पचखे भाव विना ते.

दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणसा वेगे पच्चक्खाइ वयसा वेगे[3] पच्चक्खाइ ॥ १ ॥

भावार्थ–हवे बे प्रकारना पचखाण श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे. एक समकीतद्रष्टि जीव पोताना खरा मनथी भाव शुद्धिए करी पचखाण करे (इहां द्रव्ये भावे बन्ने प्रकारे पचखाण जाणवा) १ एक मिथ्यात्वद्रष्टि मन विना फक्त वचनथीज पचखाण करे(इहां द्रव्य पचखाण जाणवां) २ ए बे भेद छे.

अर्थ–अ० वळी प० पचखाण दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं दी० जावजीवनां वे० एक अ० कालना प० पचचाण करे र० थोडा वे० एक अ० कालनुं प० पचखाण करे.

अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाइ रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाइ ॥ २ ॥

भावार्थ–अथवा वळी बे प्रकारे पचखाण श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. एक प्राणी दीर्घ काळ ते जाव जीव सुधीनुं पचखाणकरे १ एक थोडा काळनुं पचखाण करे २ ए बे भेदछे.

अर्थ–दो० बेठा० प्रकारे सं० सहित अ०साधुने अ० आदिनथी जेहने अ० नथी छेहडो जेहनो दी० घणोकाल छे जेहने चा० चारगतिना सं० संसार रुप कं० अठवी वी० अति क्रमे साधु तं० तेज० कहुं छुं वि० सम्यकत्व ते ज्ञानेकरी चे० वळी च० चारित्रे करीमोक्ष पामे चे० वळी.

दोहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं वीतीवएज्जा । तं जहा । विज्जाए चेव चरणेण चेव ॥

भावार्थ–जेहनी आदी नथी अने अंत पण नथी एवि चार गतीरुप मोटी अटवीने साधु बे प्रकारे करी ओलंघी जाय ते ज्ञाने करी अने चारित्रे करी २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे ठा० थानक अ० ए दुःखदाइ छे एम जाण्या विना नो० नहीं आ० आत्मा क० केवली प० भाप्यो ध० धर्म प्रते ल०पामे स० सांभलवेकरी तं० तेज० कहुं छुं आ० आरंभ क्षेत्रादिकनो चे० वळी प० परिग्रह धन प्रमुख ए बे जे न तजे ते.

दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नोकेवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा । आरम्भे चेव परिग्गहे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–बे स्थानक ज्ञानबुद्धिये अनर्थना कारण जाणीने छांडे नहीं तो ते जीव केवळीपरुप्यो धर्म सांभळवो पामे नहि ते बे स्थानक कहे छे. क्षेत्रादीकनो आरंभ १ अने धन धान्यादीक परिग्रह २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे ठा० थानक अ० ए माठां छे एहवुं जाण्याविना आ० जीव णो० नही के० केवलीनो बो० प्रतिबोध प्रति बु० पामे तं० तेज० कहुं छुं आ० आरंभ चे० वळी प० परिग्रह चे० वळी.

दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलं बोहिं बुज्झेज्जा । तं जहा । आरम्भे चेव परिग्गहे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–बे स्थानक ज्ञानबुद्धिये अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नही, तो ते जीन केवळीप रुपेल समकितरुप बोधबीज पामे नहीं ते बे स्थानक कहे छे. आरंभ १ परिग्रह २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे ठा० थानक प्रते अ० ए बंधन छे एहवुं जाण्याविना आ० जीव नो० नही के० केवलीनो साधु मु० केशे तथा रागद्वेषे रहित भ० थईने अ० घरमुकीने अ० साधुपणुं प० पामे तं० तेज० कहुं छुं अ० आरंभ चे० वली प० परिग्रह ए बेन मुके चे०वळी.

दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नोकेवलं मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा। तं जहा। अरम्भे चेव परिग्गहे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–बे स्थानक ज्ञानबुद्धिये अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नहीं, तो ग्रहस्थावास मुकी द्रव्यभावथी मुंड थइ अणगार पणुं धारण करी शके नहीं ते बे स्थानक कहे छे, आरंभ १ परिग्रह २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम बे थानक जाण्या विना नो० नहीं के० शुद्ध बं० ब्रह्मचर्यने आ० सेवी शके.

एवं नोकेवलं बम्भचेरवासं आवसेज्ज ॥ ४ ॥

भावार्थ–एमज ए बे स्थानकने अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नहीं तो शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळी शके नहीं.

अर्थ–नो० नहीं के० शुद्ध सं० छकायनी रक्षारुप सं० संजम पाळी शके.

नोकेवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ॥५॥

भावार्थ–छ काय जीवना रक्षण रुप शुद्ध संयम पाळी शके नहीं.

अर्थ–नो० नहीं के० शुद्ध सं० संवर सं० पामे.

नोकेवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ॥६॥

भावार्थ–शुद्ध संवरे करी आश्रवद्वार रुंधी शके नहीं,

अर्थ–नो० नहीं के० शुद्ध आ० मतिज्ञान परिग्रह आरंभ छोड्या विना उ० पामे.

नोकेवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ॥ ७ ॥

भावार्थ–तेमज आरंभ परिग्रह ए बे छांडत्या वीना शुद्ध सर्व वस्तु ग्राहक मतिज्ञान पामे नहीं

अर्थ–ए० एम सु० सूत्रज्ञान.

एवं सुयनाणं ॥ ८ ॥

भावार्थ–एम श्रुतज्ञान

अर्थ–उ० अवधिज्ञान.

ओहिनाणं ॥ ९ ॥

भावार्थ–अवधिज्ञान

अर्थ–म० मनना भाव जाणे ते ज्ञान न पामे.

मणपज्जवनाणं ॥ १० ॥

भावार्थ–मनपर्यवज्ञान

अर्थ–के० केवलज्ञान न पामे ए ११ बोल.

केवलनाणं ॥ ११ ॥

भावार्थ–केवळज्ञान पण पामे नहीं ए ११ बोल थया.

अर्थ–दो० बे ठा० थानक प० ए छांडत्रा जोग एम जाणीने आ० जीव के० केवलीनो प० भाख्यो ध० धर्म प्रते ल० पामे स० सांभलवे. करी तं० ते ज० कहुंछुं. आ० आरंभ चे० वळी प० परिग्रह चे० वळी ए० एम जा० यावत के० केवळ ज्ञान उ० पामे आरंभ परिग्रह तजे ते ए ११ बोल पामे.

दो ठाणाइं परियाणित्ता आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए। तं जहा। आरम्भे चेव परिग्गहे चेव। एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा॥ [१–११] ॥१॥

भावार्थ–आरंभ ने परिग्रह ए वे अनर्थना हेतु जाणीने छोडे तो ते जीव केवळीपरुप्यो धर्म सांभळवो पामे १, समकित रुम बोधबीज पामे २, द्रव्य भावथी मुंड थइ अणगार थाय ३, शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे ४, शुद्ध संयम पाळे शुद्ध संवरे करी ५, आश्रवद्वार रुंधे ६, शुद्ध सर्व वस्तु ग्राहक मतिज्ञान ७, श्रुतज्ञान ८, अवधिज्ञान ९, मनपर्यवज्ञान १०, केवळज्ञान ११, ए ११ बोल पामे.

अर्थ–दो० वे ठा० थानके आ० जीव के० केवलीनो प० भाप्यो ध० धर्म ल० पामे स० सांभळवाथी तं० ते ज० कहुंछुं सो० सांभळवाथी चे० वळी अ० सिद्धात ते भाव सद्दहवाथी चे० वळी जा० यावत के० केवळज्ञान उ० उपार्जे एटले पाछला ११ बोल कह्या ते पामे.

दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए। तं जहा। सोच्चा चेव अहिसमेच्च चेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा॥ [१–११]॥२॥

भावार्थ–वळी वे स्थानके जीव केवळीपरुप्यो धर्म सांभळवाथी पामे ते कहे छे, सिद्धांत सांभळवाथी १ अने ते भाव धारीने श्रद्धवाथी २ ए वे भेद छे, पुर्वोक्त केवळज्ञान पर्यंत ११ बोल ते सिद्धांत सांभळवाथी १ अने ते भावधरीने श्रद्धवाथी पामे २

अर्थ–दो० वे प्रकारे स० काल पं० परुप्या तं० ते ज० कहुंछुं ओ० उत्सर्पिणी च० ढतो काल चे० वळी उ० अवसर्पिणी काल ते उतरता आरा चे० वळी.

दो समाओ पण्णत्ताओ। तं जहा। ओसप्पिणिसमा चेव उस्सप्पिणिसमा चेव॥

भावार्थ–बे प्रकारे समयकाळ श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे एक उत्सर्पिणी ते दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम सुधी चडतो काळ १ बीजो अवसर्पिणी ते दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम सुधी पडतो काळ २ ए वे भेद छे.

अर्थ–दु० वे प्रकारे उ० उन्माद प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ज० देवताधिष्टित चे० वळी मो० मोहनी (पुन्य धन प्रमुपनी मुर्छा) चे० वळी क० कर्म उ० उदय त० तिहां णं० वळी जे० जे से० ते ज० जक्षावेस ते यक्षनी वलगण से० ते णं० वळी सु० सुखे वे० वेदाय चे० वळी सु० सुखे वि० मुकावीए चे० वळी तं० तिहां ण० वळी जे० जे से० ते मो० मोहनी क० कर्मनो उ० उदय से० ते णं० वळी दु० दुःखे भोगवीए चे० वळी दु० दुःखे वि० मुकाय चे० वळी.

दुविहे उम्माए पण्णत्ते। तं जहा। जक्खाएसे चेव मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयतराए चेव सुहविमोयतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए चेव दुहविमोयतराए चेव॥

भावार्थ–बे प्रकारे उन्माद (चित्त विह्वळ) कहेल छे ते कहे छे, देवता अधिष्टित होवाथी गमे तेम नाचवुं कुदवुं के बोलवारुप उन्मादपणुं

पामे १, वीजो मोहनी कर्मना उदयथी पुत्रने पुत्री कहे तथा धन कुटुंवादिकने विषे अत्यंत गृद्ध थाय २, ए वे भेदछे. ए वे प्रकारना उन्माद छे ते मांही जे यक्षनो उन्माद ते मंत्र यंत्र मुळीयादीके करी सुखे मुकाय १, वीजो मोहनी कर्मना उदयथी उन्माद ते मंत्रादीकथी पण छुटे नहीं, अने अनेक भवभ्रमण करावे ने श्रुतधर्म के चारित्रधर्म ए वे मांहेथी एक पण धर्म पामे नहीं ते मोहनी कर्मनी सीतेर क्रोडा क्रोडी सागरोपमनी स्थिति छे तेहना क्षयोपशमथीज छुटे, तेथी दुःखे (घणी मुस्केलीथी) मुकाय २

अर्थ–दो० वे द० दंड पं० परुप्यां तं० ते ज० कहुंछुं अ० पांच इन्द्रीने अर्थे पाप करवुं ते चे० वळी अ० परने अर्थे पाप ते चे० वळी

दो दण्डा पन्नत्ता । तं जहा । अट्ठदण्डे चेव अणट्ठदण्डे चेव ॥१॥

भावार्थ–वे प्रकारना दंड श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे. पांच इंद्रीयोने आश्रीने पोताना स्वार्थ माटे पाप करवुं ते अर्थ दंड १ पोताना स्वार्थ वीना पाप करवुं ते अनर्थ दंड २ ए वे भेद छे.

अर्थ–ने० नारकीओने दो० वे द० दंड पं० कह्या तं० तेज० कहुंछुं अ० पोताने अर्थेपरने हणे चे० वळी अ० द्वेष मात्रथी उपजे ते चे० वळी.

नेरइयाणं दो दण्डा पण्णत्ता । तं जहा । अट्ठदण्डे चेव अणट्ठदण्डे चेव ॥ [१] ॥ २ ॥

भावार्थ–साते नारकीना जीवने वे दंड कहेल छे ते कहे छे पोताना शरीरनुं रक्षण करवा माटे परने हणे ते अर्थ दंड १ फक्त द्वेष उपजवायीज परजीवने हणे ते अनर्थ दंड २ ए वे भेद छे.

अर्थ–ए० एम च० चउवीसे दं० दंडके जाणवुं जा० यावत वे० वेमानीकलगे.

एवं चउवीसा दण्डओ जाव वेमाणियाणं ॥ [२–२४] ॥ ३ ॥

भावार्थ–एमज वैमानीक सुधी चोवीस दंडकना सर्व जीवने अर्थ अने अनर्थ ए वे प्रकारना दंड जाणवा.

अर्थ–दु० वे प्रकारे दं० दर्शन प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं स० जिन वचननी शुद्ध सदहणाते चे० वळी मि० जिन वचनथी विपरीत चे० वळी.

दुविहे दंसणे पन्नत्ते । तं जहा । सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव ॥१॥

भावार्थ–वे प्रकारे दर्शनश्री भगवंते कहेल छे ते कहेछे, जीन वचनानुसारी तत्वनुं जाणवुं ते समकित दर्शन १ जीन वचनथी विमित अतत्वरुप जाणवुं ते मिथ्यात्व दर्शन २ ए वे भेद छे.

अर्थ–स० समकित द० दर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं नि० स्वभावेज स० तत्वनी रुचि उपजे ते उपदेश विना चे० वळी अ० गुरुना उपदेशथी स० तत्वरुचि ते चे० वळी.

सम्मद्दंसणे दुविहे पन्नते । तं जहा । निसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–समकित दर्शन वे प्रकारे श्रीभगवंते कहेल छे ते कहेछे, मरुदैवी मातानी पेरे स्वभावेज जाती स्मर्णादीक ज्ञानथी तत्वरुची आवे ते निसर्ग समकित १, भरतादिकना अठाणुं भाइनी पेरे गुरुना उपदेशथी तत्वरुची आवे ते अभिगम समकित २, ए वे भेद छे,

अर्थ–नि० निसर्ग (स्वभावे) स० सम्यक द० दर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं प० आव्युं जाय ते चे० वळी अ० आव्युं जाय नहीं ते अप्रतिपती चे० वळी

निसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–निसर्ग समकितना वे भेद श्रीभगवंते कहेलछे ते कहेछे, एक प्रतिपाती ते आवेलुं जाय ते उपशम भावनुं उपशम समकित उत्कृष्टुं अंतर मुहुर्त सुधी रहे अने क्षयोपशम समकित उत्कृष्टुं छासठ सागरोपम अंतर मुहुर्त अधीक सुधी रहे ते वारमा देवलोके उत्कृष्टी वावीस सागरनी स्थिति छे तेहना त्रण भव करे तथा चार अनुंतर विमानमां उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति छे तेहना वे भव करे ते आश्री प्रतिपाती जाणवुं १, वीजुं अप्रतिपाती ते आवेलुं जाय नहीं ते क्षायक भावे होय ते क्षायक समकित मोक्षे पहोंचे तीहां सुधी रहे पण जाय नहीं ते आश्री अप्रतिपाती जाणवुं, ए वे भेदछे.

अर्थ–अ० अभिगम स० सम्यक द० दर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं प० उपसमिक चे० वळी अ० क्षायिक ते चे० वळी.

अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–अभिगम समकित वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, प्रतिपाती ते उपशम भावनुं आवेलुं जाय १, अप्रतिपाती ते क्षायक भावनुं आवेलुं जाय नहीं २, ए वे भेद छे.

अर्थ–मिथ्यादर्शन दु० वे प्रकारे पं० परुप्युं तं० ते ज० कहुंछुं आ० कुमतिनो मि० हठ न मुके ते चे० वळी अ० हठ विना कुमत राखे ते चे० वळी.

मिच्छादंसणे दुविहे पन्नते। तं जहा। आभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव अणाभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–मिथ्यात्व दर्शन वे प्रकारे श्रीभगवंते कहेलछे ते कहेछे, कुमतिए करी खोटो पकडेलो हठ कदाग्रह मुके नहीं ते अभिग्रहिक मिथ्यात्व १, हठ विना हृदयमां सत्यने सत्य माने अने असत्यने असत्य माने पण वाहीरथी कुमतिए करी खोटो पकडेलो हठ कदाग्रह (गोशाळानी पेरे) मुके नहीं ते अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व २, ए वे भेद छे.

अर्थ–आ० अभिग्रहित मि० मिथ्यादर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं स० अंत सहित भव्यनो चे० वळी अ० छेहडो नथी ते अभव्यनो.

आभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। सपज्जवसिए चेव अपज्जवसिए चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–अभिग्रहिक मिथ्यात्व दर्शनना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, जेहनो अंत ते छेहडो छे ते भवी जीव समकित पामे त्यारे ते मिथ्यात्व जाय ते आश्री जाणवुं १, जेहनो अंत नथी ते अभवी जीव कोइ काळे समकित पामनार नथी ते आश्री जाणवुं २, ए वे भेद छे.

अर्थ–ए० एम अ० अनभिग्रहित मि० मिथ्यादर्शन वे भेदे वि० वळी

एव अणाभिग्गहियमिच्छादंसणे वि ॥ ७ ॥

भावार्थ–एमज अनाभिग्रहिक मिथ्यात्वना

पण उपर प्रमाणे अंत सहीत १, ने अंत रहीत २, एवा बे भेद जाणवा.

अर्थ—दु० बे ना० ज्ञानना भेद पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० पांच इन्द्रीने मन सहित ते चे० वळी प० इन्द्री मन विना ते चे० वळी

दुविहे नाणे पन्नत्ते । तं जहा । पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—बे प्रकारे ज्ञान कहेल छे ते कहे छे एक प्रत्यक्ष ज्ञान ते पांच इंद्री अने मनविना जणाय ते आत्म प्रत्यक्ष १, बीजुं परोक्षने मन अने इंद्री थकी जणाय ते २, ए बे भेद छे.

अर्थ—प० प्रत्यक्ष ना० ज्ञान ते दु० बे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं के० केवळ ज्ञान चे० वळी नो० अवधि, मनपर्यवज्ञान चे० वळी.

पच्चक्खनाणे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । केवलनाणे चेव नोकेवलनाणे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रत्यक्ष ज्ञान बे प्रकारे श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, केवळज्ञान ते चौद राजलोक संपुर्ण जाणे देखे १, अवधिज्ञान मनपर्यव ज्ञानवडे जाणे ते २ ए बे भेद छे.

अर्थ—के० केवळज्ञान दु० बे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं भ० भव मनुष्यनो छे तेहनुं केवळज्ञान चे० वळी सि० मोक्षना जीवनुं केवळज्ञान चे० वळी.

केवलनाणे दुविहे पन्नते । तं जहा । भवत्थकेवलनाणे चेव सिद्धकेवलनाणे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ—केवळज्ञान बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, संसारमां रहेला छे तेनुं केवळज्ञान १, मोक्षमां गएला सिद्धनुं केवळज्ञान २, ए बे भेद छे.

अर्थ—भ० भव मनुष्यनुं केवळज्ञान दु० बे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं स० तेरमा गुण ठाणाना भ० जीवनुं केवळज्ञान चे० वळी अ० चौदमा गुणठाणाना जीव थतानुं केवळज्ञान चे० वळी.

भवत्थकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । सजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव ॥४॥

भावार्थ—संसारमां रहेला जीवनुं केवळज्ञान बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, सजोगी ते मन वचन कायाना जोग सहीत ते तेरमा गुणठाणावाळा जीवनुं केवळज्ञान १, अजोगी ते चौदमा गुणठाणा वाळा जीवनुं केवळज्ञान ते अ. इ. उ. ऋ. लृ. ए पांच ह्रस्व अक्षर उच्चरतां जेटलो वखत लागे तीहां सुधी ते जीव तीहां रहे २ ए बे भेद छे.

अर्थ—स० सजोगी केवळज्ञान दु० बे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं प० उपजती वेळानो प्रथम समयनो स० १३ मा गुणठाणाना भ० जीवनुं केवळज्ञान चे० वळी अ० बीजा समयना सजोगी जीवनुं केवळज्ञान चे० वळी

सजोगिभवत्थकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ—सजोगी भवस्थ (तेरमा चौदमा गुणठाणावाळा जीवनुं) केवळज्ञानना बे भेद कहेल छे ते कहे छे, केवळज्ञान उपजती वेळाना प्रथम समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान

१, एमज अप्रथम समयनुं ते केवळज्ञान उत्पन्न थया पछी वीजा त्रीजा चोथादीक समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अथवा च० छेला स० समयनो स० सजोगी भ० जीवनुं के० केवळज्ञान चे० वळी अ० छेलो समय तेहथी पहेला समयनो स०सजोगी भ०जीवनोके०केवळज्ञान चे०वळी

अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–अथवा छेला समयना ते चौदमे गुणठाणे जातां तेरमा गुणठाणाना छेला समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान १, छेहलो समय नहीं पण छेहलांनी पहेलां जेटलां समय होय ते अचरम समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ–ए० एम अ० १४ मा गुणठाणाना भ० जीवनुं के० केवळज्ञान वे भेदे वि० वळी

एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणे वि ७

भावार्थ–एमज अजोगी भवस्थ केवळज्ञानना वे भेद जाणवा,

अर्थ–सि०सिद्धना जीवनुं के०केवळज्ञान दु० वे प्रकारे प० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं अ० एक समय सि०सिद्ध थया तेनुं के०केवलज्ञान चे० वळी प० वे तथा उपरांत समय सि० सिद्ध थया तेनुं के० केवळज्ञान चे० वळी.

सिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नते । तं जहा । अणन्तरसिद्धकेवलनाणे चेव परंपरसिद्धकेवलनाणे चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ–सिद्धना जीवनुं केवळज्ञान तेहना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहेछे, संप्रती (वर्तमान) समय सिद्ध थयो ते अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान १, जेहने वे त्रण चार पांच दश प्रमुख समय थया ते परंपर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० एक समयना सि० सिद्धना के० केवळज्ञानना दु० वे प्रकार पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं ए० एकज अ० एक समय मोक्ष गयो ते सि०सिद्धनुं के० केवळज्ञान चे० वळी अ० अनेक अ० एक समय सि० सिद्ध थया तेनुं के० केवळज्ञान चे० वळी.

अणन्तरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । एक्काणन्तरसिद्धकेवलनाणे चेव अणेक्काणन्तरसिद्धकेवलनाणे चेव ॥ ९ ॥

भावार्थ–अनंतर सिद्धनुं केवळज्ञान तेहना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे, हमणां एक समयने विषे एकज जीवमोक्षमां गयो ते एक अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान १, हमणां एक समयने विषे अनेक मोक्षमां गया ते अनेक अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ–प० मोक्षगया पछी २–३–४ समे थया तेहनुं केवळ ज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहुछुं ए० एक प० परंपरासिद्धनुं केवल ज्ञान चे० वळी अ० अनेक प० परंपरसिद्धनुं केवलज्ञान चे० वळी.

परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । एक्कपरंपरसिद्धकेवलनाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलनाणे चेव ॥ १० ॥

भावार्थ–परंपर सिद्धनुं केवळज्ञान तेहना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे, एक परंपर सि-

द्धनुं केवळज्ञान १, अनेक परंपर सिद्धनुं केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ—नो० अवधि, मनपर्यवज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहुं छुं ओ० अवधि ज्ञान चे० वळी म० मनपर्यवज्ञान चे० वळी.

नोकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । ओहिनाणे चेव मणपज्जवनाणे चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ—नो केवळज्ञानना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, अवधिज्ञान १ मनपर्यवज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ओ० अवधिज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कह्युं छुं भ० एक भव ताइज होय ते चे० वली खा० ज्ञानावरणीकर्मना क्षय उपसमथी उपनो ते चे०वळी.

ओहिनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा। भवपच्चइए चेव खाओवसमिए चेव १२

भावार्थ—अवधिज्ञानना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे एक भव प्रत्ययनुं जे ते भवमांहीज होय १, बीजुं ज्ञानावर्णीना क्षयोपशमथी उपजे २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वेने भ० भवप्रत्ययनुं प० कह्युं तं० तेज० कहुं छुं दे० देवतानुं चे० वळी ने० नारकीनुं चे० वळी.

दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते । तं जहा। देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ १३ ॥

भावार्थ—वेने भव प्रत्ययनुं अवधिज्ञान होय ते कहे छे देवता १ अने नारकी ए वेना भवने विषे होयज २ ए भेद छे.

अर्थ—दो० वेने खा० क्षयोपसमथी पं० कह्युं तं० तेज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे०वळी प० पचिंद्रि तिर्यंच जो० जोनीने क्षयोपससमथी होय चे० वळी.

दोण्हं खाओवसमिए पन्नत्ते । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ—वेने क्षयोपसमथी होय ते कहे छे, संज्ञी मनुष्यने संज्ञीतिर्यंच पचेंद्री २ ए वेने होय ए वे भेद छे.

अर्थ—म० मनपर्यवज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहुं छुं उ० रुजुमती चे०वळी वि० विपुलमती चे० वळी.

मणपज्जवनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । उज्जुमई चेव विउलमई चेव १५

भावार्थ—मनपर्यव ज्ञान वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एकलो मनमां घडो चिंतव्यो छे एम सामान्यथी मननी वात जाणे ते रुजुमती १ अने सोनानो घडो नानो अथवा म्होटो पाडलीपुरनो आजनो कालनो अथवा घणा काळनो करेलो चिंतव्यो छे इत्यादिक विशेषथी जाणे ते विपुलमती २ ए वे भेद छे.

अर्थ—प० परोक्ष ज्ञानने दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहुछुं आ० मतिज्ञान चे० वळी सु० श्रुतज्ञान चे० वळी.

परोक्खनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । आभिणिबोहियनाणे चेव सुयनाणे चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ—परोक्ष ज्ञानना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, एकमति ज्ञान, बीजुं श्रुतज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ—आ० मतिज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहे छे सु० श्रुत निश्रित चे०

वळी अ० अश्रुत निश्रित चे० वळी.

आभिणिबोहियनाणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा । सुयनिस्सिए चेव असुयनिस्सिए चेव ॥ १७ ॥

भावार्थ–मतिज्ञानना बे भेद कहेल छे ते कहे छे, श्रुतनिश्रित १ अश्रुतनिश्रित २ ए बे भेद छे.

अर्थ–सु० श्रुतनिश्रित दु० बे प्रकारे पं० कह्युं तं० तेज० कहुं छुं अ० दूरथी प्रथम वस्तु देखीने कहे जे कोइक वस्तु छे ते चे० वळी व० पछी ओलखे जे ए पुरुष छे ते चे० वळी.

सुयनिस्सिए दुविहे पन्नत्ते । तं जहा। अत्थोग्गहे चेव वञ्जणोग्गहे चेव ॥ १८ ॥

भावार्थ–श्रुतनिश्रित बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, वेगळेथी वस्तु देखीने कहेजे कांइ वस्तु छे एम प्रथम वस्तुनुं सामान्यपणे ग्रहवुं ते अर्थावग्रह १ पछी ओळखेजे ए पुरुष छे अथवा स्त्री छे एम विशेषथी इंद्री अने शब्दादि द्रव्यनो संबंध ते व्यंजनावग्रह २ ए बे भेद छे.

अर्थ–अ० अश्रुत निश्रितनापण ए० एमज बे भेद.

असुयनिस्सिए एवमेव ॥ १९ ॥

भावार्थ–एम अश्रुतनिश्रितना पण बे भेद जाणवा.

अर्थ–सु० श्रुतज्ञान दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० तेज० कहुं छुं अं० ११ अंग मांहिलुं ज्ञान ते चे० वळी अं० उतराध्ययन प्रमुख चे० वळी.

सुयनाणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। अङ्गपविट्ठे चेव अङ्गबाहिरे चेव ॥२०॥

भावार्थ–एम श्रुतज्ञानना बे भेद कहेल छे ते कहे छे, आचारांगादिक इग्यार अंग ते अंग प्रविष्ट १ उत्तराध्यनादी मुळ सूत्र ते अंग बाहीर ए बे भेद छे.

अर्थ–अं० अंग बाहिरना दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं, आ० आवश्यक चे० वळी आ० आवश्यक विना श्रुतज्ञान चे० वळी.

अङ्गबाहिरे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव ॥ २१ ॥

भावार्थ–अंग बाहीरना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे सामायक १ चउवीसथो २ वंदणां ३ पडीकमणुं ४ काउसग ५ पचखाण ६ ए छ अध्ययनना समुहरुप आवश्यक १ आवश्यक वीना बीजां सिद्धांत ते आवश्यक व्यतिरिक्त २ ए बे भेद छे.

अर्थ–आ० आवश्यक विना श्रुतते दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं का० काल वेलाये भणाय ते प्रथमने छेली पोरसिएचे० वळी उ० सर्व काले भणाय ते.

आवस्सयवइरित्ते दुविहे पन्नत्ते । तं जहा। कालिए चेव उक्कालिए चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ–आवश्यक व्यतिरिकतना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, दिवस अने रात्रिनी पहेली ने चोथी पोरसिए भणाय ते उत्तराध्ययनादीक कालीकसूत्र १ सवारनी, मध्याननी, संध्यानी, मध्यरात्रीनी बे बे घडी वर्जि गमे ते वखते भणाय ते दशवैकालिक प्रमुख उत्कालीक सूत्र २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० वे प्रकारे धं० धर्म पं० कह्या तं० तेज० कहुं छुं सु० द्वादशांगी-तेइज श्रुतधर्मचे० वळी च० चारित्र ध० धर्म पांच महाव्रत रुप चे० वळी.

दुविहे धम्मे पण्णत्ते। तं जहा। सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–दुर्गती पडतां धरी राखे ते धर्म वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, द्वादशांगी रुप सिद्धांत ते श्रुतधर्म १ चारित्र धर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ–सु० सुत्रधर्म दु० वे प्रकारे पं० कह्या तं० तेज० कहुं छुं. सु० श्रुतपाठ ते सुत्र श्रुतधर्म चे० वळी अ० अर्थ श्रुतधर्म चे० वळी.

सुयधम्मे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–श्रुतधर्मना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, सुत्रपाठ ते सुत्र श्रुतधर्म १, अर्थ ते अर्थ श्रुतधर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ–च० चारित्रनो ध० धर्म दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं अ० देश विरति च० चारित्र ध० धर्म चे० वळी अ० साधूनो च० सर्व विरति ध० धर्म चे० वळी.

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। अगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–चारित्र धर्म वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. समकीत मुळ वार व्रतरुप देश वरती चारित्र ते ग्रहस्थनो धर्म १ जेहने घर नथी एहवा साधुनो सर्व वरती पंचमहाव्रतरुप चारित्र धर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ–दु० वे प्रकारे सं० संजम प० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं स० मायानो संग छे ज्यां ते संजम चे० वळी वी० माया रहित संजम ते सातमा गुणठाणा उपरांतहोय चे० वळी.

दुविहे संजमे पन्नत्ते। तं जहा। सरागसंजमे चेव वीयरागसंजमे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–वे प्रकारे संयम कहेल छे ते कहे छे. जीहां मायानो संग छे ते सरागसंयम १ सातमा गुणठाणां उपरांत माया (कपट) राग रहीत चारित्र ते वीतराग संयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ–स० राग सहित संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं सु० लोभरुप कषाय जेणे सुक्ष्म किधा छे तेवा उपसम तथा क्षपक श्रेणिनो साधू ते १० मे गुणठाणे होय चे० वळी वा० मोटा कषाय छे जिहांते चे० वळी.

सरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव बायरसंपरायसरागसंजमे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे. जेणे लोभ रुप कषाय सुक्ष्म कुंथु रुप करेल छे ते उपशम श्रेणीनो तथा क्षपकश्रेणीनो साधु दशमे गुणठाणे होय ते सुक्ष्म संपराय सराग संयम १ जीहां मोटी स्थुल कषाय छे ते बादर संपराय सराग संयम. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–सु० सुक्ष्म कषाय संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संजम १० मा गुणठाणाना थम समयनुं संजम चे० वळी अ० २–३ समयना सुक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी:

सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–सुक्ष्म संपराय सराग संयमना वे भेद कहेल छे ते कहेछे. प्रथम समयनो सूक्ष्म संपराय सराग संयम. १ अप्रथम समय ते वीजा त्रीजादीक समयनो सूक्ष्म संपराय सराग संयम. २ (केवळज्ञानना प्रथम भेद कहेल छे ते प्रमाणे जाणवा) ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अथवा च० छेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम अ० छेलाथी पेहेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संजम.

अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे ॥ ४ ॥

भावार्थ–अथवा छेला चरम समय ते वारमा गुणठाणाना छेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम. १ अचरम ते छेलाथी पहेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अथवा सु० सुक्ष्म संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं सं० उपसम श्रेणिथी पडतानु ए सुक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी वि० उपसम तथा क्षपक श्रेणि चढतानुं सूक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी.

अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । संकिलिस्समाणए चेव विसुज्झमाणए चेव ॥५॥

भावार्थ–अथवा सुक्ष्म संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. संक्लेशमान ते उपशमश्रेणीथी पडतानो सुक्ष्म संपराय सरागसंयम. १ विशुद्धमान ते उपशम श्रेणीये तथा क्षपकश्रेणीये चडतानो सुक्ष्म संपराय सरागसंयम. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–वा० वादर संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो वादर संपराय सराग संजम अ० पेहेला समय विना वादर संपराय सराग संजम.

वायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पढमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे अपढमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे ॥ ६ ॥

भावार्थ–वादर संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो वादर संपराय सराग संयम १ अप्रथम समयनो वादर संपराय सरागसंयम २ (प्रथम अप्रथम केवळज्ञाननी पेरे जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ–अ० अथवा च० छेहेला समयनो वादर संपराय सराग संजम अ० छेलाथी पेहेलानो समयनो वादर संपराय सराग संजम.

अहवा चरिमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे अचरिमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे ॥ ७ ॥

भावार्थ–अथवा चरम ते छेला समयनो ते नवमा गुणठाणाना छेला समयनो १ अचरम ते छेलाथी पहेला समयनो वादर संपराय सरागसंयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ–अथवा वा० वादर संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं प० उपसम श्रेणिथी पडतानुं संजम चे० वळी अ० क्षपक श्रेणिनुं ते चे० वळी.

अहवा वायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ–अथवा वादर संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे उपशम

श्रेणीथी पडतानो १ क्षपकश्रेणीनो वादर संपराय सरागसंयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ—वी० रागरहित संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुं छुं उ० उपसमाव्या क० कषायजेणे वी०एवो राग रहित सं० संजम ते ११ मा गुणठाणाना साधूने होय चे० वळी खीण० क्षय पाम्या छे क० कखाय एवो राग रहित संजम ते १२ मा गुण ठाणाना साधूने होय चे० वळी.

वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा। उवसन्तकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसायवीयरागसंजमे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. जेणे कषाय उपशमावेल छे तेहनो सयम ते उपशांतकषाय वीतरागसयम १ जेहनी कषाय क्षय थइगयेल छे ते वारमा गुणठाणाना साधुनो क्षीणकषाय वीतराग संयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ—उ० उपसम श्रेणिनुं कषाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० पहिला समयनुं उपशांत कषाय वीत राग संजम चे० वळी अ० प्रथम समय विना ११ मा गुण ठाणानुं संजमते चे० वळी.

उवसन्तकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा। पढमसमयउवसन्तकसायवीयरागसंजमे चेव अपढमसमयउवसन्तकसायवीयरागसंजमे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ—उपशांत कषाय वीतरागना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे. प्रथम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम. १ अप्रथम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम. २ (प्रथम अप्रथम पूर्वनी पेरे जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अथवा च० छेहला समयनुं उपशांत कषाय वीत राग संजम अ० छेहलाथी पहेला समयनुं उपशांत कषाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयउवसन्तकसायवीयरागसंजमे अचरिमसमयउवसन्तकसायवीयरागसंजमे ॥ ३ ॥

भावार्थ—तेमज चरम अचरम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम जाणवो. ए वे भेद छे.

अर्थ—खी० क्षय कर्या कषायनो ते १२ मां गुण ठाणानो वीत राग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं छ० चारघाति कर्म सहित छेतेनुं खीण कषाय वीतराग संजम चे० वळी के० केवलीनुं खीण कसाय वीत राग संजम.

खीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा। छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ—क्षीणकषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे. छदमस्थ ते ज्ञानावरणादी आठे कर्म सहित तेहनो संयम ते छदमस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम १ केवळ ज्ञान सहित केवळी तेहनो संयम ते केवळीक्षीण कषाय वीतरागसंयम २ ए वे भेदछे

अर्थ—छ० छदमस्थ खीण कषाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं स० पोतानी मेळे प्रतिबोध पाम्याते स्वयं बुध छदमस्थ खीण कसाय वीतराग संजम बु० गुरुना प्रति बोध्या छदमस्थ खीण कसाय वीतराग संजम.

छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा। सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे बुद्धबो-

हियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ ५ ॥

भावार्थ– छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे स्वयंबुध ते तिर्थंकरादी पोतानी मेळे प्रतिबोध पाम्या ते स्वयंबुध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमी. १ आचार्यादिकना प्रतिवोध्या ते छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमी. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–स० पोतानी मेळे प्रतिवोध पाम्या ते छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्यो ते० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयना सं० पोतानी मेळे बुझेला छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम अ० वीजा समयनो स्वयंबुध छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम चे० वळी.

सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा। पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–स्वयंबुध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो. १ अप्रथम समयनो. २

अर्थ–अ० अथवा च० छेहेला समयनो सयंबुध छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहला समय विनानुं सयंबुध छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ ७ ॥

भावार्थ–अथवा चरम समयनो १ अचरम समयनो. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–बु० आचार्यना प्रतिवोध्या छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समय बुधबोहि छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम अ० बीजा समयनो बुधबोहि छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम.

बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा। पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ ८ ॥

भावार्थ–बुद्धबोही ते आचार्यादीकना प्रतिबोधेलां छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो १ अप्रथम समयनो २.

अर्थ–अ० अथवा च० छेहला समयनो बुधबोहि छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहला समय विना बुधबोहि छद्मस्थ खीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ ९ ॥

भावार्थ–अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए वे वे भेद छे

अर्थ–के० केवली खीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुं छु स० १३ मा गुणठाणानानो केवली खीण कसाय वीतराग संजम अ० १४ मा गुणठाणना केवलीनो क्षीण कसाय वीतराग संजम,

केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ १० ॥

भावार्थ-केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. सजोगी ते तेरमा गुणठाणाना केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमी १ अजोगी ते चौदमा गुणठाणाना केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमी २ ए बे भेद छे.

अर्थ-स० १३ मा गुणठाणाना केवलीनो क्षीण कसाय वीतराग संजम दु० बे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं प० प्रथम समयनो सजोगि केवलि क्षीण कसाय वीतराग संजम अ० बीजा समयनो सजोगि केवलि क्षीण कसाय वीतराग संजम.

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ ११ ॥

भावार्थ-वीतराग सजोगी केवळी क्षीण कषाय संयमना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे प्रथम समयनो. १ अप्रथम समयनो. २

अर्थ-अथवा च० छेला समयनो सजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहलाथी पेहला समयनो संजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम

अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ १२ ॥

भावार्थ-अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए बे भेद छे.

अर्थ-अ० १४ मा गुणठाणाना केवलीनुं खीणकसाय वीतराग संजम दु० बे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो अजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम अ० बीजा समयनो अजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम.

अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ १३ ॥

भावार्थ-अजोगी केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे प्रथम समयनो १ अप्रथम समयनो २

अर्थ-अथवा च० छेला समयनो अजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहेलाथी पेहेला समयनो अजोगि केवलिखीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे ॥ १४ ॥

भावार्थ-अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए बे बे भेद छे.

अर्थ-दु० बे प्रकारे पु० पृथ्विकायना जीव पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं सु० सुक्ष्म चे० निश्चे बा० बादर (दृष्टिमां आवे ते) चे० वळी.

दुविहा पुढविकाइया पन्नता । तं जहा । सुहुमा चेव बायरा चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-पृथ्विकायना जीव बे प्रकारे श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. जे छद्मस्थनी

नजरे आवे नहीं अने सर्व लोकने विषे ठांसीठांसीने भरेल छे ते सुक्ष्म पृथ्विकाय. १ छद्मस्थनी नजरे आवे ते वादर पृथ्विकाय. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम जा० यावत दु० वे भेदे व० वनस्पतीकाय सुधी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं. सु० सुक्ष्म चे० वळी वा० वादर चे० निश्चे.

एवं जाव दुविहा वणस्सइकाइया पन्नता। तं जहा। सुहुमा चेव वायरा चेव ॥ [२–५] ॥ २ ॥

भावार्थ—एम पाणी, १ अग्नी, २ वायु, ३ वनस्पतिकायना सुक्ष्म ने वादर ए वे वे भेद जाणवा.

(आहार, १ शरिर, २ इंद्रि, ३ श्वासोश्वास, ४ भापा, ५ मन, ६ ए छ पर्याप्ति छे ते मांही एकेंद्रिने भापा ने मन ए वे वर्जिने चार पर्याप्ति छे, वेइंद्रि, ते इंद्रि, चौरिंद्रि, असंज्ञि पचेंद्रिने मन वर्जिने पांच पर्याप्ति छे, संज्ञि पचेंद्रिने छ पर्याप्ति छे. जे जीवने जेटली पर्याप्ति छे ते मांही एक अधुरी होय तेवामां परभवनुं आयुष्य वांधी मरे ते अपर्याप्ति कहीये. छ पर्याप्तिमां आहार पर्याप्ति एक समयमां नीपजे, वीजी पांच पर्याप्ति असंख्याते असंख्याते समये नीपजे, ए सर्वे अंतर मुहुर्तमां निपजे)

अर्थ—दु० वे भेदे पु० पृथ्विकायना जीव पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० पर्याप्ति पुरी करी मरे ते चे० निश्चे अ० अधूरी पर्याप्ति मरे ते चे० निश्चे.

दुविहा पुढविकाइया पन्नता। तं जहा। पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव ॥ [६ ॥ ३] ॥

भावार्थ—वळी पृथ्विकायना जीव वे प्रकारे ‑‑ छे ते कहे छे, पर्याप्ति ते आहार, १ शरिर, २ इंद्रि, ३ श्वासोश्वास, ४ ए चारे पुरी करी मरे १ अपर्याप्ति ते आहार, १ शरीर २, इंद्रि ३. ए त्रण पर्याप्ति पुरी करी परभवनुं आयुष्य वांधी मरे. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए एम जा० यावत व० वनस्पतिकाय लगे जाणवो.

एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ [७–१०] ॥ ४ ॥

भावार्थ—एमज पाणी १, अग्नी २, वायु ३ वनस्पति ४. ए चारेना पर्याप्ता १, अपर्याप्ता २ ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ—वे प्रकारे पु० पृथ्विकायना जीव पं० कह्या तं० तेज० कहुं छुं प० अचित थया ते चे० निश्चे अ० सचित ते चे० निश्चे जा० यावत व० वनस्पतिकाय लगे.

दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता। तं जहा। परिणया चेव अपरिणया चेव जाव वणस्सइकाइया ॥ [११–१५] ॥ ५ ॥

भावार्थ—वळी पृथ्विकायना जीव वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. प्रणित ते स्वकाय परकाय शस्त्रे करी काळथी थोडे काळे अचित थयेला १, शस्त्रे करी अचित्त थयेला नथी ते सचित्त २ ए वे भेद छे.

एम पाणी १, अग्नी २, वायु, ३, वनस्पति ४. ए चारे स्थावरमां शस्त्रेकरी प्रणित १ अने शस्त्रेकरी अप्राणित २, ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ—दु० वे भेदे द० पर्याय फेर थाय ते पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० पर्याय फर्या ते द्रव्य चे० निश्चे अ० नथी फर्या पर्याय ते द्रव्य चे० निश्चे.

दुविहा दव्वा पन्नत्ता। तं जहा। परिणया चेव अपरिणया चेव ॥[१६]॥६॥

भावार्थ—वे प्रकारनां पुद्गलरूप द्रव्य कहेल छे ते कहेछे, प्रणित द्रव्य ते वर्ण, गंध, रस

स्पर्श पलटाय, जेम धोळा वस्त्रने राते रंगे रंगवाथी रातुं थयुं ने धोळाना पर्याय फर्या एम सर्व द्रव्यने विषे जाणवुं १ बीजां अप्रणित द्रव्य ते जेहनी वर्णादिकनी पर्याय फरी नथी. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे प्रकारे पु० पृथ्विकाया पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ग० विग्रह गतिए करी उपजवाने थानके गमन स० करे ते चे० निश्चे अ० स० उपना ते थानके रह्या छे ते चे० निश्चे.

दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता। तं जहा। गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव ॥ [१७] ॥ ७ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पृथ्विकायना जीव कहेला छे ते कहेछे पृथ्विकायना जीव विग्रह गति करी उपजवाने स्थानके गमन करे ते गति समापन्न १, जीहां आवीने उपना छे तिहांज रह्या छे ने विग्रह गति करी नथी ते अगति समापन्न २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए०एम जा० यावत व० वनस्पतिकाय लगे.

एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ [१८-२१] ॥ ८ ॥

भावार्थ-एम पाणी १, अग्नी २, वायु ३, वनस्पति ४ ए चारेने विषे गति समापन्न १ अगति समापन्न २ ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे द० द्रव्य ग० गति गमन स० करता द्रव्य चे० निश्चे अ० स० उपना ते थानके रह्या छे ते चे० निश्चे

दुविहा दव्वा गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव ॥ [२२] ॥ ९ ॥

भावार्थ-बे प्रकारे द्रव्य कहेल छे ते कहेछे. एक जग्याएथी बीजी जग्याए जता द्रव्य ते गति समापन्न १ जीहां छे तीहांज रहेल छे ने बीजी जग्याए द्रव्य जता नथी ते अगति समापन्न २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पु० पृथ्विकाय पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं अ० एक समय जीव पृथ्विकाय प्रदेशे उपनोते चे० निश्चे प० वे त्रण समय थया जीव पृथ्विकाय प्रदेशे उपनोते चे० निश्चे जा० यावत द० द्रव्य स्वरुप.

दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता। तं जहा। अणन्तरोगाढगा चेव परंपरोगाढगा चेव जाव दव्वा ॥ [२३-२८] ॥१०॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पृथ्विकायना जीव कहेल छे ते कहे छे. पृथ्विकायनो जीव हमणाज समये कोइ आकाश प्रदेशे आवी रह्यो ते अनंतरो वगाढ १ जेहने आकाश प्रदेशे रह्यां वे त्रणादीक समय थया छे ते परंपरोवगाढ २ ए वे भेद छे.

एम यावत् द्रव्यनुं स्वरुप कह्युं.

अर्थ-दु० वे भेदे का० काल पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ओ० उतरतो आरो चे० निश्चे उ० चढतो आरो ते चे० निश्चे.

दुविहे काले पण्णत्ते। तं जहा। ओसप्पिणिकाले चेव उस्सप्पिणिकाले चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-हवे काळनुं स्वरुप कहे छे. वे प्रकारे काळश्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. दसक्रोडाक्रोडी सागरोपम सुधी पडतो समय तेहना छ आरा तेमां पहेलो सुसम सुसमा १ बीजो सुसम २ त्रीजो सुसम दुसम ३ चोथो दुसम सुसम ४ पांचमो दुसम ५ छट्टो दुसम दुसमा ६ ते अवसर्पिणि काळ. १ दश क्रोडाक्रोडी सागरोपम सुधी चढतो

तेहना छ

मां

दुःख. २ त्रीजो दुसम सुसमा ते दुःख घणुं ने सुख थोडुं ३ चोथो सुसम दुसमा ते सुख घणुं ने दुःख थोडुं ४ पांचमो सुसम ते एकलुं सुख ५ छठ्ठो सुसम सुसमा ते सुखमां अत्यंत सुख ६ ते उत्सर्पिणि काळ. २ ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे आ० अवकाश आपे जीवने पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं लो० १४ राज प्रमाण लोकाकाश चे० वळी अ० अलोक अनंतो चे० निश्चे.

दुविहे आगासे पण्णत्ते । तं जहा । लोगागासे चेव अलोगागासे चेव ॥२॥

भावार्थ–जीव अने द्रव्यने अवकाश आपे ते आकाश बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. सातमी नरकथी मांडी सिद्ध लगी चौदराज प्रमाणे उंचो जेहमां धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकास्तिकाय ३ पुद्गळास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ काळ ६ ए छ द्रव्य छे ते लोक आकाश १ जेहमां एकलो आकाशज छे, अने बीजां पांच द्रव्य नथी ते अलोक आकाश २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ने० नारकीने दो० बे स० शरीर पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० जीवना प्रदेश संघाते मळी रह्युं छे ते चे० निश्चे बा० जीव प्रदेशथी कांईक मळ्युं कांईक अळगुं चे० निश्चे अ० अभ्यंतर शरीर ते क० कार्मण तेजस बा० बाहिर बे० वैक्रिय शरीर ए० एम दे० देवताने भा० जाणवुं.

नेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । अब्भिन्तरए चेव बाहिरए चेव । अब्भिन्तरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए । एवं देवाणं भाणियव्वं ॥१॥

भावार्थ–नारकीने बे शरिर कहेल छे ते कहे छे. जीवना प्रदेश खीर (दुध) नीरनी पेरे मळी रहेल छे ते अभ्यंतर शरिर १ जीवना प्रदेशथी अळगुं, कांइक मळी रहेलुं छे, पण परभवे साथे जाय नहीं बाहीर शरिर २० अभ्यंतर शरीर ते तेजसने कार्मण १ अने बाहीर ते वैक्रेयशरिर २ ए बे भेद छे एम देवताने पण अभ्यंतर ने बाहीर एवां बे शरीर जाणवां.

अर्थ–पु० पृथ्वि कायने दो० बे स० शरीर पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० अभ्यंतर चे० निश्चे बा० बाह्य शरीर चे० निश्चे अ० अभ्यंतर क० कार्मण शरीर बा० बाह्य ते ओ० उदारिक शरीर जा० यावत व० वनस्पतिका यळगे जाणवुं.

पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । अब्भिन्तरए चेव बाहिरए चेव । अब्भिन्तरए कम्मए बाहिरए ओरालिए जाव वणस्सइकाइयाणं ।२।

भावार्थ–प्रथ्विकायना जीवने बे शरिर कहेल छे ते कहे छे अभ्यंतर १ अने बाहीर २० अभ्यंतर ते हाड मांस विनानुं तेजस ने कार्मण शरिर १ बीजु बाहीर ते उदारिक शरीर २ ए बे भेद छे. एमज पाणी, १ अग्नी, २ वायु, ३ वनस्पति, ४ ए चारने अभ्यंतर तेजस ने कार्मण शरिर १ बाहीर वायु वर्जि त्रणने उदारिक अने वायुने उदारिक ने वैक्रेय शरिर २ एवां बे बे शरिर जाणवा.

अर्थ–बे० बेइन्द्रिने दो० बेस० शरीर पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० एक अभ्यंतर शरीर चे० वळी बा० बाह्य शरीर चे० वळी अ० अभ्यंतर ते क० कार्मण तेजस अ० हाड मं० मांस सो० रुधिर ब० तेणे बांध्युं बा० बाह्य शरीर ओ० उदारिक जा० यावत च० तेन्द्रि चौरिन्द्रिताद एमज.

बेइन्दियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । अब्भिन्तरए चेव बाहिरए चे-

व । अब्भिन्तरए कम्मए अट्ठिमंससोणियबद्धे बाहिरए ओरालिए । जाव चउरिन्दियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थ-बेइंद्रिने बे शरीर कहेल छे ते कहेछे. अभ्यंतर १, अने बाहिर २, अभ्यंतर तेजसने कार्मण शरिर १, बाहीर हाड मांस रुधिरे बांधेलुं उदारिक शरिर २, ए बे भेदछे. एम तेइंद्रि चौरिन्द्रिने पण जाणवुं.

अर्थ-प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंच जो० जोनियाने दो० बे स० शरीर पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० अभ्यंतर शरीर चे० निश्चे बा० बाह्य शरीर चे० निश्चे अ० अभ्यंतर क० कार्मण तेजस अ० हाड मं० मांस सो० लोही रा० नाडी छि० शिरा ब० तेणे बांध्युं बा० बाह्य ओ० उदारिक.

पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । अब्भिन्तरए चेव बाहिरए चेव । अब्भिन्तरए कम्मए अट्ठिमंससोणियराहारुछिराबद्धे बाहिरए ओरालिए ॥ ४ ॥

भावार्थ-तिर्यंच पचेंद्रिने बे शरिर कहेल छे ते कहेछे, एक अभ्यंतर शरिर १, बीजुं बाहीर शरिर २, अभ्यंतर तेजसने कार्मण १, अने बाहीर हाड मांस लोही नाडी शिराये करी बांधेलुं उदारिक शरिर २

अर्थ-म० मनुष्यने वि० पण ए० एमज चे० निश्चे.

मणुस्साण वि एवं चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-एमज माणसने पण जाणवुं ए बे भेद छे.

अर्थ-वि० वांकि ग० गति स० करताने ने० नारकीने दो० बे स० शरीर पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ते० तेजस चे० वळी क० कार्मण चे० वळी नि० निरंतर जा० यावत वे० वैमानिक ताइ जाणवुं.

विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । तेयए चेव कम्मए चेव । निरन्तरं जाव वेमाणियाणं ॥ ६ ॥

भावार्थ-उपजवाने स्थानके वांको चाली जाय ते विग्रह गति समापन्न नारकीने बे शरिर कहेल एक तेजस शरिर १ बीजुं कार्मण शरिर २, एम यावत् आंतरा रहीत वैमानिक सुधी चौवीस दंडके बे बे शरिर जाणवा.

अर्थ-ने० नारकीने दो० बे ठा० थानके सा० शरीरनी उ० उत्पती छे तं० ते ज० कहुंछुं रा० रागे करी चे० निश्चे दो० द्वेषेकरी चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक ताइ जाणवुं.

नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सारीरुप्पत्ती सिया । तं जहा । रागेण चेव दोसेण चेव । जाव वेमाणियाणं ॥ ७ ॥

भावार्थ-नारकीने बे स्थानके करी शरिरनी उत्पती ते शरिर बंधाय छे ते बे स्थानक कहेछे. रागे करीने १, द्वेषे करीने २ एम वैमानिक सुधी चौविस दंडके जाणवुं.

अर्थ-ने० नारकीने दु० बे ठा० थानके नि० अवयव पुरानीपना त स० शरीरना पं० कहे छे तं० ते ज० कहुंछुं रा० रागथी नि० निवर्तना ते चे० वळी दो० द्वेष थकी निवर्तना चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

नेरइयाणं दुट्ठाणनिवत्तिए सरीरगे पण्णत्ते । तं जहा । रागनिवत्तिए चेव

दोसनिवत्तिए चेव । जाव वेमाणिया-णं ॥ ८ ॥

भावार्थ—नारकीने बे स्थानके करी शरीरनी निवर्तना ते शरिरना अवयव पुरा निपना ते कहेछे. एक रागथी निवर्तना १ बीजी द्वेषथी निवर्तना २, रागद्वेषे करी शरिर उपजे निवर्तना होय एम वैमानिक सुधी चौविस दंडके जाणवुं.

अर्थ—दो० (२४ दण्डके) बे का० कायाराशि पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं त० बेइंद्रि प्रमुख त्रस चे० निश्चे था० पृथ्वि प्रमुख चे० वळी.

दो काया पण्णत्ता । तं जहा । तस-काए चेव थावरकाए चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—बे काय ते राशी समुह कहेल छे ते कहेछे, जे दुःख देखी त्रास पामी दुःखनी जग्याएथी चाली सुखनी जग्याए जाय ते त्रस जीवनो समुह ते त्रसकाय १, अने स्थीर रहेते स्थावरकाय २. ए बे भेद छे.

अर्थ—त० त्रसकायना दु० बे भेद पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं भ० मोक्ष जास्येते चे० निश्चे अ० मोक्ष नहीं जायते चे० निश्चे.

तसकाए दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । भवसिद्धिए चेव अभवसिद्धिए चेव ।२।

भावार्थ—त्रसकायना बे प्रकार कहेल छे ते कहेछे, मोक्षमां जशे ते भवसिद्धिया त्रस, कोइ काळे मोक्षमां जशे नहीं ते अभवसिद्धिया त्रस.

अर्थ—ए० एम था० थावर काय वि० पण.

एवं थावरकाए वि ॥ ३ ॥

भावार्थ—एम स्थावर कायना पण भव्य अभव्य ए बे भेद जाणवा.

अर्थ—दो० बे दि० दिशिने अ० साह्मा-रहीने क० कलपे नि० साधूने वा० तेमज नि० साधवीने वा० तेमज प० वेष आपवो ते पा० पूर्वदिशि चे० निश्चे उ० उत्तर दिशि चे० निश्चे.

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ नि-ग्गन्थाणं वा निग्गन्थीणं वा पव्वावित्त-ए । पाईणं चेव उदीणं चेव ॥

भावार्थ—कल्पे साधु साध्वीने दिशादेवी ओघो प्रमुख वेष आपवो.

अर्थ—ए० एम मु० लोच करवो.

एवं मुण्डावित्तए ॥ १ ॥

भावार्थ—मुंडन ते लोच करवो.

अर्थ—सि० शिपववुं सूत्रादिक.

सिक्खावित्तए ॥ २ ॥

भावार्थ—सूत्र अर्थ शिखववा.

अर्थ—उ० पांच महाव्रत थापवां ते.

उवट्ठावित्तए ॥ ३ ॥

भावार्थ—उठामण ते पंचमहाव्रत आरोपवां.

अर्थ—सं० जमवुं ते.

संभुञ्जित्तए ॥ ४ ॥

भावार्थ—मांडले जमवुं.

अर्थ—सं० संथारे बेसवुं ते

संवसित्तए ॥ ५ ॥

भावार्थ—संथारे बेसवुं.

अर्थ—स० सज्झाय तथा योग क्रियानुं उ० कहेवुं ते.

सज्झायं उद्दिसित्तए ॥ ६ ॥

भावार्थ—सज्झाय तथा योगक्रियानुं कहेवुं.

अर्थ—स० सज्झाय स० परिचित करवुं ते.

सज्झायं समुद्दिसित्तए ॥ ७ ॥

भावार्थ–योगनी सामाचारी स्थीर परिचित्त करवी.

अर्थ–स० जोग क्रियानुं अ० धारवुं बीजाने कहेवुं ते.

सज्झायं अणुजाणित्तए ॥ ८ ॥

भावार्थ–योग क्रिया धारवी तथा बीजाने कहेवी.

अर्थ–आ० अपराध कहेवो गुरु आगल.

आलोइत्तए ॥ ९ ॥

भावार्थ–करेला अपराध गुरुनी पासे कहेवा.

अर्थ-प० पापथी ओसरवुं पडिकमणुंकरवुं ते.

पडिक्कमित्तए ॥ १० ॥

भावार्थ–पडिकमणुं (पाप कर्मथी निवर्तवुं) करवुं.

अर्थ–नि० पाप निंदवुं आत्मा साथे.

निन्दित्तए ॥ ११ ॥

भावार्थ–पोतानां करेल पाप आत्मानी साक्षीए निंदवां.

अर्थ–ग० गुरुसाखे पाप निंदवुं.

गरहित्तए ॥ १२ ॥

भावार्थ–करेल पाप गुरुनी साक्षीए निंदवा.

अर्थ–वि० पापबंधनुं छेदवुं.

विउट्टित्तए ॥ १३ ॥

भावार्थ–पाप बंधनुं छेदवुं.

अर्थ–वि० आत्मा शुद्ध करवो पापथी.

विसोहित्तए ॥ १४ ॥

भावार्थ–अतिचारना मेलथी आत्माने शुद्ध करवो.

अर्थ–अ० फरी पाप नही करु तेहने अर्थे अ० उजमाल थावुं ते.

अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए ॥ १५ ॥

भावार्थ–फरी पाप नहीं करवाने अर्थे उद्यम करवो.

अर्थ–अ० यथाजोग पा० पाप छेदवाने त० तप करवो प० आदरवो ते पूर्व तथा उत्तर सामा रहीने आदरवो.

अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए ॥ १६ ॥

भावार्थ–यथायोग अतिचारने अनुसारे प्रायश्चित लेवुं पाप छेदवां टाळवाने तप कर्म अंगिकार करवां. एटला उपरना १६ बोल पूर्व तथा उत्तर ए बे दिशा सन्मुख रहीने आदरवां.

अर्थ–दो० बे दि० दिशाए अ० सन्मुख रहीने क० कल्पे नि० साधूने वा० अने नि० साधवीने वा० अने अ० पाछली मा० मरणने सं० अणसण झु० तेहनी सेवा झु० सेवतां भ० भात पा० पाणीने प० तजे पा० वृक्षनी डाल कापी तेनी परे थिर का० मरणने अ० अणवांछतो वि० रहे ते बे दिशाए तं० ते ज० कहुं छुं पा० पूर्वदिशे चे० वळी उ० उत्तर दिशे चे० वळी.

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गन्थाणं वा निग्गन्थीणं वा अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाझूसित्ताणं भत्तपाणपडियाइक्खेत्ताणं पाओवत्ताणं कालं अणवकङ्खमाणाणं विहरित्तए । तं जहा । पाईणं चेव उदीणं चेव ॥

भावार्थ–कल्पे साधु साध्वीने छेहलुं मरणनुं मगळीक माटे अपछीम कहीए सलेखणा ते अणसण, झुसणा ते तेहनी सेवाए करी स-

हीत, देह मुकता भात पाणीतुं जाव जीव लगि पचखाण करतां कापेली वृक्षनी डाळ जिहां पडी तिहांज रहे तेहनी परे हाथ पगादीक नहीं हलावतां स्थीर रहेवुं मरणने अणवांछवुं ए रिते अणसण करवुं ते पूर्व अने उत्तर ए वे दिशाए सन्मुख रहीने करवुं.

अर्थ–वि० वे ठा० ठाणांनो प० पहेलो उ० उदेसो स० पूरो थयो.

बिठ्ठाणस्स पढमो उद्देसओ समत्तो

भावार्थ–इतिश्री बीजा ठाणांगना प्रथम उदेशानो भावार्थ संपूर्णम्.

(अह दुठ्ठाणस्स बीयो उद्देसओ ।)

अर्थ–जे० जे दे० देवता उ० उर्ध लो० लोके उ० उपना छे ते वे भेदे छे. क० १२ देव लोकना उ० उपना वि० ९ ग्रेवेक ५ अनुत्तर विमानना उ० उपना चा० चाले भमे ते ज्योतिषी अढी द्वीपना उ० उपना चा० स्थिर ज्योतिषी अढी द्वीप वहारना ग० चालवाने विषे र० राता छे गइ० गमन स० पडिवर्ज्यो छे ते० ते दे० देवताने स० सदाय स० नित्य जे० जे पा० पाप क० कर्म क० वंधाय छे त० तेज देवताने ग० भवे वि० पण ए० केटलाएक वे० वेदना वे० भोगवे. अ० भवांतरे ग० जइ वि० ने ए० केटलाएक वे० वेदना वे० भोगवे छे.

जे देवा उड्ढलोगोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठिइया गइरइया गइसमावन्नगा तेसिणं देवाणं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ तत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति अन्नत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ–जे देवता उर्द्ध (उंचा) लोके उपना छे तेहना वे प्रकार श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. वार देवलोके उपना ते कल्पवासी १ नव ग्रैवेयगने पांच अनुत्तर विमाने उपना ते कल्पातीत २ ए वे भेद छे. जोतिषीदेवता वे प्रकारे छे ते कहे छे. अढी द्वीपे मनुष्य क्षेत्रमां जोतिषी छे ते चाले छे भमे छे १, अढी द्वीपनी बाहीर स्थीर छे २, चालवाने विषे जेहने रती (खुशी) छे १, मनुष्यक्षेत्रना गमनने पडी वर्ज्या छे २ ए वे भेद छे, ते पुर्वोक्त देवताने सदाय नित्ये जे पापकर्म उपजे छे, वंधाय छे ते पापकर्म केटलाएक देवता तो तेह देवतानाज भवने विषे वेदना वेदे छे भोगवे छे. १ केटलाएक देव भवांतरे ते बीजे भवे जइने कर्म वेदे छे भोगवे छे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–ने० नारकी स० सदा स० निरंतर जे० जे पा० पाप क० कर्म क० बांधे त० तेज ग० भवे वि० पण ए० केटलाएक वे० वेदना वे० भोगवे अ० बीजे भवांनतरे ग० गया थका वि० पण ए० केटलाएक नारकी वे० पाप फळ एटले वेदना वे० भोगवे छे ए० एम जा० यावत पं० पंचेन्द्री ति० तिर्यंच जो० जोनियाने.

नेरइयाणं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ तत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति अन्नत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति। एवं जाव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थ–नारकी जे सदा सर्वदा निरंतर पापकर्म करे छे, वांधे छे ते पापनां फळ केटलाएक नारकी तो तीहांज नर्कमां रह्या वेदना वेदे छे, भोगवे छे १ केटलाएक नारकी वीजे भवांतरे जइने पापनां फळ वेदे छे भोगवे छे २ ए वे भेद छे. एम यावत् पांच स्थावर, त्रण विगलेंद्रि, पचेंद्रि तिर्यंच ते जे भवमां पाप करे तेहज भवमां भोगवे. १ अने वीजे भवे पण भोगवे छे २ ए वे भेद छे.

अर्थ–मनुष्यने एमज जाणवुं स० सदा स० निरंतर जे० जे पा० पाप क० कर्म क० करे छे ते इ० एज ग० भवे वि० पण ए० केटलाएक वे० कर्म फळ वे० भोगवे अ० वीजे भवांनतरे ग० गया थका वि० पण ए० केटलाएक वे० वेदना वे० भोगवे छे.

मणुस्साणं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ इहगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति अन्नत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थ–जे मनुष्य सदा सर्वदा पाप करे छे ते केटलाएक मनुष्य तेहज भवने विषे पापनां फळ वेदे छे भोगवे छे १ केटलाएक मनुष्य वीजे भवांतरे जइने पापनां फळ वेदे छे भोगवे छे. २ ए वे भेद छे.

अर्थ–म० मनुष्य व० वर्जिने से० वीजा ए० एमज जाणवा.

मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा ॥४॥

भावार्थ–मनुष्य वर्जिने शेष वीजा दंडक ते भवनपति, वाण व्यंतर जोतिषी वैमानिक एक गमा सरखां जाणवां.

अर्थ–ने० नारकी जीवनी दु० वे ग० गति छे दु० वे आ० आववानी गति छे. पं० कही छे तं० ते ज० कहुं छुं ने० नरकतुं आउपुं वांध्युं ने० ते नरकमां उ० उपजतो थको म० मनुष्यथकी वा० अथवा प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंच जो० जोनि मांहिथी ए वेमांथी वा० वळी उ० नारकी थाय.

नेरइया दुगइया दुआगइया पण्णत्ता। तं जहा। नेरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा ॥ १ ॥

भावार्थ–नारकीने जावानी वे गति अने आववानी वे आगति कहेल छे ते कहे छे. जेणे नारकीतुं आयुष्य वांध्युं छे तेहने नारकीज कहीए ते नरकमां उपजे तो मनुष्यमांथी १ अथवा पचेंन्द्रि तिर्यंचमांथी २ ए वे मांहीथीज नारकी थाय.

अर्थ–से० तेहज चे० निश्चे णं० वळी ने० नारकीने ने० नारकीपणुं वि० मुकतो थको म० मनुष्यपणुं वा० अथवा पं० पंचेन्द्रि तिर्यंच जो० योनि ग० पामे.

से चेव णं नेरइए नेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियत्ताए गच्छेज्जा ॥ २ ॥

भावार्थ–वळी तेहज नारकीपणुं मुकी नरकमांथी निसरी मनुष्यमां १ अथवा पचेंन्द्रि

तिर्यंचमां आवी उपजे २. ए बे ठेकाणे आवे जाय.

अर्थ–ए० एम अ० असुरकुमार वि० पण जाणवा (नारकी पेठे) ण० एटलो विशेष से० ते चे० निश्चे णं० वळी अ० असुरकुमार अ० असुरकुमारनो भव वि० मुकतो थको म० मनुष्यपणुं वा० अथवा ति० तिर्यंच जो० योनी वा० अथवा ग० पामे.

एवमसुरकुमारा वि । णवरं से चेव णं असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा ॥ ३ ॥

भावार्थ–एम नारकीनी पेरे असुरकुमार जाणवा पण एटलो विशेष जे ते असुरकुमार देवता असुरकुमारपणुं मुकतो थको प्रथ्वि १ पाणी २ वनसपती ३ संज्ञी मनुष्य ४ संज्ञी तिर्यंच पचेंन्द्रि ५ ए पांचमां आवी उपजे.

अर्थ–ए०एम स०सघळा दे०देवता जाणवा.

एवं सव्वदेवा ॥ ४ ॥

भावार्थ–एम दसे भवनपति, वाणव्यंतर जोतिषी वैमानिकमां बीजा देवलोक सुधी सर्व देवताने असुरकुमारनी पेरे जाणवुं. [त्रीजाथी आठमा देवलोक सुधीना देवता संज्ञी मनुष्य १ संज्ञी तिर्यंच २ ए बेमांथी आवी उपजे अने ए बे मांहीज जाय, नवमांथी स्वार्थसिद्ध सुधीना देवता एक मनुष्यमांथी आवी उपजे अने मनुष्य मांहीज जाय.]

अर्थ–पु० पृथ्विकायना जीव दु० बे गतिमांहि ग० जाय दु० बे आ० गतिमांथी आवे प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं. पु० पृथ्विकायनुं आउखुं बांधी पु० पृथ्विकायने विषे उ० उपजतो थको पु० पृथ्विकाय मांहि वा० अथवा नो० नारकी वर्जी बीजा सर्वमांथी वा० अथवा उ० उपजे ते.

पुढविकाइया दुगइया दुआगइया पण्णत्ता । तं जहा । पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा नोपुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा ॥ ५ ॥

भावार्थ–पृथ्विकायना जीवने बे गति बे आगतिथी भगवंते कहेल छे ते कहे छे. प्रथ्विकायनुं आयुष्य बांधी पृथ्विकायमां उपजे ते पृथ्विकायमांथी वळी पृथ्विकायमां आवी उपजे १ पृथ्विकायमां नारकी वर्जि त्रेवीस दंडकना आवी उपजे २, पृथ्विविना बीजा सर्वनोपृथ्वि कहीए.

अर्थ–से० ते चे० निश्चे णं० वळी पु० पृथ्विकायनो जीव पु० पृथ्विकायपणुं वि० मुकतो थको पु० पृथ्विकायमां उपजे वा०अथवा नो० नो पृथ्विकायपणे वा० अथवा ग० उपजे ए० एम जा० यावत मा० मनुष्य लगे.

से चेव णं पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा नोपुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा । एवं जाव माणुस्सा ॥ ६ ॥

भावार्थ–वळी तेहज पृथ्विकायनो जीव पृथ्विकायपणुं मुकीने पृथ्विकायमां जइ उपजे ? अथवा नोपृथ्वि ते देवता नारकी वर्जिने बीजां सर्व स्थानके जाय. एम यावत् त्रण विगलेंद्रिमां पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रि मनुष्यने तिर्यंच पचेंद्रि ए दस दंडकनो आवे ने ए दसमां जाय. तिर्यंच पचेंद्रिमां आठमा देवलोकथी स्वार्थसिद्ध वर्जि चोविस दंडकनो

आवे ने चोवीसमां जाय. मनुष्यमां तेउ वायुने सातमी नरक वर्जिने वावीस दंडकनो आवे ने चोवीस दंडकमां जाय.

अर्थ–दु० वे० प्रकारे ने० नारकी प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं भव० भव्यनारकी चे० निश्चे अ० अभव्य नारकी चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे २४ दण्डके जाणवुं.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव। जाव वेमाणिया ॥ १ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारे नारकी कहेलछे ते कहे छे. एक भव्यनारकी १ वीजा अभव्यनारकी २ ए वे भेद छे एम यावत् वैमानिक सुधी चोविस दंडके जाणवुं.

अर्थ–दु० वे प्रकारे ने० नारकी प० कह्या तं०ते ज० कहुं छुं अ० एक समये घणा उपना ते चे० निश्चे पं० एकेकी समे एकेको उपनो ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वेमानिक लगे २४ दण्डके.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । अणन्तरोववन्नगा चेव परंपरोववन्नगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ २ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक समे घणा एकठा उपना १ एक समे एक, वीजे समे वीजो एम परंपराए उपना २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ग० नरकमां जाता अथवा तरत उपना ते चे० निश्चे अ० घणा कालना छे ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे जाणवा.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ ३ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. नरकमां जता होय तथा नरकमां तरत उपना ते गति समापन १ घणा काळना तीहां छे ते अगति समापन २ ए वे भेद छे एम यावत् वैमानिक सुधी गतिसमापन १ अगतिसमापन २ ए वे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० प्रथम समय उ० उपना चे० निश्चे अ० वीजा वीजे समये उपजा चे० निश्चे जा० यावत वैमानिक लगे २४ दण्डके

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । पढमसमओववन्नगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव। जाव वेमाणिया ॥४॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयना उपना १ अप्रथम समयना उपना ते वीजा त्रीजादीक समयना उपना २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ–दु०वे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं आ० आहारवंत चे० निश्चे अ० विग्रहगति ते १–२ समे अणाहारी चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे २४ दण्डके

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । आहारगा चेव अणाहारगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥

भावार्थ–वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहेल छे. आहारिक ते केटला एक नारकी हमेशां आहार लेछे १ अणाहारिक ते विग्रह गति करी नरकमां उपजे ते वारे एक वे समे

अणाहारि होय एम यावत् वैमानिक सुधी बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० बे प्रकारे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं उ० श्वासोश्वास लीए ते पर्याप्ता चे० निश्चे नो०जे श्वासोश्वास नथी लेता ते अपर्याप्ता चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । उस्सासगा चेव नोउस्सासगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ ६ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक पर्याप्ता नारकी छे ते श्वासोश्वास लेछे १ बीजा अपार्याप्ता नारकी छे ते श्वासोश्वास लेता नथी २ एम यावत् वैमानिक सुधी बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं स० इन्द्रि सहित चे० निश्चे अ० इन्द्रि रहित चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । सइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव । जाव वेमाणिया ॥ ७ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. जेणे पर्याय पुरी करी छे ते इंद्रि सहीत छे. १ जेणे पर्याय पुरी करी नथी ते इंद्रि रहीत छे २ एम यावत् वैमानिक सुधी बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० पर्याप्ता नाम कर्मथी चे० निश्चे अ० पर्याप्ति पुरी नथी थइ ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ ८ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे एक पर्याप्ता १ बीजा अपर्याप्ता २ एम यावत् वैमानिक सुधी बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० बे प्रकारे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं स० मन पर्याप्ति सहित चे० निश्चे अ० मन पर्याप्ति पुरी थइ नथी ते चे० निश्चे ए० एक पं० पचेन्द्रि स० सर्व जाणवा वि० वेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चउरिन्द्रि वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । सन्नी चेव असन्नी चेव । एवं पंचिन्दिया सव्वे विगलिन्दियवज्जा जाव वेमाणिया ॥ ९ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे मन पर्याय सहीत ते संज्ञी १ मन पर्याय हजु नथी थइ ते असंज्ञी २ ए बे भेद छे. पांच स्थावर अने त्रण विगलेंद्रिने मननथी तेथी ए आठ वर्जिने यावत् वाणव्यंतर सुधी (इहां वैमानिक पण लेवा) ए सर्व पचेंद्रियां संज्ञी असंज्ञी ए बे बे भेद छे (असंज्ञी पचेंद्रि मरीने नारकी भवनपति वाणव्यंतर सुधी उपजे छे अने जोतिषी वैमानिकमां एकला संज्ञीज उपजे छे तेथी इहां वाणव्यंतर सुधी कहेल छे.)

अर्थ–दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं भा० भासक चे० निश्चे अ० अभासक चे० निश्चे ए० एम ए० एकेन्द्रि वर्जीने स० सर्वने.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।

भासगा चेव अभासगा चेव । एवं एगिन्दियवज्जा सव्वे ॥ १० ॥

भावार्थ-बे भेदे नारकी कह्या छे, भासक अने अभासक एम बे भेद छे. एम एकेन्द्रि वर्जीने सर्व दंडके जाणवुं.

अर्थ-दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं स० समकित द्रष्टी नारकी चे० निश्चे मि० मिथ्यात्वी नारकी चे० निश्चे ए० एकेन्द्रि वर्जित स० सर्व दंडके.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । सम्मद्दिट्ठिया चेव मिच्छद्दिट्ठिया चेव एगिन्दियवज्जा सव्वे ॥ ११ ॥

भावार्थ-वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक समकित द्रष्टी, बीजा मिथ्यात्व द्रष्टी २ एम एकेंद्रिय वर्जिने सर्व १९ दंडकमां समकित द्रष्टीने मिथ्यात्व द्रष्टीए बे बे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० भव थोडाहोय ते चे० निश्चे अ० अनंत संसारी छेते चे० वळी जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । परित्तसंसारिया चेव अणन्तरसंसारिया चेव । जाव वेमाणिया ॥ १२ ॥

भावार्थ-वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. जे नारकीने थोडा भव करवाना होय ते परित संसारी १ जेहने घणा भव करवाना होय ते अनंतसंसारी २ एम यावत वैमानिक सुधी बे बे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० बे प्रकारे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं स० संख्याता का० काल स० समय ट्ठि० स्थितिना चे० निश्चे अ० असंख्याता का० काल स० समय ट्ठि० स्थितिना चे० निश्चे ए० एम प० पंचेंन्द्रि जाणवा ए० एकेंन्द्रि वि० विगलेंन्द्रि व० वर्जीने जा० यावत वा० व्यंतर लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । संखेज्जकालसमयट्ठिइया चेव असंखेज्जकालसमयट्ठिइया चेव । एवं पञ्चिन्दिया एगिन्दियविगलिन्दियवज्जा जाव वाणमन्तरा ॥ १३ ॥

भावार्थ-वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहेछे. एक संख्याता काळसमयनी स्थिति एटले जघन्य दशहजार वरसनी स्थितिवाळा, बीजा असंख्याता काळ समयनी स्थिति ते पल्योपम सागरोपमनी स्थितिवाळा २ ए बे भेद छे. पांच स्थावर, त्रण विगलेद्रिना असंख्याता वरसनां आयुष्य नथी ते ए आठ वर्जिने मनुष्य तिर्यंच भवनपति वाणव्यंतर सुधी बे बे भेद जाणवा. जोतिषी वैमानिकमां असंख्याता वरसनां आयुष्य छे.

अर्थ-दु० बे भेदे ने० नारकी पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं. सु० जिनधर्म पामवो सोहिलोछे ते चे० निश्चे दु० जिनधर्मनी प्राप्ति दोहिली छे ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे जाणवा.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । सुलभबोहिया चेव दुलभबोहिया चेव । जाव वेमाणिया ॥ १४ ॥

भावार्थ-वळी बे प्रकारे नारकी कहेल छे, ते कहे छे. एक सुलभ बोधी ते जेहने जैनधर्म पामवो सोहिलो छे १ बीजो दुर्लभ बोधी

ते जेहने जैनधर्म पामवो दोहिलो छे २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ- दु० वे भेदे ने० नारकी प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं कि० भारे कर्मि चे० वळी सु० हलुआकर्मि चे० वळी जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा किण्हपक्खिया चेव सुक्कपक्खिया चेव । जाव वेमाणिया ॥ १५ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक कृष्णपक्षि ते जेहने घणो संसार परिभ्रमण करवानुं छे ते भारे कर्मि. १ बीजा शुकलपक्षि ते जेहने कर्म थोडां छे संसार अल्प छे ने हळुवाकर्मि. २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं च० फरी नरकमां नही आवे ते चे० निश्चे अ० वळी नरकमां आवसे ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । चरिमा चेव अचरिमा चेव । जाव वेमाणिया ॥ १६ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक चरम ते फरी नरकमां नहीं आवे श्रेणीक कृष्ण प्रमुख १ बीजा अचरम ते बीजा भव करीने वळी फरी नर्कमां आवशे २ यावत् वैमानिक सुधी वे भेद जाणवा.

अर्थ-दो० वे ठा० प्रकारे आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे तं० ते ज० कहुं छुं स० विक्रय समुद्घाते चे० वळी अ० अवधिज्ञाने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक प्रते जा० जाणे पा० देखे अ० समुद्घात विना चे० वळी अ० अवधि ज्ञान दर्शने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे अ० अवधिज्ञानी स० विक्रय समुद्घाते करी स० विक्रय समुद्घात विना पण चे० वळी अ० आतमा स्वभाव ज्ञाने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक जा० जाणे पा० देखे.

दोहिं ठाणेहिं आया अहेलोगं जाणइ पासइ । तं जहा । समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अहोहिसमोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ ॥ १ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे आतमा अधो (नीचो) लोकने जाणे देखे ते कहेछे, विक्रय समुद्घाते आत्मस्वभावे करी जीव अधो लोकने जाणे देखे १, विक्रय समुद्घात विना पण अवधिज्ञान अवधिदर्शने करी आत्म स्वभावेज अधोलोकने जाणे देखे. २ अधोवर्ति अवधिज्ञानी जीव तथा परम अवधिज्ञाननो धणी विक्रय समुद्घाते करी तथा विक्रय समुद्घात विना पण आतम स्वभावे करी अधोलोकने जाणे देखे.

अर्थ-ए० एम ति० त्रिछा लो० लोक प्रते जाणे देखे.

एवं तिरियलोगं ॥ २ ॥

भावार्थ-एमज त्रिछालोकप्रते जाणे देखे.

अर्थ-उ० एम उर्द्ध लो० लोक प्रते.

उड्ढलोगं ॥ ३ ॥

भावार्थ-एमज उर्द्ध लोकने पूर्वोक्त वे प्रकारे करी जाणे देखे.

अर्थ—के० एम १४ राज लो० लोक मते जाणे देखे.

केवलकप्पलोगं ॥ ४ ॥

भावार्थ—एमज केवळलोक ते संपूर्ण चौद राजलोक मत्ये केवळज्ञान केवळदर्शने करी जाणे देखे.

अर्थ—दो० बे ठा० प्रकारे आ० जीव अ० अधो लो० लोक मते जा० जाणे पा० देखे तं० ते ज० कहुं छुं वि० विक्रय शरीर कीधुं जेणे एहवो चे० निश्चे अ० आत्मा स्वभावे करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक मते जा० जाणे पा० देखे अ० विक्रय शरीर विना पण चे० वळी अ० स्वभावे आ० जीव अ० अधो लो० लोक मते जा० जाणे पा० देखे अ० अवधि ज्ञानी वि० विक्रय करीने वि० विक्रय कर्या विना चे० वळी अ० स्वभावेज आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे.

दोहिं ठाणेहिं आया अहेलोगं जाणइ पासइ । तं जहा । विउव्विएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अविउव्विएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अहोहिविउव्वियाविउव्विएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ ॥ १ ॥

भावार्थ—जेणे विक्रय शरीर करेलुं छे ते आत्मस्वभावे करी जीव अधोलोक मत्ये जाणे देखे १ विक्रय शरीर कर्या विनाज पर्म अवधिज्ञाननो धणी आत्मस्वभावे करीअधोलोक मत्ये जाणे देखे २, एम विक्रय शरीर करीने १ तथा अणकरीने २ पर्म अवधिज्ञाने आत्मस्वभावे करी अधोलोक मत्ये जाणे देणे.

अर्थ—ए० एम ति० त्रिछो लो० लोक जाणे देखे.

एवं तिरियलोगं ॥ २ ॥

भावार्थ—एमज त्रिछालोकने जाणे देखे.

अर्थ—उ० उर्ध लो० लोक मते.

उड्ढलोगं ॥ ३ ॥

भावार्थ—तथा उर्ध्वलोकने पूर्वोक्त बे प्रकारे करी जाणे देखे.

अर्थ—के० समग्र लो० लोक मते जाणे,

केवलकप्पलोगं ॥ ४ ॥

भावार्थ—एमज समग्रलोक मत्ये जाणे देखे.

अर्थ—दो० बे ठा० थानके आ० जीव स० शब्द मते सु० सांभले तं० ते ज० कहुं छुं दे० देशथी एक काने वि० वळी आ० जीव स० शब्द मते सु० सांभले स० बे काने वि० अथवा संभिन्न श्रोता लब्धिनो आ० धणी सर्व इन्द्रिए करी स० शब्द मते सु० सांभले.

दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेइ । तं जहा । देसेण वि आया सद्दाइं सुणेइ सव्वेण वि आया सद्दाइं सुणेइ ॥१॥

भावार्थ—बे स्थानके आत्मा शब्द मत्ये सांभळे ते कहे छे. देश थकी ते एक काने बहेरो होय तेथी एकज काने आत्मा मत्ये शब्द सांभळे १, सर्वथी ते बे काने आत्मा शब्द मत्ये सांभळे तथा संभिन्न श्रोत्र लब्धिनो धणी सर्व इंद्रिये करी सांभळे २ ए बे भेद छे.

अर्थ—ए० एम बे भेदे रु० रुप पा० देखे देशथी ने सर्वथी.

एवं रूवाइं पासइ ॥ २ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे रुप देखे ते कहे छे, देशथी ते एक आंखे काणो होय तेथी एकज आंखे देखे १ सर्वथी ते बे आंखे देखे २.

अर्थ–ग० गंध नाके अ० ले ए देशथी सर्वथी एम बे भेद.

गन्धाइं अग्घाइ ॥ ३ ॥

भावार्थ–एम नाके गंध ले ते देशथी ने सर्वथी.

अर्थ–र० एम रस आ० ले देशथी सर्वथी.

रसाइं आसाएइ ॥ ४ ॥

भावार्थ–एम जीभे रसले देशथी ते पडजीभी प्रमुख रोगे करी देश (एक तर्फ) थी स्वाद ले तथा सर्वथी ले.

अर्थ–फा० फरस प्रते प० जाणे देशथी सर्वथी.

फासाइं पडिसंवेदेति ॥ ५ ॥

भावार्थ–एम स्पर्श पण देशथी ने सर्वथी कहेवुं.

अर्थ–दो० बे ठा० थानके आ० आत्मा ओ० दीपे तेजे करी तं० ते ज० कहुं छुं दे० देशथी वि० पण आ० जीव ओ० दीपे पजुयानीपरे स० सर्वथी वि० पण आ० जीव ओ० दीपे दीवानी परे.

दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ। तं जहा। देसेण वि आया ओभासइ सव्वेण वि आया ओभासइ ॥ १ ॥

भावार्थ–बे स्थानके करी आत्मा तेजथी दीपे ते कहे छे, देशथी खजुआ (आगीया-जीव) नी परे दीपे १ सर्वथी सूर्यनी परे आत्मा दीपे २.

अर्थ–ए० एम प० प्रकर्षे दीपे देशथी सर्वथी.

एवं पभासइ ॥ २ ॥

भावार्थ–एम देशथी ने सर्वथी आत्मा प्रकाशे ए बे भेद छे.

अर्थ–वि० विकुर्वे देशथी सर्वथी.

विउव्वइ ॥ ३ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे विकुर्वे देशथी ते हाथ प्रमुख वैक्रेय करे १ सर्वथी ते काया संपूर्ण विकुर्वे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–प० एम मैथुन सेवे बे भेदे.

परियारेइ ॥ ४ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे मैथुन सेवे देशथी ते हस्तादिक अवयवे करी तथा मने करीने सेवे १ सर्वथी ते मन वचन कायाए करी सेवे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–भा० एम भाषा भा० बोले बे भेदे.

भासं भासइ ॥ ५ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे भाषा बोले देशथी ते जीव्हाग्रे बोले १, सर्वथी ते लब्धिपुरी भाष्या बोले २, ए बे भेद छे.

अर्थ–आ० आहार ले बे भेदे.

आहारेइ ॥ ६ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे आहार ले, देशथी ते आहार प्रमुख मात्रा (मर्यादा) ए ले १, सर्वथी ते पूर्ण आहार ले २, ए बे भेदछे.

अर्थ–प० परगमावे.

परिणामेइ ॥ ७ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे आहार प्रमुखपरगमावे देशथी ते पेटमां पीओ होय तेणे करी एक तर्फपरगमावे तथा हस्तादीक अवयवे परगमावे १, सर्वथी ते सर्व अंगे परगमावे

२, एम देशथी आहार प्रमुख छांडे ते अधो वायु नीकळे १, सर्वथी छांडे, आखे शरीरे परसेवानी पेरे २, ए बे भेद छे.

अर्थ–वे० वेदे.

वेदेइ ॥ ८ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे आहारने वेदे देशथी १, सर्वथी २, ए बे भेद छे.

अर्थ–नि० निर्जरे.

निज्जरेइ ॥ ९ ॥

भावार्थ–एम बे प्रकारे आहारने तजे देशथी ते एकासणुं करे १, सर्वथी ते उपवास करे २, ए बे भेदछे.

अर्थ–दो० बे ठा० थानके दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे तं० ते ज० कहुं छुं. दे० देशथी वि० वळी दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे स० सर्वथा वि० पण दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे जा० यावत नि० छांडे.

दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ। तं जहा। देसेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ सव्वेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ जाव निज्जरेइ ॥

भावार्थ–बे स्थानके करी देवता पण शब्द प्रत्ये सांभळे ते कहेछे, देशथी देवता शब्द प्रत्ये सांभळे एटले कांइक सांभळ्युं कांइक न सांभळ्युं १, सर्वथी देवता शब्द प्रत्ये सांभळे ते ते शब्द बोले ते सर्वे सांभळे २, ए बे भेदछे. एम यावत् निर्जरावे छांडे त्यां सुधी ए सर्वे बोल आहारनी पेरे देशथी सर्वथी ए बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–म० सर्वमां प्रधान दे० देवता दु० बे भेदे प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ए० भवधारिणि शरीरवंत चे० वळी वि० उत्तर विक्रिय करे ते चे० वळी.

मरुया देवा दुविहा पन्नत्ता। तं जहा। एगसरीरी चेव बिसरीरी चेव ॥१॥

भावार्थ–मरुत देवता बे प्रकारे श्री भगवंते कहेलछे ते कहेछे. जेवारे भवधारणीज शरीर होय ते वारे एक शरीरछे १, अने जे वारे उत्तर विक्रय करे ते वारे बे शरीर छे २ (सर्वे देवताने बे शरीरज होय पण आठमा देवलोक सुधीना देवताछे ते मांही मरुत देवता सर्वथी प्रधान (उत्तम) छे ते माटे इहां मरुत देवता कहेलछे) ए बे भेदछे.

अर्थ–ए० एम किं० किन्नरदेव.

एवं किन्नरा ॥ २ ॥

भावार्थ–एम किंनर देवता.

अर्थ–किं० किं० पु० पु० पुरुषदेव.

किंपुरिसा॥ ३ ॥

भावार्थ–किं पुरुष देवता.

अर्थ–गं० गन्धर्व देवता.

गन्धव्वा ॥ ४ ॥

भावार्थ–गंधर्व देवता.

अर्थ–ना० नागकुमार देवता,

नागकुमारा ॥ ५ ॥

भावार्थ–नागकुमार देवता.

अर्थ–सु० सुवन्न कुमार.

सुवन्नकुमारा ॥ ६ ॥

भावार्थ–सुवर्णकुमार देवता.

अर्थ–अ० अग्निकुमार.

अग्गिकुमारा ॥ ७ ॥

भावार्थ–अग्निकुमार देवता.

अर्थ–वा० वायुकुमार देवता.

वाउकुमारा ॥ ८ ॥

भावार्थ–वायुकुमार देवता ए सर्वेने भव धा-

भि० भेदाय पडे तं० ते ज० कहुं छुं. स० पोतानी वा० मेळे पो० पुद्गळ भि० भेदाय छे प० परे वा० करीने पो० पुद्गळ भि० भेदाय.

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जन्ति। तं जहा। सयं वा पोग्गला भिज्जन्ति परेण वा पोग्गला भिज्जन्ति ॥२॥

भावार्थ–बे थानके पुद्गळ भेदाय छे ते कहुंछुं पोतानी मेळे पुद्गळ भेदाय छे १, परे करिने पुद्गळ भेदाय छे २.

अर्थ–दो० बे ठा० थानके पो० पुद्गळ प० सडे छे तं० ते ज० कहुं छुं स० पोतानी वा० मेळे पो० पुद्गळ प० सडे छे प० परथी पो० पुद्गळ प० सडि पडे छे.

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडन्ति। तं जहा। सयं वा पोग्गला परिसडन्ति परेण पोग्गला परिसडन्ति॥ ३॥

भावार्थ–बे प्रकारे पुद्गळ सडे छे ते कहे छे. एक पोतानी मेळे पुद्गळ सडी पडे छे, कोढ प्रमुख रोगे करी आंगळी प्रमुख १, एक परथी पुद्गळ सडी पडे छे सोमलादिके करी २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम प० पडे छे पर्वतना शिषर प्रमुख बे भेदे.

एवं परिवडन्ति ॥ ४ ॥

भावार्थ–एम पडे छे पर्वतनां शिखर.

अर्थ–ए० एम वि० विणसे छे बे भेदे.

विद्धंसन्ति ॥ ५ ॥

भावार्थ–एम विणसे छे वादळ प्रमुख.

अर्थ–दु० बे भेदे पो० पुद्गळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं भि० जुदा छे चे० वळी. अ० अभिन्न मळेला छे चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता। तं जहा। भिन्ना चेव अभिन्ना चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–बे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. एक भिन्न ते जुदां जुदां पुद्गळ छे १, एक अभिन्न ते भेळां पुद्गळ छे २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे पो० पुद्गळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं भि० पोतानी मेळे भेदाय ते चे० वळी नो० न भेदाय ते चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता। तं जहा। भिउरधम्मा चेव नोभिउरधम्मा चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. एक पुद्गळ पोतानी मेळे भेदाय छे ते भिदुर स्वभाव छे १, बीजा नोभिदुर स्वभाव ते वज्रादिक जाणवां २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे पो० पुद्गळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० परमाणुं पुद्गळ चे० वळी नो० घणानो समुह चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता। तं जहा। परमाणुपोग्गला चेव नोपरमाणुपोग्गला चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. परमाणुं पुद्गळ ते छद्मस्थनी नजरे आवे नहीं, तेहने केवळज्ञानीज जाणे देखे १, बंध पुद्गळ घणानो समुह (जथो) तेनोपरमाणुं पुद्गळ २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे पो० पुद्गळ पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं सु० सूक्ष्म चे० वळी बा० बादर चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा । सुहुमा चेव बायरा चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे, एक सुक्ष्म पुदगळ ते भाष्याना १, बीजां वादर पुदगळ २, (शित १ उष्न २ स्निग्ध ३ लुखां ४ ए चार स्पर्श सुक्ष्मने होय १, अने वादर पुदगळने आठ स्पर्श होय २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ब० वंधाणा पा० एक पासे पु० शरीरने फरस्या ते गंध चे० वळी नो० नथी. ब० वंधाणा पण पा० पार्श्वे पु० फरस्या छे ते शब्द चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा । बद्धपासपुट्ठा चेव नोबद्धपासपुट्ठा चेव।५।

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. बद्ध ते वंधाणां घणां शरीरने एक पासे फरस्या, नाक प्रमुख इंद्रि ग्रहण योग्य पुदगळ १, नोवध ते वंधाणां नथी पण पासे फरस्या छे ते काने शब्द संभळाय २, ए भेद इंद्रिने आश्री छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं प० समस्थ ग्रह्या ते चे० वळी अ० समस्त ग्रह्या नथी ते चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा। परियाइय च्चेव अपरियाइय च्चेव ॥६॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. पर्यायातित ते जे समस्त ग्रह्या कर्म पुदगळनी पेरे १, अपर्यायातित ते समस्त पुदगळ ग्रह्या नथी २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं अ० जीवे शरीरे ग्रह्या ते चे०वळी अ० नथी अंगिकार कर्या ते चे०वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा । अत्ता चेव अणत्ता चेव ॥ ७॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. जीवे परिग्रह शरीरपणे अंगिकार कर्या ते १, परिग्रह शरीरपणे अंगिकार कर्या नथी ते २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं इ० इष्ट चे० वळी अ० अनिष्ट चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा । इट्ठा चेव अणिट्ठा चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे, एक इष्ट पुदगळ छे १, बीजां अनिष्ट पुदगळ छे २, ए वे भेदछे.

अर्थ-ए० एम क० कांतभलावर्णादिक सहित.

एवं कन्ता ॥ ९ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. एक भलावर्णादी सहीत ते कांत पुदगळ १, एक भलावर्णादी रहीत ते अकांत पुदगळ २, ए वे भेद छे.

अर्थ-पि० प्रिय

पिया ॥ १० ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. इंद्रियोने प्रिय पुदगळ १, इंद्रियोने अप्रिय पुदगळ २, ए वे भेद छे.

अर्थ-म० इन्द्रिने सुखकारी.

मणुन्ना ॥ ११ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे, इंद्रियोने सुखकारी १ इंद्रियोने दुखकारी २.

अर्थ–म० मनोहर देखतां मनने प्रियलागे

मणामा ॥ १२ ॥

भावार्थ–वळी बे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे, मनोहर देखतां मनने प्रिय लागे ते मनोज्ञ १, देखतां मनने प्रिय न लागे ते अमनोज्ञ २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे स० शब्द प० कह्या तं० तेज० कहुंछुं अ० जीवे गह्याछे चे० वळी अ० जीवे नथी ग्रह्या चे० वळी.

दुविहा सद्दा पन्नत्ता। तं जहा। अत्ता चेव अणत्ता चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–बे प्रकारे शब्द कहेल छे ते कहेछे एक जीवे ग्रह्या छे १, एक जीवे नथी ग्रहेला २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम इ० इष्ट जा० यावत म० मनोहर

एवं इट्ठा जाव मणामा ॥[२–६]॥२॥

भावार्थ–एम इष्ट शब्द १, अनिष्ट शब्द २, कांत शब्द १, अकांतशब्द २, प्रिय शब्द. १, अप्रिय शब्द २, सुखकारी १, दुखकारी २, मनोज्ञ शब्द १, अमनोज्ञ शब्द २, ए सर्वेमां पूर्वनी पेरे बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–दु० बे रु० रुप पं० कह्या तं० तेज० कहुंछुं अ० चक्षु ए गह्या चे० वळी अ० अग्रहित चे० वळी जा० यावत म० मनोज्ञ.

दुविहा रूवा पन्नत्ता। तं जहा। अत्ता चेव अणत्ता चेव । जाव मणामा ॥ [७-१२] ॥ ३ ॥

भावार्थ–बे प्रकारे रुप कहेल छे ते कहेछे. एक चक्षुए ग्रह्युं रुप १, वीजुं चक्षुए रुप ग्रह्युं नथी २, ए बे भेद छे. एम इष्टरुप १, अनिष्टरुप २, कांतरुप १, अकांतरुप २, प्रिय रुप १, अप्रिय रुप २, सुखकारी १, दुखकारी २, मनोज्ञरुप १, अमनोज्ञरुप २, ए सर्वे रुपमां पूर्वनी पेरे बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–ए० एम ग० गन्ध.

एवं गन्धा ॥ [१३–१८] ॥ ४ ॥

भावार्थ–एम गंध ते एक नासिकाए ग्रह्यो छे १, वीजो गंध नासिकाए ग्रह्यो नथी २, एक इष्ट गंध १, एक अनिष्ट गंध २, कांतगंध १, अकांत गंध २, प्रिय गंध १, अप्रिय गंध २, मनोज्ञ गंध १, अमनोज्ञ गंध २, ए सर्वे गंधमां पुर्वनी पेरे बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–र० रस.

रसा ॥ [१९–२४] ॥ ५ ॥

भावार्थ–एम रस ते एक जीभे रस ग्रह्यो छे १, एक जीभे रस ग्रह्यो नथी २, एक इष्ट रस १, एक अनिष्टरस २, कांतरस १, अकांतरस २, प्रियरस १, अप्रियरस २, मनोज्ञरस १, अमनोज्ञरस २, ए सर्वेमां पूर्वनी पेरे बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–फ० फरस.

फासा ॥ [२५–३०] ॥ ६ ॥

भावार्थ–एम स्पर्श ते एक स्पर्श इंद्रिए ग्रह्यो छे १, एक स्पर्श ग्रह्यो नथी २, एक इष्ट स्पर्श १, एक अनिष्ट स्पर्श २, कांत स्पर्श १, अकांत स्पर्श २, प्रिय स्पर्श १, अप्रिय स्पर्श २, मनोज्ञ स्पर्श १, अमनोज्ञ स्पर्श २, ए सर्वेमां पुर्वनी पेरे बे बे भेद जाणवा.

अर्थ–ए० एम ए० एकेकना आ० आलावा भा० जाणवा.

एवं एकेक्के आलावगा भाणियव्वा ॥

भावार्थ–एम पूर्वोक्त प्रमाणे गंध स्पर्शना बे बे भेदछे ते एकेकना छ छ आलावा जाणवा.

अर्थ–दु० वे भेदे आ० आचार प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ना० ज्ञानाचार चे० वळी नो० दर्शनाचार चे० वळी.

दुविहे आयारे पन्नत्ते । तं जहा । नाणायारे चेव नोनाणायारे चेव ॥१॥

भावार्थ–वे प्रकारे आचार कहेल छे ते कहे छे, काळथी १, विनयथी २, बहुमानथी ३, उपध्यानथी ४, अर्थ तथा गुरुने गोपवे नहि ५, अक्षर शुद्ध ६, अर्थ शुद्ध ७, अक्षरार्थ शुद्ध ८, ए आठ भेदे ज्ञान आचार१, नोज्ञान आचार ते दर्शनाचार २, ए वे भेद छे.

अर्थ–नो० दर्शनाचार दु० वे भेदे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं दं० दर्शनाचार चे० वळी नो० चारित्राचार चे० वळी.

नोनाणायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव ॥२॥

भावार्थ–नोज्ञानआचार वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, शंका नहि १, अन्य मतनी इच्छा नहि २, करणीना फळनो संशय नहि ३, परना आडंबरे मुंझाय नहि ४, स्वधर्म प्रसंशा करे ५, धर्मथी पडताने आलंबनदीए ६, स्वधर्मिनी भक्ति करे ७, जैन धर्मने दीपावे ८, ए आठ भेदे दर्शन आचार १, नोदर्शन आचार ते पांच समितिने त्रण गुप्ती ए आठ भेदे चारित्र आचार २, ए वे भेद छे.

अर्थ–नो० चारित्राचार दु० वे भेदे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं च० चारित्राचार चे० वळी नो० चारित्राचार चे० वळी.

नोदंसणायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । चारित्तायारे चेव नोचारित्तायारे चेव ॥३॥

भावार्थ–नोदर्शन आचार वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, चारित्र आचार १, नोचारित्र आचार ते तप आचार प्रमुख २, ए वे भेद छे.

अर्थ–नो० नोचारित्राचार दु० वे भेदे प० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं त० तपाचार चे० वळी वी० धर्मने विषे वळ फोरववुं चे० वळी

नोचरित्तायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । तवायारे चेव वीरियायारे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–नोचारित्र आचार वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. छ अभ्यंतर, छ वाहिर ए वार भेदे तप आचार १, वळ वीर्य धर्म कार्यमां गोपवे नहीं १, पूर्वोक्त छत्रीस भेदमां उद्यम करे २, शक्तिने अनुसारे मन वचन कायानो व्यापार एकाग्रचित्ते प्रयुंजे ३, ए त्रण भेदे वीर्याचार २, ए वे भेदछे.

अर्थ–दो० वे प० प्रतिज्ञा प० कही छे. तं० ते ज० कहुं छुं स० प्रशस्त भावरुप प० मनपरिणाम चोषाते चे० वळी उ० तपविशेष प० १२ प्रतिमा साधूने, ११ प्रतिमा श्रावकने चे० वळी.

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव ॥

भावार्थ–वे प्रकारे प्रतिमा ते प्रतिज्ञा विशेष नियम कहेल छे ते कहेछे. एक समाधि प्रतिमा ते प्रशस्त (भला) भाव रुप प्रतिमा मन परिणाम रुप पुद्गल चोखा होय १, वीजी उपध्यान प्रतिमा ते विशेष तप साधुनी वार प्रतिमा १, श्रावकनी अगियार प्रतिमा २, ए वे भेद छे

अर्थ–दो० वे प० प्रतिमा प० कही तं० ते ज० कहुं छुं वि० कषाय प्रमुखनो त्याग चे० वळी वि० काउसग करवो ते चे० वळी.

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ । तं जहा ।

विवेगपडिमा चेव विओसग्गपडिमा चेव ॥ २ ॥

भावार्थ—वळी बे प्रकारे प्रतिमा कहेलछे ते कहेछे, विवेक प्रतिमा ते कषाय प्रमुख अयोग्य वस्तुनो त्याग करवो १, व्युत्सर्ग प्रतिमा ते काउसगनुं करवुं २, ए बे भेद छे.

अर्थ—दो० बे प० प्रतिमा प० कही तं० ते ज० कहुं छुं भ० भद्रा प्रतिमा चे० वळी सु० सुभद्रा प्रतिमा चे० वळी.

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । भद्दा चेव सुभद्दा चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ—वळी बे प्रकारे प्रतिमा कहेलछे ते कहेछे, भद्रा प्रतिमा ते पूर्वादि दिशाए चार पोहोर लगी काउसग करवो (आ सिवाय बीजो प्रकार शास्त्रमां नथी) १, सुभद्रा प्रतिमा पण एमज देखायछे. बे दिवसे पुरी थायछे, परीसह खमे २, ए बे भेदछे.

अर्थ—दो० बे प० प्रतिमा प० कही तं० ते ज० कहुं छुं म० महाभद्र प्रतिमा चे० वळी स० सर्वथी भद्र चे० वळी.

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ । तं जहा महाभद्दा चेव सवओभद्दा चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ—वळी बे प्रकारे प्रतिमा श्री वीतराग देवे कहेलछे ते कहे छे, महाभद्र प्रतिमा पण एमज, पण एटलो विशेषके एकेकी दिशाए एकेकी अहोरात्रीनो काउसग करे एम चार दिशानी चार अहो (दिवस) रात्रीनुं मान जाणवुं १, सर्वतोभद्र प्रतिमा ते दश दिशाए एकेकी अहो रात्रीनो काउसग करे एटले दश अहो रात्रीनुं मान जाणवुं २, ए बे भेदछे.

अर्थ—दो० बे प० प्रतिमा प० कही तं० ते ज० कहुंछुं. खु० नानी प्रतिमा चे० वळी मो० मोटी प्रश्रवण प्रतिमा म० द्रव्यथी मोटी चे० वळी मो० मोटी प्रश्रवण पडिमा ते लघुनित राखवी.

दो पडिमाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । खुड्डिया चेव मोयपडिमा महल्लिया चेव मोयपडिमा ॥ ५ ॥

भावार्थ—वळी बे प्रकारे प्रतिमा कहेलछे ते कहेछे, नानी मोक प्रतिमाते मात्रु नकरे १, मोटी मोक प्रश्रवण प्रतिमा चार प्रकारे, द्रव्यथी मळ मात्रु करे नहीं १, क्षेत्रथी ग्रामादीक बाहीर रहे २, काळथी शरद तथा ग्रिष्म काळे आहार करीने आदरे तो चौद भक्त ते छ दिवसे पूरी थाय अने आहार कर्या विना आदरे तो शोळ भक्त ते सात दिवसे पुरी थाय ३, भावथी देवादिकना उपसर्ग सहन करे४, ए नानी मोटी पण एमज, पण एटलो विशेष जे आहार करीने आदरे तो सोळ भक्ते पुरी थाय १, अने आहार कर्याविना आदरे तो अढार भक्ते पुरी थाय २, ए बे भेद छे.

अर्थ—दो० बे भेदे प० प्रतिमा पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं ज० जव म० मध्यनी परे चे० वळी च० चन्द्रमांनी परे वधती घटती कला तपनी व० वज्र मध्यनी परे चे० वळी च० चन्द्र पतिमा.

दो पडिमाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । जवमज्झा चेव चन्दपडिमा वइरमज्झा चेव चन्दपडिमा ॥ ६ ॥

भावार्थ—वळी बे प्रकारे प्रतिमा कहेल छे ते कहेछे, यव मध्य चंद्र प्रतिमा ते जव धानना सरखो मध्य भाग छे जेहनो अने चंद्रमाने परे वधती घटती कला जेम शुक्लपक्षना

दिवसे एक कोळीयो आहार करे, एम दिन दिन प्रत्ये अकेक कोळीयो वधारतां पुनमे पंदर कोळीया आहार करे, पछी वद पडवाने दिवसे पंदर कोळीया, एम दिन दिन प्रत्ये एकेक कोळीयो ओछो करतां अमावास्याए एक कोळीयो लीए, ए यव मध्य चंद्र प्रतिमा तप १, अंधारी पडवे पंदर कोळीया पछी दिन दिन प्रत्ये एकेक ओछो करतां अमावास्याए एक कोळीयो, सुद पडवाने दिवसे एक कोळीयो, एम एकेक वधतां पुनमे पंदर कोळीया ए रीते तप करवो ते वज्र मध्य प्रतिमा २, उस्न पाणी पीये, थाय तो चौविहार तथा तेविहार करे, वज्र सरिखुं मध्य छे जेहनुं ते वज्र मध्य प्रतिमा जाणवी २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दु० वे भेदे सा० सामायय पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं अ० ग्रहस्थनुं सामायक चे० वळी अ० साधुनुं सामायक चे० वळी.

दुविहे सामाइये पण्णत्ते । तं जहा । अगारसामाइये चेव अणगारसामाइये चेव ॥

भावार्थ–वे प्रकारे सामायक श्री वीतराग देवे कहेल छे ते कहेछे, ग्रहस्थनुं सामायक देश विरति रुप श्रावकने १, साधुनुं सामायक सर्व विरति रुप २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वे भेदे उ० उपजवुं पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवतानुं चे० वळी ने० नारकीनुं चे० वळी.

दोण्हं उववाए पन्नत्ते । तं जहा । देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–जेहने गर्भ स्थिति नथी ते वे प्रकारना जीवने उपपात ते उपजवुं कहेल छे कहे छे. चार जातिना देवताने उपजवानुं १, सात नारकीने उपजवानुं २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वेने उ० मरण रुप पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ने० नारकीनुं मरण चे० वळी भ० भवनपतीनुं मरण चे० वळी.

दोण्हं उवट्टणा पण्णत्ता । तं जहा । नेरइयाणं चेव भवणवासीणं चेव ॥२॥

भावार्थ–वे प्रकारना जीवने उद्वर्तनाते निकळवुं कहे छे ते कहेछे, नारकीने उद्वर्तना १, भवनपति देवताने उद्वर्तना २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वेने च० चवन पं० कह्युं तं० ते ज०कहुंछुं जो० ज्योतिषीनुं चवन चे० वळी वे० वेमानीक देवनुं चे० वळी.

दोण्हं चयणे पण्णत्ते । तं जहा । जोइसियाणं चेव वेमाणियाणं चेव ॥३॥

भावार्थ–वे प्रकारना जीवने चवन ते मरण कहेल छे ते कहे छे, चंद्र सूर्यादिक जोतिषी देवताने चवन १, वैमानिक देवताने चवन २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वेने ग० गर्भे व० उपजवुं छे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने गर्भे उपजवुं छे चे० वळी प० पंचेन्द्री ति० तिर्यंच जो० जोनियाने गर्भे उपजवुं चे० वळी.

दोण्हं गब्भवक्कन्ती पन्नत्ता । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चेन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–वे प्रकारना जीवने गर्भमां उपजवानुं कहेल छे ते कहे छे, मनुष्यमां गर्भपणे उपजे १, पचेंद्रि तिर्यंच योनिना जीव गर्भपणे उपजे २, ए वे भेद छे.

अर्थ–दो० वे ग० गर्भमां था० थका आ० आहार करेछे पं० एम कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी प० पचेन्द्रि ति० तिर्यंचने चे० वळी.

दोण्हं गव्भत्थाणं आहारे पन्नत्ते । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–बेने गर्भमां थकांज आहार कहेल छे ते कहेछे, मनुष्यने गर्भमां रह्यां आहार छे, माता आहार करे ते आहार लीये छे १, पचेंद्रि तिर्यंचने पण गर्भमां रह्यां आहार छे २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने ग० गर्भमां थका वु० वृद्धि पं० कहीछे तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी प० पचेन्द्रि ति० तिर्यंचयोनिने चे० वळी.

दोण्हं गव्भत्थाणं वुड्ढी पण्णत्ता । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ–बेने गर्भमां थकांज वृद्धि कहेल छे ते कहेछे, मनुष्य गर्भमां रह्यां वृद्धि पामे छे १, पचेंद्रि तिर्यंच पण गर्भमां रह्यां वृद्धि पामे छे २, ए बे भेदछे.

अर्थ–एम० नि० निहार नथी.

एवं निव्वुड्ढी ॥ ७ ॥

भावार्थ–एम गर्भमां निर्वृद्धि ते निहार नथी, लघुनिति (मात्रु) प्रमुख नथी.

अर्थ–वि० विकुर्वणा छे.

विउव्वणा ॥ ८ ॥

भावार्थ–एम विकुर्वणा विक्रय लब्धिवंत.

अर्थ–ग० गर्भमांथी प० बहार गमन करे.

गइपरियाए ॥ ९ ॥

भावार्थ–एम गर्भमां हीरगमन करे, प्रदेश बाहीर काढी संग्राम करे, पछे समे मरण पामे तो नरके जाय, एम श्रीभगवती सूत्रमांही कह्युंछे.

अर्थ– मारणांतिकादिक समुदघातछे.

समुग्घाए ॥ १० ॥

भावार्थ–एम मारणंतिकादि समुद्घात छे.

अर्थ–का० काळनी अवस्थाछे मरणनी.

कालसंजोगे ॥ ११ ॥

भावार्थ–एम काळ ते मरणनी अवस्थाछे.

अर्थ–आ० गर्भमांथी निसरवुं.

आयाई ॥ १२ ॥

भावार्थ–एम गर्भ मांहीथी निसरवुं ते जन्म.

अर्थ–म० प्राणत्याग.

मरणे ॥ १३ ॥

भावार्थ–एम मरण ते प्राण त्याग ए बे बोल गर्भमां छे.

अर्थ–दो० बेने छ० चामडी प० अने पर्व नी सांधीना बंधन पं० कह्याछे तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी पं० पचेन्द्रि ति० तिर्यंच जोनीने चे० वळी.

दोण्हं छविपव्वा पन्नत्ता । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ–बेने छवि अने पर्व ते संधिनां बंधन कहेल छे ते कहे छे, मनुष्यने १, पचेंद्रि तिर्यंचने २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने सु० वीर्य सो० रुधिरथी सं० उपना प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्य चे० वळी प० पचेन्द्रि ति० तिर्यंच योनि चे० वळी.

दो सुक्कसोणियसंभवा पण्णत्ता । तं जहा । मणुस्सा चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणिया चेव ॥ १५ ॥

भावार्थ–बे शुक्र ते पितानुं विर्य अने माताना रुधीरथी उपजे छे ते कहेछे, मनुष्य १, पचेंद्रि तिर्यंच २, ए बे पितानुं वीर्य अने मातानुं रुधीर विना उपजे नहीं.

अर्थ–दु० बे ठि० स्थिति प० कही तं० ते ज० कहुंछुं का० कायमां ठि० रहेवुं चे० वळी भ० भवने विषे ठि० रहेवुं चे० वळी.

दुविहा ठिई पण्णत्ता। तं जहा। कायट्ठिई चेव भवट्ठिई चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ–पृथ्विकाय प्रमुख छकायमां रहेवुं ते स्थिति बे प्रकारे कहेल छे ते कहेछे, मरिने तेनी तेज कायमां उत्पन्न थाय ते काय स्थिति १, भवने विषे रहेवुं भव करवा ते भव स्थिति २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने का० काय ठि० स्थिति प० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी प० पचेन्द्रि ति० तिर्यंच योनीने चे० वळी.

दोण्हं कायट्ठिई पण्णत्ता। तं जहा। मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ १७ ॥

भावार्थ–बेने काय स्थिति कही छे ते कहे छे, मनुष्य मरिने सात आठ भव सुधी माणस थाय १, पचेंद्रि तिर्यच मरिने सात आठ भव सुधी पचेंद्रि तिर्यंच थाय २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने भ० भव ठि० स्थिति पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवताने चे० वळी ने० नारकीने चे० वळी.

दोण्हं भवट्ठिई पण्णत्ता। तं जहा। देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ १८ ॥

भावार्थ–बेने भव स्थिति ते एकज भव करे (अर्थात् मरीने बीजा अवतारमां बीजी गतिमां उपजे) ते कहेछे, देवता मरी फरी देवता थाय नहीं १, नारकी मरी फरी नारकी थाय नहीं २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दु० बे भेदे आ० आयुष पं० कह्या छे तं० ते ज० कहुंछुं अ० काळ प्रधान आयु चे० वळी भ० भव प्रधान आउखुं चे० वळी.

दुविहे आउए पण्णत्ते। तं जहा। अद्धाउए चेव भवाउए चेव ॥ १९ ॥

भावार्थ–बे प्रकारे आयुष्य कहेलुंछे ते कहे छे, काळ प्रधान आउखा कर्म १, भव प्रधान आउखा कर्म २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने अ० काळ प्रधान आउखुं पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी पं० पचेन्द्री ति० तिर्यंच योनीने चे० वळी.

दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते। तं जहा। मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ २० ॥

भावार्थ–बेने काळ प्रधान आयुष्य कहेल छे ते कहे छे, मनुष्यने १, पचेंद्रि तिर्यंचने (एकेंद्रि तिर्यंच एहमां आव्या) २, ए बे भेदछे.

अर्थ–दो० बेने भ० भव प्रधान आउखुं पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवताने चे० वळी ने० नारकीने चे० वळी.

दोण्हं भवाउए पण्णत्ते। तं जहा। देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ २१ ॥

भावार्थ–बेने भव प्रधान आयुष्य कहेलछे ते कहे छे देवताने १ नारकीने २ ए बे भेदछे.

अर्थ–दु० बे भेदे क० कर्म प० कह्यां तं०

ते ज० कहुंछुं प० कर्मना दलते चे० वळी अ० कर्मनो रस भोगवीएते चे० वळी.

दुविहे कम्मे पण्णत्ते। तं जहा। पदेसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव ॥२२॥

भावार्थ–बे प्रकारे कर्म कहेलछे ते कहेछे, प्रदेश कर्म ते कर्मनां पुदगल १, अनुभाव कर्म जे कर्मनो रस भोगवीये ते २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बे थानके अ० जेहवुं बांध्युं छे तेहवुं पा० भोगवे तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवता चे० वळी ने० नारकीपणे चे० वळी.

दो अहाउयं पालेन्ति। तं जहा। देवा चेव नेरइया चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ–बे जणे जेहवुं आयुष्य बांध्युं छे, तेहवुंज भोगवे एटले निकाचित आयुष्यना धणी अधुरे आउखे मरे नहीं ते कहेछे, देवता पूर्ण आउखुं पाळे १, नारकी पण पूर्ण आउखुं पाळे २, ए बे भेद छे.

अर्थ–दो० बेने आ० आउखुं सं० सोपक्रमी पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंच योनियाने चे० वळी.

दोण्हं आउयसंवट्टए पणत्ते। तं जहा। मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥ २४ ॥

भावार्थ–बेने सोपक्रमि ते ढीलुं आयुष्य कहेलुं छे ते कहे छे, मनुष्यने १, एकेंद्रिथी पचेंद्रि सुधी तिर्यंचने २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ज० जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर दा० दक्षिणने पासे दो० बे वा० वर्ष क्षेत्र प० कयाछे ब० घणु स० सरखाछे अ० विशेष अधिका नथी स० समानछे एक एकेथी अ० एकएकथी ना० नथी व० वधता आ० लांबपणे वि० पहोळपणे सं० आकार प० परिधि तं० ते ज० कहुंछुं भ० भरत चे० वळी ए० एरवत चे० वळी.

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं नाइवट्टन्ति आयामविक्खम्भसंठाणपरिणाहेणं। तं जहा। भरहे चेव एरवए चेव ॥ १ ॥

भावार्थ–परिपूर्ण चंद्रमंडळने आकारे एक लाख जोजननो लांबो पहोळो जंबुद्वीप छे तेहमां एक लाख जोजननो उंचो मेरुपर्वत छे, तेहना उत्तरने बे पासे अने दक्षिणना बे पासे बे वर्ष क्षेत्र कहेल छे. ते प्रमाणथी घणा सरखां छे, कांइपण एकेकथी विशेषाधीक नथी, तेमज पर्वत, नगर, नदीनो विशेष नथी. आरा प्रमुखना भावे करी एकेकथी वधता नथी. लांबपणे, पहोळपणे, संस्थान, आकार चढाव्या धनुष्यने आकारे, परिधि इत्यादिके करी सरखाछे. पांचसेछव्विस जोजनने छकळा विस्तारपणे छे. जोजननो एकवीसमो भाग ते कळा जाणवी. ते बे क्षेत्रनां नाम कहेछे, एक भरतक्षेत्र १, बीजुं एरवतक्षेत्र २, ए बे सरखां छे ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एह ए० रीते अ० मानप्रमाण भाव सर्व एमज जाणवा ने० वळी बंने क्षेत्र सरखां छे हे० हेमवंत क्षेत्र चे० वळी हे० हेरण्णवय क्षेत्र चे० वळी.

एवं एएणं अभिलावेणं नेयवं हेमवए चेव हेरण्णवए चेव ॥ २ ॥

भावार्थ–ए रीते मान प्रमाण सर्व भाव एमज जाणवां, तेम बेबे क्षेत्र सरखां छे कहे छे.

हेमवंतक्षेत्र दक्षीणदिशाए १, एरणवंत क्षेत्र उत्तरदिशाए २, ए बे क्षेत्र सरखां छे.

अर्थ–ह० हरिवास चे० वळी र० रम्यक क्षेत्र चे० वळी.

हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ–तेमज हरिवर्ष दक्षिणदिशाए १, रम्यकवर्षक्षेत्र उत्तरदिशाए २, ए बे क्षेत्र सरखां छे.

अर्थ–जं० जंबुद्वीप नामना द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतथी पु० पुर्वदिशे प० पश्चिमदिशे दो० बे खे० क्षेत्र प० कह्या ब० घणे स० सरखे प्रमाणे छे अ० विशेप नथी जा० यावत पु० पुर्वविदेह क्षेत्र चे० वळी अ० पश्चिम विदेह चे० वळी.

जम्बुदीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं दो खेत्ता पण्णत्ता बहुसमउल्ला अविसेसा जाव पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ–जंबुध्वीपना मेरुपर्वतथी पूर्व पश्चिमे बे क्षेत्र घणाज सरखां प्रमाणे छे, कांइपण विशेपाधीक नथी ते बे क्षेत्रनां नाम कहे छे, पूर्व महाविदेहक्षेत्र १, पश्चिममहाविदेहक्षेत्र २, ए बे भेद छे.

अर्थ–जंबुध्वीप नामना दी० द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर दा० दक्षिणदिशे दो० बे कु० कुरुक्षेत्र प० कह्या ब० बहु स० सरखा उ० मान प्रमाणे अ० कांइ विशेप नथी जा० यावत दे० देवकुरु चे० वळी उ० उत्तर कुरु चे० वळी.

जम्बुदीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ पण्णत्ताओ बहुसमउल्लाओ अविसेसाओ जाव देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ–जंबुद्वीपना मेरुपर्वतथी उत्तर दक्षिणदिशाए बे कुरु कहेल छे ते मान प्रमाणे करी घणा सरखा छे, कांइपण विशेपाधिक नथी, तेह बे कुरुनां नाम कहे छे, देवकुरु दक्षिणदिशाए १, उत्तर कुरु उत्तरदिशाए २, ए बे भेद छे.

अर्थ–त० तिहां ण० वळी दो० बे म० मोटा म० मोटा विस्तारवंत म० मोटा दु० वृक्ष प० कह्या ब० बहु स० सरखा उ० मान प्रमाणे अ० विशेप नथी स० किसो फेर नथी अ० मांहोमांहि ना० नथी वधता ओछा आ० लांबपणे वि० पोहोळपणे उ० उचपणे सं० आकारे प० परिधिपणे तं० ते ज० कहुंछुं कू० कुडसामली वृक्ष चे० वळी ज० जंबूवृक्ष चे० वळी सु० सुदर्शन नामे.

तत्थ णं दो महइमहालया महादुमा पण्णत्ता बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टन्ति आयामविक्खम्भुच्चत्तोवेहसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । कूडसामली चेव जम्बू चेव सुदंसणा ॥ ६ ॥

भावार्थ–तिहां देवकुरु उत्तरकुरु मांही मोटा महा तेजवंत रमणीक शोभायमान प्रधान (उत्तम) बे वृक्ष प्रमाणे घणां सरखा छे, कांइपण विशेपाधिक नथी, लांबा, पहोळा, विस्तार, उंचा धरतीमां, आकार, परधिए सरखा छे. मांहोमांही एकेकथी वधता नथी. लांबपणे, पहोळपणे, उंचपणे, उंडापणे, आकारे, परिधि एटला प्रमाणे सरखा छे. रत्नमय छे, एहनुं मान बीजी जग्याएथी जाणवुं. ते बे वृक्ष-

नां नाम कहे छे, एक कुडशामलवृक्ष ते शिखरने आकारे छे १, वीजुं जंबूवृक्ष तेनुं वीजुं नाम सुदर्शन ते जोवा योग्य छे.

अर्थ—त० तिहां ण० वळी दो० वे दे० देवता म० मोटी रुधिना धणी जा० यावत म० मोटा सो० सुखना धणी प० पल्योपम ट्ठि० आउखावंत प० वसे छे तं० ते ज० कहुंछुं ग० सुवर्णकुमारनी जातिना चे० वळी वे० वेणुदेवनामे अ० अनाढिनामे चे० वळी ज० जंबुद्वीपना स्वामी छे.

तत्थ णं दो देवा महिड्डिया जाव महासोक्खा पलिओवमट्ठिइया परिवसन्ति । तं जहा । गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिए चेव जम्बुद्दीवाहिवई ॥७॥

भावार्थ—ते वृक्षने विषे वे देवता म्होटी रुधिना धणी यावत् मोटा सुखना धणी एक पल्योपमना आउखानी स्थितिवाळा सुवर्णकुमारनी जातिनां रहेछे, ते वे देवतानां नाम कहे छे. एक गरुलदेव तेनुं वीजुं नाम वेणुदेवछे १, वीजो अणाढीय नामे देव २, ए वे देव जंबुद्वीपना अधिष्ठाता ते मालीक छे.

अर्थ—ज० जम्बु नामना दि० द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर दा० दक्षिणादिशे दो० वे वा० वर्षधर प० पर्वत प० कह्या व० घणा स० सरखा उ० मानप्रमाणे अ० विशेष नथी म० भेद नथी अ० मांहोमांही ना० अधिक ओछा नथी आ० लांवपणे वि० पोळपणे उ० उंचपणे सं० आकारे प० परिधपणे तं० ते ज० कहुंछुं चु० नाहना हिमवंत पर्वत चे० वळी सि० सिखरीपर्वत चे० वळी.

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासहरपव्वया पण्णत्ता बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टन्ति आयामविक्खम्भुच्चत्तो वेहसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । चुल्लहिमवन्ते चेव सिहरी चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपे मेरु पर्वतथी उत्तर अने दक्षिण दिशाए वे वर्षधर (क्षेत्रनी मर्यादा करे ते) पर्वत कहेल छे ते वे पर्वत घणा सरखा छे, विशेष नथी, भेद नथी, एकेकथी वधता नथी, नहाना नथी, लांबपणे, पहोळपणे, उंचपणे, उंडपणे, आकारे, परिधि एटले प्रकारे सरखा छे, तेहनां नाम कहे छे. भरत क्षेत्रथी उत्तर दिशाए सो जोजननो उंचो नानो हिमवंत पर्वत १, इरवत क्षेत्रथी आतर्फे शिखरी पर्वत २, ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम म० महा हिमवंत चे० वळी रु० रुपोपर्वत चे० वळी

एवं महाहिमवन्ते चेव रुप्पी चेव ॥९॥

भावार्थ—एम मेरुथी आ तर्फ महा हिमवंत १, मेरुथी पेली तर्फ रुपी पर्वत २,

अर्थ—ए० एम नि० निषढपर्वत चे० वळी नी० नीलवंतपर्वत चे० वळी.

एवं निसहे चेव नीलवन्ते चेव ॥१०॥

भावार्थ—एम मेरुथी दक्षिणे निषध पर्वत १, मेरुथी उत्तरे नीलवंत पर्वत २, ए वे वे पर्वत सरखा छे.

अर्थ—ज० जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे हे० हेमवंतक्षेत्र ए० एरणवंतक्षेत्रने विषे दो० वे व० वाटला वे० वैताढपर्वत प० कह्या व० घणा स० सरखा उ० मान प्रमाण अ० विशेष नथी

स० भेद नथी जा० यावत स० शब्दापाती चे० वळी वि० विकटापाती चे० वळी.

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं हेमवएरन्नवएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावई चेव वियडावई चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ–जंबुद्वीपे मेरु पर्वतथी दक्षिण दिशाए हेमवंत क्षेत्र अने उत्तर दिशाए एरणवंत क्षेत्र छे, ए बेने विषे वेव्रत वाटला वैताढ्य पर्वत पालाने आकारे कहेल छे, ते घणा सरखा छे, विशेष भेद नथी. ते बेनां नाम कहे छे, शब्दा पाती हेमवंतमां १, विकटापाती एरण्यवंतमां छे २.

अर्थ–त० तिहां ण० वळी दो० बे दे० देवता म० मोटी रुद्धिवंत जा० यावत प० पल्योपम आउषाए प० रेहेछे तं० ते ज० कहुंछुं सा० स्वातिनामे चे० वळी प० प्रभासनामे चे० वळी.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवाढिइया परिवसन्ति। तं जहा। साई चेव पभासे चेव ॥ १२ ॥

भावार्थ–तिहां बे देवता म्होटी रुद्धिना धणी, पल्योपम आउखाना धणी रहे छे. तिहां तेहनां भवन छे, ते बे देवतानां नाम कहे छे. एक स्वांति नामे देवता १, बीजो प्रभास नामे देवता २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिण दिशे ह० हरि वर्ष क्षेत्र र० रम्यक वा० क्षेत्र दो० बे व० वाटला वे० वैताढ्य पर्वत प० कह्या व० घणा स० सरखा उ० समान छे जा० यावत ग० गंधापती हरिवर्षमां चे० वळी मा० माळवंत पर्याय चे० वळी

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवासिरम्मएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया पन्नता बहुसमउल्ला जाव गन्धावई चेव मालवन्तपरियाए चेव ॥ १३ ॥

भावार्थ–जंबुद्वीपे मेरु पर्वतथी दक्षिणे हरिवर्ष क्षेत्र अने उत्तरे रम्यक वर्ष क्षेत्र छे. तिहां बे वृत वैताढ्य पर्वत कहेल छे. घणा सरिखा बराबर छे, ते बे पर्वतनां नाम कहेछे हरिवर्ष क्षेत्रमां गंधापाती छे १, रम्यक वर्ष क्षेत्रमां मालवंत पर्वत छे.

अर्थ–त० तिहां ण० वळी दो० बे दे० देवता म० मोटी रुधिना धणी जा० यावत प० पल्योपमनी ट्टि० स्थितिना प० वसेछे तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरुण नामे चे० वळी प० पद्मनामे चे० वळी.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसन्ति। तं जहा। अरुणे चेव पउमे चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ–तिहां बे देवता म्होटी रुद्धिना धणी पल्योपमनी स्थितिवाळा वसे छे, तिहां तेहनां भवन–वास छे ते बे देवतानां नाम कहे छे, एक अरुण नामे देवता १, बीजो पद्म नामे देवता २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी दा० दक्षिण दिशे दे० देवकुरुथकी पु० पुर्वने पासे अ० पश्चिमने पासे ए० इहां आ० घोडाना ख० खंध स० आदि

नीचा पछी उंचा सरिखा अ० अर्ध चं० चंद्र सं० आकारे सं० रह्या दो० वे व० वखारा प० पर्वत प० कह्या छे व० घणु स० सरखा जा० यावत सो० सौमनस वि० विद्युत्प्रभ चे० वळी

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरपासे एत्थ णं आसक्खन्धगसरिसा अद्धचन्दसंठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव सोमणसे विज्जुप्पभे चेव ॥ १५ ॥

भावार्थ–जंबुद्वीपना मेरु पर्वतथी दक्षिण दिशाए अने देवकुरुथी पुर्व पश्चिमनी पासे तिहां घोडाना स्कंध सरिखा आदी नीचा, छेहडे उंचा, निषधनी पासे चारसो जोजन उंचा, मेरुनी पासे पांचसे जोजन उंचा, अर्ध चंद्राकार संस्थित (रहेला) वेवखारा पर्वत छे ते देवकुरुने अर्ध चंद्राकारे करेल छे तेथी वेवखारा पर्वत कहेल छे, ते वे घणा सरिखा यावत् बराबर छे. ते बेनां नाम कहे छे, एक सोमनस १, बीजो विद्युत्प्रभ २, ए वे भेदछे.

अर्थ–जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तरे उ० उत्तर कुरुक्षेत्रने पासे पु० पुर्व पश्चिमने पासे ए० इहां आ० अश्वना खं० खंध स० सरिषा अ० अर्ध च० चन्द्रने सं० आकारे सं० रह्या दो० वे व० वखारा प० पर्वत प० कह्या छे व० घणा स० सरखा छे जा० यावत गं० गन्धमादन नामे पश्चिमे चे० वळी मा० माल्यवंत पूर्वे चे० वळी

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खन्धगसरिसा अद्धचन्दसंठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव गन्धमायणे चेव मालवन्ते चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ–जंबुद्वीप मेरु पर्वतथी उत्तरे अने उत्तर कुरुनी पूर्व पश्चिमनी पासे तिहां घोडाना स्कंद सरखा अर्ध चंद्राकारे तथा गजदंताकारे वेवखारा पर्वत कहेल छे, ते वे घणा सरखा यावत् बराबर छे, ते बेनां नाम कहेछे, पश्चिमनी पासे गंधमादन १, पूर्वनी पासे मालवंत २, ए वे भेद छे.

अर्थ–जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० वे दी० लांबा वे० वैताढ्य प० पर्वत प० कह्या ब० घणा स० समान जा० यावत भा० भरत क्षेत्रमां चे० वळी दी० दीर्ध वे० वैताढ्य प० पर्वत ए० एरवतमां चे० वळी दी० दीर्घवैताढ्य

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव भारहे चेव दीहवेयड्ढे एरावए चेव दीहवेयड्ढे॥१७॥

भावार्थ–जम्बुद्वीपना नामना द्वीपे मेरु पर्वतथी उत्तर दक्षिण वे लांबा वैताढ्य पर्वत कह्या, घणा समान भरतक्षेत्रमां तेमज एरवतक्षेत्र ए बेनमां दीर्घ वैताढ्य पर्वत कह्या.

अर्थ–भा० भरतना ण० वळी दी० दीर्घ वैताढ्यमां दो० वे गु० गुफा प० कही छे ब० बहु स० समा सरीषी छे. अ० विशेष नथी स० भेद नथी अ० मांहोमांही ना० एकेकथी वधतो नथी आ० लांबपणे वि० पहोलपणे उ० उंचपणे सं० आकारे प० परिघ

तं० ते ज० कहुंछुं ति० तिमिस गुफा चे० वळी खं० खंड प्रपात गुफा चे० वळी

भारहे णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ बहुसमउल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अन्नमन्नं नाइवट्टन्ति आयामविक्खम्भुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । तिमिसगुहा चेव खण्डप्पवायगुहा चेव ॥ १८ ॥

भावार्थ—भरतक्षेत्रमां दीर्घ वैताढय पर्वतमां वे गुफा कही छे ते वे समान सरखी छे, विशेष नथी, भेद नथी, मांहोमांही एकेकथी वधती नथी, लांबपणे, पहोळापणे, उंचपणे, आकार परिधिए सरखी छे, ते वे गुफाना नाम कहे छे तिमिस गुफा तथा खंडप्रपात गुफा.

अर्थ—तं० तिहा णं० वळी दो० वे दे० देवता म० मोटी रुद्धिना धणी जा० यावत प० पल्योपमनुं ट्ठि० आउखुं छे प० रहे छे तं० ते ज० कहुंछुं क० कृतमाल चे० वळी न० नटमाल देव चे० वळी

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसन्ति । तं जहा । कयमालए चेव नट्टमालए चेव ॥ १९ ॥

भावार्थ—तथा वे देवता मोटी रुद्धिना धणी पल्योपमने आउखे रहे छे, तेनां नाम कृत माल्ल अने नट माल्ल देवता.

अर्थ—ए० एरावत क्षेत्रमां ण० पण दी० दीर्घ वैताढ्यमां दो० वे गु० गुफाओ प० कही जा० यावत क० कृतमाल चे० वळी न० नटमाल चे० वळी

एरावए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ जाव कयमालए चेव नट्टमालए चेव ॥ २० ॥

भावार्थ—एमज एरवतक्षेत्रमां पण दीर्घ वैताढय पर्वत छे, तेमांही पण वे गुफाछे, यावत् कृतमाळ १, नृत्यमाळ देवता सुधी भरतक्षेत्रनी पेरे सर्व जाणवुं.

अर्थ—ज० जम्बुद्वीप नामना दो० द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे चु० नानो हिमवंत वा० वर्षधर प० पर्वतना दो० वे कू० कुट प० कह्या ब० धणा स० समान जा० यावत वि० पुहोलपणे उ० उंच सं० आकारे प० सरखी परिधि तं० ते ज० कहुंछुं चु० नानो हिमवंत कुट चे० वळी वे० वेश्रमण कुट चे० वळी

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवन्ते वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव विक्खम्भुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । चुल्लहिमवन्तकूडे चेव वेसमणकूडे चेव ॥ २१ ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपे मेरुपर्वतथी दक्षिणदिशाए नाना हिमवंत वर्षधर पर्वतना वे कुट कहेल छे, ते घणा सरखा छे. पहोळपणे, उंचपणे, संस्थानपणे, परिधिए सरखां छे. कांइपण फेर नथी. ते वे कुटनां नाम कहे छे, चुल्लहिमवंतकुट १, वेश्रमणकुट २. ए वे भेद छे.

अर्थ-जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महाहिमवंते वा० वर्षधर प० पर्वतनी मर्यादा करे छे ते दो० वे कू० कुट प० कह्या व० घणा स० सरखा छे जा० यावत म० महाहिमवंत कुट चे० वळी वे० वेरुलियनामे कुट चे० वळी.

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवन्ते वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता वहुसमउल्ला जाव महाहिमवन्तकूडे चेव वेरुलियकूडे चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षिणदिशाए महाहिमवंत वर्षधर (वर्ष कहेतां क्षेत्र तेहनी मर्यादा करे) पर्वतना वे कुट ते शिखराकारे कहेल छे, घणा सरखा यावत् वरावर छे, ते वे कुटनां नाम कहे छे, एक महाहिमवंतकुट १, वीजो वेरुलीय नामे कुट २ ए वे भेदछे.

अर्थ-ए० एम नि० निषध वा० वर्षधर प० पर्वतना दो० वे कू० कुट प० कह्या व० घणा सरखा छे जा० यावत नि० निषधकुट चे० वळी रु० रुचककुट चे० वळी.

एवं निसहे वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता वहुसमउल्ला जाव निसहकूडे चेव रुयगकूडे चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ-एम निषध वर्षधर पर्वतना वे कुट कहेल छे ते घणा सरखा छे, यावत् वरावर छे, निषधकुट १, रुचकमकुट २. ए वे भेद छे.

अर्थ-ज० जंबुद्वीप नामना द्वी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नीलवंत वा० वर्षधर प० पर्वत दो० वे कू० कुट प० कह्या व० घणा स० सरखा जा० यावत तं० ते ज० कहुंछुं नी० नीलवन्तकुट चे० वळी उ० उवदर्शनकुट चे० वळी.

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं नीलवन्ते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता वहुसमउल्ला जाव । तं जहा नीलवन्तकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव ॥ २४ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपे मेरुथी उत्तर दिशाए नीलवंत वर्षधर पर्वतना वेकुट कहेल छे, घणा सरखा छे यावत् वराबर छे नीलवंत कुट १, उपदर्शन कुट २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम रु० रुपि वा० वर्षधर प० पर्वतना दो० वे कू० कुट प० कह्या व० घणा स० सरखा छे जा० यावत तं० ते ज० कहुंछुं रु० रुपिकुट चे० वळी म० मणिकंचनकुट चे० वळी.

एवं रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता वहुसमउल्ला जाव । तं जहा। रुप्पिकूडे चेव मणिकञ्चणकूडे चेव॥२५॥

भावार्थ-एम रुपि वर्षधर पर्वतना वे कुट (शिखर) कहेल छे. घणा सरखा छे, यावत् वराबर छे, तेहनां नाम कहे छे, रुपी कुट १, मणीकंचन कुट २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम सि० सिखरी वा० वर्षधर प० पर्वते दो० वे कू० कुट प० कह्या व० घणा स० सरखा तं० ते ज० कहुंछुं सि० सिखरीकुट चे० वळी ति० तिगिच्छकुट चे० वळी.

एवं सिहरिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा पन्नत्ता वहुसमउल्ला । तं जहा । सिहरिकूडे चेव तिगिच्छिकूडे चेव॥२६॥

भावार्थ—एम शिखरी वर्षधर पर्वतना वे कुट कहेल छे. घणा सरखा छे यावत् वरावर छे. शिखरिकुट १, तिगिच्छकुट २, ए वे भेदछे

अर्थ—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वत उ० उत्तर दा० दक्षिणे चु० चुल हिमवंत सिखरी वा० वर्षधर पर्वते दो० वे म० मोटा द० द्रह प० कह्या व० घणा स० सरपा छे अ० विशेषे स० भेद नथी अ० एकथी ना० वधे नही घटे नहीं आ० लांवपणे वि० पोहलपणे उ० उंडपणे सं० आकार प० परिधिए सरपा तं० ते ज० कहुंछुं प० पद्मद्रह चे० वळी पो० पुंडरीकद्रह चे० वळी

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवन्तासिहरीसु वासहरपव्वयसु दो महद्दहा पन्नत्ता वहुसमउल्ला अविसेसमणणत्ता अन्नमन्नं नाइवट्टन्ति आयामविक्खम्भुवेहसंठाणपरिणहेणं । तं जहा । पउमद्दहे चेव पोण्डरीयद्दहे चेव ॥ २७॥

भावार्थ—जंबुद्वीपना मेरुथी दक्षिणे चुल हिमवंत पर्वत अने उत्तरे शिखरि पर्वत छे, ए वे पर्वतने विषे वे म्होटा द्रह श्री भगवंते कहेल छे, ते घणा सरखा छे, कांइ पण विशेष भेद नथी, एकेकथी वधता नथी, घटता पण नथी. लांवपणे, पहोळपणे, उंचपणे, उंडपणे, संस्थाने परिधिए सरखा छे, ते वे द्रहनां नाम कहे छे, एक पदम द्रह १, वीजो पुंडरीक द्रह २, (ए वे द्रह एकहजार जोजन लांवा, पांचसे जोजनना पहोळा छे, दश जोजनना धरतीमांहि उंडा छे, तेमांही एकक्रोड विसलाख पचास हजार एकसोने विस कमळ छे, सर्व रत्नमय छे, पद्मद्रह माहीं एक म्होटुं कमळ छे ते श्री देवीनुं छे अने एकसोने आठ कमळ श्रीदेवीनां भंडारनां छे, चार कमळ महत्तरिकानां छे, सात कमळ अणिकानां छे, सोळहजार कमळ आत्मरक्षक देवतानां छे, चारहजार कमळ सामानिक देवनां छे, आठहजार कमळ मांहिली परिषदानां छे, दशहजार कमळ वचली परिषदानां छे, वारहजार कमळ वाहिरली परिषदानां छे. हवे कमळना त्रण कोट छे, वत्रीसलाख कमळ पहेला कोटनां छे, चाळीसलाख कमळ वचला कोटनां छे, अडतालीसलाख कमळ वाहीरला कोटनां छे. एम सर्वे थइने एकक्रोड विसलाख पचासहजार एकसोने विस कमळ थयां तेमांही मोटुं कमळ एक जोजननुं लांवुं अने पोहोळुं छे, अर्ध जोजननुं जाडुं छे, दश जोजननुं पाणीमांही उंडुं छे, वे कोश पाणी थकी उंचुं छे, दश जोजन झाझेरुं सर्वांगे कहेलुं छे, ते कमळनुं वज्र रत्नमय मुळ छे, रिष्ट रत्नमय कंद छे, वैरुली रत्नमय निलवरणां वाहिरलां पानडां छे, जंवुनंद राता रत्न सुवर्णमय मांहिला पानडां छे, तपाव्या शोनामय केशरां छे, नाना प्रकारना मणिमय जे उपरे पांखडीयुं छे, सोनानी कर्णिकाछे, ते कर्णिका वे कोशनी लांवी ने पहोळी छे, एक कोशनो जाडपणे ठाको छे, ते उपर घणुं घणुं रमणीक छे, तेहना पण्णम

मध्यदेश भागे श्रीदेवीनुं घर छे, ते एक कोशनुं लांबु अने अर्ध कोशनुंपोहोळुं छे अने देश उंणुं कोश उंचुंछे, अनेक स्तंभा छे, घणायों सुवर्णे करी ते जोवा योग्य छे, ते भुवनने त्रण वारणां छे, पूर्वे १, दक्षीणे २, उत्तरे ३, ए त्रण वारणां पांचसे धनुष्यनां उंचां छे, अढींसे धनुष्यनां पहोळां छे, ते भुवनमां एक मणी पीठीका छे, ते पांचसे धनुष्यनी लांबी ने पहोळी छे, अढीसें धनुष्यनी उंची छे, ते मणीपीठीका उपरे एक देव सेज्या रहेवानो पल्यंग छे, एवी रीतेज पुंडरीक द्रहमां पण जाणवुं.)

अर्थ–त० तिहां ण० वळी दो० बे दे० देवी म० मोटी रुधिवंत जा० यावत प० पल्योपम ट्ठि० आऊपाना प० वसे छे तं० ते ज० कहुंछुं सि० श्री चे० वळी ल० लक्ष्मी चे० वळी

तत्थ णं दो देवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसन्ति। तं जहा। सिरि चेव लच्छि चेव॥२८॥

भावार्थ–तिहां बे देवीयुं म्होटी रुधिनी धणियाणीयुं यावत् एक पल्योपमना आउखा वाळीयुं वसे छे, ते बे देवीयुंना नाम कहे छे, पद्मद्रहमां श्री देवी १, पुंडरिक द्रहमां लक्ष्मी देवी रहे छे २ ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम म० महा हिमवंत रुपी वा० वर्षधर प० पर्वते दो० बे म० मोटा द० द्रह प० कह्या व० धणा स० सरषा जा० यावत तं० ते ज० कहुंछुं म० महा पद्मद्रह चे० वळी म० महा पुंडरीक द्रह चे० वळी दे० देवांगना हि० हिरिदेवी चे० वळी बु० बुद्धिदेवी चे० वळी

एवं महाहिमवन्तरुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पणत्ता वहुसमतुल्ला जाव तं जहा। महापउमद्दहे चेव महापोण्डरीयद्दहे चेव। देवयाओ हिरि चेव बुद्धि चेव॥ २९॥

भावार्थ–एम महावंत अने रुपीपर्वतने विषे बे म्होटा द्रह कहेलछे ते घणा सरखा छे यावत् बराबर छे तेहनां नाम कहे छे, महाहिमवंत पर्वत उपरे महापद्मद्रह १, रुपी पर्वत उपरे महा पुंडरिकद्रह २, तिहां पण बे देवीयुं म्होटी रुद्धिनी धणियाणीयुं वसेछे तेहनां नाम कहेछे. महापद्म द्रहमांही ह्रिदेवी १, महापुंडरिक द्रहमां बुद्धि नामे देवी वसे छे. २, ए बे भेद छे.

अर्थ–ए० एम नी० निषध नी० नीलवंते ति० तिगिच्छद्रह छे चे० वळी के० केसरीद्रह छे चे० वळी दे० देवीयो धि० धृतीदेवी चे० वळी कि० किर्त्ति चे० वळी

एवं निसहनीलवन्तेसु तिगिच्छिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव। देवयाओ धिई चेव कित्ती चेव॥ ३०॥

भावार्थ–एम निषध पर्वत अने नीलवंत पर्वतने विषे बे म्होटा द्रह कहेल छे, निषिध पर्वत उपर तिगिच्छ द्रह १, नीलवंत पर्वत उपरे केशरिद्रह २, तिहां बे देवीयुं म्होटी रुद्धिनी धणियाणीयुं वसे छे तेहनां नाम कहेछे तिगिच्छद्रहमां धृतीदेवी १, केशरिद्रहमां किर्तिदेवी वसेछे २, [ए सर्वे द्रहनुं उंडापणुं अने कमळनुं मान पद्मद्रहनी बराबर जाणवुं अने बीजुं मान पद्मद्रहथी ठाम बमणुं जाणवुं.] ए बे भेद छे.

पेहेला तथा बीजा ठाणंमां आवता परस्पर सूत्रोनो संबंध बतावनार मुळमां आपेल संस्कृत पाठनो तरजुमो.

एक ठाणं.

पेरेग्राफ १ (सम्यक मिथ्याज्ञान श्रद्धान अने अनुष्टानोवडे सर्व पदार्थोनो विषय उपयोगमां लाववाथी आत्मानुं सर्व पदार्थोमां माधान्यपणुंछुं तेथी आत्मानो विचार पेहेला कहेछे.)

२ (केटलाएक मतवाळाओ आत्मानुं क्रिया रहीतपणुं माने छे तेथी ते मतनुं निराकरण करवाने माटे ते आत्मानुं क्रिया सहीत पणुं कहेवाने इच्छता क्रियाना करणभूत जे दंड तेनुं स्वरुप प्रथम कहेछे.)

३ (ते दंडवडे आत्मा क्रिया करे छे तेथी ते क्रिया कहे छे.)

४ (उपर वतावेल स्वरुपवाळा आत्मानो आधार जे लोक तेनुं स्वरुप कहे छे.)

५ (लोकनी व्यवस्था पण तेथी विपरीत जे अलोकना होवाथी थाय तेथी ते अलोक कहेछे.)

६ (लोक अने अलोकनो विभाग करनार धर्मास्तिकाय छे तेथी तेनुं स्वरुप कहेछे)

७ (धर्मथी पण विपरित जे अधर्म तेनुं स्वरुप कहे छे.)

८ (आत्मा पण लोकमां रहेल धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायथी उपग्रहीत, दंड सहित, सक्रिय एवो छतो कर्मवडे बंधायछे ते बंध कहेछे.)

९ (अनादि काळथी बंधनो सद्भाव छता पण कोइ भवीजीव मोक्ष पामे छे तेथी मोक्षनुं स्वरुप कहे छे.)

१० (मोक्ष पण पुण्य पापना क्षय थवाथयाथी थायछे तेथी पुण्य पापनुं स्वरुप कहेवुं जोइए तेमां पण मोक्ष अने पुण्यनुं शुभ स्वरुपनुं समान धर्मिपणुंछे तेथी पेहेलुं पुण्य कहे छे.)

११ (पुण्यनुं प्रतिपक्ष पाप छे तेथी तेनुं स्वरुप कहे छे.)

१२ (उपर कहेल पुण्य पापकर्मोना बन्धनुं कारण जे आश्रव ते कहे छे.)

१३ (हवे आश्रवना विपरीत संवरनुं स्वरुप कहे छे.)

१४ (ते संवर बे प्रकारनो छे पण संवरना सामान्यपणाथी एक छे. विशेष संवरमां कर्मो वेदाय छे पण बंध थतो नथी तेथी वेदना स्वरुप कहे छे.)

१५ (बन्ने प्रकारनी पण वेदना वेदनानी सामान्यपणाथी एकज प्रकारनीछे. भोगवेला रसवाळुं कर्म प्रदेशथी खरी पडेछे तेथी वेदना पछी कर्म परिशाटनरुप निर्जरानुं निरुपण करे छे.)

पेरेग्राफ २ (संसारमां जीव जुदी जुदी निर्जरानुं भाजन प्रत्येक शरीरनी अवस्थामां थाय छे पण साधारण शरीरनी अवस्थामां थतो नथी तेथी प्रत्येक शरीरनी अवस्थावाळा जीवना स्वरुपनुं निरुपण करवा माटे "एगे जीवे" ए विगेरेथी कहे छे अथवा प्रस्तुत (चालता) शास्त्रमां कहेवाना जीव विगेरे नव पदार्थो सामान्यथी कह्या. हवे विशेषथी जीव पदार्थनुं निरुपण कहे छे.)

पेरेग्राफ ३ (बन्ध, मोक्ष विगेरे आत्माना धर्मो कह्या छे तेथी ते अधिकारथीज आ पछी "एगा जीवाणं" त्यांथी मांडीने "एगे चरित्ते त्यांसुधी आत्माना धर्मोने कहे छे.)

पेरेग्राफ ४ (ज्ञान विगेरे उत्पाद, व्यय, ध्रुववाळा छे अने स्थिति छे ते समय विगेरेनी छे तेथी समयनी परुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ५ (अंशरहित वस्तुओना अधिकारथीज आ वे सूत्रो कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (जेम परमाणुंनुं तेवा प्रकारना एकत्व परिणामना विशेपथी एकत्वपणुं थायछे तेवीज रीते अनंता अणुमय स्कन्धोनुं पण थाय एम वतावतां सकळ वादर स्कंध प्रधानभूत इषत्प्राग्भार ए नामनी पृथ्वीनुं स्कन्ध परुपे छे.)

पेरेग्राफ ६ (२) (सिद्धि पछी सिद्धवाळा कहेछे.)

पेरेग्राफ ७ (१) कर्मक्षय सिद्धनो धर्म परिनिर्वाण छे तेथी ते कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (२) (परिनिर्वाण धर्मना योगथी तेज कर्मक्षय सिद्ध परिनिर्वृत (एटले मोक्ष पामेला) केहेवायछे तेथी ते वतावतां कहे छे.)

पेरेग्राफ ८ (अत्यार सुधीमां आ प्राये जीव धर्म एकतारुपे कह्यो, हवे पुदगलो जीवने उपग्राहक (साधनभुत) होवाथी पुदगल लक्षण जीवधर्मो ("एगे सद्दे" त्यांथी ते "जाव लुखे") त्यां सुधी एकतारुपे वतावे छे.)

पेरेग्राफ ९ (पुदगल धर्मोनी एकता कही, हवे पुदगलने आलिंगीने रहेला १८ पापस्थानकना अप्रशस्त (अशुभ) धर्मोनी एकता कहे छे.)

पेरेग्राफ १० (१८ पापस्थानक कह्यां, हवे तेना विपरीतोनी एटले प्राणातिपात वेरमण इत्यादीना १८ सूत्रोवडे एकता कहे छे.)

पेरेग्राफ ११ (संसारी जीव द्रव्यना धर्मोनुं एकत्वपणुं कह्युं. हवे काळनुं स्थितिरुपपणुं होवाथी अने तद्धर्मपणाने लीधे तेनो विशेष कहे छे.)

पेरेग्राफ १२ (जीव, पुदगल अने काळ लक्षण द्रव्योनो विविध धर्म विशेषोनी एकत्व परुपणा कही, हवे संसारी जीवो, मुक्तजीवो अने पुदगल द्रव्य विशेषोनो नारक परमाणुं विगेरेनो समुदाय लक्षण धर्मनी एकता वतावे छे.)

पेरेग्राफ १४ (जम्बुद्वीप कह्यो, हवे तेना परुपक भगवान महावीरनी एकता कहे छे.)

पेरेग्राफ १५ (वीर एकला निर्वृत थया एम कह्युं. निर्वृतिक्षेत्रनी पासे अनुत्तर विमानो छे तेथी त्यांना रहेनार देवोनुं देहमान कहे छे.)

पेरेग्राफ १६ (देवोनो अधिकार चालतो होवाथी नक्षत्र देवोनुं ताराओनी साथे एकपणुं कहे छे.)

पेरेग्राफ १७ (पुदगल स्वरुप कहेवा इच्छता कहे छे.)

दुट्ठाणं उद्देसओ १.

पेरेग्राफ १ (हवे द्विस्थानक नामनुं वीजुं अध्ययन शरु करे छे. आनो विशेष संवंध आ छे. जैनोना मतप्रमाणे वस्तु सामान्य विशेषे रुप छे. सामान्य आश्रीने प्रथम अध्ययनमां आत्मा विगेरे वस्तुनुं एकत्वपणुं परुप्युं. आत्मानो विशेषनो आश्रय लईने तेज वे प्रकारे परुपीए छीए. आ संवंधे आवेल आ अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे तेपण पहेला अध्ययननी पेठे जाणवा अने जे फेर छे ते पोतानी बुद्धिथी जाणी लेवो. फकत चार उद्देसावाळा अध्ययननुं सूत्रानुंगमे प्रथम उद्देसकनुं आ आदि सूत्रछे.)

पेरेग्राफ २ (हवे त्रस ए आदि नव सूत्रवडे जीवतत्वनाज सप्रतिपक्ष (विरुद्ध सहित) भेदो वतावे छे.)

पेरेग्राफ ३ (आम जीवतत्वना द्विपदावतार (वीजुं ठाणं) वतावीने अजीव तत्व संवंधी ते वतावे छे.)

पेरेग्राफ ४ (क्रियाना सद्भावे आत्माने वंध विगेरे थाय छे. क्रिया निरुपण करवाने माटे ३६ सूत्र कहे छे.)

पेरेग्राफ ५ (आ क्रियाओ प्राये गर्हणीय छे तेथी गर्हा कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (प्रत्याख्यान कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (ज्ञानपूर्वक प्रत्याख्यान विगेरे मोक्ष फळदाता छे तेथी ज्ञान विगेरे कहे छे.)

पेरेग्राफ ८ (ज्ञान अने चारित्र आत्मा केवी रीते पामे छे ते ११ सूत्रोथी कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (१) (वळी धर्म विगेरे विद्याचरणस्वरुप केवी रीते पामे छे ते कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (२) (वळी धर्मादि लाभने माटे बीजा बे कारणो कहे छे.)

पेरेग्राफ १० (केवळज्ञान पण काळविशेषे थाय छे ते कहे छे.)

पेरेग्राफ ११ (केवळज्ञान मोहनीय उन्मादना क्षएज थाय छे तेथी सामान्यथी उन्मादनुं निरुपण कहे छे.)

पेरेग्राफ १२ (१) (उन्मादथी जीव प्राणाति पातादि रुप दंडमां प्रवर्ते छे अने दंडनुं भाजन थाय छे तेथी दंडनुं निरुपण करे छे.)

पेरेग्राफ १२ (२) (कहेल स्वरुपवाळो दंड सर्व जीवोमां २४ दंडकोमां फोरवी बतावे छे.)

पेरेग्राफ १३ (सम्यक दर्शन विगेरे त्रण रत्नवाळाओनेज दंड होता नथी तेथी ते त्रणेनुं निरुपण करवा इच्छता सामान्यथी दर्शननुं स्वरुप बतावे छे.)

पेरेग्राफ १४ (हवे ज्ञान कहे छे.)

पेरेग्राफ १५ (हवे चारित्र कहे छे.)

पेरेग्राफ १६ (चारित्र धर्म छे ते संयम छे तेथी संयम कहे छे.)

पेरेग्राफ १७ (सराग संयम कह्यो, हवे वीतराग संयम कहे छे.)

पेरेग्राफ १८ (१) (संयम कह्यो ते जीवाजीव विषय छे तेथी पृथ्वी आदि जीवनुं स्वरुप कहे छे.)

पेरेग्राफ १९ (काळ अने आकाशनी बे सूत्रोथी परुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ २० (लोक अने अलोकना भेदथी आकाशनुं बे प्रकारपणुं बताव्युं अने लोक छे ते शरीरवाळाओनुं अने शरीरोनुं आश्रय स्वरुप छे तेथी नारक विगेरे शरीर दंडकवडे शरीर परुपणा कहे छे.)

पेरेग्राफ २१ (१) (शरीरना अधिकारमां जीवोनी बे राशीवडे परुपणा कहे छे.)

पेरेग्राफ २१ (२) (त्रसकाय स्थावर कायोनुंज बे प्रकारे परुपणा करवाने बे सूत्रो कहे छे.)

पेरेग्राफ २२ (पूर्व सूत्रमां भव्य जीवो कह्या. हवे तेना विशेषमांज जे जे करवुं उचित छे तेज बे स्थानकथी कहेछे.)

पेरेग्राफ २३ (हवेना १६ सूत्रो पूर्व सूत्रनी पेठे बे दिशाओना आलावाथी कहेवा.)

॥ दुइाणं उद्देसओ २ ॥

पेरेग्राफ १ (१) (पेहेला उद्देसामां जीव धर्म अने अजीव धर्म विशेषकरीने बे प्रकारे कह्या. बीजा उद्देसामां पण बे प्रकारे जीव धर्म कहे छे. प्रथम उद्देसाना छेला सूत्र अने आ बीजा उद्देसाना आदि सूत्रनो आ प्रमाणे संबंध छे. पहेला उद्देसाना अंतना सूत्रमां पादपोगमन कह्युं छे अने तेथी केटलाक देवपणुं पामे छे तेथी देवा विशेष कहेवामां तेनो कर्मबंध अने वेदना कहे छे.)

पेरेग्राफ १ (२) (आ बे विकल्प (भेद) बीजा ठाणामां सूत्रने आश्रीने कर्यो छे अने आ रीते सूत्रमां कहेल बन्ने प्रकारनी सर्व जीवोना चोवीसे दंडकमां परुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ २ (नारकीनी गती तथा आगती बतावे छे.)

पेरेग्राफ ३ (जीवाधिकार होवाने लीधे भव्य विगेरे एवा १६ विशेषणोवडे दंडकनी परुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ४ (पहेला वैमानिक चरमत्व अने अचरमत्व पण कह्या छे ते अवधिज्ञान वडे अधोलोक विगेरे जुए छे, हवे ते जोवामां जीवना बे प्रकार कहे छे.)

पेरेग्राफ ५ (वैक्रिय शरीर आश्रीने अधोलोक विगेरेना ज्ञानमां बे प्रकार कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (आज्ञानाधिकार छे तेथी ते संबंधमां बीजुं कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (शब्द श्रवण विगेरे जीवपरिणाम कहेवा तेनो संबंध चालतो होवाथी जीवना बीजा पण परिणाम कहे छे)

पेरेग्राफ ८ (सामान्यथी श्रवण विगेरे देश अने सर्वथी कह्या छे. विशेष विविक्षामां देवोनुं प्रधानपणुं होवाथी तेमने आश्रीने ते कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (उपर कहेल भावो शरीर होय तोज संभवे छे तेथी अने देवोनुं प्रधानपणुं छे तेथी व्यक्ति आश्रीने तेमनाज शरीरोनी परुपणा करे छे.)

॥ दुट्ठाणं उद्देसओ ३ ॥

(बीजा उद्देसा अने त्रीजा उद्देसानो संबंध नीचे मुजब छे. बीजा उद्देसामां जीव पदार्थ अनेक रीते कह्यो. आ उद्देसामां जीवने उपग्राहक (साधनभुत) पुद्गल जीव धर्म क्षेत्र द्रव्यलक्षण पदार्थ परुपणा कहेशे. बीजा उद्देसाना छेला सूत्र अने आ उद्देसाना पेहेला सूत्रनो संबंध नीचे मुजब छे. बीजा उद्देसाना छेला सूत्रमां देवोना शरीर बताव्यां अने शरीरवाळो शब्दादिनो ग्राहक होयछे तेथी शब्दनी निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ २ (शब्दभेद कह्या, हवे तेना कारणनी निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ३ (पुदगळनुं एकठा थवुं ने जुदा थवुं तेनुं कारण बताववाने कहे छे.)

पेरेग्राफ ४ (१२ सूत्रोथी पुदगलोनीज निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ५ (पुद्गलना अधिकारने लीधे ज उपर कहेल सविपक्षना (विरुध पक्षना) विगेरे छ विशेषणोथी विशिष्ट (विशेष) शब्दादी पुद्गल धर्मो कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (पुदगल धर्मो कह्या. धर्मोना अधिकार होवाथी हवे जीव धर्मो कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (हवे वीर्याचारने विशेष कहेवा माटे छ सूत्रो कहे छे.)

पेरेग्राफ ८ (पडिमाओ सामायिकवाळाने ज होय तेथी सामायिक कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (जीवना धर्मोनो अधिकार छे तेथी ७४ सूत्रोथी बीजा धर्मो पण कहे छे.)

पेरेग्राफ १० (पर्यायनो अधिकार होवाथी अने ते नियत (अमुक) क्षेत्र आश्रित होवाथी क्षेत्रना व्यपदेशथी (संबंधथी) पुद्गल पर्यायने कहेवा इच्छता क्षेत्रप्रकरण कहे छे.)

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महा हि० हिमवंत वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा प० पद्म द० द्रह नामना द० द्रह थकी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं रो० रोहिता नदी चे० वळी है० हरि कंता नदी चे० वळी ॥ ३१ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवन्ताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । रोहिया चेव हरिकन्ता चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशाए महा हिमवंत वर्षधर पर्वतना महापद्म द्रहमांथी बे म्हा म्होटी नदीयुं नीकली वहे छे तेहनां नाम कहे छे, रोहिता नदी १, हरिकंता नदी २, ए बे भेद छे ॥३१॥

अर्थः—ए० एम नि० निषध नामे वा० वर्षधर प० पर्वतना ति० तिगिच्छ द्रह नामना द० द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरि नदी चे० वळी सी० सीतोदा नदी चे० वळी ॥३२॥

एवं निसहाओ वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । हरि चेव सीओय चेव ॥ ३२ ॥

भावार्थः—एम निषध वर्षधर पर्वतना तिगिच्छ नामे द्रह मांहीथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, हरि नदी १, सीतोदा नदी २, ए बे भेद छे ॥३२॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नीलवत वा० वर्षधर प० पर्वतथी के० केसरिद्रह नामना म० मोटा द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं सी० सीता नदी चे० वळी ना० नारिकंता नदी चे० वळी ॥ ३३ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं नीलवन्ताओ वासहरपव्वयाओ केसरिद्दहाओ महादहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । सीता चेव नारिकन्ता चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुथी उत्तर दिशाए नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरि द्रहथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, सीतानदी १, नारिकंतानदी २, ए बे भेद छे ॥ ३३ ॥

अर्थः—ए० एम रु० रुप्पी वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा पो० पुंडरीक द० द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं न० नरकंता चे० वळी रु० रुप्पकुला चे० वळी ॥ ३४ ॥

एवं रुप्पीओ वासहरपव्वयाओ महापोण्डरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । नरकन्ता चेव रुप्पकूला चेव ॥ ३४ ॥

भावार्थः—एम रुपी वर्षधरपर्वतना महा पुंडरीक द्रहमांथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, नरकंतानदी १, रुप्पकुलानदी २, ए बे भेद छे ॥३४॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे भ० भरत वा० क्षेत्रे दो० बे प० प्रपात द० द्रह (डुंगरथी नीचो मवाह पडे ते) पं० कह्या

पेरेग्राफ ४ (पहेला वैमानिक चरमत्व अने अचरमत्व पण कह्या छे ते अवधिज्ञान वडे अधोलोक विगेरे जुए छे, हवे ते जोवामां जीवना बे प्रकार कहे छे.)

पेरेग्राफ ५ (वैक्रिय शरीर आश्रीने अधोलोक विगेरेना ज्ञानमां बे प्रकार कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (आज्ञानाधिकार छे तेथी ने संबंधमां बीजुं कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (शब्द श्रवण विगेरे जीवपरिणाम कहेवा तेनो संबंध चालतो होवाथी जीवना बीजा पण परिणाम कहे छे)

पेरेग्राफ ८ (सामान्यथी श्रवण विगेरे देश अने सर्वथी कह्या छे. विशेष विविक्षामां देवोनुं प्रधानपणुं होवाथी तेमने आश्रीने ते कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (उपर कहेल भावो शरीर होय तोज संभवे छे तेथी अने देवोनुं प्रधानपणुं छे तेथी व्यक्ति आश्रीने तेमनाज शरीरोनी परुपणा करे छे.)

॥ दुट्ठाणं उद्देसओ ३ ॥

(बीजा उद्देसा अने त्रीजा उद्देसानो संबंध नीचे मुजब छे. बीजा उद्देसामां जीव पदार्थ अनेक रीते कह्यो. आ उद्देसामां जीवने उपग्राहक (साधनभुत) पुदगल जीव धर्म क्षेत्र द्रव्यलक्षण पदार्थ परुपणा कहेशे. बीजा उद्देसाना छेला सूत्र अने आ उद्देसाना पेहेला सूत्रनो संबंध नीचे मुजब छे. बीजा उद्देसाना छेला सूत्रमां देवोना शरीर बताव्यां अने शरीरवाळो शब्दादिनो ग्राहक होयछे तेथी शब्दनी निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ २ (शब्दभेद कह्या, हवे तेना कारणनी निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ३ (पुदगळनुं एकठा थवुं ने जुदा थवुं तेनुं कारण बतावबाने कहे छे.)

पेरेग्राफ ४ (१२ सूत्रोथी पुदगलोनीज निरुपणा करे छे.)

पेरेग्राफ ५ (पुदगलना अधिकारने लीधे ज उपर कहेल सविपक्षना (विरुध पक्षना) विगेरे छ विशेषणोथी विशिष्ट (विशेष) शब्दादी पुदगल धर्मो कहे छे.)

पेरेग्राफ ६ (पुदगल धर्मो कह्या. धर्मोना अधिकार होवाथी हवे जीव धर्मो कहे छे.)

पेरेग्राफ ७ (हवे वीर्याचारने विशेष कहेवा माटे छ सूत्रो कहे छे.)

पेरेग्राफ ८ (पडिमाओ सामायिकवाळाने ज होय तेथी सामायिक कहे छे.)

पेरेग्राफ ९ (जीवना धर्मोनो अधिकार छे तेथी २४ सूत्रोथी बीजा धर्मो पण कहे छे.)

पेरेग्राफ १० (पर्यायनो अधिकार होवाथी अने ते नियत (अमुक) क्षेत्र आश्रित होवाथी क्षेत्रना व्यपदेशथी (संबंधथी) पुदगल पर्यायने कहेवा इच्छता क्षेत्रप्रकरण कहे छे.)

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महा हि० हिमवंत वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा प० पद्म द० द्रह नामना द० द्रह थकी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं रो० रोहिता नदी चे० वळी हे० हरिकंता नदी चे० वळी ॥ ३१ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स दाहिणेणं महाहिमवन्ताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । रोहिया चेव हरिकन्ता चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशाए महा हिमवंत वर्षधर पर्वतना महापद्म द्रहमांथी बे म्हा म्होटी नदीयुं नीफली वहे छे तेहनां नाम कहे छे, रोहिता नदी १, हरिकंता नदी २, ए बे भेद छे ॥३१॥

अर्थः—ए० एम नि० निषध नामे वा० वर्षधर प० पर्वतना ति० तिगिच्छ द्रह नामना द० द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरि नदी चे० वळी सी० सीतोदा नदी चे० वळी ॥३२॥

एवं निसहाओ वासहरपव्वयाओ तिगिन्छिद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । हरि चेव सीओय चेव ॥ ३२ ॥

भावार्थः—एम निषध वर्षधर पर्वतना तिगिच्छ नामे द्रह मांहीथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, हरि नदी १, सीतोदा नदी २, ए बे भेद छे ॥३२॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नीलवंत वा० वर्षधर प० पर्वतथी के० केसरिद्रह नामना म० मोटा द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं सी० सीता नदी चे० वळी ना० नारिकंता नदी चे० वळी ॥ ३३ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स उत्तरेणं नीलवन्ताओ वासहरपव्वयाओ केसरिदहाओ महादहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । सीता चेव नारिकन्ता चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुथी उत्तर दिशाए नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरि द्रहथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, सीतानदी १, नारिकंतानदी २, ए बे भेद छे ॥ ३३ ॥

अर्थः—ए० एम रु० रुप्पी वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा पो० पुंडरीक द० द्रहथी दो० बे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं न० नरकंता चे० वळी रु० रुप्पकुला चे० वळी ॥ ३४ ॥

एवं रुप्पीओ वासहरपव्वयाओ महापोण्डरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । नरकन्ता चेव रुप्पकूला चेव ॥ ३४ ॥

भावार्थः—एम रुपी वर्षधरपर्वतना महा पुंडरीक द्रहमांथी बे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, नरकंतानदी १, रुप्पकुलानदी २, ए बे भेद छे ॥३४॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे भ० भरत ना० क्षेत्र दो० बे प० प्रपात द० (डुंगरथी नीचो प्रवाह पडे

व० घणा स० समा तं० ते ज० कहुंछुं ग० गंगा प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी सि० सिन्धु प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी ॥३५॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला । तं जहा । गङ्गप्पवायद्दहे चेव सिन्धुप्पवायद्दहे चेव ॥ ३५ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षीणे भरतक्षेत्रमां बे प्रपातद्रह छे, जेहमां पर्वतथी नदीनो प्रवाह पडे छे ते बे घणा सरखा छे यावत बराबर छे तेह बेनां नाम कहे छे, जेमां गंगानदीनो प्रवाह पडे छे ते गंगाप्रपातद्रह १, सिंधु नदीनो प्रवाह जेहमां पडे छे ते सिंधुप्रताप द्रह २, ए बे भेद छे ॥३५॥

अर्थः—ए० एम हे० हेमवंत वा० क्षेत्र दो० बे प० प्रपात द० द्रह प० कह्या. ब०बहु स० सरखा तं० ते ज० कहुंछुं रो० रोहिता प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी रो० रोहिंनंस प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी ॥ ३६ ॥

एवं हेमवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला । तं जहा । रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियंसप्पवायद्दहे चेव ॥ ३६ ॥

भावार्थः—एम जंबुद्विपना मेरुथी उत्तरदिशाए हेमवंतक्षेत्रमां बे प्रपातद्रह (कुंड) कहेल छे. ते बे घणा सरखा छे यावत बराबर छे, तेहनां नाम कहे छे, रोहिता प्रपातकुंड तेहमां म्हा म्होटा मकर (मगर) मुखप्रवाहे रोहितानदी पडे छे १, रोहितांसा प्रपातद्रह छे २, ए बे भेद छे ॥३६॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी०द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी दा० दक्षिणे ह० हरि वर्षक्षेत्रे दो० बे प० प्रपात द० द्रह पं० कह्या ब० घणा स० समा तं० तेज० कहुछुं ह० हरि प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी ह० हरिकान्त प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी ॥ ३७ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं हरिवासे दो पवायद्दहा पन्नत्ता बहुसमउल्ला। तं जहा । हरिप्पवायद्दहे चेव हरिकन्तप्पवायद्दहे चेव ॥ ३७ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुथी दक्षीणे हरिवर्ष क्षेत्रमां बे प्रपातद्रह कहेल छे, ते बे घणा सरखा छे यावत बराबर छे, तेहनां नाम कहे छे, हरिप्रपातद्रह १, हरिकांता प्रपातद्रह २, ए बे भेद छे ॥३७॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे मे० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे म० महा विदेह वा० क्षेत्रे दो० बे प० प्रपात द० द्रह पं० कह्या ब० घणा स० सरखा जा० यावत सी० सीता प्प० प्रपात द० द्रह चे० वळी सी० सीतोदा प्प० प्रतात द० द्रह चे० वळी ॥ ३८ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं महाविदेहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव सीयप्पवायद्दहे चेव सीओयप्पवायद्दहे चेव ॥ ३८ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुथी उत्तरे अने दक्षीणे महाविदेह क्षेत्रमां बे प्रपातद्रह कहेल छे ते सरखा छे यावत बराबर छे तेहनां नाम कहे छे, सीता प्रपातद्रह १, सीतोदा प्रपातद्रह २, ए बे भेद छे ॥३८॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तरे र० रम्यक वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात द्द० द्रह पं० कह्या व० घणा स० समा जा० यावत न० नरकन्त प्र० प्रपात द्द० द्रह चे० वली ना० नारिकन्त प्प०प्रपात द्द०द्रह चे०वली ॥३९॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव नरकन्तप्पवायद्दहे चेव नारिकन्तप्पवायद्दहे चेव ॥ ३९ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुथी उत्तरे रम्यक्वास क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे ते वे घणा सरखा छे यावत बराबर छे तेहनां नाम कहे छे, नरकांत प्रपातद्रह १, नारिकांता प्रपातद्रह २, ए वे भेद छे ॥३९॥

अर्थः—ए एम हे० हेरणवय वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात द्द० द्रह प० कह्या व० घणा स० समा जा० यावत सु० सुवर्ण कुल प्प० प्रपात द्द० द्रह चे०वली रू० रूपकूल प्प० प्रपात द्द० द्रह चे० वली ॥ ४० ॥

एवं हेरन्नवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव सुवण्णकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव ॥ ४० ॥

भावार्थः—एम अरण्यवंत क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे ते कहे छे ते वे घणा सरखा छे यावत बराबर छे. सुवर्णकुला प्रपातद्रह १, रूप्यकुला प्रपातद्रह २, ए वे भेद छे ॥४०॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तरे ए० एरवत वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात द्द० द्रह प० कह्या व० घणा स० समा जा० यावत र० रक्त प्प० प्रपात द्द० द्रह चे० वली र० रक्तवती प्प० प्रपात द्द० द्रह चे० वली ॥ ४१ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तवइप्पवायद्दहे चेव ॥ ४१ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुथी उत्तरे एरवंत क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह श्री तिर्थंकरदेवे कहेल छे, ते वे घणा सरखा छे यावत बराबर छे, तेहनां नाम कहे छे, रक्तप्रपातद्रह १, रक्तावती प्रपातद्रह २, ए वे भेद छे ॥४१॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतथी दा० दक्षिणे भ० भरत वा० क्षेत्रे दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० कही व० घणी स० समा जा० यावत गं० गंगा चे० वली सि० सिन्धु चे० वली ॥४२॥

जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो महानईओ पण्णत्ताओ बहुसमउल्लाओ जाव गङ्गा चेव सिन्धू चेव ॥ ४२ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षीणे भरतक्षेत्रमां वे म्होटी नदीयुं कहेल छे, घणी सरखी छे यावत बराबर छे तेहनां नाम कहे छे, गंगानदी १, सिंधुनदी २, ए वे भेद छे ॥४२॥

अर्थः—ए० एम ज० जेम प० प्रपात द्द० द्रह ए० एम न० नदीओ भा० जाणवी ए० एम जा० यावत ए० एरवत वा० क्षेत्रे दो० वे म० महा न० नदीओ पं० कही व० घणी स० समा जा० यावत र० रक्ता चे० वली र० रक्तावती चे० वली ॥ ४३ ॥

एवं जहा पवायद्दहा एवं नईओ भाणियव्वाओ एवं जाव एरावए वासे दो

महानईओ पन्नत्ताओ बहुसमउल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवई चेव ॥ ४३ ॥

भावार्थः–एम जेम प्रपातद्रह कह्या छे तेम अनुक्रमे नदीयुं पण जाणवी, यावत एरवंत क्षेत्रमां बे म्होटी नदीयुं कही छे ते बे घणी सरखी छे यावत बराबर छे तेहनां नाम कहे छे, रक्तानदी १, रक्तावती नदी २, ए बे भेद छे ॥४३॥

अर्थः–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ० भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रने विषे ती० गइ उ० उतसर्पिणी काले सु० सुषम दु० दुषमा स० समो दो० बे सा० सागरोपम को० क्रोडा को० क्रोडीनो का० काल हो. थयो ॥१॥

११ पेरा (जंबुद्वीपना अधीकारने लीधे तथा क्षेत्रधर्म आश्रीने पुद्गळ धर्माधिकारने लीधे जंबुद्वीप संबंधी भरत वीगेरे लगता काळ लक्षण पर्याय धर्मनुं अनेकपणुं बतावनारा अढार सूत्रो कहेछे.)

जम्बुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमदुस्समाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था ॥ १ ॥

भावार्थः–जंबुद्वीपना भरत अने एरवंत क्षेत्रमां अतित (गइ) उत्सर्पिणी काले सुसम दुसमा नामे चोथो आरो बे क्रोडाक्रोडी सागरोपम काळ प्रमाणे थयो ॥ १ ॥

अर्थः–ए० एम इ० वर्त्तमान उ० उत सर्प्पिणी काले सुषमदुःषमा चोथो आरो बे सागरोपम क्रोडा क्रोडीनो जा० यावत पं० कह्यो ॥ २ ॥

एवं इमीसे उस्सप्पिणीए जाव पन्नत्ते ॥ २ ॥

भावार्थः–आ वर्तमान उतसर्पिणी काळे सुसम दुसमा नामे (चोथो) आरो बे क्रोडा क्रोडी सागरोपम काळ प्रमाणे थयो. ॥ २ ॥

अर्थः–ए० एम० आ० आवती उ० उत सर्प्पिणी काले बे क्रोडाक्रोडी सागरोपमनो जा० यावत भ० थाशे ॥ ३ ॥

एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सइ ॥ ३ ॥

भावार्थः–एमज आवती उत्सर्पिणीनो सुसम दुसमा नामे चोथो आरो बे क्रोडाक्रोडी सागरोपम काळ प्रमाणे थशे ए बे भेदछे ॥३॥

अर्थः–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ० भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रे ती० गइ उ० उत सर्प्पिणीए सु० सुषमा स० आरे म० मनुष्य युगलीया दो० बे गा० गाउ या० प्रमाण उ० उंचे उ० उंचपणे हो० थयां दो० बे य० वळी प० पल्योपमनुं प० उत्तकृष्ट आउषु पा० पालता हुआ ॥ ४ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दोण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः–जंबुद्वीपना भरत अने एरवंतक्षेत्रमां गइ उत्सर्पिणीना सुसमा नामे आरामां युगळीयां मनुष्यनुं शरिर बे गाउ उंचपणे थयुं अने उत्कृष्टुं बे पल्योपमनुं आउखुं पाळता हुवा ॥ ४ ॥

अर्थः–ए० एम इ० आ वर्तमान उ० उत सर्प्पिणी काले जा० यावत पा० (बे पल्योपमनुं आउषुं) पाले ॥ ५ ॥

एवं इमीसे उस्सप्पिणीए जाव पालइत्ता ॥ ५ ॥

भावार्थः–एम आ वर्तमान उतसर्पिणीना सुसमा आरे युगलीयां मनुष्यनुं शरिर बे गाउ उंचपणे थयुं अने उतकृष्टुं बे पल्योपमनुं आउखुं थयुं ॥ ५ ॥

अर्थः–ए एम आ० आवती उ० उतसर्प्पिणी काले जा० यावत पा० पाळशे ॥६॥

एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव पालइस्सन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः–एम आवती उत्सर्पिणीना सुसमा आरे युगळीयां मनुष्यनुं शरिर बे गाउ उंचपणे थशे१ अने उत्कृष्टुं बे पल्योपमनुं आउखुं पाळशे २ ए बे भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ० भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रे ए० एक स० समये ए० एक जु० युगे दो० बे अ० अरिहंतना वं० मोटा वंश उ० उपना पुर्वे वा० वळी उ० उपजे छे वा० वळी उ० उपजस्ये वा० वळी ॥ ७ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरहन्तवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जन्ति वा उप्पज्जिस्सन्ति वा ॥ ७ ॥

भावार्थः–जंबुद्वीपना भरत एरवंत क्षेत्रमां एक समे एक युगे (युगते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ ए पांच वर्षनो एक युग थाय.) बे अरिहंत भगवंतनां म्होटा वंश उपन्या, उपजे छे ने वर्तमान चोविसी आश्रीने आवते काळे उपजशे. ॥७॥

अर्थः–ए० एम च० चक्रवर्तिना वं० वंश द० वासुदेवना वं० वंश जा० यावत उ० उपजशे वा० वळी ॥ ८–९ ॥ ८ ॥

एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा जाव उप्पज्जिस्सन्ति वा ॥ [८–९] ॥ ८ ॥

भावार्थः–ते एक भरतमां ने एक एरवतमां, एम बे चक्रवर्तिना वंश, एम बे वासुदेवना वंश जाणवा, ए बे भेद छे ॥ ८–९ ॥ ८ ॥

जंबुद्वीपना भरत एरवत क्षत्रमां एके समे अतितकाळे बे अरिहंत उपन्या, वर्तमान काळे उपजे छे, अनागतकाळे उपजशे, एम बे चक्रवर्ति, एम बे बळदेव, एम बे वासुदेव यावत उपन्या, उपजे छे ने उपजशे, ए बे भेद छे.

अर्थः–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० बे कु० कुरुने विषे म० मनुष्य स० सदा सु० सुषम सु० सुषम पहेलो आरो उ० मोटी इ० ऋद्धि मते प० पाम्या प० मनुष्यनो भ० भव सफल मा० मानता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवकुरु क्षेत्र चे० वळी उ० उत्तर कुरुक्षेत्र चे० वळी ॥ १०–१४ ॥ ९ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमं उत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव ॥[१०-१४]॥९॥

भावार्थः–जंबुद्वीपे बे कुरुने विषे मनुष्य सदाय सुखम सुखमां पहेळा आरानी रुद्धि भोगवतां युगळीयां विचरे छे ते बे कुरुनां नाम कहे छे, देवकुरु १, उत्तरकुरु २, ए बे कुरुमां सदाय पहेलो आरो छे, ए बे भेद छे. (१०–१४) ९

अर्थः–ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० बे वा० क्षेत्रे म० मनुष्य स० सदा सु० सुषमा बीजो आरो उ० मोटी इ० ऋद्धि मते प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव सफल मा० मानता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरिवर्षक्षेत्र चे० वळी र० रम्यग वर्षक्षेत्र चे० वळी ॥ १५ ॥ १० ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमं उत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव॥[१५]॥१०॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे बे क्षेत्रने विषे मनुष्य सदाय सुखमा नामे बीजा आरानी उत्तम रुद्धी पाम्या सुख भोगवतां विचरे छे, ते क्षेत्रनां नाम कहेछे, हरिवर्षक्षेत्रे १, रम्यक वर्षक्षेत्रे २, ए बे भेद छे ॥१५॥ १० ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० बे वा० क्षेत्रने विषे म० मनुष्य स० सदा सु० सुषम दु० दुखमा नामे उ० उत्तम इ० ऋद्धि प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव मा० प्रतिसुख भोगवता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं हे० हेमवंत क्षेत्र चे० वळी ए० एरणवंत क्षेत्र चे० वळी ॥ १६ ॥ ११ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुस्समं उत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । हेमवए चेव एरन्नवए चेव ॥[१६]॥११॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे बे क्षेत्रने विषे मनुष्य युगळीयां सदाय सुखम दुःखमां त्रीजा आरानी उत्तम रुद्धी पाम्याने ते सुख भोगवतां विचरेछे ते बे क्षेत्रनां नाम कहेछे, हेमवंत क्षेत्रे १, एरण्यवंत क्षेत्रे २, ए बे भेद छे ॥१६॥११॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० बे खे० क्षेत्रने विषे म० मनुष्य स० सदा दु० दुखम स० सुषमा उ० उत्तम इ० रुद्धि प्रते प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव मा० प्रति सुख भोगवता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं. पु० पुर्व महा विदेहमां चे० वळी अ०पश्चिम महा विदेहमां चे०वळी ॥१७॥१२॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु खेत्तेसु मणुया सया दुस्समसुसमं उत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥[१७]॥१२॥

भावार्थः—जंबुद्वीपमां बे क्षेत्रने विषे मनुष्य युगळीयां नथी, सदाय दुखमां सुखमां चोथा आरानी उत्तम रुद्धि पाम्या ते सुख भोगवता विचरेछे; ते बे क्षेत्रनां नाम कहेछे, पूर्व महाविदेहमां १, पश्चिम महाविदेहमां २, ए छ युगळीयांना क्षेत्रमां अने महाविदेहमां आरा फरता नथी, ए बे भेद छे ॥ १७ ॥ १२ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामा दी० द्वीपे दो० बे वा० क्षेत्रमां म० मनुष्य छ. छ प्रकारे पि० पण का० काल प्रते प० मनुष्य भ० भव मा० प्रतिसुष भागवता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं भ० भरतक्षेत्रे चे० वळी ए० एरवत क्षेत्रे चे० वळी ॥ १८ ॥ १३ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । भरहे चेव एरवए चेव ॥ [१८] ॥ १३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपमां बे क्षेत्रमां मनुष्य छए प्रकारे आराना काळ प्रत्ये भोगवता विचरे छे ते बे क्षेत्रनां नाम कहे छे, भरतक्षेत्रमां १, एरवंत क्षेत्रमां २, ए बे भेद छे ॥१८॥१३॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० बे च० चन्द्रमा प० अजवाळु करताहवा वा० वळी प० उद्योत करेछे वा० वळी प० उद्योत करस्ये वा० वळी ॥ १ ॥

१२ पेरा (जंबुद्वीपमां काळलक्षण द्रव्य-पर्याय विशेष कह्या, हवेतो जंबुद्वीपमांज काळ पदार्थ बतावनार ज्योतिषीनी परुपणा करेछे)

जम्बुद्दीवे दीवे दो चन्दा पभासिंसु वा पभासन्ति वा पभासिस्सन्ति वा ।१।

भावार्थः-जंबुद्वीपे बे चंद्रमा अतितकाळे अजवाळुं करता हता, वर्तमानकाळे करे छे, अनागतकाळे करशे, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः-दो० बे सू० सूर्य त० तप्या अतीतकाले वा० वळी त० तपेछे वा० वळी त० तपस्ये वा० वळी ॥ २ ॥

दो सूरिया तवइंसु वा तवन्ति वा तविस्सन्ति वा ॥ २ ॥

भावार्थः-एमज जंबुद्वीपमां सूर्य अतितकाळे तप्या, वर्तमानकाळे तपेछे, अनागतकाळे तपशे, ए बे भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः-दो० बे क०कृतिका नक्षत्र दो०बे रो० रोहिणी दो० बे मि० मृगशिर दो० बे अ०आद्रा नक्षत्र ए० एम २८ नक्षत्र भा० जाणवा.

१३ पेरा (बीजुं ठाणुं चालतुं होवाथी चंद्रोना तथा तेना परिवारना बेवडापणुं बतावे छे.)

दो कत्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मिगसिरा, दो अद्दाओ एवं भाणियव्वं

भावार्थः-एम जंबुद्रीपमां बे कृतिका नक्षत्र छे, बे रोहिणी नक्षत्र छे, बे मृगसर नक्षत्र छे, बे आर्द्रा नक्षत्र छे, एम अठावीस नक्षत्र गाथाथी जाणवां.

अर्थः-क० कृतिका रो० रोहिणी मि० मृगाशिर अ० आद्रा य० वळी पु० पुनर्वसु य० वळी पु० पुष्य य० वळी त० तेवार पछी वि० वळी अ० अश्लेषा म० महा य० वळी दो० बे फ० पुर्व तथा उत्तर फालगुनी य० वळी ॥ १ ॥

कत्तियरोहिणिमिगसिर-
अद्दा य पुणवसू य पुस्सो य ।
तत्तो वि अस्सलेसा
महा य दो फग्गुणीओ य ॥ १॥

भावार्थः-बे कृतिका १, बे रोहिणी २, बे मृगसिर ३, बे आदा ४, बे पुनर्वसु ५, बे पुष्य ६, ते वार पछी बे आश्लेषा ७, बे मघा ८, बे पुर्वाफाल्गुणी ९, बे उत्तराफाल्गुणी १० ॥१॥

अर्थः-ह० हस्त चि० चित्रा सा० स्वाति य० वळी वि० विशाखा त० तेमज य० वळी हो० होय अ० अणुराधा जे० जेष्टा मू० मूल पु० पुर्वापाढा य० वळी आ० आपाढा उ० उत्तर चे० वळी ॥ २ ॥

हत्थो चित्ता साई य
विसाहा तह य होन्ति अणुराहा ।
जेट्ठा मूलो पुव्वा य
आसाढा उत्तरा चेव ॥ २ ॥

भावार्थः-बे हस्त ११, बे चित्रा १२, बे स्वाति १३, बे विशाखा १४, बे अनुराधा १५, बे ज्येष्टा १६, बे मुळ १७, बे पूर्वाषाढा १८, बे उत्तराषाढा १९ ॥ २ ॥

अर्थः-अ० अभिच स० श्रवण ध० धनिष्टा स० शतभिषा दो० बे य० वळी हो० होय भ० पूर्व ने उत्तर भद्रपद रे० रेवती अ० अश्वनि भ० भरणी ने० जाणवा आ० अनुक्रमे छे ॥ ३ ॥

अभिई सवणधणिट्ठा
सयभिसया दो य होन्ति भद्दवया ।
रेवइअस्सिणिभरणी
नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ३ ॥

भावार्थः-निश्चे बे अभिजीत २०, बे श्रवण २१, बे धनिष्टा २२, शतभिशा २३, वळी होय बे पूर्वाभाद्रपद २४, बे उत्तरा भाद्रपद २५, बे

रेवती २६, बे अश्वनी २७, बे भरणी २८, एम अनुक्रमे बे बे जाणवा ॥ ३ ॥

अर्थः–ए० एम गा० गाथाने अ० अनुसारे ने० जाणवुं जा० यावत दो० बे भ० भरणी ए २८ नक्षत्र

एवं गाहाणुसारेणं नेयव्वं जाव दो भरणीओ ॥

भावार्थः–एम गाथाने अनुसारे यावत भरणी लगी जाणवा ए सर्वे बे बे भेद छे

अर्थः–दो० बे अ० अग्नी देवता ॥ १ ॥

१४ पेरा (कृतीकाथी अठावीश नक्षत्रोना क्रम वडे अग्नी आदी अठावीश देवता होय छे ते कहे छे.)

दो अग्गी ॥ १ ॥

भावार्थः–हवे ए पूर्वोक्त अठावीस नक्षत्रना ताराना अठावीस देवता स्वामी छे ते कहे छे, बे अग्नीदेवता ॥ १ ॥

अर्थः–दो० बे प० प्रजापती देवता ॥२॥

दो पयावई ॥ २ ॥

भावार्थः–बे प्रजापती देवता ॥ २ ॥

अर्थः–दो बे सो० सोमदेवता ॥ ३ ॥

दो सोमा ॥ ३ ॥

भावार्थः–बे सोमदेवता ॥ ३ ॥

अर्थः–दो० बे रु० रुद्रदेवता ॥ ४ ॥

दो रुद्दा ॥ ४ ॥

भावार्थः–बे रुद्रदेवता ॥ ४ ॥

अर्थः–दो० बे अ० आदित्यदेवता ॥५॥

दो अइई ॥ ५ ॥

भावार्थः–बे अदिती देवता ॥ ५ ॥

अर्थः–दो०बे ब० बृहस्पती नामे देवता ॥६॥

दो वहस्सई ॥ ६ ॥

भावार्थः–बे बृहस्पतीदेवता ॥ ६ ॥

अर्थः–दो० बे स० सर्पि नामे देवता॥७॥

दो सप्पा ॥ ७ ॥

भावार्थः–बे सर्प ते नाग नामे देवता॥७॥

अर्थः–दो० बे पि० पितर नामे देवता॥८॥

दो पिई ॥ ८ ॥

भावार्थः–बे पितरनामे देवता ॥८॥

अर्थः–दो० बे भ० भग्र नामे देवता ॥९॥

दो भगा ॥ ९ ॥

भावार्थः–बे भ्रग नामे देवता ॥९॥

अर्थः–दो० बे अ० अर्यमा नामे देवता ॥१०॥

दो अज्जमा ॥ १० ॥

भावार्थः–बे अर्यमाण नामे देवता ॥१०॥

अर्थः–दो०बे स०सवितार नामे देवता॥११॥

दो सविया ॥ ११ ॥

भावार्थः–बे सविता नामे देवता ॥११॥

अर्थः–दो० बे त० त्वष्टा नामे देवता॥१२॥

दो तट्ठा ॥ १२ ॥

भावार्थः–बे त्वष्टा नामे देवता ॥१२॥

अर्थः–दो० बे वा० वायु नामे देवता॥१३॥

दो वाऊ ॥ १३ ॥

भावार्थः–बे वायु नामे देवता ॥१३॥

अर्थः–दो० बे इ० इंद्राग्नी नामे देवता ॥१४॥

दो इन्दग्गी ॥ १४ ॥

भावार्थः–बे इंद्राग्नि नामे देवता ॥१४॥

अर्थः–दो० बे मि० मित्र नामे देवता ॥१५॥

दो मित्ता ॥ १५ ॥

भावार्थः–बे मित्र नामे देवता ॥१५॥

अर्थः–दो० बे इ० इन्द्र नामे देवता॥१६॥

दो इन्दा ॥ १६ ॥

भावार्थः–बे इंद्र नामे देवता ॥१६॥

अर्थः–दो०बे नि०निजृतीनामे देवता ॥१७॥

दो निरई ॥ १७ ॥

भावार्थः—बे निरती नामे देवता ॥१७॥
अर्थः—दो० बे आ० आऊ जळ (ब्राह्मण) नामे देवता ॥ १८ ॥

दो आऊ ॥ १८ ॥

भावार्थः—बे आप ते जळ नामे देवता ॥१८॥
अर्थः—दो० बे वि० विश्व नामे देवता॥१९॥

दो विस्सा ॥ १९ ॥

भावार्थः—बे विश्व नामे ॥१९॥
अर्थः—दो० बे ब० ब्रह्म नामे देवता ॥२०॥

दो बम्हा ॥ २० ॥

भावार्थः—बे ब्रह्मा नामे देवता ॥२०॥
अर्थः—दो० बे वि० विष्नु नामे देवता ॥२१॥

दो विण्हू ॥ २१ ॥

भावार्थः—बे विष्नु नामे देवता ॥२१॥
अर्थः—दो० बे व० वसुनामे देवता॥२२॥

दो वसू ॥ २२ ॥

भावार्थः—बे वसु नामे देवता ॥२२॥
अर्थः—दो० बे व० वरुण नामे देवता ॥२३॥

दो वरुणा ॥ २३ ॥

भावार्थः—बे वरुण नामे देवता ॥२३॥
अर्थः—दो० बे अ० अजनामे देवता ॥२४॥

दो अया ॥ २४ ॥

भावार्थः—बे अज नामे देवता ॥२४॥
अर्थः—दो० बे वि० वृद्धि नामे देवता ॥२५॥

दो विविद्धी ॥ २५ ॥

भावार्थः—बे वृद्धि नामे देवता ॥२५॥
अर्थः—दो० बे पु० पुंषा नामे देवता ॥२६॥

दो पुस्सा ॥ २६ ॥

भावार्थः—बे पुंस नामे देवता ॥२६॥
अर्थः—दो० बे अ० अश्व नामे देवता ॥२७॥

दो अस्सी ॥ २७ ॥

भावार्थः—बे अश्व नामे देवता ॥२७॥
अर्थः—दो० बे य० यमदेव नामे देवता ॥२८॥

दो यमा ॥ २८ ॥

भावार्थः—बे यम नामे देवता ॥२८॥
ए अठाविस नक्षत्रना स्वामी ए सर्वे बे बे जाणवा.
अर्थः—दो० बे इ० मगळ ॥ १ ॥
१५ पेरा (अंगारक आदी अठाशी ग्रहोना नाम दे छे.)

दो इङ्गालगा ॥ १ ॥

भावार्थः—हवे अठयासी ग्रहनां नाम कहे छे. बे अंगारक ते मंगळ ॥१॥
अर्थः—दो० बे वि० व्याल ॥ २ ॥

दो वियालगा ॥ २ ॥

भावार्थः— बे व्याल ॥२॥
अर्थः—दो० बे लो० लोहितक्षा ॥ ३ ॥

दो लोहियक्खा ॥ ३ ॥

भावार्थः—बे लोहिताक्ष ॥३॥
अर्थः—दो० बे स० शनीश्वर ॥ ४ ॥

दो सणिच्छरा ॥ ४ ॥

भावार्थः—बे शनिश्चर ॥४॥
अर्थः—दो० बे आ० आहुनिक ॥ ५ ॥

दो आहुणिया ॥ ५ ॥

भावार्थः—बे आहुनिक ॥५॥
अर्थः—दो० बे पा० प्राहुणिक ॥ ६ ॥

दो पाहुणिया ॥ ६ ॥

भावार्थः—बे प्राहुणिक ॥६॥
अर्थः—दो० बे क० काण ॥ ७ ॥

दो कणा ॥ ७ ॥

भावार्थः—बे कांण ॥७॥
अर्थः—दो० बे क० कनक ॥ ८ ॥

दो कणगा ॥ ८ ॥

भावार्थः—बे कनक ॥८॥
अर्थः—दो० बे क० कनकनक ॥ ९ ॥

दो कणकणगा ॥ ९ ॥
भावार्थः—वे कनकनक ॥९॥
अर्थः—दो० वे क० कनकवितानक ॥ १०॥
दो कणगवियाणगा ॥ १० ॥
भावार्थः-वे कनकवितानक ॥१०॥
अर्थः—दो० वे क० कनकसंतानक ॥ ११॥
दो कणगसंताणगा ॥ ११ ॥
भावार्थः—वे कनक संतानक ॥११॥
अर्थः—दो० वे सो० सोम ॥ १२ ॥
दो सोमा ॥ १२ ॥
भावार्थः—वे सोम ॥१२॥
अर्थः-दो० वे स० सहितनामा ॥ १३ ॥
दो सहिया ॥ १३ ॥
भावार्थः—वे सहित ॥१३॥
अर्थः-दो० वे आ० अश्वासन ॥ १४ ॥
दो आसासणा ॥ १४ ॥
भावार्थः—वे अश्वासन ॥१४॥
अर्थः—दो० वे क० कजावग ॥ १५ ॥
दो कज्जोवगा ॥ १५ ॥
भावार्थः—वे कजजोवग ॥१५॥
अर्थः—दो० वे क० कर्वट ॥ १६ ॥
दो कब्बडगा ॥ १६ ॥
भावार्थः-वे कर्वट ॥१६॥
अर्थः—दो० वे अ० अयस्कर ॥ १७ ॥
दो अयकरगा ॥ १७ ॥
भावार्थः—वे अयस्कर ॥१७॥
अर्थः—दो० वे दु० दुंदुंभग ॥ १८ ॥
दो दुन्दुभगा ॥ १८ ॥
भावार्थः—वे दुंदुभक ॥१८॥
अर्थः—दो० वे सं० शंख नामे ॥ १९ ॥
दो सङ्खा ॥ १९ ॥
भावार्थः—वे शंख ॥१९॥
अर्थः—दो० वे स० शंखवर्ण नामे ॥२०॥
दो सङ्खवन्ना ॥ २० ॥
भावार्थः—वे शंखवर्ण ॥२०॥
अर्थः—दो० वे स० शंखवर्णाभ नामे ॥२१॥
दो सङ्खवण्णाभा ॥ २१ ॥
भावार्थः—वे शंखवर्णाभ ॥२१॥
अर्थः—दो० वे कं० कंस नामे ॥ २२ ॥
दो कंसा ॥ २२ ॥
भावार्थः—वे कंश ॥२२॥
अर्थः—दो० वे कं० कंसवर्ण ॥ २३ ॥
दो कंसवन्ना ॥ २३ ॥
भावार्थः—वे कंशवर्ण ॥२३॥
अर्थः-दो० वे कं० कंसवर्णाभ ॥ २४ ॥
दो कंसवण्णाभा ॥ २४ ॥
भावार्थः—वे कंशवर्णाभ ॥२४॥
अर्थः—दो० वे रु० रुप्पी ॥ २५ ॥
दो रुप्पी ॥ २५ ॥
भावार्थः—वे रुपी ॥२५॥
अर्थः—दो० वे रु० रुप्पाभ नाम ॥२६॥
दो रुप्पाभासा ॥ २६ ॥
भावार्थः—वे रुप्याभ ॥२६॥
अर्थः—दो० वे नी० नीलग्रह ॥ २७ ॥
दो नीला ॥ २७ ॥
भावार्थः—वे नील ॥२७॥
अर्थः—दो० वे नी० नीलाभासानामे ॥२८॥
दो नीलाभासा ॥ २८ ॥
भावार्थः—वे नीलाभास ॥२८॥
अर्थः—दो० वे भा० भस्मग्रह ॥ २९ ॥
दो भासा ॥ २९ ॥
भावार्थः—वे भस्म ॥२९॥
अर्थः—दो० वे भा० भस्मराशीग्रह ॥३०॥
दो भासरासी ॥ ३० ॥

भावार्थः—वे भस्मराशी ॥३०॥
अर्थः—दो० वे ति० तिल ॥ ३१ ॥

दो तिला ॥ ३१ ॥

भावार्थः—वे तिल ॥३१॥
अर्थः—दो० वे ति० तिलपुष्फवर्ण ॥३२॥

दो तिलपुप्फवण्णा ॥ ३२ ॥

भावार्थः—वे तिल पुष्पवर्ण ॥३२॥
अर्थः—दो० वे द० दक नामे ॥ ३३ ॥

दो दगा ॥ ३३ ॥

भावार्थः—वे दक ॥३३॥
अर्थः—दो० वे द० दक पंचवर्ण नामे ३४॥

दो दगपञ्चवण्णा ॥ ३४ ॥

भावार्थः—वे दक पंचवर्ण ॥३४॥
अर्थः—दो० वे का० काक नामे ॥ ३५ ॥

दो काका ॥ ३५ ॥

भावार्थः—वे काक ॥३५॥
अर्थः—दो० वे का० कर्कंध नामे ॥ ३६॥

दो कायवञ्झा ॥ ३६ ॥

भावार्थः—वे ककुध ॥३६॥
अर्थः—दो० वे इ० इन्द्रीगी ॥ ३७ ॥

दो इन्दग्गी ॥ ३७ ॥

भावार्थः—वे इंद्राग्नि ॥३७॥
अर्थः—दो० वे धू० धूमकेतु नामे ॥३८॥

दो धूमकेऊ ॥ ३८ ॥

भावार्थः—वे धुमकेतु ॥३८॥
अर्थः—दो० वे ह० हरीनामे ॥ ३९ ॥

दो हरी ॥ ३९ ॥

भावार्थः—वे हरि ॥३९॥
अर्थः—दो० वे पिं० पिंगला ॥ ४० ॥

दो पिङ्गलगा ॥ ४० ॥

भावार्थः—वे पिंगल ॥४०॥
अर्थः—दो० वे बु० बुद्ध ॥ ४१ ॥

दो बुहा ॥ ४१ ॥

भावार्थः—वे बुध ॥ ४१ ॥
अर्थः—दो० वे सु० शुक्र ॥ ४२ ॥

दो सुक्का ॥ ४२ ॥

भावार्थः—वे शुक्र ॥ ४२ ॥
अर्थः—दो० वे व० बृहस्पति ॥ ४३ ॥

दो वहस्सई ॥ ४३ ॥

भावार्थः—वे बृहस्पति ॥ ४३ ॥
अर्थः—दो० वे रा० राहु ॥ ४४ ॥

दो राहू ॥ ४४ ॥

भावार्थः—वे राहु ॥ ४४ ॥
अर्थः—दो० वे अ० अगस्ती ॥ ४५ ॥

दो अगत्थी ॥ ४५ ॥

भावार्थः—वे अगस्ति ॥ ४५ ॥
अर्थः—दो० वे मा० मानवक ॥ ४६ ॥

दो माणवगा ॥ ४६ ॥

भावार्थः—वे माणवंक ॥ ४६ ॥
अर्थः—दो० वे का० काश्य ॥ ४७ ॥

दो कासा ॥ ४७ ॥

भावार्थः—वे कास ॥ ४७ ॥
अर्थः—दो० वे फा० फर्श ॥ ४८ ॥

दो फासा ॥ ४८ ॥

भावार्थः—वे स्पर्श ॥ ४८ ॥
अर्थः—दो० वे धु० धुर ॥ ४९ ॥

दो धुरा ॥ ४९ ॥

भावार्थः—वे धुर ॥ ४९ ॥
अर्थः—दो० वे प० प्रमुष ॥ ५० ॥

दो पमुहा ॥ ५० ॥

भावार्थः—वे प्रमुख ॥ ५० ॥
अर्थः—दो० वे वि० विकट ॥ ५१ ॥

दो वियडा ॥ ५१ ॥

भावार्थः—वे विकट ॥ ५१ ॥

अर्थः-दो० वे वि० विसंधी ॥ ५२ ॥

दो विसंधी ॥ ५२ ॥

भावार्थः-वे विसंधी ॥ ५२ ॥

अर्थः-दो० वे नि० नियल ॥ ५३ ॥

दो नियल्ला ॥ ५३ ॥

भावार्थः-वे नियल ॥ ५३ ॥

अर्थः-दो० वे प० पइल ॥ ५४ ॥

दो पयल्ला ॥ ५४ ॥

भावार्थः-वे पइल ॥ ५४ ॥

अर्थः-दो० वे ज० जडिताल्क ॥ ५५ ॥

दो जडियाइलया ॥ ५५ ॥

भावार्थः-वे जडीतालक ॥ ५५ ॥

अर्थः-दो० वे अ० अरुण ॥ ५६ ॥

दो अरुणा ॥ ५६ ॥

भावार्थः-वे अरुण ॥ ५६ ॥

अर्थः-दो० वे अ० अगिला ॥ ५७ ॥

दो अग्गिल्ला ॥ ५७ ॥

भावार्थः-वे अगिल ॥ ५७ ॥

अर्थः-दो० वे का० कालग्रह ॥ ५८ ॥

दो काला ॥ ५८ ॥

भावार्थः-वे काळ ॥ ५८ ॥

अर्थः-दो० वे म० महाकाल ॥ ५९ ॥

दो महाकालगा ॥ ५९ ॥

भावार्थः-वे महाकाळ ॥ ५९ ॥

अर्थः-दो० वे सो० स्वस्तिक ॥ ६० ॥

दो सोत्थिया ॥ ६० ॥

भावार्थः-वे स्वस्तिक ॥ ६० ॥

अर्थः-दो० वे सो० सोवस्तिक ॥ ६१ ॥

दो सोवत्थिया ॥ ६१ ॥

भावार्थः-वे सौवस्तिक ॥ ६१ ॥

अर्थः-दो० वे व० वर्धमान ॥ ६२ ॥

दो वद्धमाणगा ॥ ६२ ॥

भावार्थः-वे वर्धमान ॥ ६२ ॥

अर्थः-दो० वे प० प्रलंब ॥ ६३ ॥

दो पलम्बा ॥ ६३ ॥

भावार्थः-वे प्रलंब ॥ ६३ ॥

अर्थः-दो० वे नि० नित्यलोक ॥ ६४ ॥

दो निच्चालोगा ॥ ६४ ॥

भावार्थः-वे नित्यालोक ॥ ६४ ॥

अर्थः-दो० वे नि० नित्याजोत ॥ ६५ ॥

दो निच्चुज्जोया ॥ ६५ ॥

भावार्थः-वे नित्योद्योत ॥ ६५ ॥

अर्थः-दो० वे स० सयंप्रभ ॥ ६६ ॥

दो सयंपभा ॥ ६६ ॥

भावार्थः-वे स्वयंप्रभ ॥ ६६ ॥

अर्थः-दो० वे ओ० उभासा ॥ ६७ ॥

दो ओभासा ॥ ६७ ॥

भावार्थः-वे उभास ॥ ६७ ॥

अर्थः-दो० वे से० श्रेयकार ॥ ६८ ॥

दो सेयंकरा ॥ ६८ ॥

भावार्थः-वे श्रेयंकर ॥ ६८ ॥

अर्थ-ःदो० वे खे० खेमंकार ॥ ६९ ॥

दो खेमंकरा ॥ ६९ ॥

भावार्थः-वे खेमंकर ॥ ६९ ॥

अर्थः-दो० वे आ० आभंकर ॥ ७० ॥

दो आभंकरा ॥ ७० ॥

भावार्थः-वे अभंकर ॥ ७० ॥

अर्थः-दो० वे प० प्रभंकर ॥ ७१ ॥

दो पभंकरा ॥ ७१ ॥

भावार्थः-वे प्रभंकर ॥ ७१ ॥

अर्थः-दो० वे अ० अपराजित ॥ ७२ ॥

दो अपराजिया ॥ ७२ ॥

भावार्थः-वे अपराजीत ७२ ॥

अर्थः-दो० वे अ० अरज ॥ ७३ ॥

दो अरया ॥ ७३ ॥

भावार्थः—बे अरज ॥ ७३ ॥

अर्थः—दो० बे अ० अशोक ॥ ७४ ॥

दो असोगा ॥ ७४ ॥

भावार्थः—बे अशोक ॥ ७४ ॥

अर्थः—दो० बे वि० विगतशोक ॥ ७५ ॥

दो विगयसोगा ॥ ७५ ॥

भावार्थः—बे वित्तशोक ॥ ७५ ॥

अर्थः—दो० बे वि० विमल ॥ ७६ ॥

दो विमला ॥ ७६ ॥

भावार्थः—बे विमळ ॥ ७६ ॥

अर्थः—दो० बे वि० विततना ॥ ७७ ॥

दो वितत्ता ॥ ७७ ॥

भावार्थः—बे वितत ॥ ७७ ॥

अर्थः—दो० बे वि० वित्रस्त ॥ ७८ ॥

दो वितत्था ॥ ७८ ॥

भावार्थः—बे वित्रस्त ॥ ७८ ॥

अर्थः—दो० बे वि० विसाल ॥ ७९ ॥

दो विसाला ॥ ७९ ॥

भावार्थः—बे विशाल ॥ ७९ ॥

अर्थः—दो० बे सा० साल ॥ ८० ॥

दो साला ॥ ८० ॥

भावार्थः—बे शाल ॥ ८० ॥

अर्थः—दो० बे सु० सुवया ॥ ८१ ॥

दो सुवया ॥ ८१ ॥

भावार्थः—बे (युक्तक) सुवया ॥ ८१ ॥

अर्थः—दो० बे अ० अणिवर्ति ॥ ८२ ॥

दो अणियट्टी ॥ ८२ ॥

भावार्थः—बे अनिवर्त ॥ ८२ ॥

अर्थः—दो० बे ए० एकजडी ॥ ८३ ॥

दो एगजडी ॥ ८३ ॥

भावार्थः—बे एक जडी ॥ ८३ ॥

अर्थः—दो० बे दु० द्वीजडी ॥ ८४ ॥

दो दुजडी ॥ ८४ ॥

भावार्थः—बे द्विजडी ॥ ८४ ॥

अर्थः—दो० बे क० करकरिक ॥ ८५ ॥

दो करकरिगा ॥ ८५ ॥

भावार्थः—बे करकरिक ॥ ८५ ॥

अर्थः—दो० बे रा० राजगल ॥ ८६ ॥

दो रायग्गला ॥ ८६ ॥

भावार्थः—बे राजगल ॥ ८६ ॥

अर्थः—दो० बे पु० पुष्फकेतु ॥ ८७ ॥

दो पुप्फकेऊ ॥ ८७ ॥

भावार्थः—बे पुष्पकेतु ॥ ८७ ॥

अर्थः—दो० बे भा० भावकेतु ॥ ८८ ॥

दो भावकेऊ ॥ ८८ ॥

भावार्थः—बे भावकेतु ॥८८॥ ए सर्वे ८८ ग्रह बे बे जाणवा.

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप णं० नामना दी० द्वीपे वे० वेदिका दो० बे गा० गाउ उ० उंची उ० उच्चपणे प० कही

१६ पेरा (जंबुद्वीपना अधिकारने लोधे आटलुं वधारे ते संबंधमां कहे छे.)

जम्बुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥

भावार्थः—जंबुद्विप नामे द्विपनी वेदिका कोट सरखी ते आठ जोजननी उंची ते उपर वळी बे गाउ उंची पांचसें धनुष्य पहोळी नाना (विचित्र) रत्नमय पद्मवर वेदिका कही छे.

अर्थः—ल० लवण णं० नामनो स० समुद्र दो० बे जो० जोजन स० सो स० हजार एटले बे लाख च० चक्रवाल वि० पोहोलपणे प०

कह्यो ल० लवण णं० नामना स० समुद्रनी वे० वेदिका दो० बे गा० गाउ उ० उंची उ० उंचपणे पं० कही

१७ पेरा (जंबुद्वीप संबंधी कह्या पछी लवणसमुद्र संबंधी कहे छे.)

लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खम्भेणं पण्णत्ते॥१॥ लवणस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥२॥

भावार्थः—लवणसमुद्र बे लाख जोजन पहोळपणे चक्रवाळ मंडळ तेहनुं पहोळपणछे एटले पूर्वथी पश्चिमने कांटे दक्षीणथी उत्तरे बे लाख जोजन पोहोळपणे कहेलछे. लवण समुद्रना कोटनी उपरली वेदिका बे गाउनी उंचपणे कही छे.

अर्थः—धा० धातकी खं० खंड नामना दी० द्वीपे पु० पूर्वार्धने णं० विषे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिण दिसे दो० बे वा० क्षेत्र पं० कह्या ब० घणा स० सरषा जा० यावत भ० भरत चे० वळी ए० एरवत चे० वळी ॥ १ ॥

१८ पेरा (क्षेत्रना प्रस्तावथी लवणसमुद्र संबंधी कह्या पछी धातकीखंड संबंधी कहेछे.)

धायइस्खण्डे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—धातकी खंडना पूर्वार्धने विषे मेरु पर्वतथी उत्तर अने दक्षीणे बे क्षेत्र जानीए कहेल छे ते घणा सरखा छे यावत बराबर छे ते बे क्षेत्रनां नाम कहे छे, एक भरतक्षेत्र १, बीजुं एरवत, ए बे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ज० जेम ज० जम्बुद्वीपे त० तेम ए० अहीपण भा० जाणवुं जा० यावत दो० बे वा० क्षेत्रने विषे म० मनुष्य छ० छ प्रकारना पि० वळी का० काल प्रते प० मनुष्य भ० भव मा० प्रते सुख भोगवता वि० विचरे तं० ते ज० कहुंछुं भ० भरत चे० वळी ए० एरवत चे० वळी न० एटलो विशेष कू० कूट सामली वृक्ष चे० वळी धा० धातकी रु० वृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल नामे चे० वळी वे० वेणु देवता सु० सुदर्शन देवता चे० वळी ॥ २ ॥

एवं जहा जम्बुद्दीवे तहा एत्थ भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति तं जहा भरहे चेव एरवए चेव। नवरं कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव देवा गरुले चेव वेणुदेवे सुदंसणे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—एम जेम जंबुद्विपमां छे तेम इहां पण जाणवुं यावत बे क्षेत्रने विषे मनुष्य छ प्रकारना काळ प्रत्ये भोगवता विचरे छे ते क्षेत्रनां नाम कहे छे, एक भरतक्षेत्रे १ बीजुं एरवत क्षेत्रे २ ए बे भेद छे. एटलो विशेष तिहां कुट शामली वृक्ष छे १, बीजुं धातवृक्ष छे २, तिहां कुट सामली वृक्षने विषे गरुल नामे देवता रहेछे १, अने धातकी वृक्षने विषे वेणुदेवता रहे छे जेहनुं दर्शन प्रियकारी छे तेथी तेहनुं बीजुं नाम सुदर्शन पणछे २, ए बे भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—धा० धातकी ख० खंड दी० द्वीपे प० पश्चिमार्धने विषे म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० बे वा० क्षेत्र पं० कह्या ब० घणा स० समा जा० यावत भ० भरत चे० वळी

ए० एरवत चे० वळी जा० यावत छ० छ प्रकारना पि० वळी का० काल प्रते प० मनुष्य भ० भव मा० प्रते सुख भोगवतो विचरे न० एटलो विशेष कू० कूट सामली वृक्ष चे० वळी म० महा धा० धातकी रु० वृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल चे० वळी वे० वेणु देव पि० प्रिय दर्शन देवता चे० वळी ॥ ३ ॥

धायइक्खण्डदीवपच्छत्थिमद्धे णं मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव जाव छव्विहं पि कालं पच्चणुभवमाणा । नवरं कूडसामली चेव महाधायईरुक्खे चेव देवा गरुले चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—धातकीखंड द्विपना पश्चिमार्धने विषे मेरुपर्वतने उत्तर दक्षीणे वे वास कहेलांछे एटले क्षेत्र कहेलछे ते वे घणां सरखांछे यावत मान प्रमाणे करी सरखां छे, ते वे क्षेत्रनां नाम कहे छे, एक भरतक्षेत्र १, बीजुं एरवत क्षेत्र २, ए वे भेद छे, यावत तिहांनां मनुष्य छ आरानां सुख दुःख प्रत्ये भोगवता विचरे छे, फरता आरा आवे ते एक भरतक्षेत्रमां १, बीजुं एरवत क्षेत्रमां २, ए वे क्षेत्रमां एकज काळभाव वर्ते छे, एटलो विशेष छे, तिहां कुट सामली नामे वृक्ष छे १, बीजुं महाधातकी नामे वृक्ष छे २, तिहां कुट शामली वृक्षने विषे गरुल नामे देवता रहे छे १, महाधातकी वृक्षने विषे वेणु नामे देवता रहे छे जेहनुं दर्शन प्रियकारी छे तेथी तेनुं बीजुं नाम प्रितिदर्शन छे २, ए वे भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—धा० धातकी ख० खण्ड णं० वळी दी० द्वीपने विषे दो० वे भ० भरतक्षेत्र ॥ १ ॥

१९ पेरा (पुर्वार्ध अने पश्चिमार्ध मळीने धातकी खंड नामना संपुर्ण द्वीपने आश्रीने वे सूत्रो कहे छे.)

धायईखण्डे णं दीवे दो भरहाइं ॥१॥

भावार्थः—धातकीखंड द्विपने विषे वे भरतक्षेत्र छे ॥ १ ॥

अर्थः—दो० वे ए० एरवत क्षेत्र ॥ २ ॥

दो एरवयाइं ॥ २ ॥

भावार्थः—वे एरवत क्षेत्र छे ॥ २ ॥

अर्थः—दो० वे हे० हेमवंतक्षेत्र ॥ ३ ॥

दो हेमवयाइं ॥ ३ ॥

भावार्थः—वे हिमवंत क्षेत्र छे ॥ ३ ॥

अर्थः—दो० वे हे० हिरणवंतक्षेत्र ॥ ४ ॥

दो हेरण्णवयाइं ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे हेरण्यवंत क्षेत्र छे ॥४॥

अर्थः—दो० वे ह० हरिवर्षक्षेत्र ॥ ५ ॥

दो हरिवासाइं ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे हरिवास क्षेत्र छे ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे र० रम्यकक्षेत्र ॥ ६ ॥

दो रम्मगवासाइं ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे रम्यकवर्ष क्षेत्र छे ॥ ६ ॥

अर्थः—दो० वे पु० पुर्वमहाविदेहक्षेत्र ॥७॥

दो पुव्वविदेहाइं ॥ ७ ॥

भावार्थः—वे पूर्वे महाविदेह क्षेत्र छे ॥७॥

अर्थः—दो० वे अ० पश्चिम महाविदेहक्षेत्र ॥८॥

दो अवरविदेहाइं ॥ ८ ॥

भावार्थः—वे पश्चिम महाविदेह क्षेत्र छे ॥८॥ [ए महाविदेहमां सदाय चोथो आरो छे],

अर्थः—दो० वे दे० देवकुरुक्षेत्र ॥ ९ ॥

दो देवकुराओ ॥ ९ ॥

भावार्थः—वे देवकुरु युगळीयांनां क्षेत्रछे ॥९॥

अर्थः—दो० वे दे० देवकुरु म० मोटा दु०

वृक्ष ॥ १० ॥

दो देवकुरुमहद्दुमा ॥ १० ॥

भावार्थः—बे देवकुरु नामे म्होटां वृक्ष रत्नमय शास्वतां छे ॥१०॥

अर्थः—दो० बे दे० देवकुरु म० मोटा दु० वृक्ष वा० रहेनार दे० देव ॥ ११ ॥

दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा ॥११॥

भावार्थः—बे देवकुरु म्होटा वृक्षना वासी देवता छे ॥ ११ ॥

अर्थः—दो० बे उ० उत्तरकुराक्षेत्र ॥१२॥

दो उत्तरकुराओ ॥ १२ ॥

भावार्थः—वळी तेहज धातकीखंडमां बे उत्तरकुरु युगळीयांनां क्षेत्र छे ॥१२॥

अर्थः—दो० बे उ० उत्तरकुरुनामे म०मोटा दु० वृक्ष ॥ १३ ॥

दो उत्तरकुरुमहद्दुमा ॥ १३ ॥

भावार्थः—तिहां उत्तरकुरु नामे बे म्होटां वृक्ष छे ॥ १३ ॥

अर्थः—दो० बे उ० उत्तरकुरु म० मोटा दु० वृक्षना वा० रहेनार दे० देवता ॥ १४ ॥

दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा ॥१४॥

भावार्थः—बे उत्तरकुरु म्होटा वृक्षना वासी देवता छे ॥ १४ ॥

अर्थः—दो०बे चु०चुल हि०हिमवंतपर्वत ॥१५॥

दो चुल्लहिमवन्ता ॥ १५ ॥

भावार्थः—बे लघु हिमवंत पर्वत छे ॥१५॥

अर्थः—दो० बे म० मोटा हिमवंत ॥१६॥

दो महाहिमवन्ता ॥ १६ ॥

भावार्थः—बे म्होटा हिमवंत पर्वतछे ॥१६॥

अर्थः—दो० बे नि० निषध ॥ १७ ॥

दो निसहा ॥ १७ ॥

भावार्थः—बे निषध पर्वत छे ॥ १७ ॥

अर्थः—दो० बे नि० नीळवंत ॥ १८ ॥

दो नीलवन्ता ॥ १८ ॥

भावार्थः—बे नीलवंत पर्वत छे ॥१८॥

अर्थः—दो० बे रु० रुपीपर्वत ॥ १९ ॥

दो रुप्पी ॥ १९ ॥

भावार्थः—बे रुपी पर्वत छे ॥ १९ ॥

अर्थः—दो० बे खि० शिषरीपर्वत ॥२०॥

दो सिहरी ॥ २० ॥

भावार्थः—बे शिखरी पर्वत छे ॥ २० ॥

अर्थः—दो० बे स० शब्दापाती नामे वृत वैताढ्य छे ॥ २१ ॥

दो सद्दावई ॥ २१ ॥

भावार्थः—बे शब्दापाती नामे वृत वैताढ्य पर्वत छे ॥ २१ ॥

अर्थः—दो० बे स० शब्दापातीना वा० रहेनार सा० स्वातीनामे दे० देवता ॥ २२ ॥

दो सद्दावइवासी साइदेवा ॥२२॥

भावार्थः—बे शब्दापाती वैताढ्यना वासी स्वाती देवता छे ॥ २२ ॥

अर्थः—दो०बे वि०विकटापाती वैताढ्य ॥२३॥

दो वियडावई ॥ २३ ॥

भावार्थः—बे विकटापाती वैताढ्य पर्वत छे ॥ २३ ॥

अर्थः—दो० बे वि० विकटापातीना वा० रहेनारा प० प्रभासनामे दे० देव ॥ २४ ॥

दो वियडावइवासीपभासा देवा ॥२४॥

भावार्थः—बे विकटापाती वैताढ्यना वासी प्रभास नामे देवता छे ॥२४॥

अर्थः—दो० बे गं० गंधापाती ॥ २५ ॥

दो गन्धावई ॥ २५ ॥

भावार्थः—बे गंधापाती नामे वृत वैताढ्य छे ॥ २५ ॥

अर्थः—दो० वे गं० गंधापातीना वा०वासी अ० अरुण नामे दे० देवता ॥ २६ ॥

दो गन्धावइवासी अरुणा देवा ॥२६॥

भावार्थः—गंधापातीना वासी अरुण नामे देवता छे ॥ २६ ॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत प० पर्याय नामे वृत वैताढ्य ॥ २७ ॥

दो मालवन्तपरियागा ॥ २७ ॥

भावार्थः—वे मालवंत पर्याय नामे वृत वैताढय पर्वत छे ॥२७॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत प० पर्यायना वा० रहेनार प० पदमनामे दे० देवता ॥२८॥

दो मालवन्तपरियागवासी पउमा देवा ॥ २८ ॥

भावार्थः—वे मालवंत पर्यायना वासी पदम नामे देवता छे ॥२८॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत पर्वत ॥ २९॥

दो मालवन्ता ॥ २९ ॥

भावार्थः—बे मालवंत नामे गजदंत पर्वत छे ॥ २९ ॥

अर्थः—दो० वे चि० चित्रकूट पर्वत ॥३०॥

दो चित्तकूडा ॥ ३० ॥

भावार्थः—वे चित्रकुट पर्वत छे ॥३०॥

अर्थः—दो० वे प० पदमकूट ॥ ३१ ॥

दो पम्हकूडा ॥ ३१ ॥

भावार्थः—वे पदमकुट पर्वत छे ॥३१॥

अर्थः—दो० वे न० नलिणकूट पर्वत ॥३२॥

दो नलिणकूडा ॥ ३२ ॥

भावार्थः—वे नलीनकुट पर्वत छे ॥ ३२॥

अर्थः—दो० वे ए० एक शैलपर्वत ॥३३॥

दो एगसेला ॥ ३३ ॥

भावार्थ—वे एकशेळ पर्वत छे ॥३३॥

अर्थः—दो० वे ति० त्रिकूटपर्वत ॥ ३४ ॥

दो तिकूडा ॥ ३४ ॥

भावार्थः—वे त्रिकुट पर्वत छे ॥३४॥

अर्थः—दो० वे वे० वेसमणकूट ॥३५ ॥

दो वेसमणकूडा ॥ ३५ ॥

भावार्थः—बे वैश्रमण कुट छे ॥३५॥

अर्थः—दो० वे अ० अंजन पर्वत ॥ ३६ ॥

दो अञ्जणा ॥ ३६ ॥

भावार्थः—वे अंजन पर्वत छे ॥३६॥

अर्थः—दो० वे मा० मांतजनपर्वत ॥ ३७॥

दो मातञ्जणा ॥ ३७ ॥

भावार्थः—वे मातंजन पर्वत छे ॥३७॥

अर्थः—दो० वे सो० सौमनसगजदंता ॥३८॥

दो सोमणसा ॥ ३८ ॥

भावार्थः—देवकुरुथी पुर्व दिशाए वे सोमनस गजदंताकार पर्वत छे ॥३८॥

अर्थः—दो० वे वि० विद्युत्प्रभ ॥ ३९ ॥

दा विज्जुप्पभा ॥ ३९ ॥

भावार्थः—देवकुरु पासे वे विद्युत्प्रभ पर्वत छे ॥ ३९ ॥

अर्थः—दो वे० अ० अंकावतीनगरी॥४०॥

दो अङ्कावई ॥ ४० ॥

भावार्थः—तेहथी आगळ बे अंकावती नगरी छे ॥४०॥

अर्थः—दो० वे प० पद्मावतीनगरी ॥४१॥

दो पम्हावई ॥ ४१ ॥

भावार्थः—वे पदमावती नगरी छे ॥४१॥

अर्थः—दो० वे आ० आसीविसा ॥ ४२॥

दो आसीविसा ॥ ४२ ॥

भावार्थः—वे आशिविषा नगरी छे ॥४२॥

अर्थः—दो० वे सु० सुखावहा ॥ ४३ ॥

दो सुहावहा ॥ ४३ ॥

भावार्थः—बे सुखावहा नगरी छे ॥४३॥

अर्थः—दो० बे चं० चंद्रपर्वत ॥ ४४ ॥

दो चन्दपव्वया ॥ ४४ ॥

भावार्थः—ए चार नगरी सितोदानदीने जमणे पासे छे तिहांथी आगळ बे पूर्वे बे चंद्र पर्वत छे ॥ ४४ ॥

अर्थः—दो० बे सू० सूर्यपर्वत ॥ ४५ ॥

दो सूरपव्वया ॥ ४५ ॥

भावार्थः—बे सूर्य पर्वत छे ॥ ४५ ॥

अर्थः—दो० बे ना० नागपर्वत ॥ ४६ ॥

दो नागपव्वया ॥ ४६ ॥

भावार्थः—बे नाग पर्वत छे ॥४६॥

अर्थः—दो० बे दे० देवपर्वत ॥ ४७ ॥

दो देवपव्वया ॥ ४७ ॥

भावार्थः—बे देवपर्वत छे ॥४७ ॥

अर्थः—दो० बे ग० गंधमादन गजदंता ॥४८॥

दो गन्धमायणा ॥ ४८ ॥

भावार्थः—ते वार पछी बे गंधमादन गजदंता पर्वत छे ॥४८॥

अर्थः—दो० बे उ० इक्षुकारपर्वत ॥४९॥

दो उसुगारपव्वया ॥ ४९ ॥

भावार्थः—उत्तर कुरुने पश्चिम भागे एह सर्वे धातकी खंडना पुवार्धे अने पश्चिमार्धमां छे ते माटे बे बे कह्या छे. बे इखुधार पर्वते धातकी खंडना दक्षीण उत्तरे बे भाग कर्या छे ॥ ४९ ॥

अर्थः—दो० बे चु० लघु हि० हिमवंतना कू० कूट ॥ ५० ॥

दो चुल्लहिमवन्तकूडा ॥ ५० ॥

भावार्थः—बे लघु हिमवंत पर्वतना कुट छे, ए बे पर्वत छे ते माटे एकेका पर्वत उपर बे बे कुट छे ॥५०॥

अर्थः—दो० बे वे० वेसमणकूटपर्वत ॥५१॥

दो वेसमणकूडा ॥ ५१ ॥

भावार्थः—बे वैश्रमण कुट ॥५१॥

अर्थः—दो० बे म० महाहिमवन्तकूट ॥५२॥

दो महाहिमवन्तकूडा ॥ ५२ ॥

भावार्थः—बे महा हिमवंत पर्वतना कुट ॥५२॥

अर्थः—दो० बे वे० वैडुर्यकूट ॥ ५३ ॥

दो वेरुलियकूडा ॥ ५३ ॥

भावार्थः—बे वैडुर्यकुट ॥५३॥

अर्थः—दो० बे नि० निषधकूट ॥ ५४ ॥

दो निसहकूडा ॥ ५४ ॥

भावार्थः—बे निषध पर्वतना कुट ॥ ५४ ॥

अर्थः—दो० बे रु० रुचककूट ॥ ५५ ॥

दो रुयगकूडा ॥ ५५ ॥

भावार्थः—बे रुचकना कुट ॥ ५५ ॥

अर्थः—दो० बे नी० नीलवंतकूट ॥ ५६ ॥

दो नीलवन्तकूडा ॥ ५६ ॥

भावार्थः—बे नीलवंत पर्वतना कुट ॥५६॥

अर्थः—दो० बे उ० उपदर्शनकूट ॥ ५७ ॥

दो उवदंसणकूडा ५७ ॥

भावार्थः—बे उपदर्शन कुट ॥ ५७ ॥

अर्थः—दो० बे रु० रुप्पिकूट ॥ ५८ ॥

दो रुप्पिकूडा ॥ ५८ ॥

भावार्थः—बे रुप्यकुट ॥५८॥

अर्थः—दो० बे म० मणिकंचणकूट ॥५९॥

दो मणिकञ्चणकूडा ॥ ५९ ॥

भावार्थः—बे मणिकंचन कुट ॥५९॥

अर्थः—दो० बे सि० शिपरीनाकूट ॥६०॥

दो सिहरिकूडा ॥ ६० ॥

भावार्थः—बे शिखरिना कुट ॥६०॥

अर्थः—दो० बे ति० तिगच्छकूट ॥६१॥

दो तिगिच्छिकूडा ॥ ६१ ॥

भावार्थः—बे तिगिच्छ कुट बे एम सर्व पर्वत उपर बे बे कुट जाणवा ॥ ६१ ॥

अर्थः—दो० बे प० पदम द्द० द्रह ॥६२॥

दो पउमद्दहा ॥ ६२ ॥

भावार्थः—एम बे पदम द्रह छे ॥ ६२ ॥

अर्थः—दो० बे प० पदम द्द० द्रह वा० रहेनारी सि० श्री दे० देवीओ ॥ ६३ ॥

दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीओ देवीओ ॥ ६३ ॥

भावार्थः—बमणां क्षेत्र छे माटे त्यां बे पदम द्रहनी रहेनारी श्रीदेवी छे ॥६३॥

अर्थः—दो०बे म०महा,प०पदम द्द०द्रह॥६४॥

दो महापउमद्दहा ॥ ६४ ॥

भावार्थः—बे महा पदमद्रह छे ॥६४॥

अर्थः—दो० बे म० महा प० पदम द्द०द्रह वा० रहेनारी हि० ही दे० देवीओ ए० एम जा० यावत दो० बे पो० पुंडरीकद्रह ॥६५॥

दो महापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ देवीओ । एवं जाव दो पोण्डरीयद्दहा ॥ ६५ ॥

भावार्थः—त्यां बे महा पदमद्रहनी रहेनारी बे ही नामे देवी छे एम यावत् बे पुंडरीक द्रह छे ॥ ६५ ॥

अर्थः—दो० बे पो० पुंडरीकद्रह वा० रहेनारी ल० लक्ष्मी दे० देवीओ ॥ ६६ ॥

दो पोण्डरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ ॥ ६६ ॥

भावार्थः—त्यां बे पुंडरिक द्रहनी रहेनारी लक्ष्मी नामे देवीयो छे ॥६६॥

अर्थः—दो० बे गं० गंगा प्रपात द्द० द्रह जा० एम दो० बे र० रक्तावती प्प० प्रपात द्द० द्रह ॥ ६७ ॥

दो गङ्गप्पवायद्दहा जाव दो रत्तवइप्पवायद्दहा ॥ ६७ ॥

भावार्थः—बे गंगाप्रपात द्रह छे त्यां उंचाथी गंगानो प्रवाह पडे छे एम यावत् बे रक्तवती प्रपात द्रह छे ए सर्वे द्रह बे बे जाणवा ॥६७॥

अर्थः—दो० बे रो० रोहितानदी जा० एम दो० बे रु० रुप्प कु० कुला नदी ॥ ६८॥

दो रोहियाओ जाव दो रुप्पकुलाओ ॥ ६८ ॥

भावार्थः—बे रोहितानदी एम यावत बे रुप्यकुला नदी ॥ ६८ ॥

अर्थः—दो० बे गा० ग्राहवतीनदी ॥६९॥

दो गाहवईओ ॥ ६९ ॥

भावार्थः—बे ग्राहवती नदी ॥६९॥

अर्थः—दो० बे द० द्रहवती नदी ॥ ७० ॥

दो दहवईओ ॥ ७० ॥

भावार्थः—बे द्रहवती नदी ए सर्वे पर्वतथी नीकळी विजयमां आवी छे ॥७०॥

अर्थः—दो० बे पं० पंकवतीनदी ॥ ७१ ॥

दो पङ्कवईओ ॥ ७१ ॥

भावार्थः—बे पंकवती नदी ॥७१॥

अर्थः—दो० बे त० तप्तजलानामे ॥७२॥

दो तत्तजलाओ ॥ ७२ ॥

भावार्थः—बे तप्तजला नदी ॥७२॥

अर्थः—दो० बे म० मत्तजलानामे ॥७३॥

दो मत्तजलाओ ॥ ७३ ॥

भावार्थः—बे मत्तजला नदी ॥७३॥

अर्थः—दो० बे उ० उन्मत्तजलनामे ॥७४॥

दो उम्मत्तजलाओ ॥ ७४ ॥

भावार्थः—बे उन्मत्तजला नदी ॥७४॥

अर्थः—दो० बे खी० क्षारोदानामे ॥७५॥

दो खीरोयाओ ॥ ७५ ॥

भावार्थः—बे क्षीरोदा नदी ॥७५॥

अर्थः—दो० बे सी०सिहस्रोतानदी ॥७६॥

दो सीहसोयाओ ॥ ७६ ॥

भावार्थः—बे सिंहश्रोता नदी ॥७६॥

अर्थः—दो०बे अ०अंतवाहिनीनामे ॥७७॥

दो अन्तोवाहिणीओ ॥ ७७ ॥

भावार्थः—बे अंतर वाहिनी नदी ॥७७॥

अर्थः—दो० बे उ० उर्मिमालणीओ ॥७८॥

दो उम्मिमालिणीओ ॥ ७८ ॥

भावार्थः—बे उर्मिमालिनी नदी ॥७८॥

अर्थः—दो० बे फे० फेनमालिनी नदी ॥७९॥

दो फेणमालिणीओ ॥ ७९ ॥

भावार्थः—बे फेणमालीनी नदी ॥७९॥

अर्थः—दो० बे गं० गंभीरमालिनी ॥८०॥

दो गम्भीरमालिणीओ ॥ ८० ॥

भावार्थः—बे गंभीरमालीनी नदी ए सर्वे नदी बे बे जाणवी ॥८०॥

अर्थः—दो० बे क० कच्छाविजय ॥८१॥

दो कच्छा ॥ ८१ ॥

भावार्थः—धातकी खंडमांही बे महाविदेह क्षेत्र छे, एकेका महाविदेहमां बत्रीस बत्रीस विजय छे, एम चोसठ विजयछे तेहनां नाम बे थोकेछे, एकेक विजयमां बे बे नगरि छे. बे कच्छाविजय ॥ ८१ ॥

अर्थः—दो० बे सु० सुकच्छाविजय ॥८२॥

दो सुकच्छा ॥ ८२ ॥

भावार्थः—बे सुकच्छ ॥८२॥

अर्थः—दो० बे म० महाकच्छाविजय ॥८३॥

दो महाकच्छा ॥ ८३ ॥

भावार्थः—बे महाकच्छ ॥८३॥

अर्थः—दो० बे क० कच्छावतीविजय ॥८४॥

दो कच्छगावई ॥ ८४ ॥

भावार्थः—बे कच्छगावती ॥८४॥

अर्थः—दो० बे आ०आवर्त्तावतीविजय॥८५॥

दो आवत्ता ॥ ८५ ॥

भावार्थः—बे आवर्त ॥८५॥

अर्थः—दो० बे मं० मंगलावतीविजय ॥८६॥

दो मङ्गलावत्ता ॥ ८६ ॥

भावार्थः—बे मंगळावर्त ॥८६॥

अर्थः—दो० बे पु० पुक्खला ॥८७॥

दो पुक्खला ॥ ८७ ॥

भावार्थः—बे पुष्कलावर्त ॥८७॥

अर्थः—दो० बे पु० पुकखलावती ॥८८॥

दो पुक्खलावई ॥ ८८ ॥

भावार्थः—बे पुष्कलावती ॥८८॥

अर्थः—दो० बे व० वच्छा ॥८९॥

दो वच्छा ॥ ८९ ॥

भावार्थः—बे वच्छा ॥८९॥

अर्थः—दो० बे सु० सुवच्छा ॥९०॥

दो सुवच्छा ॥ ९० ॥

भावार्थः—बे सुवच्छा ॥९०॥

अर्थः—दो० बे म० महावच्छा ॥९१॥

दो महावच्छा ॥ ९१ ॥

भावार्थ—बे महावच्छा ॥९१॥

अर्थः—दो० बे व० वच्छगावती ॥९२॥

दो वच्छगावई ॥ ९२ ॥

भावार्थः—बे वच्छगावती ॥९२॥

अर्थः—दो० बे र० रम्या ॥९३॥

दो रम्मा ॥ ९३ ॥

भावार्थः—बे रम्मा ॥९३॥

अर्थः—दो० बे र० रम्यका ॥९४॥

दो रम्मगा ॥ ९४ ॥

भावार्थः—वे रम्मगा ॥९४॥
अर्थः—दो० वे र० रमणिजा ॥९५॥
दो रमणिज्जा ॥ ९५ ॥
भावार्थः—वे रमणिजा ॥९५॥
अर्थः—दो० वे मं० मंगलावती ॥९६॥
दो मङ्गलावई ॥ ९६ ॥
भावार्थः-वे मंगलावती ॥९६॥
अर्थः—दो० वे प० पदमा ॥ ९७ ॥
दो पम्हा ॥ ९७ ॥
भावार्थः—वे पदमा ॥ ९७ ॥
अर्थः—दो० वे सु० सुपदमा ॥ ९८ ॥
दो सुपम्हा ॥ ९८ ॥
भावार्थः—वे सुपदमा ॥ ९८ ॥
अर्थः—दो० वे म० महापदमा ॥ ९९ ॥
दो महापम्हा ॥ ९९ ॥
भावार्थः—वे महापदमा ॥ ९९ ॥
अर्थः—दो० वे प० पदमागावती ॥१००॥
दो पम्हगावई ॥ १०० ॥
भावार्थः—वे पदमगावती ॥ १०० ॥
अर्थः—दो० वे स० शंखा ॥१०१॥
दो सङ्खा ॥ १०१ ॥
भावार्थः—वे शंखा ॥१०१॥
अर्थः—दो० वे न० नलिणा ॥१०२॥
दो नलिणा ॥ १०२ ॥
भावार्थः—वे नलीना ॥ १०२ ॥
अर्थः—दो० वे कु० कुमुदा ॥ १०३ ॥
दो कुमुया ॥ १०३ ॥
भावार्थः—वे कुमुदा ॥१०३॥
अर्थः—दो० वे स० नलिलावती ॥१०४॥
दो नलिणावई ॥ १०४ ॥
भावार्थः—वे नलीनावती ॥१०४॥
अर्थः—दो० वे व० वप्रा ॥१०५॥
दो वप्पा ॥ १०५ ॥
भावार्थः—वे वप्रा ॥१०५॥
अर्थः—दो० वे सु० सुवप्रा ॥ १०६ ॥
दो सुवप्पा ॥ १०६ ॥
भावार्थः—वे सुवप्रा ॥१०६॥
अर्थः—दो० वे म० महावप्रा ॥१०७॥
दो महावप्पा ॥ १०७ ॥
भावार्थः—वे महावप्रा ॥१०७॥
अर्थः—दो० वे व० वप्रकावती ॥ १०८ ॥
दो वप्पगावई ॥ १०८ ॥
भावार्थः—वे वप्रगावती ॥१०८॥
अर्थः—दो० वे व० वलगु ॥१०९॥
दो वग्गू ॥ १०९ ॥
भावार्थः—वे वलगु ॥१०९॥
अर्थः—दो० वे सु० सुवलगु ॥११०॥
दो सुवग्गू ॥ ११० ॥
भावार्थः—वे सुवलगु ॥११०॥
अर्थः—दो० वे ग० गंधिला ॥१११॥
दो गन्धिला ॥ १११ ॥
भावार्थः—वे गंधीला ॥ १११ ॥
अर्थः—दो० वे ग० गंधिलावती ॥११२॥
दो गन्धिलावई ॥ ११२ ॥
भावार्थः—वे गंधीलावती ॥११२॥
अर्थः—दो० वे खे० खेमा ॥११३॥
दो खेमाओ ॥ ११३ ॥
भावार्थः—वे खेमा ॥११३॥
अर्थः—दो० वे खे० खेमपुरा ॥११४॥
दो खेमपुराओ ॥ ११४ ॥
भावार्थः—वे खेमपुरा ॥११४॥
अर्थः—दो० वे रि० रिट्ठा ॥११५॥
दो रिट्ठाओ ॥ ११५ ॥

भावार्थः—वे रिष्ट ॥ ११५ ॥
अर्थः—दो० वे रि० रिष्टपुरा ॥११६॥
दो रिट्ठपुराओ ॥ ११६ ॥
भावार्थः—वे रिष्टपुर ॥११६॥
अर्थः—दो० वे ख० षडगी ॥११७॥
दो खग्गीओ ॥ ११७ ॥
भावार्थ—वे खड्गी ॥११७॥
अर्थः—दो० वे म० मंजूसा ॥ ११८ ॥
दो मञ्जूसाओ ॥ ११८ ॥
भावार्थः—वे मंजूसा ॥ ११८ ॥
अर्थः—दो० वे ओ० ओषधी ॥११९॥
दो ओसहीओ ॥ ११९ ॥
भावार्थः—वे ओषधी ॥११९॥
अर्थः—दो० वे पु० पुंडरगिणी ॥१२०॥
दो पुण्डरिगिणीओ ॥ १२० ॥
भावार्थः—वे पुंडरकिणी ॥१२०॥
अर्थः—दो० वे सु० सुसीमा ॥१२१॥
दो सुसीमाओ ॥ १२१ ॥
भावार्थः—वे सुसीमा ॥१२१॥
अर्थः—दो० वे कु० कुंडला ॥१२२॥
दो कुण्डलाओ ॥ १२२ ॥
भावार्थः—वे कुंडला ॥१२२॥
अर्थः—दो० वे अ० अपराजित नामे ॥१२३॥
दो अपराइयाओ ॥ १२३ ॥
भावार्थः—वे अपराजीता ॥१२३॥
अर्थः—दो० वे पं० प्रभंकरा ॥१२४॥
दो पभंकराओ ॥ १२४ ॥
भावार्थः—वे प्रभंकरा ॥१२४॥
अर्थः—दो० वे अं० अंकावर्ता ॥१२५॥
दो अङ्कावईओ ॥ १२५ ॥
भावार्थः—वे अंकावर्ता ॥१२५॥

अर्थः—दो० वे प० पद्मावती ॥१२६॥
दो पम्हावईओ ॥ १२६ ॥
भावार्थः—वे पद्मावती ॥१२६॥
अर्थः—दो० वे सु० सुभा ॥१२७॥
दो सुभाओ ॥ १२७ ॥
भावार्थः—वे शुभा ॥१२७॥
अर्थः—दो० वे र० रत्नसंचया ॥१२८॥
दो रयणसंचयाओ ॥ १२८ ॥
भावार्थः—वे रत्नसंचया ॥१२८॥
अर्थः—दो० वे आ० आसपुरा ॥१२९॥
दो आसपुराओ ॥ १२९ ॥
भावार्थः—वे आसपुरा ॥१२९॥
अर्थः—दो० वे सी० सीघपुरी ॥१३०॥
दो सीहपुराओ ॥ १३० ॥
भावार्थः—वे सिंहपुरा ॥१३०॥
अर्थः—दो० वे म० महापुरी ॥१३१॥
दो महापुराओ ॥ १३१ ॥
भावार्थः—वे महापुरा ॥१३१॥
अर्थः—दो० वे वि० विजयपुरी ॥१३२॥
दो विजयपुराओ ॥ १३२ ॥
भावार्थः—वे विजयपुरा ॥१३२॥
अर्थः—दो० वे अ० अपराजित ॥१३३॥
दो अवराइयाओ ॥ १३३ ॥
भावार्थः—वे अपराजीता ॥१३३॥
अर्थः—दो० वे अ० अपराजात ॥१३४॥
दो अवराओ ॥ १३४ ॥
भावार्थः—वे अवरायां ॥१३४॥
अर्थः—दो० वे अ० अशोक ॥१३५॥
दो असोगाओ ॥ १३५ ॥
भावार्थः—वे अशोका ॥१३५॥
अर्थः—दो० वे वि० विगतशोका ॥१३६॥
दो विगयसोगाओ ॥ १३६ ॥

भावार्थः-वे विगतशोका ॥१३६॥
अर्थः-दो० वे वि० विजया ॥१३७॥

दो विजयाओ ॥ १३७ ॥

भावार्थः-वे विजयाय ॥१३७॥
अर्थः-दो० वे वि० विजयंती ॥१३८॥

दो वेजयन्तीओ ॥ १३८ ॥

भावार्थः-वे वैजयंति ॥१३८॥
अर्थः-दो० वे ज० जयंती ॥१३९॥

दो जयन्तीओ ॥ १३९ ॥

भावार्थः-वे जयंति ॥१३९॥
अर्थः-दो० वे अ० अपराजित ॥१४०॥

दो अपराइयाओ ॥ १४० ॥

भावार्थः-वे अपराजीता ॥१४०॥
अर्थः-दो० वे च० चक्रपुरी ॥१४१॥

दो चक्कपुराओ ॥ १४१ ॥

भावार्थः-वे चक्रपुरा ॥१४१॥
अर्थः-दो० वे ख० खडगपुरी ॥१४२॥

दो खग्गपुराओ ॥ १४२ ॥

भावार्थः-वे खड्गपुरा ॥१४२॥
अर्थः-दो० वे अ० अवध्या ॥१४३॥

दो अवज्झाओ ॥ १४३ ॥

भावार्थः-वे अवध्या ॥१४३॥
अर्थः-दो० वे अ० अयोध्या ॥१४४॥

दो अओज्झाओ ॥ १४४ ॥

भावार्थः-वे अयोध्या ॥१४४॥
अर्थः-दो० वे भ० भद्रसालवन ॥१४५॥

दो भद्दसालवणाइं ॥ १४५ ॥

भावार्थः-ए चोसठ विजय ते सर्वे बे बे जाणवी त्यां बे मेरु पर्वत छे तेथी बे भद्रशाळ वनधरतीये छे ॥१४५॥
अर्थः-दो० वे न० नंदनवन ॥१४६॥

दो नन्दणवणाइं ॥ १४६ ॥

भावार्थः-बे नंदन मेखला मध्ये छे ॥१४६॥
अर्थः-दो० वे सो० सोमनसवन ॥१४७॥

दो सोमणसवणाइं ॥ १४७ ॥

भावार्थः-वे सोमनसवन मेखला ए पर्वतने मध्ये छे ॥१४७॥
अर्थः-दो० वे प० पंडुकवन ॥ १४८ ॥

दो पण्डगवणाइं ॥ १४८ ॥

भावार्थः-वे पंडुगवन मेरुने शिखरेछे ॥१४८॥
अर्थः-दो० वे प० पांडुकंवल शिला ॥१४९॥

दो पाण्डुकम्बलसिलाओ ॥ १४९ ॥

भावार्थः-ए वनमां तिर्थकरने जन्माभिषेक करवानी चार चार शिला छे तेमां वे पांडुकंवल शिला छे ॥१४९॥
अर्थः-दो०वेअ०अतिपांडुकंवलशिला॥१५०॥

दो अइपाण्डुकम्बलसिलाओ ॥१५०॥

भावार्थः-वे अति पांडुकंवल शिलाछे॥१५०॥
अर्थः-दो० वे र०रक्त कंवलशिला ॥१५१॥

दो रत्तकम्बलसिलाओ ॥ १५१ ॥

भावार्थः-वे रत्नकंवल शिला छे ॥१५१॥
अर्थः-दो०वे अ०आरक्त कंवलशिला ॥१५२॥

दो अइरत्तकम्बलसिलाओ ॥१५२॥

भावार्थः-वे अतिरत्नकंवल शिलाछे ॥१५२॥
अर्थः-दो० वे म० मेरु ॥ १५३ ॥

दो मन्दरा ॥ १५३ ॥

भावार्थः-वे मेरु छे ॥१५३॥
अर्थः-दो० वे म० मेरुनी चूलिका ॥१५४॥

दो मन्दरचूलियाओ ॥ १५४ ॥

भावार्थः-वे मेरुनी वे चूलीकाछे ॥१५४॥
अर्थः-धा० धातकि ख० खण्ड णं०नामा दी० द्वीपमां वे० वेदिका दो० वे गा० गाउनी उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही ॥ १५५ ॥

धायईखण्डस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता॥१५५॥

भावार्थः–घातकीखंड नामे द्वीपनी वेदिका कोट रुपते बे गाउ उंची उंचपणे कहीछे ॥१५५॥

अर्थः–का० कालोदधि णं० नामना स० समुद्र-नी वे० वेदिका दो० बे गा० गाउनी उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही

२० पेरा (घातकी खंड पछी कालोद समुद्र छे तेथी ते संबंधी कहे छे)

कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

भावार्थः–कालोदधी समुद्र (तेनुं घणुं काले वर्णे पाणी) नी वेदीका बे गाउ उंची उंचपणे कही छे

अर्थः–पु० पुखरार्ध दी० द्वीपथी पु० पुर्व दिशे णं० वळी म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० बे वा० क्षेत्र प० कह्या ब० घणा स० सरखा छे मान प्रमाणे जा० यावत भ० भरत चे० वळी ए० एरवत चे० वळी त० तेमज जा० यावत दो० बे कु० कुरु पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवकुरु चे० वळी उ० उत्तरकुरु चे० वळी त० त्यां णं० वळी म० मोटा म० महालय म० मोटा दु० व्रक्ष पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं कू० कूट साम-ली वृक्ष चे० वळी प० पदमवृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल चे० वळी वे० वेणु दे० देव प० पदमदेव चे० वळी जा० यावत छ० छए आरानां पि० वळी का० सुखदुख प० भोगवता वि० विचरे छे ॥ १ ॥

२१ पेरा (काळोद समुद्र पछी तरतज पुष्कर द्वीप आवेलो होवाथी तेना पुर्वार्ध प-श्चिमार्ध ए बन्ने प्रकरणो कहे छे)

पुक्खरवरदीवद्धपुरत्थिमद्धे णं मन्द-रस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव । तहेव जाव दो कुराओ पन्नत्ताओ । तं जहा । देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव । तत्थ णं महतिमहा-लया महद्दुमा पन्नत्ता। तं जहा । कू-डसामली चेव पउमरुक्खे चेव । देवा गरुले चेव वेणुदेवे पउमे चेव जाव छव्विहं पि कालं पच्चणुभवमाणा वि-हरन्ति ॥ १ ॥

भावार्थः–पुष्करार्ध द्वीपथी पुर्वदिशाए मेरु पर्वतथी उत्तर दक्षीणे बे वर्षधर क्षेत्र कहेल छे, ते बे घणा सरखा छे यावत बराबर छे, एक भरतक्षेत्र १, बीजुं एरवतक्षेत्र छे २, तेमज (यावत घातकी खंडनी पेरे पुष्करार्ध पण जाणवुं) यावत बे कुरु छे, एक देवकुरु १, बीजुं उत्तरकुरु २, त्यां देवकुरुमां बे म्होटा महालय वृक्ष कहेल छे तेहनां नाम कहे छे, कुटशामळी वृक्ष १, बीजुं पदम वृक्ष २, त्यां बे देवता वसेछे ते गरुलदेव तेनुं बीजुं नाम वेणुंदेव १, बीजो पदमदेव२, यावत छए आरानां सुखदुःख भोगवता विचरे छे त्यांसुधी जाणवुं ॥१॥

अर्थः–पु० पुष्करवर दी० द्वीपथी प० पश्चिमे णं० वळी म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० बे वा० क्षेत्र पं० कह्या त० तेमज ना० विशेष कहेछे कू० कूटसामली वृक्ष चे० वळी म० महा प० पदम रु० वृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल नामे चे० वळी वे० वेळु दे० देव पो० पुंडरीक नामे चे० वळी ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे णं मन्द-रस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वा-सा पन्नता। तहेव नाणत्तं कूडसामली

चेव महागउमरुक्खे चेव । देवा गरुले चेव वेणुदेवे पोण्डरीए चेव ॥२॥

भावार्थः-पुष्करवर द्विपथी पश्चिमे मेरु पर्वतने उत्तर अने दक्षीणे वच्चे बे वर्षधर क्षेत्र कहेल छे, तेमज पुर्वनी पेरे सर्व जाणवुं, एटलो विशेष जे कुटशामळी वृक्ष १, बीजुं महापदम वृक्ष २, तिहां देवता गरुल नामे वेणुदेव १, बीजो पुंडरिक नामे जाणवा ॥२॥

अर्थः-पु० पुष्करवर दी० द्वीप नामना णं० वळी दी० द्वीपमां दो० बे भ० भरतक्षेत्र दो० बे ए० एरवतक्षेत्र जा० यावत दो० बे म० मेरु पर्वत दो० बे म० मेरुनी चू० चूलिकाओ छे ॥ ३ ॥

पुक्खरवरद्दीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं जाव दो मन्दरा दो मन्दरचूलियाओ ॥ ३ ॥

भावार्थः-पुष्करवर द्विपमां बे भरतक्षेत्र, बे एरवतक्षेत्र एम यावत् बे मेरुपर्वत, बे मेरुपर्वतनी चुलीका ॥३॥

अर्थः-पु० पुष्करवर णं० वळी दी० द्वीपमां वे० वेदिका दो० बे गा० गाऊनी उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही ॥ ४ ॥

पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः-पुष्करवर द्विपनी वेदिका बे गाउनी उंची उंचपणे कही छे ॥४॥

अर्थः-स० सघलाए पि० एम णं० वळी दी० द्वीप स० समुद्रनी वे० कांगरा कोट विना ते वेदिका दो० बे गा० गाऊनी उ० उंची उ० उंचपणे पं० कही

२२ पेरा (पुष्करवर द्वीपनी वेदीकानी परुपणा कह्या पछी बाकीना द्वीप समुद्रोनी वेदीकानी परुपणा कहे छे.)

सव्वेसिं पि णं दीवसमुद्दाणं वेइयाओ दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ताओ ॥

भावार्थः-एम सर्व द्विप समुद्रनी वेदीकाओ (फरता कोटना कांगरा विना ते वेदिका कहीए) ते बे गाउनी उंची उंचपणे ज्ञानीए कहेली छे.

अर्थः-दो० बे अ० असुरकुमारना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं च० चमरेन्द चे० वळी ब० बलेंद्र चे० वळी ॥ १

२३ पेरा (आ द्वीप समुद्रो इंद्रोना उत्पातने माटे पर्वतना जेवा आश्रयभूत छे तेथी इंद्रो विषे कहे छे.)

दो असुरकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । चमरे चेव बली चेव ॥ १ ॥

भावार्थः-ए पुर्वोक्त सघळाए द्विप समुद्र उत्पाद पर्वत इंद्र आश्रयी छे ते माटे इंद्रनो अधीकार आव्यो ते कहे छे. बे असुरकुमारना इंद्र कहेल छे ते कहेछे चमरेंद्र १, बलेंद्र २ ॥१॥

अर्थः-दो० बे ना० नागकुमारना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ध० धरणेंद्र चे० वळी भू० भूतानेंद्र चे० वळी ॥ २ ॥

दो नागकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । धरणे चेव भूयाणन्दे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः-बे नागकुमार जातिना इंद्र ते धरणेंद्र १ अने भूतानेंद्र २ ॥२॥

अर्थः-दो० बे सु० सुवर्णकुमारना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं वे० वेणु दे० देव चे० वळी वे० वेणुदाली चे० वळी ॥ ३ ॥

दो सुवन्नकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव ॥३॥

भावार्थः-बे सुवर्णकुमार जातिना इंद्र ते वेणुदेव १ वेणुदाली २ ॥३॥

अर्थः–दो०बे वि०विद्युतकुमारना इ०इंद्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरिकंत चे० वळी ह० हरिस्सनामे चे० वळी ॥ ४ ॥

दो विज्जुकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । हरि चेव हरिस्सहे चेव ॥४॥

भावार्थः–बे विद्युतकुमार जातिना इंद्र ते हरिकांत १ हरिसह २ ॥४॥

अर्थः–दो०बे अ० अग्निकुमारना इ०इंद्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० अग्निशिर्ष चे० वळी अ० अग्नि मानव नामे चे० वळी ॥५॥

दो अग्गिकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः–बे अग्निकुमारना इंद्र ते अग्निशिर्ष १ अग्मिाणव २ ॥५॥

अर्थः–दो०बे दी०द्वीपकुमारना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं पु० पूर्णा नामे चे० वळी व० वशिष्ट नामे चे० वळी ॥ ६ ॥

दो दीवकुमारिन्दा पन्नता । तं जहा । पुण्णे चेव वसिट्ठे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थः–बे द्विपकुमारना इंद्र ते पुणे १ अने वशिष्ट २ ॥६॥

अर्थः–दो०बे उ०उदधिकुमारनाइ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ज० जलकंता चे० वळी ज० जलप्रभ चे० वळी ॥ ७ ॥

दो उदहिकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । जलकन्ते चेव जलप्पभे चेव ॥ ७ ॥

भावार्थः–बे उदधीकुमारना इंद्र ते जलकांत १ जलप्रभ २ ॥७॥

अर्थः–दो०बे दि० दिसाकुमारना इ० इन्द्र पं० क० तं० ते ज० कहुंछुं अ० अमित गति चे० वळी अ० अमितवाहन चे० वळी ॥ ८ ॥

दो दिसाकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । अमियगई चेव अमियवाहणे चेव ॥ ८ ॥

भावार्थः–बे दिशाकुमारना इंद्र ते अमीतगति १ अमीतवाहन २ ॥८॥

अर्थः–दो०बे वा०वायुकुमार इ०इंद्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं वे० वेलंब चे० वळी प० प्रभंजन चे० वळी ॥ ९ ॥

दो वाउकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । वेलम्बे चेव पभञ्जणे चेव ॥९॥

भावार्थः–बे वायुकुमारना इंद्र ते वेलंब १ प्रभंजन २ ॥९॥

अर्थः–दो० बे थ० स्थनितकुमारना इ० इन्द्र पं०कह्या तं०ते ज० कहुंछुं घो०घोष चे० वळी म० महाघोष चे० वळी ॥ १० ॥

दो थणियकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । घोसे चेव महाघोसे चेव ॥१०॥

भावार्थः–बे स्तनीतकुमारना इंद्र तेहनां नाम कहे छे, घोष १, महाघोष २, दशभवनपतीनीकायना ए वीस इंद्र जाणवा ॥१०॥

अर्थः–दो०बे पि० पिसाचना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं का० काल चे० वळी म०महाकाल चे० वळी ॥ ११ ॥

दो पिसायइन्दा पण्णत्ता । तं जहा । काले चेव महाकाले चेव ॥ ११ ॥

भावार्थः–हवे व्यंतरनीकायना आठ इंद्र कहे छे. बे पीसाचना इंद्रना ते काल १, महाकाल २ ॥११॥

अर्थः–दो०बे भू० भूतना इ०इन्द्र पं०कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुरूप चे० वळी प० प्रतिरूप चे० वळी ॥ १२ ॥

दो भूयइन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सुरूवे चेव पडिरूवे चेव ॥ १२ ॥

भावार्थः–बे भूतना इंद्र ते सुरुप १, प्रतिरुप २ ॥१२॥

अर्थः–दो० बे ज०यक्षना इ०इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं पु० पुर्णभद्र चे० वळी म० माणिभद्र चे० वळी ॥ १३ ॥

दो जक्खिन्दा पण्णत्ता । तं जहा । पुन्नभद्दे चेव मणिभद्दे चेव ॥ १३ ॥

भावार्थः–बे यक्षना इंद्रना ते पुर्णभद्र १, मणीभद्र २ ॥१३॥

अर्थः–दो० बे र० राक्षसना इ० इन्द्र पं०कह्या तं० ते ज० कहुंछुं भी० भीम चे० वळी म० महा भीम चे० वळी ॥ १४ ॥

दो रक्खसिन्दा पण्णत्ता । तं जहा । भीमे चेव महाभीमे चेव ॥ १४ ॥

भावार्थः–बे राक्षसना इंद्र, ते भीम १, महाभीम, २ ॥१४॥

अर्थः–दो०बे कि०किंनरना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं किं० किंनर नामे चे० वळी किं० किं पुरुप चे० वळी ॥ १५ ॥

दो किन्नरिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव ॥ १५ ॥

भावार्थः–बे किंनरना इंद्र ते किंनर १, किंपुरुष २ ॥१५॥

अर्थः–दो०बे किं०किं पुरुपना इ०इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुपुरुप चे० वळी म० महापुरुप चे० वळी ॥ १६ ॥

दो किंपुरिसिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सुपुरिसे चेव महापुरिसे चेव ॥ १६ ॥

भावार्थः–बे किंपुरपना इंद्र ते सुपुरुष १, महापुरुष २ ॥१६॥

अर्थः–दो० बे म० महोरगना इ० इन्द्र पं० कह्या त० ते ज० कहुंछुं अ० अतिकाय नामे चे० वळी म० महाकाय चे० वळी ॥१७॥

दो महोरगिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । अइकाए चेव महाकाए चेव ॥१७॥

भावार्थः–बे महोरगना इंद्र ते अतिकाय १, महाकाय २ ॥१७॥

अर्थः–दो० बे ग० गधर्वना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछु गी० गीतरती चे० वळी गी० गीत जश चे० वळी ॥ १८ ॥

दो गन्धव्विन्दा पन्नत्ता । तं जहा । गीयरई चेव गीयजसे चेव ॥ १८ ॥

भावार्थः–बे गंधर्वना इंद्र ते गीतरती १, गीतयशा २ ॥१८॥

अर्थः–दो० बे अ० अणपन्निना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सं० संनधी नामे चे० वळी स० समान चे० वळी ॥ १९ ॥

दो अणवण्णिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । संनिहिए चेव समाणे चेव ॥ १९ ॥

भावार्थः–वळी इहा पृथ्वीथी दश जोजन हेठे बीजी आठ उत्तम व्यंतर जाती छे तेहना इंद्र कहेछे, बे अणपन्नी कायना इंद्र ते सन्निक १, समान २ ॥१९॥

अर्थः–दो० बे प० पण पनिना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं धा० धाती चे० वळी वि० विधाती चे० वळी ॥ २० ॥

दो पणवण्णिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । धाए चेव विहाए चेव ॥ २० ॥

भावार्थः–बे पणपन्नीकायना इंद्र ते धाती १, विधाती २ ॥२०॥

अर्थः–दो० बे इ० इसिवाय निकायना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं इ० इसिनामे चे० वळी इ० इसीवाल नामे चे० वळी ॥ २१ ॥

दो इसिवाइन्दा पन्नत्ता । तं जहा । इसि चेव इसिवाले चेव ॥ २१ ॥

भावार्थः—बे इसीवायनीकायना इंद्र ते इसी १, इसीवासी २ ॥२१॥

अर्थः—दो० बे भू० भूतवायानिकायना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं इ० ईश्वर चे० वळी म० महेश्वर चे० वळी ॥ २२ ॥

दो भूयवाइन्दा पन्नत्ता । तं जहा । इस्सरे चेव महिस्सरे चेव ॥ २२ ॥

भावार्थः—बे भूतवाइकायना इंद्र ते इश्वर १, महेश्वर २ ॥२२॥

अर्थः—दो० बे कं० कंदीनिकायना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुवत्थ चे० वळी वि० विसाल चे० वळी ॥ २३ ॥

दो कन्दिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सुवत्थे चेव विलासे चेव ॥ २३ ॥

भावार्थः—बे कंदीनीकायना इंद्र ते सुवच्छ १, विशाळ २ ॥२३॥

अर्थः—दो० बे म० महाकंदीना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं हा० हस्स चे० वळी ह० हास्य रती चे० वळी ॥ २४ ॥

दो महाकन्दिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । हस्से चेव हस्सरई चेव ॥ २४ ॥

भावार्थः—बे महाकंदीनीकायना इंद्र ते हास १, हासरती २॥२४॥

अर्थः—दो० बे कु० कोहंडनिकायना इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं से० श्वेत नाम चे० वळी म० महाश्वेत चे० वळी ॥२५॥

दो कुम्भडिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सेए चेव महासेए चेव ॥ २५ ॥

भावार्थः—बे कोहंडनीकायना इंद्र ते श्वेत १, महाश्वेत २ ॥२५॥

अर्थः—दो० बे प० पतग इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० पयग चे० वळी प० पयगवती चे० वळी ॥ २६ ॥

दो पयगिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । पयए चेव पयगवई चेव ॥ २६ ॥

भावार्थः—बे पयगनीकायना इंद्र ते पयग १, पयगपती २ ॥२६॥

अर्थः—जो० ज्योतिषी दे० देवताना दो० बे इ० इन्द्र पं० कह्या त० ते ज० कहुंछुं च० चंद्रमा चे० वळी सू० सूर्य चे० वळी ॥२७॥

जोइसियाणं देवाणं दो इन्दा पण्णत्ता । तं जहा । चन्दे चेव सूरे चेव ॥ २७ ॥

भावार्थः—ए सर्वे मळी सोळ व्यंतरना बत्रीस इंद्र थया, जोतिषी देवताना बे इंद्र कहेलछे ते कहे छे, चंद्रमा १, सुर्य २ ॥२७॥

अर्थः—सो० सौधर्म देवलोक इ० ईशान णं० वळी क० देवलोकने विषे दो० बे इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सु० शक्रेंद्र चे० वळी इ० ईशानेंद्र चे० वळी ॥ २८ ॥

सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सुक्के चेव ईसाणे चेव ॥ २८ ॥

भावार्थः—सौधर्म प्रथम देवलोक बीजुं इशान देवलोक तेहना बेबे इंद्र ते शक्रेंद्र १, इशानेंद्र२॥२८॥

अर्थः—ए० एम स० सनत कु० कुमार मा० माहेंद्र क० देवलोकने विषे दो० बे इ० इन्द्र पं० कह्या स० सनत कुमारेंद्र चे० वळी मा० माहेंद्र चे० वळी ॥ २९ ॥

एवं सणंकुमारमाहिन्देसु कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सणंकुमारे चेव माहिन्दे चेव ॥ २९ ॥

भावार्थः—एमज सनंतकुमार १, माहेंद्र २, ए बे देवलोकना बे इंद्र ते सनत्कुमारेंद्र १, माहेंद्र २ ॥२९॥

अर्थः—ब० ब्रह्मदेवलोक ल० लांतक णं० वळी क० देवलोकने विषे दो० बे इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ब० ब्रह्मेंद्र चे० वळी लं० लांतकेंद्र चे० वळी ॥ ३० ॥

बम्भलोगलन्तगेसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । बम्भे चेव लन्तए चेव ॥ ३० ॥

भावार्थः—पांचमुं ब्रह्मदेव १, छठुं लांतकदेवलोक २ ए बे देवलोकना बे इंद्र कहेल छे ते ब्रह्मेंद्र १, लांतकेंद्र २ ॥३०॥

अर्थः—म० महाशुक्र स०सहस्रार णं०वळी क० देवलोकने विषे दो० बे इ०इन्द्र पं०कह्या तं० ते ज० कहुंछुं म० महाशुक्र चे० वळी स० सहस्रेंद्र चे० वळी ॥ ३१ ॥

महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । महासुक्के चेव सहस्सारे चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थः—सातमुं महाशुक्र देवलोक १, आठमुं सहस्रार देवलोक तेहना बे इंद्र ते महाशुक्रेंद्र १, सहस्रारेंद्र २, बेना बोल माटे बे बे देवलोक एकठां कहेल छे ॥३१॥

अर्थः—आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत णं० वळी क० देवलोकने विषे दो० बे इ० इन्द्र प० कह्या त० ते ज० कहुंछुं पा० प्राणतेंद्र चे० वळी अ० अच्युतेंद्र चे० वळी ॥ ३२ ॥

आणयपाणयारणच्चुएसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता तं जहा । पाणए चेव अच्चुए चेव ॥ ३२ ॥

१५

भावार्थः—नवमुं आणंत १, दशमुं प्राणत २, अग्यारमुं आरण ३, बारमुं अच्युत ४, ए चार देवलोक मळी बे इंद्र कहेल छे, प्राणतेंद्र १, नवमा दशमानो इंद्र छे, अच्युतेंद्र २ इग्यारमा बारमानो इंद्र छे ए सर्वे मळी चार जातीना देवताना चोसठ इंद्र थया ॥३२॥

अर्थः—म० महा सु० शुक्र स० सहस्रार णं० वळी क० देवलोकने विषे वि० विमान दु० बे व० वर्णना पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं हा० पीला वर्णनुं चे० वळी सु० उजला वर्णनुं चे० वळी

२४ पेरा (देवनो अधिकार होवाथी तेमने रहेवाना विमानो विशे कहे छे.)

महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पन्नत्ता । तं जहा । हालिद्दा चेव सुक्किला चेव ॥

भावार्थः—पुर्वे देवतानो अधीकार आव्यो ते माटे विमाननो अधीकार कहे छे. सातमुं महाशुक्र, आठमुं सहस्रार ए बे देवलोकने विषे विमान बे वर्णनां कह्यां छे ते कहे छे, पीळां वर्णनां १, धोळां वर्णनां [सोधर्म इशान ए बे देवलोके पांच वर्णनां विमानछे, त्रीजा, चोथा देवलोके रातां ने लीलां विमान छे, पांचमे छठे देवलोके काळां ने निलां विमान छे, नवमाथी ते स्वार्थ सिद्ध विमान सुधी एक धोळा वर्णना विमान छे.

अर्थः—गे० नव गैवैकना दे० देवने दो० बे र० हाथनी काया उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही भगवंते

२५ पेरा (देवोनो अधिकार होवाथी बे ठाणामां आवती देवोनी अवगाहणा (शरीरनुं मान) कहेछे)

गेविज्जगाणं देवाणं दो रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥

भावार्थः—नव ग्रैवेयकना देवतानीकाया बे हाथनी उंची उंचपणे श्रीतिर्थंकर देवे कहीछे.

अर्थः—वि० बीजा ठा० ठाणानो त० त्रीजो उ० उद्देशो स० पुरो थयो.

बिट्ठाणस्स तइयो उद्देसोसमत्तो ॥

भावार्थः—इतिश्री बीजा ठाणाना त्रीजा उ- शानो भावार्थ संपूर्णम् ॥

[अह दुट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसओ ।]

अर्थः—स० सर्वथी सुक्ष्मकाल ते समय इ० एम वा० अथवा आ० असंख्यात समयनो काल ते आवलिका इ० एम वा० अथवा जी० ए काल जीवाश्रित माटे जीव कहीए इ० एम वा० अथवा अ० अजीव पुद्गल आश्रित माटे अजीव कहीए इ० एम वा० अथवा प० ए बे भेद कहीए ॥ १ ॥

१ पेरा (त्रीजा उद्देशामां पुदगळ अने जीवना धर्म कह्या अने चोथा उद्देशामां तो सर्वे चीज जीव अजीवरुप एम कहेवानुं छे. त्रीजा उद्देशाना छेला सुत्रनो अने चोथा उद्देशाना पहेला सुत्रोनो नीचे मुजब संबंध छे, त्रीजा उद्देशाना छेला सूत्रमां देवनी अवगाहणा लक्षणधर्म कह्यो हतो अने चोथा उद्देशाना पेहेला सूत्रोमां धर्माधिकार होवाथी जीव अजीव संबंधी समयादी स्थीतीनुं लक्षण धर्म अने धर्मिना अभेदपणे कहेवामां आवे छे.)

१. समया इ वा आवलिया इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥१॥

भावार्थः—हवे काळ ते अजीव छे पण जीव आश्रयी छे, अजीव जे पुद्गळ स्थिती भावे आश्रयी छे, समयथी मांडी पुद्गळ तथा जीव सागरोपमताइ एक स्थानके ए स्वभावे रहे ते काळ ते जीव अजीव बेंने आश्रीत छे ते माटे बे ठाणामां ए काळमाननो अधीकार कह्यो छे. सर्वथी नानो काळ ते समय कहीए समयथी मोटो काळमान ते आवलीका असंख्याता समयनो ए काळ जीवाश्रित मा- जीव कहीए १, अजीव पुद्गलाश्रीत माटे अ- जीव पण होय एम बे भेद छे ॥१॥

अर्थः—आ० सासोश्वासनो काल ते प्रा- प्राण इ० एम वा० अथवा थो० सात प्रा- नो काल ते थोव इ० एम वा० अथवा जी० ते कालने जीवाश्रित माटे जीव कहीए इ० एम वा० अथवा अ० ते काल अजीव पुद्ग- लाश्रित माटे अजीव कहीए इ० एम वा० अथवा प० ए बे भेद कहीए ॥ २ ॥

आणापाणू इ वा थोवा इ वा जी- वा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥२॥

भावार्थः—आणपाणुं ते सासोश्वासनो काळ एक सासोश्वासथी एक प्राण थाय, सात प्रा- एक थोव थाय, एहने जीवाश्रीतपणा माटे जी- वकाळज, अजीव ते माटे अजीव ते माटे भेद कह्या छे ॥२॥

अर्थः—ख० संख्यात प्राणरुप इ० एम वा० अथवा ल० सात थोवनो एक लव इ० एम वा० अथवा जी० ए कालने जीवाश्रित माटे जीव कहीए इ० एम वा० अथवा अ० अजी- वाश्रित माटे अजीव कहीए इ० एम वा० अथवा प० ए बे भेद कहीए ॥ ३ ॥

खणा इ वा लवा इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थः—संख्यात प्राणे एक क्षण थाय, सात थोवे एक लव थाय, एहने एमज जीव कहीए, अजीव पण कहीए ॥३॥

अर्थः—ए० एम मु० बे घडी ते ३७७३ सासोश्वास इ० एम वा० अथवा अ० त्रीस मुहुर्त्त इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

एवं मुहुत्ता इ वा अहोरत्ता इ वा ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम मुहुर्त ते त्रणहजार सातसे तोतेर शाशोश्वासनी बे घडी थाय, त्रीस मुहुर्तनी एक अहोरात्री थाय ॥४॥

अर्थः—प० पन्नर अहोरात्रि इ० एम वा० अथवा मा० बे पक्ष इ० एम वा०अथवा ॥५॥

पक्खा इ वा मासा इ वा ॥ ५ ॥

भावार्थः—पनर अहोरात्रीए एक पक्ष थाय, बे पक्षनो एक मास थाय ॥५॥

अर्थः—उ० बे मासे १ रुतु इ० एम वा० अथवा अ० त्रण रुतु इ०एम वा०अथवा ॥६॥

उऊ इ वा अयणा इ वा ॥ ६ ॥

भावार्थः—बे मासनी एक रतु थाय त्रण रुतुए एक अयन थाय, ते दक्षीणायन तथा उत्तरायन ॥६॥

अर्थः—सं० बे अयन्न इ० एम वा० अथवा जु० पांच वरसे एक युग इ० एम वा० अथवा ॥ ७ ॥

संवच्छरा इ वा जुगा इ वा ॥७॥

भावार्थः—बे अयनथी एक संवत्सर ते वरस थाय, पांच वरसनो युग थाय ॥७॥

अर्थः—वा० (वीस युगे) वरस स० सो इ० एम वा० अथवा वा० वरस स० हजार (दससो वरसे) इ० एम वा० अथवा ॥८॥

वाससया इ वा वाससहस्सा इ वा ॥८॥

भावार्थः—वीस युगे सो वरस थाय, एम दश सो वरसे एक हजार वरस थाय ॥८॥

अर्थः—वा० वरस स० सो स० हजार एटले लाख वरस इ० एम वा० अथवा वा० वरस को० क्रोड एटले सो लाप वरस इ० एम वा० अथवा ॥ ९ ॥

वाससयसहस्सा इ वा वासकोडी इ वा ॥ ९ ॥

भावार्थः—एम सो हजारे एक लाख वरस थाय, एम सो लाखथी एक क्रोड वरस थाय ॥ ९ ॥

अर्थः—पु० चोरासीलाप वर्षे एक पुर्वाङ्ग थाय इ० एम वा० अथवा पु० पुर्वांगने चोराशी लाख गुणा करीए तो एक पुर्व थाय इ० एम वा० अथवा ॥ १० ॥

पुव्वङ्गा इ वा पुव्वा इ वा ॥ १० ॥

भावार्थः—चोरासी लाख वरसनो एक पुर्वांग थाय ते पुर्वांगने चोरासी लाखगणा करवाथी सीतेरलाख क्रोडी अने छप्नहजार कोडी वरसे एक पुरव थाय ॥१०॥

अर्थः—तु० चोराशीलाख पुर्वे एक तुटितांग थाय इ० एम वा० अथवा तु० तुटितांगने चोराशीलाखे गुणीए तो त्रुटित थाय इ० एम वा० अथवा ॥ ११ ॥

तुडियङ्गा इ वा तुडिया इ वा ॥११॥

भावार्थः—चोरासीलाख पुरवे एक त्रुटीतांग थाय ते त्रुटीतांगने चोरासीलाख गुणा करवाथी एक त्रुटीत थाय, एमज पाछली संख्याने चोरासीलाख गुणी करवाथी आगली संख्या थाय एम सर्वत्र जाणवुं) ॥११॥

अर्थः—अ०८४लाख त्रुटिते एक अडडांग थाय इ० एम वा० अथवा अ० ८४ लाख अडडांगे एक अडड थाय इ० एम वा० अथवा ॥१२॥

भावार्थः—जीहां धुळनो कोट होयते खेड कहीए, कुनगर ते कर्बट ॥ ३ ॥

अर्थः—म० चार दिशे बे गाउए गामते इ० एम वा० अथवा दो० जलस्थलनो मार्ग होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

मडम्बा इ वा दोणमुहा इ वा ॥४॥

भावार्थः—जीहां चारे दिशाए बे बे गाउ गाम वेगळा होयते मंडप कहीए, जीहां जळनो तथा स्थळनो मार्ग होयते द्रोणमुख ॥ ४ ॥

अर्थः—प० भलां रतन वस्तु उपजेते इ० एम वा० अथवा आ० लोह प्रमुपनी खाण होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ५ ॥

पट्टणा इ वा आगरा इ वा ॥५॥

भावार्थः—जीहां भली वस्तु रत्नादीक उपजे तथा चारे दिशाए देशावरथी माल आवे ते पाटण कहीए, जीहां लोहादिकनी खाण होयते आगर कहीये ॥ ५ ॥

अर्थः—आ० तापसना ठाम इ० एम वा० अथवा सं० समी भूमि वावे कठिन भूमि रापे ते इ० एम वा० अथवा ॥ ६ ॥

आसमा इ वा संवाहा इ वा ॥६॥

भावार्थः—जीहां तिर्थस्नान थाय अने तापस प्रमुख रहेता होयते आश्रम. जीहां समी भूमी वावी कठण भूमी राखे खाण प्रमुखमां ते संबाध ॥ ६ ॥

अर्थः—सं० साथ आवी उत्तरे जिहां इ० एम वा० अथवा घो० नदीने कांठे वास इ० एम वा० अथवा ॥ ७ ॥

संनिवेसा इ वा घोसा इ वा ॥७॥

भावार्थः—जीहां साथ आवी उतरे ते सनिवेश, नदीना कांठे वसे ते घोषगाम ॥ ७ ॥

अर्थः—आ० घणी जातना वृक्ष जिहां होय इ० एम वा० अथवा उ० जिहां लोक उजाणी करे ते इ० एम वा० अथवा ॥ ८ ॥

आरामा इ वा उज्जाणा इ वा ॥ ८ ॥

जीहां घणी जातीनां वृक्ष वेली होय, केळीना घर होय, जीहां स्त्री पुरुष क्रीडा करे ते आराम जीहां पत्र पुष्प फळ फुल छांयाए शोभित घणा लोक उजाणी करे ते उध्यान ॥८॥

अर्थः—व० एक जातिना वृक्ष होयते इ० एम वा० अथवा व० घणी जातिना वृक्ष होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ९ ॥

वणा इ वा वणखण्डा इ वा ॥ ९ ॥

भावार्थः—जीहां एक जातिनां वृक्ष होयते वन, जीहां घणी जातिनां वृक्ष होयते वनखंड॥९॥

अर्थः—वा० चोखुणीवाव इ० एम वा० अथवा पु० वाटली वाव इ० एम वा० अथवा ॥१०॥

वावी इ वा पुक्खरिणी इ वा ॥१०॥

भावार्थः—चौखुणी होयते वावडी, वाटली (गोळ) तथा जीहां कमळ होयते पुष्करिणी॥१०॥

अर्थः—स० सरोवर इ० एम वा० अथवा स० सरोवरनी श्रेणि इ० एम वा० अथवा ॥११॥

सरा इ वा सरपन्तिया इ वा ॥११॥

भावार्थः—जळाश्रयते सरोवर बे चार सरोवरनी पंक्ति होय पाषाणे करी पाळ बांधी होय, चारे दिशाए सहकारादिकनी छांया होय ते सरोवरनी श्रेणी कहीए ॥ ११ ॥

अर्थः—अ० कुवा इ० एम वा० अथवा त० तलाव इ० एम वा० अथवा ॥ १२ ॥

अगडा इ वा तलागा इ वा ॥१२॥

भावार्थः—अगड ते कुवा, जीहां माटीनी म्होटी पाळ बांधी होयते तळाव ॥ १२ ॥

अर्थः—द० द्रह उंडु पाणी इ० एम वा० अथवा न० नदी इ० एम वा० अथवा ॥१३॥

दहा इ वा नई इ वा ॥ १३ ॥

भावार्थः—जीहां उंडुपाणी होयते द्रह, नदी, गंगा प्रमुख, ॥ १३ ॥

अर्थः–पु० पृथ्वी रतनप्रभादिक इ० एम वा० अथवा उ० समुद्र घनोदधि इ० एम वा० अथवा ॥ १४ ॥

पुढवी इ वा उदही इ वा ॥ १४ ॥

भावार्थः–पृथ्वी रत्न प्रभादीक, उदधी ते समुद्र धनोदधी ॥ १४ ॥

अर्थः–वा० घनवात तनवात इ०एम वा० अथवा उ० अवकाशांतर आकाश प्रदेश जिहां सुक्ष्म पृथ्वीकाय जीव भरेला छे इ०एम वा० अथवा ॥ १५ ॥

वायखन्धा इ वा उवासन्तरा इ वा ॥ १५ ॥

भावार्थः–वायुना खंध घनवात तनवात प्रमुख, जीहां सुक्ष्म पृथ्वीना जीव भर्याछे, आकाश प्रदेशते अवकाशांतर ॥ १५ ॥

अर्थः–व० पृथ्वीना घनवात तनवातना-पंध इ० एम वा० अथवा वि० लोक नाडी त्रस नाडी जीव ते इ० एम वा० अथवा ॥१६॥

वलया इ वा विग्गहा इ वा ॥१६॥

भावार्थः–जीहां पृथ्वीनां धनोदधी धनवा-तना खंधछे ते वलय, जीहां लोक नाडी त्रस नाडी जीव रह्याछे ते विग्रह ॥ १६ ॥

अर्थः–दी० जंबुद्वीपादिक इ० एम वा० अथवा स० लवणादिक इ० एम वा० अ-थवा ॥ १७ ॥

दीवा इ वा समुद्दा इ वा ॥ १७ ॥

भावार्थः–द्विपते जंबु द्विपादीक, समुद्र ते लवण समुद्रादीक ॥ १७ ॥

अर्थः–वे० समुद्रजलनी वेल इ० एम वा० अथवा वे० द्विपनी वेदिका इ० एम वा० अथवा ॥ १८ ॥

वेला इ वा वेइया इ वा ॥ १८ ॥

भावार्थः–वेल समुद्रना जळनी द्विपनी वे-दिकाते कोट कांगरा रहित ॥ १८ ॥

अर्थः–दा० दरवाजा विजयादिक इ० एम वा० अथवा तो० तोरण इ० एम वा० अ-थवा ॥ १९ ॥

दारा इ वा तोरणा इ वा ॥ १९ ॥

भावार्थः–जंबुद्विप प्रमुखना द्वार विजयादीक, दरवाजा उपर लगाडीए ते तोरण ॥ १९ ॥

अर्थः–ने० नारकी इ० एम वा० अथवा ने० नारकीना वा० रहेवाना ठाम इ० एम वा० अथवा जा० थाय ते वे० वैमानिक दे-वता इ० एम वा० अथवा वे० वैमानिकने उपजवाना वा० ठाम इ० एम वा० अथवा (२०–४३) ॥ २० ॥

नेरइया इ वा नेरइयावासा इ व जाव वेमाणिया इ वा वेमाणियावास इ वा ॥ [२०–४३] ॥ २० ॥

भावार्थः–नर्कमां रहेते नारकीनारकीने रहेवान ठाम ते नरकावासा एम यावत् चोवीस दंडव जाणवा. वैमानिक देवता जीव अने अजीव तेका पुद्गळ सहीतछे ते माटे ते देवताने उपजवान विमानते पृथ्वीकायनी अपेक्षाए जीव अजी सचित्तपणा माटे बे भेद ॥२०–४३॥ २०

अर्थः–क० देवलोक इ० एम वा०अथवा क देवलोकना अंश इ०एम वा०अथवा ॥४४॥२

कप्पा इ वा कप्पविमाणावासा वा ॥ [४४] ॥ २१ ॥

भावार्थः–कल्प ते देवलोक, तेहना अंश कल्प विमान वास ते जीव अजीव पणा मा बे भेदे ॥ ४४ ॥ २१ ॥

अर्थः–वा० मनुष्यना क्षेत्र इ० एम वा अथवा वा० हेमवंत प० पर्वत प्रमुख इ० ए वा० अथवा ॥ ४५ ॥ २२ ॥

वासा इ वा वासहरपव्वया इ ॥ [४५] ॥ २२ ॥

भावार्थः–वर्ष ते भरतादी क्षेत्र, वर्षधर ते हीमवंतादी पर्वत ॥४५॥ २२ ॥

अर्थः–कू० शिखर इ० एम वा० अथवा कू० तिहां देवताना घर इ० एम वा० अथवा ॥ ४६ ॥ २३ ॥

कूडा इ वा कूडागारा इ वा ॥[४६]॥२३॥

भावार्थः–कुट ते हिमवंतादि शिखर, ज्यां देवतानां घर छे ते कुडागार ॥४६॥ २३ ॥

अर्थ०–वि० ३२ महा विदेहना पंडते इ० एम वा० अथवा रा० राजा रहे ते इ० एम वा० अथवा जी० जीवाश्रित इ० एम वा० अथवा अ० अजीवाश्रित इ० एम वा० अथवा प० ए बे बोल कहीए ॥४७॥ २४ ॥

विजया इ वा रायहाणी इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति॥[४७]॥२४॥

भावार्थः–महाविदेह क्षेत्रनां खंड कच्छ महाकच्छादीक बत्रीस ते विजय, खेमादिक नगरिमां राजा रहे ते राजधानी, ए सघळा बोलमां जीव अने अजीव ए बे बोल कहेवा पुद्गळ आथी अजीव जीव, जीव सहित माटे जीव जाणवा ॥ ४७ ॥ २४ ॥

अर्थः–छा० छाया वृक्षादिकनी इ० एम वा० अथवा आ० आतप सूर्यादिकनो इ० एम वा० अथवा ॥ १ ॥

२ पेरा (जे पुद्गल धर्मो छे ते पण तेमज छे एम कहे छे)

छाया इ वा आतवा इ वा ॥ १ ॥

भावार्थः–जे पुद्गळ स्वभाव छे ते पण एमज बे भेद, वृक्षादिकनी छाया ते अजीव अने वृक्ष ते जीव सहीत, आतप ते सुर्यादीकनो ॥ १ ॥

अर्थः–दो० कांति तेने इ० एम वा० अथवा अ० अंधकार इ० एम वा० अथवा ॥२॥

दोसिणा इ वा अन्धयारा इ वा ॥२॥

भावार्थः–जोत्स्नाते कांती अथवा तेज अंधकार ॥ २ ॥

अर्थः–ओ० अवमान ते क्षेत्रादि प्रमाण हाथ गज प्रमुख इ० एम वा० अथवा उ० तुलादि कर्ष मासो वाल इ० एम वा० अथवा ॥ ३ ॥

ओमाणा इ वा उम्माणा इ वा ॥३॥

भावार्थः–मान ते हाथगज प्रमुप, उन्मान ते तुलाप्रमुख, कर्ष मासा वाल इत्यादीक ॥३॥

अर्थः–अ० नगरना घर इ० एम वा० अथवा उ० वाडीना घर इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

अइजाणगिहा इ वा उज्जाणगिहा इ वा ॥ ४ ॥

भावार्थः–अतीतान ग्रह ते प्रवेशनां नगर, उद्यानगह ते वाडीनां घर ॥४॥

अर्थः–अ० अवलंब देश विशेप नाम इ० एम वा० अथवा स० सनिप्रपात ए पण एमज रुढिथी जाणवुं इ० एम वा० अथवा जी० जीवाश्रित माटे जीव इ० एम वा० अथवा अ० अजीवाश्रित माटे अजीव इ० एम वा० अथवा प० बे भेद कहीए ॥५॥

अवलिम्बा इ वा सणिप्पवाया इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥ ५ ॥

भावार्थः–अवालिंब देशविशेप, सनिप्रपात तेपण एमज रुढीथी जाणवुं. ए सघळा बोल जीवाश्रीतपणा माटे जीव अने पुदगळ माटे अजीव कहेवा ॥५॥

अर्थः–दो० बे रा० राशी प० कही तं० ते ज० कहुं छुं जी० जीव राशी चे० वळी अ० अजीवराशी चे० वळी

४ पेरा (हवे समयादी वस्तु पण जीवाजीव रुप कहेवानुं कारण ए छे जे ते सिवायनी बीजी कोइ राशी नथी)

दो रासी पण्णत्ता । तं जहा । जीवरासी चेव अजीवरासी चेव ॥

भावार्थः—बे राशी कही छे ते कहेछे, एक जीवराशी १, बीजी अजीवराशी २ ए बेभेदछे.

अर्थः—दु० बे ब० बन्ध पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं पे० राग ते माया लोभरुप चे० वळी दो० द्वेष ते क्रोध मानरुप चे० वळी॥१॥

५-१पेरा (जीवराशी पण बद्ध अने मुक्तना भेदथी बे प्रकारे छे)

दुविहे बन्धे पन्नत्ते । तं जहा । पेज्जबन्धे चेव दोसबन्धे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—बे प्रकारे बंध कह्योछे ते कहे छे, एक प्रेम ते रागनो बंध, माया लोभरुप १, बीजो द्वेष बंध ते क्रोधमानरुप २, ए बे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—जी० जीवने णं० वळी दो० बे ठा० थानके करी पा० पाप क० कर्मनो ब० बंध थाय छे तं० ते ज० कहुं छुं रा० रागेकरी चे० वळी दो० द्वेषेकरी चे० वळी ॥ २ ॥

५-२ पेरा (प्रेम अने द्वेष लक्षण कर्मोनो उदय थवाथी जीवने अशुभ कर्मबंध थाय छे ते बतावे छे.)

जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं बन्धन्ति । तं जहा । रागेण चेव दोसेण चेव ॥२॥

भावार्थः—जीवने बे स्थानके करी पापकर्मनो बंध छे, पाप बंधाय छे ते कहे छे, रागे करी पाप बंधाय छे १, द्वेषे करी पाप बंधाय छे २, ए बे भेदछे ॥ २ ॥

अर्थः—जी० जीव णं० वळी दो० बे ठा० थानके पा० पाप क० कर्म उ० उदीरे छे तं० ते ज० कहुं छुं अ० जाणीने लोच प्रमुखे करी चे० वळी वे० वेदनाए ओ० उपक्रम ते रोगादिकनी चे० वळी वे० वेदनाए ॥ १ ॥

६ पेरा (राग अने द्वेषथी बांधेला पाप कर्मोनी जेवी रीते उदीर्णा वेदना अने निर्जरा जीवो करे छे ते कहे छे)

जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेन्ति । तं जहा । अब्भुवगमियाए चेव वेयणाए ओवक्कमियाए चेव वेयणाए ॥ १ ॥

भावार्थः—जीव बे स्थानके करी पापकर्म उदीरेछे, अवसर आव्या विना उदये आणे ते उदिरणा ते कहे छे, स्ववसे जाणीने शिरलोचन तप चारित्रादीक वेदना पीडा भोगवे १, बीजी उपक्रमीकी उपक्रमथी उपनी वेदना ते ताव अतिसारादी रोगथी उपनी वेदना पीडा भोगवे २, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः—ए० एम वे० उदय आव्युं कर्म भोगवे ॥ २ ॥

एवं वेदेन्ति ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज उदय आव्युं कर्म बे प्रकारे वेदे भोगवे ॥२॥

अर्थः—ए० एम नि० निर्जरे क्षय करे कर्म अ० जाणीने लोच तप क्रियाए करीने चे० वळी वे० वेदनाए करी ओ० रोगादिनी चे० वळी वे० वेदनाए करी ॥ ३ ॥

एवं निज्जरेन्ति अब्भुवगमियाए चेव वेयणाए ओवक्कमियाए चेव वेयणाए ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम बे प्रकारे कर्म निर्जरेछे, क्षय करे छे ते शिरलोजनादिक क्रीयादिके १,

उदय आवेल रोगादीकनी वेदना २, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दो० वे ठा० थानके आ०जीव स० शरीर प्रते फु० फरसीने परभवे णं० वळी नि० जाय तं० ते ज० कहुं छुं दे० देशे पग प्रमुख वि० वळी आ० जीव स० शरीर प्रते फु० फरसीने णं० वळी नि० नीकले स० सर्वथी ते सघली काया वि० वळी आ०जीव स० शरीर प्रति फु० फरसीने णं०वळी नि० नीकले ॥ १ ॥

७ पेरा (कर्मनी निर्जणामां देशथी अथवा सर्वथी भवांतरमां जवा अथवा मोक्षमां जता शरीरथी नीरीयाण थाय छे ते पांच सूत्रोथी बतावे छे)

दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ता णं निज्जाइ। तं जहा । देसेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं निज्जाइ सव्वेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं निज्जाइ ॥ १ ॥

भावार्थः—बे स्थानके आत्मा शरिरने फरसीने भवांतरे अथवा मुक्तिये जाय ते कहे छे पगप्रमुख फरसीने जीव नीकळे ते देशथी १, सघळी काया फरसीने जीव नीकळे ते सर्वथी २ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम फु० फरके देशथी सर्वथी णं० वळी ॥ २ ॥

एवं फुरित्ता णं ॥ २ ॥

भावार्थः—जीव निकळतां ते ठेकाणुं फरके ते देशथी, जीवने शरिरने स्पर्शते फरके ते सर्वथी ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एम फु० फोडीने नीकळे णं० वळी ॥ ३ ॥

एवं फुडित्ता णं ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम शरीरने फोडी जीव नीकळे ते देशथी सर्वथी ॥३॥

अर्थः—ए० एम सं० संकोचीने शरीरने णं० वळी ॥ ४ ॥

एवं संवट्टित्ता णं ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम शरीरने संकोचीने देशथी १, सर्वथी २, इलीका गतीये देशथी तथा दडानी गतीये सर्वथी नीकळे ॥४॥

अर्थः—ए० एम नि० जीव प्रदेशथी शरीर अलगुं थाय णं० वळी ॥ ५ ॥

एवं निवट्टित्ता णं ॥ ५ ॥

भावार्थः—एम जीवप्रदेशथी शरिर अळगुं थाय ते देशथी इलीकागतीये १, सर्वथी दडानी गतीये २, ए वे भेद छे ॥५॥

अर्थः—दो० वे ठा० थानके आ० जीव के० केवलीनो प० भाख्यो ध० धर्म ल० पामे स० सांभलवे करीने त० ते ज० कहुंछुं ख० कर्मना क्षयथी चे० वळी उ० उपशमाव्याथी चे० वळी ॥ १ ॥

८ पेरा (उपर सर्व निर्याण कह्युं ते परंपराए धर्म श्रमण लाभ विगेरेथी थायछे ते बतावेछे)

दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा । खएण चेव उवसमेण चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—बे प्रकारे आत्मा केवळी भाषीत धर्म सांभळवाथी पामे ते कहेछे, ज्ञानावर्णी तथा दर्शन मोहनीना क्षयथी १, अथवा उपशमाव्याथी पण धर्म पामे २, ए वे भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम जा० यावत म० मन पर्यव ना० ज्ञान उ० पामे तं०ते ज० कहुंछुं ख०क्षयथी चे० वळी उ० उपसमथी चे० वळी ॥ २ ॥

एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडे-

ज्जा । तं जहा । खएण चेव उवसमेण चेव ॥२॥

भावार्थः—एम यावत् बे प्रकारे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधीज्ञान, मनपर्यवज्ञान उपजावे पामे ते बे स्थानक कहे छे, ज्ञानावर्णीना क्षयथी १, अथवा उपशमथी २, ए बे भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—दु० बे प्रकारे अ० काळनुं उ० उपमा प्रमाण पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं प० पल्योपमनुं मान चे० वळी सा० सागरोपमनुं मान चे० वळी ॥१॥

९ पेरा (बे पदे सर्व साधारण क्षयोपसम कह्यो अने ते बोधथी मतिश्रुत अने अवधीज्ञान वधारेमां वधारे छासठ सागरोपम सुधीना होय छे ने सागरोपम छे ते पल्योपमने आश्रीने रहे छे तेथी ते बंन्नेनी प्ररुपणा करे छे.)

दुविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते । तं जहा । पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव ॥१॥

भावार्थः—मतिश्रुत अवधीज्ञाननी उत्कृष्टी स्थिति छासठ सागरोपमनी छे ते सागरोपमनुं मान कहेवाने कहे छे, बे प्रकारे काळनुं प्रमाण छे ते कहेछे, एक पल्योपमनुं मान छे १, बीजुं सागरोपमनुं मान छे २, ए बे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—से० ते किं० शुं तं० ते प० पल्योपम प० पल्योपमनु मान कहे छे जं० जो जो० चार गाउ वि० उंडो पोहळो प० कुवो छे ए० एकदिनथी मांडी सात दिनना जण्या युगळीयाना माथाना केशे करी भरेल हो० होय नि० आतराराहित णि० ठांसीने भ० भरीए वा० वाळने अग्रनी को० कोडी गमे करी ॥१॥

से किं तं पलिओवमे । पलिओवमे जं जोयणवित्थिण्णं
पल्लं एगाहियप्परूढाणं ।
होज्ज निरन्तणिचियं
भरियं वालग्गकोडीणं ॥ १ ॥

भावार्थः—ते पल्योपमनुं मान कहे छे, चार गाउनो उंडो पहोळो पालो ते कुवो होय, ए कादिनथी मांडी सात दिनना जण्या युगळीया तेहना माथाना केशथी ते कुवो आंतरा रहित ठांसीने भरीये ते वालाग्र द्रष्टिए पण आवे नहीं एवा झीणा होय ॥ १ ॥

अर्थः—स०सो वा०वरस ते वालाग्र वा०वरस स० सोए ए० एकोको वाळाग्र अ० काढे ते कुओ ठालो थाय ते जो० जेटलो का० काल सो० ते का० काल वो० जाणवो उ० ए उपमां ए० एक प० पल्योपमनी ॥२॥

वाससए वाससए
एक्केके अवहडंमि जो कालो ।
सो कालो बोधव्वो
उवमा एगस्स पल्लस्स ॥ २ ॥

भावार्थः—ते वालग्र सो सो वरसे एकेको काढे ते काढतां काढतां जेटले काळे ते कुवो खाली थाय तेटला काळने एक पल्योपमनुं मान जाणवुं ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एकह्या जे प० पल्योपमनी को० कोडाकोडि ह० होय द० दसगुणा तं० ते सा० सागरोपमनुं उ० वळी ए० एकनुं भ० होय प० प्रमाण ॥३॥

एएसिं पल्लाणं
कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ
एगस्स भवे परीमाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—ए पल्योपमने दश क्रोडाक्रोडी गुणा करवाथी सागरोपम थाय एटले दश क्रोडाक्रोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय ॥३॥

अर्थः—दु० वे भेदे को० क्रोध पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं आ० आत्माथी उपनो ते क्रोध चे० वळी प० परना वचनथी उपन्यो ते चे० वळी ॥१॥

१० पेरा (आ पल्योपमवडे जे क्रोध वगेरेना फळभुत कर्मोनी स्थीती कहेवाय छे तेनुं स्वरुप निरुपण करवाने कहे छे)

दुविहे कोहे पन्नते । तं जहा । आयपइट्ठिए चेव परपइट्ठिए चेव ॥ १ ॥

भावार्थः— वे प्रकारे क्रोध कहेलछे ते कहे छे. आत्म प्रतिष्टित ते निष्कारणे आत्माथी क्रोध उपजे अथवा भींत प्रमुखे अथडायाथी क्रोध करी भिंतादीकने हणे १, पर प्रतिष्टित ते परनां वचन सांभळीने क्रोध उपजे २, एव भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ने० नारकीन जा० यावत वे० वैमानिकने ॥ २ ॥

एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥२॥

भावार्थः—एम नारकीथी मांडी वैमानीक सुधी चोवीस दंडके आत्म प्रतिष्टित १, परप्रतिष्टीत २, ए वे प्रकारे क्रोध जाणवो ॥२॥

अर्थः—ए० एम जा० यावत मि० मिथ्या द० दर्शन स० सल्यना वे भेद जाणवा ॥३॥

एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम यावत मिथ्यात्व दर्शन शल्यादिक अढार पापस्थानक लगी आत्म प्रतिष्टित १, पर प्रतिष्टित २, ए वे वे भेद जाणवा ॥३॥

अर्थः—दु० वे प्रकारे सं० संसार स० समापन्न जी० जीव पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं त० त्रस चे० वळी था० थावर चे० वळी.

११ पेरा (उपर कहेल विशेषणवाळा पापस्थानको संसारी जीवोनाज होयछे तेथी तेनाज भेदो कहे छे)

दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता । तं जहा । तसा चेव थावरा चेव ॥

भावार्थः—वे प्रकारे संसारना जीव कहेल छे ते कहेछे, त्रसते वे इंद्रिथी मांडी पचेंद्रि सुधीना जीव १, स्थावर ते पृथ्वीयादीक एकेंद्रिना जीव २, ए वे भेदछे

अर्थः—दु० वे भेदे स० सर्व जी० जीव पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सि० सिद्ध चे० वळी अ० मोक्ष नथी गया ते चे० वळी ॥१॥

१२ पेरा (शुं संसारीक जीवोछे के बीजा पण जीवोछे? एम उभयपणुं बतावबाने तेरसुत्र कहेछे)

दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता । तं जहा । सिद्धा चेव असिद्धा चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—अथवा वे प्रकारे सर्व जीव कहेलछे ते कहेछे, एक सिद्धना जीव मोक्ष पाम्या ते १, बीजा असिद्धना जीव मोक्ष पाम्या नथी ते २ ए वे भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—दु० वे भेदे स० सर्व जी० जीव पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं स० इंद्रि सहित चे० वळी अ० अनेंद्रि ते सिद्ध चे० वळी ॥२॥

दुविहा सव्वजीवा पण्णता । तं जहा । सइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव ॥२॥

भावार्थः—अथवा वे प्रकारे सर्व जीव कहेलछे ते कहेछे, इंद्रिय सहीत ते एकेंद्रीथी मांडी पचेंद्री सुधीना जीव १, बीजा अनिंद्रीय ते इंद्रीय रहीत सिद्धना जीव २, ए वे भेदछे ॥२॥

अर्थः—ए० एम ए० ए गा० गाथा फा० १३ बोलनी जाणवी जा० यावत स० शरीर सहित चे० वळी अ० मोक्षना जीव चे० वळी सि० सिद्ध स० सइंद्री का० सकायी जो० जोगी वे० सवेदी क० कषायी ले० लेशी य० वळी ना० ज्ञानी उ० ज्ञानोपयोगी आ० आहारी भा० भाष्यावंत च० चरिम य० वळी स० शरीरी ते संसारी ॥३॥

एवं एसा गाहा फासेयव्वा जाव सरीरी चेव असरीरी चेव ।

सिद्धसइन्दियकाए
जोगे वेए कसायलेसा य ।
नाणुवओगाहारे
भासगचरिमे य सरीरी ॥ ३ ॥

भावार्थः–एम गाथाने अनुसारे तेर बोल जाणवा ते कहेछे, सिद्ध असिद्ध १, सइंद्री अनिंद्री २, काया सहित काया रहित ३, योग सहित योग रहित ४, वेद सहित वेद रहित ५, कषाय सहित कषाय रहित ६, लेशा सहित लेशा रहित ७, ज्ञान सहित ज्ञान रहित ८, ज्ञानना उपयोगी दर्शनना उपयोगी ९, आहारि अणाहारि (विग्रह गतीवंत १, केवळी समुद्घात करे ते वखते २, चौदमे गुण ठाणे अयोगी होयते वखते ३, सिद्ध ४, ए चार अणाहारिछे) १०, भाष्या सहित भाष्या रहित ११, चरमते तेहज भवे मोक्षजाय अचरमते वीजा जीव १२, शरिरी अशरिरी १३, ए तेर बोलमां पूर्वोक्त प्रमाणे वे वे भेद जाणवा ॥३॥

अर्थः–दो० वे म० मरण स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरे स० श्रमणने नि० निग्रंथने नो० नथी नि० सदा व० वर्णव्यां वखाण्या नथी नो० नथी नि० सदैव कि० आदरवां कह्यां नथी नो० नथी नि० नित्ये पू० स्तव्यां प्रसंस्या नथी नो० नथी नि० नित्ये प० पुजा पामे नही नो० नथी नि० नित्ये अ० आज्ञादीधी नथी भ० भगवंते तं० ते ज० कहुंछुं व० संयमथी पडतो जलमां बुडी मरे चे० वळी व० इंद्रिने परवश पणे मरे चे० वळी ॥ १ ॥

१३ पेरा–(आ मरण अने अमरण धर्मवाळा संसारी अने सिद्ध जीवो अप्रशस्त अने प्रशस्त मरणथी थाय छे तेथी प्रशस्त अने अप्रशस्तनी निरुपणा नव सूत्रथी करेछे)

दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निगन्थाणं नो निच्चं वण्णियाइं नो निच्चं कित्तियाइं नो निच्चं पूइयाइं नो निच्चं पसत्थाइं नो निच्चं अब्भणुन्नायाइं भवन्ति । तं जहा । वलयमरणे चेव वसट्टमरणे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः–शरिरिने मरण होय ते माटे मरणनो अधिकार कहेछे. श्रमण भगवंत महावीर देवे श्रमण तपश्वी निर्ग्रंथते कर्मनी गांठ रहित एवा साधुने वे प्रकारना मरण नित्य सदाय वर्णव्या नथी, वखाणां नथी, नित्ये कित्या नथी, नित्ये आदरवां कह्यां नथी, नित्ये पुजीत नथी, अर्थात् एथी पुजा न पामे, नित्ये प्रसंस्या स्तव्यां नथी, सदाय आज्ञा आपी नथी, जे करजो (कोइ शियलादि राखवाने कारणे वार्या नथी) वलयमर्ण ते संयमथी पडतो परिसहथी भागी मरे १, जेम दीवो देखी पतंगीयो मरे एम इंद्रियने परवश पणे मरे २ ॥ १ ॥

अर्थः–ए० एम नि० नियाणुं करी मरे चे० वळी त० तेइज भवने योग्य आउखुं बांधी मरे चे० ते ॥ २ ॥

एवं नियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः–एम रिद्धिआदीकनुं नियाणुं करी मरे ते माटुं मर्ण कहेलछे ३, तेहिज भवने योग्य आउखुं बांधीने मरे ते तद्भव मर्ण ए संख्याता वर्षना आउखावाळा मनुष्य तिर्यंचने होय ४ ॥ २ ॥

अर्थः–गि० पर्वत उपर पडी मरेते चे० वळी त० वृक्षथी पडी मरे चे० ते ॥ ३ ॥

गिरिपडणे चेव तरुपडणे चेव ॥३॥

भावार्थः—पर्वतथी झंपापात खाइने मरे ५, वृक्षथी पडीमरे ६ ॥ ३ ॥

अर्थः—ज० पाणीमां झंपावे चे० वळी ज० अग्नीमां झंपावी मरे चे० वळी ॥ ४ ॥

जलप्पवेसे चेव जलणप्पवेसे चेव॥४॥

भावार्थः—पाणीमां झंपावी मरे ७, अग्निमां पेसी मरे ८ ॥ ४ ॥

अर्थः—वि० विषपाई मरे चे० वळी स० शस्त्र लई आपघात करे चे० वळी ॥ ५ ॥

विसभक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः—विषखाइने मरे ९, कटारी तलवार प्रमुख शस्त्र मारी मरे १० ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० बे म० मर्ण जा० यावत नो० नथी नि० नित्ये अ० आज्ञादीधी भ० भगवंते का० कारणे शीयलादिक राखवा निमित्ते पु० वळी अ० वार्या नथी तं० ते ज० कहुंछुं वे० आकाश मरण वृक्षनी शाखाए गलो बांधी चे० वळी गि० कलेवरमां पेसी गिध्र पंखी पासे काया खवरावी मरे ते चे० वळी ॥ ६ ॥

(अप्रशस्त मरण थया पछी ते भव्यने प्रशस्त पण थायछे ते बतावे छे)

दो मरणाइं जाव नो निच्चं अब्भणुन्नायाइं भवन्ति कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइं । तं जहा । वेहाणसे चेव गिद्धपट्ठे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थः—वळी बे मर्णनी भगवंते आज्ञा दीधी नथी पण शियळादि राखवाने कारणे वार्या नथी ते बेनां नाम कहे छे, आकाशमर्ण ते वृक्षनी शाखाये गळुं बांधी मरे ते आकाशमरण ११, गृद्ध पृष्ट मरण ते उंट प्रमुखना कलेवरमां पेसी गृद्ध पंखी पासे खवरावे १२, ए १२ प्रकारना अकाममर्ण शियळादी राखवाने कारणे निषेध्यां नथी पण अन्यथा निषेध्यां छे, ए बार प्रकारनां अप्रशस्त (नहीं वखाणवा लायक) मरण कह्यां छे ॥६॥

अर्थः—दो० बे म० मर्ण स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरे स० तपस्वीने नि० निग्रंथने नि० नित्ये व० वर्णव्या छे जा०यावत अ० आज्ञा भ० दीधी भगवन्ते तं० ते ज० कहुंछुं पा० छेदी वृक्षनी डाळनी पेरे चेष्टा रहित चे० वळी भ०भात पाणीना जावजीव सुधी प०पच्चखाण करे पण हाले चाले ते चे०वळी ॥७॥

(अप्रशस्त मरण थया पछी ते भव्यने प्रशस्त पण थाय छे ते बतावे छे.)

दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गन्थाणं निच्चं वण्णियाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवन्ति। तं जहा । पाओवगमणे चेव भत्तपच्चक्खाणे चेव ॥ ७ ॥

भावार्थः—हवे बे प्रकारनां प्रशस्त (वखाणवा लायक मरण) भव्यने होय ते श्रमण भगवंत श्री महावीरदेवे श्रमण निग्रंथने सदाय वखाण्यां छे यावत आज्ञा दीधी छे ने भलुं छे ते करो ते बे मरणनां नाम कहे छे, एक पादोगमन मरण ते वृक्षनी कापी डाळनी पेरे चेष्टारहीत रहेवुं ते १, बीजुं भक्तपचखाण ते आहारपाणीनुं जावजीव सुधी पचखाण करवुं पणहरवाफरवा चालवानी छुटी २, एबेभेदछे॥७॥

अर्थः—पा० पादोपगमन दु० बे प्रकारे प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं नी० शरीर संस्कार नगर बाहेर काढे ते चे०वळी अ०गिरि गुफामां जड करे चे० वळी नि० निश्चे अ० शरीरनी सुश्रुषा रहित अने पडीकमणा रहितछे ॥८॥

पाओवगमणे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा । नीहारिमे चेव अनीहारिमे चेव ।

नियमं अप्पडिकम्मे ॥ ८ ॥

भावार्थः—पादोपगमन वे प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, नीहारिम ते वस्तीमांही संथारो करे तो शवने गामनी बाहीर लइ जाय १, अनीहारिम ते गिरिगुफामां जइ करे तेहनुं निहारण थाय नहीं, ए वे पादोपगमन निश्चे शरीरनी सुश्रुषा अने पडीकमणा रहीत होय ॥८॥

अर्थः—भ० भातपाणी दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं नी० वसातिमां चे० वळी अ० अटवीमां चे० वळी नि० निश्चे स० सुश्रुषा सहित अने पडिकमणा सहित छे ॥९॥

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । नीहारिमे चेव अनीहारिमे चेव । नियमं सप्पडिकम्मे ॥ ९ ॥

भावार्थः—भक्तप्रत्याखान मरण वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एक नीहारिम १, वीजुं अनीहारिम २, ए निश्चे शरिरनी शुश्रुषा अने पडीकमणां सहीत होय ॥ ९ ॥

अर्थः—के० कोण अ० ए लो० लोक जी० जीव चे० वळी अ० अजीव चे० वळी ॥१॥

१४ पेरा (आ मरण आदी स्वरुप भगवाने लोकनी अंदर परुपेलुं छे तेथी लोक स्वरुपनी प्ररुपणा करवाने माटे प्रस्न करीने कहे छे.)

के अयं लोए । जीव च्चेव अजीव च्चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—ए मरणादी स्वरुप भगवंते लोकमांही कहेल छे ते माटे लोकनुं स्वरुप कहे छे, गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु? कोण ए लोक कह्यो ॥ १ ॥

अर्थः—के० कोण अ० अंत नथीते लो०लोक जी०जीव चे०वळी अ०अजीव चे०वळी ॥२॥

के अणन्ता लोए । जीव च्चेव अजीव च्चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—गुरु कहेता हवा के हे शिष्य वे प्रकारे लोक कह्यो ते कहे छे जीव १, अने अजीव २, छ द्रव्यरुप लोकछे ए वे भेदछे ॥२॥

अर्थः—के० कयो सा० साश्वतो लो० लोक जी०जीव चे०वळी अ०अजीव चे० वळी ॥३॥

के सासया लोए । जीव च्चेव अजीव च्चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु धर्मास्तिकायादीक जेहनो अंत नथी ते कोयो लोक, गुरु कहेता हवा के हे शिष्य ? एहज जीव १, अने अजीव २, ए छ द्रव्यनो अंत नथी, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दु० वे भेदे बो० धर्म प्राप्ति पं०कही तं० ते ज० कहे छे ना० ज्ञाननी प्राप्ति चे० वळी दं० सम्यकत्वनी प्राप्ति चे० वळी ॥१॥

१५ पेरा (आजे अनंता शास्वता जीवोछे ते बोधीमोक्ष लक्षण धर्मना योगथी बद्ध अने मुक्त होय छे ते बतावबाने चार सूत्र कहे छे.)

दुविहा बोही पन्नत्ता । तं जहा । नाणबोही चेव दंसणबोही चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु? शास्वतो लोक कीयो? गुरु उत्तर कहेता हवा हे शिष्य? एहज जीव १, अने अजीव २, ए वे सदाय शास्वता छे ए वे भेद छे. ए छ द्रव्यमां जीव द्रव्यबोधि (ते जीनधर्मनी प्राप्ती) पामे ते बोधिना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, ज्ञानबोधी ते ज्ञानावर्णी कर्मना क्षयथी अवधी ज्ञानादीकनी प्राप्ती १, दर्शनबोधी ते दर्शनमोहनी कर्मना क्षयथी समकितप्राप्ती २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—दु० वे भेदे बु० बुद्ध पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ना० ज्ञानबुद्ध चे० वळी दं० दर्शनबुद्ध चे० वळी ॥ २ ॥

दुविहा बुद्धा पन्नत्ता । तं जहा । नाणबुद्धा चेव दंसणबुद्धा चेव ॥२॥

भावार्थः—ज्ञानदर्शन सहित होय ते बुद्ध कहीये, ते बुद्ध बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. एक ज्ञानबुद्ध १, बीजो दर्शनबुद्ध २, ए ज्ञान-दर्शन माटे बे कह्या पण जीवआश्री एकज ज्ञान-दर्शन एकमांज होय ए सहचारि(साथे) छे ॥२॥

अर्थः—ए० एम मो० ज्ञान मोह ॥ ३ ॥

एवं मोहे ॥ ३ ॥

भावार्थः—एमज मोह तेहना बे भेद ज्ञान-मोह ते ज्ञानमां मुंझाय १, दर्शनमोह ते समकितमां मुंझाय २, ए बे भेद छे ॥३॥

अर्थः—मू० मूर्खज्ञान मोह ॥ ४ ॥

मूढा ॥ ४ ॥

भावार्थः—एमज मुढमुर्ख तेहना बे भेद मुर्ख ज्ञानमोह १, मुर्ख दर्शनमोह २ ॥४॥

अर्थः—ना० ज्ञानावरणि क० कर्म दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं दे० मति ज्ञानादिकने ढांक्या ते चे० वळी स० सर्व ना० ज्ञान ते केवलज्ञान ढांके ते चे०वळी ॥१॥

१६ पेरा (बे प्रकारनो पण आ मोह ज्ञानावरणादी कर्म बांधवानुं कारण छे ते संबंधथी ज्ञानावरणादी कर्मनुं आठ सूत्रवडे द्वी विधपणुं कहे छे)

नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । देसनाणावरणिज्जे चेव सव्वनाणावरणिज्जे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—मोह (मुंझावुं) ते ज्ञानावर्णिथी बंधाय छे, ते ज्ञानावर्णिना बे भेद ते कहे छे, एक देश ज्ञानावर्णि ते मति ज्ञानादिक ढांके १, बीजुं सर्व ज्ञानावर्णि ते केवळज्ञान ढांके २, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः—द० दर्शनावरणीय क० कर्म ए० एम चे० वळी ॥ २ ॥

दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव ॥२॥

भावार्थः—एमज दर्शनावर्णिना पण बे भेद कहेछे, देशथी ते चक्षु दर्शनावर्णिय अचक्षु दर्शनावर्णि, अवधी दर्शनावर्णि १, सर्वथी ते पांच निंद्रा केवळ दर्शनावर्ण ए बे भेद छे. २ ॥२॥

अर्थः—वे० वेदनीय क० कर्म दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सा० साता सुखनुं कारण सर्व भातना चे० वळी अ० असाता वेदनी ते दुःख चे० वळी ॥ ३ ॥

वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । सायावेयणिज्जे चेव असायावेयणिज्जे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम वेदनी कर्म ते मध तथा अफीणे खरडी खडगनी धारा जेवुं तेह बे प्रकारे कहेलछे ते कहेछे, एक शाता वेदनी ते सुख १, बीजुं अशाता वेदनी ते दुःख २, ए बे भेद छे ॥३॥

अर्थः—मो० मोहनी क० कर्म दु० बे प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं दं० दंसण मोहनी, मिथ्यात्व, मिश्रने समकित मोहनी चे० वळी च० चारित्र मोहनी ते चारित्रने मुंझवे १६ कषाय नोकषायरूप चे० वळी ॥ ४ ॥

मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । दंसणमोहणिज्जे चेव चरित्तमोहणिज्जे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थः—मोहनी कर्म मदीरापान कर्या जेवुं ते बे प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, एक दर्शनमोहनी ते समकितने मुंझवे तेहना त्रण भेद समकितमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी, मिश्रमोहनी १, बीजुं चारित्रमोहनी ते सामायकादीक चारित्रने मुंझवे कषाय नोकषायरूप २, ए बे भेदछे ॥४॥

अर्थः—आ० आयु क० कर्म दु० बे भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० कायस्थितिरुप नरतिर्यंचने चे० वळी भ० भवस्थितिनुं देव नारकीने चे० वळी ॥ ५ ॥

आउकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । अद्धाउए चेव भवाउए चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः—आउखा कर्म ते राजानी हेडसमान ते बे प्रकारे कहेलछे ते कहेछे, अधायु ते कायस्थितीरुप मनुष्य तिर्यंचने १, बीजुं भवायु ते भवस्थितीरुप देवता नारकीने २, ए बे भेदछे ॥५॥

अर्थः—ना०नाम क०कर्म दु०बे भेदे पं०कह्या तं० ते ज० कहुंछुं सु०शुभ ना०नाम कर्म तिर्थंकरादि चे० वळी अ० अशुभ ना० नाम कर्म अनादेय नाम जेनुं वचन सारुं न लागे चे० वळी ॥६॥

नामकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । सुभनामे चेव असुभनामे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थः—नाम कर्म चितारा सरीखुं तेहना बे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, एक शुभ नाम कर्म तिर्थंकरादीक १, बीजुं अशुभ नाम कर्म ते अनादेय प्रमुख २, ए बे भेद छे ॥६॥

अर्थः—गो० गोत्र क० कर्म दु० बे भेदे पं०कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं उ० उच गो० गोत्र चे० वळी नी० नीच गो० गोत्र चे० वळी ॥७॥

गोत्तकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । उच्चागोत्ते चेव नीयागोत्ते चेव ॥ ७ ॥

भावार्थः—गोत्र कर्म कुंभार सरिखुं तेहना बे प्रकार कहेलछे ते कहेछे, उंच गोत्र ते पुजनीक १, नीच गोत्र ते नींदनीक २, ए बे भेदछे ॥७॥

अर्थः—अ० अंतराय क० कर्म दु० बे भेदे पं०कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० उपजो अर्थ वि० विणसाडे (लाभनो नाश करे) चे० वळी पि० रुंधे य०वळी आ०आवता अर्थ लाभने ॥ ८ ॥

अन्तराइए कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडुप्पन्नविणासिए चेव पिहइ य आगामिपहं ॥ ८ ॥

भावार्थः—अंतराय कर्म राजना भंडारी सरिखुं तेह बे प्रकारे कहेल छे, एक प्रत्युत्पन्न विनाशी ते उपनो अर्थ विणसाडे १, पिहित आगामी अंतराय ते आवतो अर्थ लाभ रुंधे. २, ए बे भेद छे ॥८॥

अर्थः—दु० बे भेदे मु० मुर्च्छा प० कही तं० ते ज० कहुंछुं पे० रागनी मुर्छा पुत्रादिकनी चे० वळी दो० द्वेषथी मुर्छा वेरी प्रमुष चे० वळी ॥ १ ॥

१७ पेरा (आ आठ प्रकारनुं कर्म मुर्छा जन्य छे तेथी मुर्छानुं स्वरूप कहे छे)

दुविहा मुच्छा पन्नत्ता । तं जहा । पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ॥१॥

भावार्थः—ए आठ कर्म मुर्छा ते मोहथी उपजे ते माटे मुर्छानुं स्वरुप कहे छे, ते मुर्छा बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक प्रेमरागनी मुर्छा (ते अविवेकीपणुं करे) ते पुत्र धनादीक उपरे १, बीजी द्वेषथी मुर्छा ते वैरि प्रमुख उपरे २, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः—पे० प्रेमनी मु० मुर्च्छा दु० बे भेदे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं मा० कपटनी चे० वळी लो० लोभथी धनादिकनी चे० वळी ॥ २ ॥

पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । माया चेव लोभे चेव ॥२॥

भावार्थः—प्रेमवती मुर्छा बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक माया कपटादीक १, बीजी लोभथी धनादीकनी मुर्छा २, ए बे भेद छे ॥२॥

अर्थः—दो० द्वेषवर्त्तिका मु० मुर्च्छा दु० बे भेदे

पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं को० क्रोधथी चे० वळी मा० मानथी चे० वळी ॥ ३ ॥

दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । कोहे चेव माणे चेव ॥३॥

भावार्थः–द्वेषवती मुर्छा बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एक क्रोधथी १, बीजी मानथी २, ए बे भेद छे ॥३॥

अर्थः–दु० बे भेदे आ० आराधना पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं ध० चारित्र धर्म आ० आराधवो ते चे० वळी के० केवलिनी आ० आराधना चे० वळी ॥ १ ॥

१८ पेरा (मुर्छाथी उत्पन थएला कर्मनो नाश आराधनाथी थाय छे तेथी ते आराधना त्रण सूत्र वडे कहे छे)

दुविहा आराहणा पन्नत्ता । तं जहा । धम्मियाराहणा चेव केवलियाराहणा चेव ॥ १ ॥

भावार्थः–मुर्छादिक कर्मनो क्षय धर्म आराधनथी होय ते माटे आराधना कहे छे, आराधना बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, चारित्र रुप धर्म आराधवो ते धार्मिक आराधना १, केवळीने श्रुत, अवधी, मनपर्यव, केवळज्ञानरुप श्रुत आराधना २, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः–ध० धर्म आ० आराधना दु० बे भेदे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं सु० सिद्धांतनी आ० आराधना चे० वळी च० पांच महाव्रतनी सेवना चे० वळी ॥ २ ॥

धम्मियाराहणा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सुयधम्माराहणा चेव चरित्तधम्माराहणा चेव ॥ २ ॥

भावार्थः–धार्मिक आराधना बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, श्रुत धर्म ते सिद्धांतनी आराधना १, चारित्र धर्म ते पंच महा व्रतादीकनी आराधना सेवना २, ए बे भेद छे ॥२॥

अर्थः–के० केवलीनी आ० आराधना दु० बे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं अ० भवनो विछेद केवलज्ञानी मोक्ष जाय ते चे० वळी क० नवग्रीवेग, पांच अणुत्तर वि० विमाने उ० उपजे ते श्रुत केवलि प्रमुखने चे० वळी ॥३॥

केवलियाराहणा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । अन्तकिरिया चेव कप्पविमाणोववत्तिया चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः–केवळीनी आराधना बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, अंतक्रिया ते भवनो छेद करी केवळज्ञानी मोक्ष जाय १, कल्पविमानो ववतियाते जेहथी नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमाने उपजे ते केवळी प्रमुखने २, ए बे भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः–दो० बे ति० तिर्थंकर नी० नीला कमल सरिषा सा० शाम व० वर्णछे पं० ते कहे छे तं० ते ज० कहुंछुं मु० मुणिसुव्रत वीसमा तिर्थंकर चे० वळी अ० नेमिनाथ बावीसमा तिर्थंकर चे० वळी ॥ १ ॥

१९ पेरा (उपर ज्ञानादी आराधना कही तेना फळभुत तिर्थंकरो होयछे अगर तेमनेज ते रुडी रीते कहेलीछे तेथी तिर्थंकरो विशे कहेछे)

दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वण्णेणं पन्नत्ता । तं जहा । मुणिसुव्वए चेव अरिट्ठणेमी चेव ॥ १ ॥

भावार्थः–ए ज्ञान आराधनानुं फळ तिर्थंकर पद पण पामे ते माटे तिर्थंकरना वर्ण कहे छे, आ चौविसीमां बे तिर्थंकर नीला कमळ सरिखा वर्णे शाम अंजनगिरि, शाम हस्ती, मेघनी घटा, अळसीनां फुल तेहनां जेवा वर्णे

कहेल छे, वीसमा मुनिसुव्रतस्वामी १, बावीसमा अरिष्ट नेमीनाथ २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—दो० वे ति० तिर्थंकर पि० रायण वृक्ष सरिषा व० वर्णे लीला पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं म० १९ मा तिर्थंकर चे० वळी पा० २३ मा तिर्थंकर चे० वळी ॥ २ ॥

दो तित्थगरा पियङ्गुसमा वण्णेणं पन्नत्ता । तं जहा । मल्ली चेव पासे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—वे तिर्थंकर (तिर्थना करनार ते) पियंगु वृक्ष सरिखा, निलवंत पर्वत, शुक (पोपट) अने निलचास पक्षी सरिखा नीलावर्णे कहेल छे ते कहे छे, ओगणीसमा मल्लीनाथ १, त्रेवीसमा पार्श्वनाथ २, ए वे भेद छे ॥२॥

अर्थः—दो० वे ति० तिर्थंकर प० राता कमल सरिषा गो० गोरा व० वर्णे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० छठा तिर्थंकर चे० वळी वा० वारमा तिर्थंकर चे० वळी ॥ ३ ॥

दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पन्नत्ता । तं जहा । पउमप्पभे चेव वासुपुज्जे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—वे तिर्थंकर राता कमळ सरिखा, गोरा तथा निषधपर्वत, उगतो सूर्य, रातां रतन, परवाळां, जासुनां फुल ते सरिखा राता वर्णे वे तिर्थंकर कहेलछे ते कहेछे; छठा पदमप्रभु १, बारमा वासुपुज्य २, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दो० वे ति० तिर्थंकर च० चंद्रमा सरिषा गोरा व० वर्णे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं च० आठमा तिर्थंकर चे० वळी पु० नवमा तिर्थंकर चे० वळी ॥ ४ ॥

दो तित्थगरा चन्दगोरा वण्णेणं पन्नत्ता । तं जहा । चन्दप्पभे चेव पुप्फदन्ते चेव ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे तिर्थंकर चंद्र सरिखा श्वेत (धोळा) गोरा ते रुपी पर्वत, क्षीरसमुद्र, वैताढयपर्वत, मुक्ताफळ (मोती), मचकुंदनां फुल, मुक्तिसिल्ला सरिखा, उजवळ वर्णे कहेल छे, ते कहे छे, आठमा चंद्रप्रभु १, पुष्पदंत बीजुं नाम नवमा सुविधीनाथ २, ए वे भेद छे ॥४॥

अर्थः—स० सत्यवाद छे जिहां पु० छठुं पुर्वना णं० वळी दु० वे व० अध्ययन पं० कह्यां.

२० पेरा (उपर तिर्थंकरनुं स्वरुप कह्युं अने तिर्थंकरोथीज तिर्थंकरो, तीर्थ अने मवचन जणाय छे तेथी मवचनना एक देशनो जे पुर्व विशेश ते कहे छे)

सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू पन्नत्ता ॥

भावार्थः—छठुं सत्यमवाद पुर्व तेहमां सत्यवाद छे ते मवचन तेहनो एक मदेश ते चउदह छे ते वती पूर्वनो अधिकार कहे छे ते सत्यमवाद पुर्वनां वे अध्ययन कह्यां छे.

अर्थः—पु० पुर्वभद्रपद न० नक्षत्रना दु० वे ता० तारा पं० कह्या

२१ पेरा (ए उपर छठा पुर्वनुं स्वरुप कह्युं. हवे पुर्व शब्दना साम्यपणाथी पुर्वभद्रपदा नक्षत्रनुं स्वरुप कहे छे)

पुव्वभद्दवयानक्खत्ते दुत्तारे पन्नत्ते ।

भावार्थः—पुर्वाभाद्रपद नक्षत्रना वे तारा कहेल छे.

अर्थः—उ० उत्तर भद्रपद न० नक्षत्रना दु० वे ता० तारा पं० कह्या ॥ १ ॥

२२ पेरा (नक्षत्रना मस्तावथी बीजा नक्षत्रोनुं स्वरुप पण सूत्रवडे कहे छे)

उत्तरभद्दवयानक्खत्ते दुत्तारे पन्नत्ते ॥ १ ॥

भावार्थः—एमज उत्तराभाद्रपद नक्षत्रना पण वे तारा कह्या छे ॥१॥

अर्थः-ए० एम पु० पुर्वं फालगुनीना वे तारा कह्या ॥ २ ॥

एवं पुव्वफग्गुणी ॥ २ ॥

भावार्थः-एमज पुर्वाफाल्गुणी नक्षत्रना वे वे तारा कह्या छे ॥२॥

अर्थः-उ० उत्तरा फ० फालगुनी नक्षत्रना वे तारा कह्या ॥ ३ ॥

उत्तरफग्गुणी ॥ ३ ॥

भावार्थः-उतराफाल्गुणी नक्षत्रना वे तारा कह्या छे ॥ ३ ॥

अर्थः-अ० मांहि णं० वळी म० मनुष्य खे० क्षेत्रना दो० वे स० समुद्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ल० लवण समुद्र चे० वळी का० कालोदधी चे० वळी

२३ पेरा (द्वीप समुद्र नक्षत्रवाळो होय छे तेथी समुद्रने विषे कहे छे)

अन्तो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पन्नत्ता । तं जहा । लवणे चेव कालोदे चेव ॥

भावार्थः-नक्षत्र सहित द्वीपसमुद्र छे ते माटे पीस्तालीसलाख जोजन मनुष्यक्षेत्र छे तेहमां वे समुद्र छे ते कहे छे, एक लवणसमुद्र १, बीजा काळोदधी समुद्र २, ए वे भेद छे.

अर्थः-दो० वे च० चक्रवर्ति भरत क्षेत्रना अ० छांडया नहि का० कामभोग का० आवखुं का० पूर्ण कि० करीने अ० हेठे स० सातमी पु० पृथ्वीए अ० अपइठाण न० नरक वासे ने० नारकीपणे उ० उपना तं० ते ज० कहुंछुं सु० आठमो चक्रवर्त्ति चे० वळी ब० ब्रह्मदत्त वारमो चे० वळी

२४ पेरा (मनुष्यक्षेत्रनो प्रस्ताव होवाथी भरतक्षेत्रमां उत्पन्न थएला उत्तम पुरुषोनुं नरकगामीपणुं होय के न होय ते विषे कहे छे)

दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ना । तं जहा । सुभूमे चेव बम्भदत्ते चेव ॥

भावार्थः-मनुष्यक्षेत्रना अधिकार माटे चक्रवर्तिनो प्रस्ताव आव्यो तेथी चक्रवर्तिनो अधीकार कहे छे, भरतक्षेत्रमां वे चक्रवर्ति उत्तम पुरुष कामभोग छांडया वीना काळने अवसरे काळ करी (आउखुं पुर्ण करी) हेठे सातमी नर्क पृथ्वीए अप्रतिष्ठान नामे नर्कावासाने विषे नारकीपणे तेत्रीस सागरोपमने आउखे उपना तेहनां नाम कहे छे, आठमो सुभुम चक्रवर्ति १, अने वारमो ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति २, ए वे भेद छे.

अर्थः-अ० चमरेन्द्र वलेन्द्र न० वर्जिने भ० भवनपति दे० देवताने दे० कांइक ऊणी दो०वे प० पल्योपमनी ठि०स्थिति पं०कही ॥१॥

२५ (ते वे तीर्थंकरोनो नरकमां तेत्रीस सागरोपमनी स्थीती तेथी अने नारकोना संख्याता काळ सुधीनी पण स्थीती होय छे तेथी भुवनपती वीगेरेनी स्थीती दरशावतां पांच सूत्रो कहे छे)

असुरिन्दवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ १ ॥

भावार्थः-नारकीनी असंख्यात काळनी स्थीति छे तेम भवनपतिनी पण कहे छे, असुरेंद्र ते चमरेंद्र अने वलेंद्र वर्जिने बीजा नागकुमारेंद्रादीकनी जघन्य दशहजार वर्षनी उत्कृष्टी देशे कांइकऊणी वे पल्योपमनी आउखानी स्थिति कही छे अने चमरेंद्र बलेंद्रनी उत्कृष्टी सागरोपम झाझेरी स्थिति छे ॥ १ ॥

अर्थः–सो० सौधर्म क० देवलोक दे० देवतानी उ० उतकृष्टी दो० वे सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति प० कही ॥ २ ॥

सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ २ ॥

भावार्थः–एम सौधर्म देवलोके देवतानी उत्कृष्टी वे सागरोपमनी स्थिति छे ॥ २ ॥

अर्थः–ई० ईसान देवलोक क० देवलोकना दे० देवतानी उ० उत्तकृष्टी सा० झाझेरी दो० वे सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥३॥

ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥३॥

भावार्थः–ईशान देवलोके उत्कृष्टी वे सागरोपम झाझेरी स्थिति कही छे ॥ ३ ॥

अर्थः–स० सनतकुमारे त्रीजे क० देवलोके दे० देवताने ज० जघन्य दो० वे सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥ ४ ॥

सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः–सनत्कुमार त्रीजे देवलोके देवतानी जघन्य वे सागरोपमनी स्थिति कहीछे॥४॥

अर्थः–मा० चोथे क० देवलोके दे० देवतानी ज० जघ्यन दो० वे सा० झाझेरी सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥ ५ ॥

माहिन्दे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो साइरेगाइं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ५ ॥

भावार्थः–चोथे माहेंद्र देवलोके देवतानी जघन्य वे सागरोपम झाझेरी स्थिति कहीछे॥५॥

अर्थः–दो० वे क० देवलोकने विषे क० देवांगना प० कही तं० ते ज० कहुंछुं सो० सौधर्म चे० वळी ई० ईसाने चे० वळी ॥१॥

२६ पेरा (देवलोकनो प्रस्ताव होवाथी स्त्री वगेरे द्वारोथी देवलोक संबंधी बीजुं ठाणुं सात सूत्रथी कहे छे)

दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः–देवताना अधीकार माटे देवीनो अधिकार कहे छे, वे देवलोकने विषे देवलोकनी स्त्री देवांगना छे ते कहे छे, सौधर्म देवलोके १, ईशान देवलोके २, ए वे देवलोके देवांगना छे ॥ १ ॥

अर्थः–दो० वे क० देवलोकने विषे दे० देवताने ते० तेजु ले० लेस्या पं० कही तं० त ज० कहुंछुं सो० सौधर्म देवलोके चे० वळी ई० ईसाने चे० वळी ॥ २ ॥

दोसु कप्पेसु देवा तेउलेसा पन्नत्ता। तं जहा। सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥२॥

भावार्थः–वे देवलोके देवताने तेजुलेशा कहीछे, सोधर्म देवलोके १, ईशान देवलोके२॥२॥

अर्थः–दो० वे क० देवलोकने विषे दे० देवताने का० कायाए भोग छे स्त्री साथे पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं सो० सौधर्म देवलोके चे० वळी ई० ईसान देवलोके चे०वळी॥३॥

दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पन्नत्ता। तं जहा। सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः–वे देवलोकने विषे देवता कायाये करी देवांगनानी साथे मनुष्यनी पेरे भोग भोगवे छे ते वेनां नाम कहे छे, सौधर्म देवलोके १, ईशान देवलोके २ ॥३॥

अर्थः–दो० वे क० देवलोके दे० देवने फा० आलंगनादिके भोग स्त्रीनो पं० कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं स० त्रीजे चे० वळी मा० चोथे चे० वळी ॥ ४ ॥

दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । सणंकुमारे चेव माहिन्दे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थः-बे देवलोकने देवताने फरसथी ते आलींगनादीकथी स्त्रीनो भोग कहेल छे ते कहे छे, त्रीजे सनत्कुमार देवलोके १, चोथे महेंद्र देवलोके २ ॥४॥

अर्थ०-दो० बे क० देवलोके दे० देवता रु० रुप दीठाथी भोग पुर्ण करे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ब० पांचमे देवलोके चे० वळी ल० छठे देवलोके चे० वळी ॥ ५ ॥

दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । बम्भलोए चेव लन्तगे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः-बे देवलोके देवताने रुप दीठाथी भोग पुर्ण थाय छे ते देवांगनानुं रुप देखी कामाभिलाषनी इच्छा पुरी थाय छे ते कहे छे, पांचमे ब्रह्म देवलोके १, छठे लांतक देवलोके २ ॥ ५ ॥

अर्थः-दो० बे क० देवलोके दे० देवता स० शब्दथी प० भोग सेवे छे पं० एम कह्युं तं० ते ज० कहुंछुं म० सातमे चे० वळी स० आठमे चे० वळी ॥ ६ ॥

दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । महासुक्के चेव सहस्सारे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थः-बे देवलोके देवता देवांगनाना शब्दथी भोग सेवे छे, सातमे महाशुक्र देवलोके १, आठमे सहस्रार देवलोके २ ॥६॥

अर्थः-दो० बे इ० इन्द्रने म० मनथी देवांगनाना भोग पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं पा० प्राणतेंद्रनो इंद्र चे० वळी अ० अच्युतेन्द्रनो इंद्र चे० वळी ॥ ७ ॥

दो इन्दा मणपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । पाणए चेव अच्चुए चेव ॥७॥

भावार्थः-बे इंद्रने मनथी देवांगनाना भोगथी सेवा कही छे, नवमा, दशमा, इग्यारमा, बारमा, ए चार देवलोके देवता मनथी भोग भोगवे छे पण बे ठाणानो बोल छे तेथी इहां बे इंद्र कह्या छे ते कहे छे, प्रणीतेंद्र ते नवमा दशमा देवलोकनो धणी १, अच्युतेंद्र ते इग्यारमा बारमा देवलोकनो धणी २ ॥७॥

अर्थः-जी० जीव णं० वळी दु० बे ठा० थानके नि० उपजे पो० पुदगल पा० पाप कर्म चि० ग्रहता हवा अतीत काले वा० अथवा चि० ग्रहे छे वर्त्तमानकाले वा० अथवा चि० आगमिकाले ग्रहस्ये वा० अथवा तं० ते ज० कहुंछुं त० बे इंन्द्रियादिकमां नि० उपजीने भोगवे पापकर्म चे० वळी था० पृथ्वी प्रमुख पांचमा नि० उपजीने भोगवे पापकर्म चे० वळी ॥ १ ॥

२७ पेरा (आपरीचारणा कर्मथी होय छे, जीवो कर्म स्वहेतुथी त्रणे काळे चीतनी अव्यवस्थपणाथी करे छे तेथी छ सूत्रो कहे छे)

जीवा णं दुट्ठाणनिवत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणन्ति वा चिणिस्सन्ति वा । तं जहा । तसकायनिवत्तिए चेव थावरकायनिवत्तिए चेव ॥ १ ॥

भावार्थः-ए भोगादीकनी इच्छा ते जीवने बे स्थानके उपकर्मथी उपजे छे ते माटे पापकर्मनुं स्वरुप कहे छे, जीव बे स्थानके करी पापकर्मनां पुगळ अतित काळे चिण्यां (ग्रह्यां) छे, वर्तमानकाळे चिणे (ग्रहे) छे, आगमीयकाळे चिणशे (ग्रहण करशे) ते कहे छे. त्रसकाय निवर्तित ते जे बे इंद्रीयादीक त्रसकायमां उ-

पजीने पापकर्मनुं भोगववुं १, स्थावर कायनिवर्तित ते पृथ्व्यादी पांच स्थावरमां अवतरी पापकर्मनुं भोगववुं २, एवा कर्म पुदगळ ग्रह्यां ग्रहे छे ने ग्रहशे, ए बे भेद छे ॥१॥

अर्थः—एम उ० एहवा पुदगल ग्रहे एम ग्रह्या कर्मनो अबोधाकाल मुकीने थापवुं विशेपथी तेहमांथी हीन करवुं एटले अबाधा काल जेटलुं छे ते उपचय अतितकाले कीधो वा० अथवा उ० वर्त्तमानकाले करेछे वा० अथवा उ० अनागतकाले करस्ये वा०अथवा ॥२॥

उवचिणिंसु वा उवचिणन्ति वा उवचिणिस्सन्ति वा ॥ २ ॥

भावार्थः—ग्रह्यां कर्मनो अबाधाकाळ मुकीने ते मांहीथी हीन करवुं एटले अबाधाकाल जेटलुं ओछुं ते उपचय कहीए, पुर्वोक्त बे स्थानके भोगववां पडे एवां कर्म पुदगळनो अतितकाळे उपचय कर्यो १, वर्तमानकाळे उपचय करेछे ने आगमीयकाळे उपचय करशे ॥२॥

अर्थः—ब० ते कर्मनुं कषायथी निकाचवुं ते बांधतो हवो वा० अथवा ब० बांधेछे वा० अथवा ब० बांधस्ये वा० अथवा ॥ ३ ॥

बन्धिसु वा बन्धन्ति वा बन्धिस्सन्ति वा ॥ ३ ॥

भावार्थः—अतितकाळे किधां कर्मनुं कषायथी निकाचवुं (मजबुत करवुं) ते बंध कहीए, पुर्वोक्त बे स्थानके भोगववां पडे एवां कर्म पुदगळ बांध्यां, बांधे छे ने बांधशे ॥३॥

अर्थः—उ० एमज उदीरणा जे उदय कर्म नथी आव्युं ते कारणे बलातकार उदय आणे ते उदीरणा उदीरतो हवो वा० अथवा उ० उदे छे वा० अथवा उ० उदीरस्ये ॥ ४ ॥

उदीरिंसु वा उदीरेन्ति वा उदीरिस्सन्ति वा ॥ ४ ॥

भावार्थः—जे कर्मउदय नथी आव्यां ते कारणथी बलात्कारे उदय आणे ते उदीरणा कहीए, पुर्वोक्त बे प्रकारनां कर्म जीवे उदेर्यां उदिरे छे ने उदीरशे ॥४॥

अर्थः—वे० वेदवो ते भोगववुं ते वेदतो हवो वा० अथवा वे० वेदे छे वा० अथवा वे० वेदशे वा० अथवा ॥ ५ ॥

वेदिंसु वा वेदेन्ति वा वेदिस्सन्ति वा ॥ ५ ॥

भावार्थः—एमज पुर्वोक्त बे प्रकारनां कर्म वेदता (भोगवता) हुआ, वेदेछे ने वेदशे ॥५॥

अर्थः—नि० कर्म भोगव्या पछी उदय नही ते निर्जरतो हवो वा० अथवा नि० निर्जरे छे वा० अथवा नि० निर्जरशे वा० अथवा ॥६॥

निज्जरिंसु वा निज्जरेन्ति वा निज्जरिस्सन्ति वा ॥ ६ ॥

भावार्थः—एमज पुर्वोक्त बे प्रकारनां कर्मनी निर्जरा जे कर्म भोगव्या पछी अकर्म थाय ते निर्जरता हुआ, निर्जरेछे ने निर्जरशे ॥६॥[चिणवुं १, उपचीणवुं २, बांधवुं ३, उदीरवुं ४, वेदवुं ५, निर्जरवुं ६, ए छ बोल थया]॥६॥

अर्थः—दु० बे प० प्रदेशिया खं० षंध अ० अनंता पं० कह्या ॥ १ ॥

२८ (द्रव्यक्षेत्र काळभावथी पुदगळनी नीरुपणा कहे छे)

दुपएसिया खन्धा अणन्ता पन्नत्ता ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण काळे ए जीवत्रसस्थावरपणे कर्म ते पुदगळरुप छे ते पुदगळनुं स्वरुप कहेछे, बे प्रदेशीया पुदगळना खंध अनंतछे॥१॥

अर्थः—दु० बे प० आकाशना प्रदेशने अवगाही रह्या एहवा पो० पुदगळ अ० अनंता प० कह्या ॥ २ ॥

दुपएसोगाढा पोग्गला अणन्ता पन्नत्ता ॥ २ ॥

भावार्थः—बे आकाशना प्रदेशने अवगाही ते आश्रयी रह्यांछे एवां अनंता पुदगळ छे ॥२॥

अर्थः—दु० बीजा ठा० ठाणानो च०चोथो उ० उदेसो स० पुरो थयो.

दुट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसओ समत्तो॥

भावार्थः—एम यावत वे गुण लुख्खा पुदगळ अनंताश्री तिर्थंकर देवे कह्यां छे)

अर्थः—दु० बीजुं ठा० ठाणुं स० पुरु थयुं.

॥ दुट्ठाणं समत्तं ॥

भावार्थः—(इतिश्री बीजा ठाणाना चोथा उदेशानो भावार्थ संपूर्णम्)

इतिश्री बीजा ठाणानो भावार्थ संपूर्ण.

[अह तिट्ठाणं ।]

[अह तिट्ठाणस्स पढमो उद्देसओ ।]

अर्थः—त० त्रण इ० इन्द्र पं० कह्यां तं० ते ज० कहुं छुं ना० नामथी इंद्र ठा० स्थापना इन्द्र द० देवेंद्र जे आवते भवे इन्द्र थाय॥१॥

(बीजा अध्ययनना छेला उदेशामां जीव अने अजीवना पर्याय कह्या अने आ अध्ययनना पेहेला उदेशामां पण तेनाज पर्याय कहे छे. छेला उदेशाना छेला सुत्रमां पुदगळ धर्म कह्या हता अने आ उदेशाना पेहेला सुत्रमां जीव धर्म कहे छे. आ प्रमाणे छेला ने आ उदेशानो संबंध छे.)

१. तओ इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । नामिन्दे ठवणिन्दे दविन्दे ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारना इंद्र श्री तिर्थंकर देवे कहेलछे ते कहेछे, नाम इंद्र ते इंद्रना गुण रहित फक्त नामथीज इंद्र जेम गोवालणीये मोह घेलाइए पोताना पुत्रनुं नाम इंद्र पाडयुं, गोपेंद्र, सुमीद्र, अक्षरथी इंद्र, सिंह इत्यादि नाम इंद्र १, स्थापना इंद्रते इंद्रनो आकार बनावे २, द्रव्य इंद्र ते कोइ भव्यजीव आवते भवे इंद्र थवानो होयते ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ते० त्रण इ० इन्द्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ना० ज्ञानेन्द्र केवळी दं० दर्शनेंद्र क्षायिक समकिति च० चारितेंद्र यथाख्यात चारित्रीयो ॥ २ ॥

(नाम इन्द्र, स्थापना इन्द्र अने द्रव्य इन्द्र कह्या, हवे भाव इन्द्र कहे छे)

तओ इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । नाणिन्दे दंसणिन्दे चरित्तिन्दे ॥ २ ॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे इंद्र कहेलछे ते कहेछे, ज्ञानेंद्रते पुर्ण ज्ञानवंत केवळी १, दर्शनेंद्र ते क्षायिक समकितनो धणी २, चारितेंद्र ते यथाख्यात चारित्रनो धणी ३, ए त्रण भेदछे॥२॥

अर्थः—त० त्रण इ० इन्द्र पं० कह्यां तं० ते ज० कहुं छुं. दे० वैमानिकना अ० भवनपतिना म० चक्रवर्ति ॥ ३ ॥

(अध्यात्मिक ऐश्वर्यनी अपेक्षाए भावइन्द्रना त्रण प्रकार कह्या. हवे ऐश्वर्यनी अपेक्षाए भाव इन्द्रना त्रण प्रकार कहे छे)

तओ इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । देविन्दे असुरिन्दे मणुस्सिन्दे ॥ ३ ॥

भावार्थः–वळी त्रण प्रकारना इंद्र कहेलछे ते कहे छे, देवेंद्र ते जोतिषी वैमानिकना इंद्र १, असुरेंद्र ते भवनपती व्यंतरना इंद्र २, मनुष्यइंद्र ते चक्रवर्त्यादीक मनुष्यनो इंद्र ३, ए त्रण भेदछे ॥ ३ ॥

अर्थः–ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं वा० भवधारणी शरीरने अवगाहिने जेटलुं क्षेत्र रह्युं छे तेथी अलगा क्षेत्रना पो० पुदगल प० (विक्रय समुदघाते करी) ग्रहीने नवा रुपनी ए० एक वि० विकुर्वणा ते वा० वाहिर क्षेत्रना पो० पुदगल अ० अणलीधे ए० एक वि० विकुर्वणा वा० वाह्य क्षेत्रना पो० पुदगल प० लेइने वि० वळी अ० लीधा विना एटले कांइक मुलगा शरीरना केटलाक वाह्य पुदगल लेईने वि० वळी ए० एक वि० विकुर्वणाकरे ते ॥ १ ॥

२ पेरा (आ त्रणनुं इन्द्रपणुं वैक्रिय करवुं विगेरे शक्ति सहितपणाने लीधेछे तेथी विकुर्वणानुं स्वरुप कहे छे).

तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता । तं जहा। वाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता एगा विउव्वणा। वाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता एगा विउव्वणा। वाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता वि अपरियादिइत्ता वि एगा विउव्वणा ॥ १ ॥

भावार्थः–ए त्रण प्रकारना इंद्रने वैक्रेय विकुर्वणा (धारे तेवुं रुप वनाववानी शक्ति) होय ते माटे विकुर्वणानो अधिकार कहेछे, त्रण प्रकारे विकुर्वणा कही ते कहेछे, भवधारणी जे मुळ शरिर अवगाही जेटलुं क्षेत्र रह्युं छे तेहथी अलगा क्षेत्रनां पुदगल वैक्रेय समुद्घाते करी ग्रहीने जे नवा रुपनी विकुर्वणा करे ते एक विकुर्वणा १, जे वाह्यक्षेत्रनां पुदगळ लीधा विना मुळगाज शरिर मांहिलां पुदगळ विशिष्ट ग्रहीने विकुर्वणा करे ते वीजी विकुर्वणा २, वाह्य पुदगळ ग्रहीने केटलाएक मुळ शरिरनां पुदगळ ग्रहीने विकुर्वणा करेते त्रीजी विकुर्वणा ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः–ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं अ० मुलगे शरीरे जे क्षेत्र प्रदेशे अवगाह्या पो० पुदगल प० लइने विकुर्वणा करे ते ए०एक वि०विकुर्वणा अ०अभ्यंतर पो० पुदगल अ० अणग्रहे ए० एक वि० विकुर्णवा अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प० कांइक ग्रहीने वि० वळी अ० कांइक अणग्रहीने वि० वळी ए० एक वि० विकुर्वणा ॥२॥

तिविहा विउव्वणा पन्नता । तं जहा । अब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता एगा विउव्वणा। अब्भन्तरए पोग्गले अपरियादिइत्ता एगा विउव्वणा। अब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता वि अपरियादिइत्ता वि एगा विउव्वणा ॥ २ ॥

भावार्थः–वळी त्रण प्रकारे विकुर्वणा श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे छे, अभ्यंतर पुदगळ ते भव धारणी तथा उदारिक शरिरे क्षेत्र देशे अवगाह्यां जे पुदगळ ते मांहिज विकुर्वणा करे ते एकविकुर्वणा १, अभ्यंतर पुदगळ अणग्रहीने विकुर्वणा करे ते वीजी विकुर्वणा २, एम अभ्यंतर पुदगळ कांइक ग्रहीने कांइक अणग्रहीने विकुर्वणा करे त्रीजी विकुर्वणा ३ ए त्रण भेदछे ॥ २ ॥

अर्थः–ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं०

कही तं० ते ज० कहुं छुं वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प० ग्रहीने ए० एक वि० विकुर्वणा वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल अ० अणग्रहीने ए० एक वि० विकुर्वणा वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प० ग्रहीने वि० वळी अ० कांइक अणग्रहीने वि० वळी ए० एक वि० विकुर्वणा ॥ ३ ॥

तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता । तं जहा । बाहिरब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता एगा विउव्वणा। बाहिरब्भन्तरए पोग्गले अपरियादिइत्ता एगा विउव्वणा बाहिरब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता वि अपरियादिइत्ता वि एगा विउव्वणा ॥३॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे विकुर्वणा कही छे ते कहेछे, बाह्य अने अभ्यंतर पुदगळ ग्रहीने एक विकुर्वणा १, बाह्य अभ्यंतर पुदगळ अणग्रहीने एक बीजी विकुर्वणा २, बाह्य अभ्यंतर पुदगळ कांइक ग्रहीने कांइक अणग्रहीने एक त्रीजी विकुर्वणा, इहां केटलाएक भाव बहुश्रुत गम्यछे ३, ए त्रण भेदछे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे न० नारकी प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं क० एक समये संख्याता उपना ते अ० एक समये असंख्याता उपजे ते अ० समये एकको उपजे ते ॥१॥

३ पेरा (उपर विकुर्वणा कही ते नारकने पण होय तेथी नारकोनुं स्वरुप कहे छे).

तिविहा नेरइया पन्नता । तं जहा । कइसंचिया अकइसंचिया अवत्तव्वगसंचिया ॥ १ ॥

भावार्थः—विकुर्वणा नारकीनें होय ते माटे नारकीनो अधिकार कहेछे, त्रण प्रकारे नारकी कहेलछे ते कहेछे, नर्कमां उपजवानी वेळाए एक समये एक बे त्रण यावत संख्याता सुधी जेटला साथे उपना ते कति संचिता नारकी १, एक समये असंख्याता सुधी जेटला साथे उपनाते अकति संचिता नारकी २, समये समये एकेको उपजे अवक्तव्य संचिता नारकी ३, एक समये ए त्रण प्रकारछे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ए० एकेंद्रि वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे जाणवुं ॥२॥

(कति संचित विगेरे भेद असुर विगेरेना पण होय तेथी ते पण बतावे छे.)

एवं एगिन्दियवज्जा जाव वेमाणिया ॥ २ ॥

भावार्थः—एम एकेंद्री वर्जिने वैमानीक सुधी चोविस दंडके कति संचिता १ अकति संचिता २ अवक्तव्य ३ ए त्रणे प्रकारेछे अने एकेंद्रीमां एक समये असंख्याता अनंता उपजे पण बे यावत् संख्याता न उपजे तेथी अकति शब्द एकज आवे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० देवतानी मैथुन सेवा प० कही तं० ते ज० कहुंछुं ए० कोइ एक दे० देव अ० थोडी रुद्धिनो दे० धणी ते अ० अनेरा दे० देवतानी दे० देवीने अ० वश करीने अ० वश करीने प० भोगवे अ० पोतानी दे० देवीने अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे अ० पोतज अ० आत्माने वि० विकुर्वी वि० विकुर्वीने प० भोगवे ए० कोइ एक दे० देवता नो० नही अ० बीजा रुद्धिवंत दे० देवता नो० नही अ० बीजा दे० देवनी दे० देवीओ अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे, अ० पोतानी दे० देवीने अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे, अ० पोतानी मेळे अ० आत्माथी वि० विकुर्वी वि० विकुर्वीने प० भोगवे ए० एक दे० देवता नो० नही अ० अन्य दे० देव नो० नही अ० अन्य

दे० देवनी दे० देवी नो० नही अ० पोतानी अ० पोतेज अ० आत्माथी वि० विकुर्वी वि० विकुर्वीने प० भोगवे.

४ पेरा (उपरला सूत्रोमां वैमानिक देवनो कति संचित विगेरे धर्म कह्यो, हवे देवनो सामान्य रीते परिचारणा धर्म कहे छे.)

तिविहा परियारणा पन्नत्ता । तं जहा । एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय परियारेइ, अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय परियारेइ, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगे देवे नो अन्ने देवे नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय परियारेइ, अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय परियारेइ. अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगे देवे नो अन्ने देवे नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ नो अप्पणिज्जियाओ अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेइ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे परिचारणा ते देव मैथुन (विषय) सेवा कहेलछे ते कहेछे, सघळा नहीं पण कोइक देवता पोताथी थोडी रुद्धिवाळा बीजा देवतानी देवीने वश करिने भोग भोगवे एटले पारकी देवीने वश करिने भोग भोगवे १, कोइक पोतानीज देवांगनाने आश्रीने आलिंगी आलिंगीने भोगवे एटले देवता पोतानीज देवीने भोगवे २, अथवा पोतेज आत्माथीज विकुर्वि भोग योग्य देवांगनानुं शरीर करी पछी तेनी साथे भोग भोगवे ३, ए त्रण बोल मळीने एक परिचारणा कही १ कोइक देवता बीजाथी रुद्धिवंत बीजा देवतानी देवीने वश करीने भोगवे ए प्रथम प्रकार नथी पण पोतानी देवांगनाने भोगवे १, अने आत्माथी विकुर्विनें भोगवे २, ए बे प्रकारछे ए बीजी परिचारणा कही २, एक देवता बीजाथी रुद्धिवंतछे तो पण अन्यदेवतानी देवीने भोगववाने असमर्थ तेमज पोतानी देवीने पण भोगववाने असमर्थ एटले ए बे भेद नथी पण आत्माथी विकुर्वणा करी देवांगनाने भोगवे ३, ए त्रीजी परिचारणा ते मैथुन सेवा कही छे ॥

अर्थः—ति० त्रण प्रकारे मे० मैथुन पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं दि० देवतानुं मा० मनुष्यनुं ति० तिर्यंचनुं ॥१॥

५ पेरा (विशेषथी मैथुन विषे कह्युं, हवे सामान्यथी परुपणा करे छे.)

तिविहे मेहुणे पन्नत्ते । तं जहा । दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खजोणिए ॥१॥

भावार्थः—देवताने पुर्वोक्त रीतीये त्रण प्रकारे मैथुन सेवा कही ते माटे ते मैथुनना भेद कहेछे, त्रण प्रकारे मैथुन कहेल छे ते कहे छे, देवतानुं १, मनुष्यनुं २, तिर्यंचनुं ३, ए त्रण अने नारकी नपुंसक छे तेथी तेहने मैथुन नथी ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—त० त्रण मे० मैथुनना ग० सेवनार छे तं० ते ज० कहुं छुं दे० देवता म० मनुष्य ति० तिर्यंच ॥ २ ॥

(मैथुन सेवनार कहे छे.)

तओ मेहुणं गच्छन्ति । तं जहा । देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया ॥२॥

भावार्थः—त्रण मैथुनना सेवनारछे ते कहेछे, देवता १, मनुष्य २, तिर्यंच ३, ए त्रण भेदछे ॥२॥

अर्थः—त० त्रण मे० मैथुन से० सेवे तं० ते ज०कहुं छुं इ०स्त्री पु०पुरुष न०नपुंसक॥३॥

(मैथुन सेवनारना भेद कहे छे.)

तओ मेहुणं सेवन्ति । तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण मैथुनना सेवनारछे, ते कहे छे, स्त्री १, पुरुष २, नपुसक ३, ए त्रण भेदछे॥३॥

अर्थः—ति० त्रण जो० जोग (योग) पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं म० मनयोग व० वचनयोग का० काययोग ॥१॥

६ पेरा (मैथुन सेवनार योगवाळा होयछे तेथी योगनी परुपणा कहे छे.)

तिविहे जोगे पन्नत्ते । तं जहा । मणजोगे वइजोगे कायजोगे ॥ १ ॥

भावार्थः—ए त्रण योगवंतछे ते माटे योग कहे छे, त्रण प्रकारे योग (ते आत्म वीर्य) कहेलछे ते कहेछे, मननो योग ते मननो व्यापार १, वचननो योग ते वचननो व्यापार २, कायानो योग ते कायानो व्यापार ३, ए त्रण भेदछे॥१॥

अर्थः—ए० एम ने० नारकीने वि० बेन्द्रि तेन्द्रि चउरीन्द्रि व० वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिकने ॥ २ ॥

(सामान्यथी योगनी परुपणा करीछे, विशेषथी नारक विगेरे २४ दंडकोमां ते फोरवेछे)

एवं नेरइयाणं विगलिन्दियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः—एम नारकीने त्रणे योग कहेवा अने पांच एकेंद्री तथा विगलेंद्री ए आठ वर्जीने वैयानीक सुधी त्रण योग कहेवा, पांच स्थावर ने एक कायानो योग छे अने त्रण विगलेंद्री ने वचन अने काया ए बे योग छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० फोरववुं पं० कह्युं तं० ते० ज० कहुं छुं म० मनप्रयोग व० वचनप्रयोग का० कायप्रयोग ॥१॥

७ पेरा (मन विगेरेना संबंधने लीधे आ प्रयोगनी वात कहे छे.)

तिविहे पओगे पन्नत्ते । तं जहा । मणप्पओगे वइप्पओगे कायप्पओगे ॥१॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे प्रयोग प्रयुजवा रुप ते फोरववुं कहेल छे ते कहे छे मनप्रयोग १, वचन प्रयोग २, काय प्रयोग ३, ॥ १ ॥

अर्थः—ज० जेम जो० योग वि० विगलेंन्द्रि व० वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे त० तेम प० प्रयोग वि० वळी ॥ २ ॥

जहा जोगे विगलिन्दियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं तहा पओगे वि॥ २॥

भावार्थः—जेम योग तेम प्रयोग पण जाणवा, पांच स्थावर अने त्रण विगलेंद्री ए आठ वर्जीने वैयानिक सुधी ए त्रणे प्रयोग कहेवा. ॥२॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे क० करण क्रिया करे ते पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मने करे ते व० वचने करे ते का० कायाए करे ते ॥ १ ॥

८ पेरा—(मन विगेरे संबंधने लीधे करणनी वात कहे छे)

तिविहे करणे पन्नत्ते । तं जहा । मणकरणे वइकरणे कायकरणे ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारेकरण ते जेहथी क्रियादि करीए ते कहेछे, मन करण ते मनथी पापपुन्य करे १, वचन करण ते वचनथी पाप पुन्य करे २, काया करण ते कायाथी पाप पुन्य करे ३, ॥१॥

अर्थः—ए० एम वि० विगलेन्द्रि व०वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे ॥ २ ॥

एवं विगलिन्दियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः—एम ज पांच स्थावर अने त्रण विगलेंद्री

ए आठ वर्जिने वैमानिक सुधी त्रण करणछे, पांच स्थावरमां एक काम करणछे, त्रण विगलेंद्रीमां वचन अने काया ए वे करण छे ॥ २ ॥

अर्थः-ति० त्रण क० करण प० कह्या तं०ते ज० कहुंछुं आ०छ कायने हणवीं ते सं० छकायने हणवानो संकल्प करवो ते स० छकाय संताप करवो ते ॥ ३ ॥

(करणना वीजी रीते त्रण प्रकार वतावेछे.)

तिविहे करणे पन्नत्ते । तं जहा । आरम्भकरणे संरम्भकरणे समारम्भकरणे ॥ ३ ॥

भावार्थः-वळी त्रण प्रकारे करण कहेल छे ते कहे छे, आरंभ करण ते छकायना जीवने हणवुं १, संरभ करण ते पृथव्यादीक छ कायना जीवने हणवानो संकल्प करवो २, समारंभ ते छकायना जीवने संताप करवो ३, ॥ ३ ॥

अर्थः-नि० आंतरा रहित जा०यावत व० वैमानिक लगे २४ दंडके असंज्ञीने पाछल्या भवनी अपेक्षाए ॥ ४ ॥

(आ आरंभादिक त्रणे करण नारकीथी मांडीने वैमानिक सुधी होय छे ते वतावे छे)

निरन्तरं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः-ए त्रण करण आंतरा रहीत वैमानीक सुधी चौवीस दंडके कहेवा अने असंज्ञीने पाछला भवनी अपेक्षाए होय, ॥ ४ ॥

अर्थः-ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव अ० अल्प थोडा आ० आउखाने क० कर्म प० वांधे तं० ते ज० कहुं छुं. पा० जीवने अ० हणतो भ० थको मु० जुठुं व० वोलतो भ० थको त० तथा रु० रुप शुद्ध स० क्षमावंत वा० अथवा मा० हिंसा रहित वा० अथवा अ० सचित्त अ० एपणा शुद्ध नहीं एहवे अ० अन्न पा० पाणी खा० सुखडी सा० तंवोलादिक प० आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा० थानके करीने जी० जीव अ० अल्प आउपुं क० कर्म प० वांधे ॥ १ ॥

९ पेरा-(आरंभादिक करणनुं तथा वीजी क्रियानुं फळ वतावे छे)

तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसावइत्ता भवइ तहारुवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति ॥ १ ॥

भावार्थः-आरंभादी करणनुं फळ कहे छे, त्रण स्थानके करी जीव अल्प ते थोडुं आउखुं कर्म वांधे अने म्होटुं आयुष्य न पामे ते कहे छे, जीवने हणतो १, जुठुं वोलनो २, तथा रुप शुद्ध श्रमण माहण हिंसाथी निवर्त्या एहवा साधुने अफासुने सचित जीव सहित एपणा शुद्ध नथी अलपनोक अचित्त छे पण असुझतुं अन्न पाणी मेवो मुखवास ए चार प्रकारना आहार वोहरावे ते आपे ३, ए त्रण स्थानके करी जीव अल्प आयुष्य कर्म वांधे एटले थोडुं आयुष्य वांधे, इहां चार गती मांही कई गतीनुं अल्प आयुष्य वांधे ए केवळी गम्य छे ॥१॥

अर्थः-ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव दी० मोटुं आ० आउपाने क० कर्म मते प० वांधे तं० ते ज० कहुंछुं. नो० नही पा० जीव अ० हिस्यां भ० करे नो० नहीं मु० जुठुं भ० वोलतो थको त० तथा रु० रुप शुद्ध स० साधु वा० अथवा मा० दयावंतने वा० अथवा फा० अचित ए० निरवद्य अ० अन्न

पा० पाणी खा० सुपडी सा० तंबोल प० आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव दी० मोटुं आ० आउपा क० कर्म प० बांधे ॥ २ ॥

(अल्पायुशना कारण कह्यां, हवे दीर्घायुशना उपर कह्याथी जुदा कारणो छे ते बतावेछे)

तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । नो पाणे अइवाइत्ता भवइ नो मुसावइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ। इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति ॥ २ ॥

भावार्थः-तेमज वळी त्रण स्थानके जीव लांबु आयुष्य कर्म बांधे ते कहे छे, जीव हिंसा नहीं करवाथी १, जुठुं नहीं बोलवाथी २, तथा रुप श्रमण माहणने फासुक ते अचित एषणीक शुद्धमान निर्वद्य अन्न पाणी मेवो मुखवास ए चार प्रकारना आहार वोहरावे एटले आपे ३, ए त्रण स्थानके जीव दीर्घ (लांबु) आयुष्य बांधे ॥ २ ॥

अर्थः-ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव अ० दुखनुं दी० मोटुं आ० आऊपा क० कर्म प० बांधे त० ते ज० कहुंछुं पा० जीव अ० हीस्यां भ० करतो मु० मृषावाद व० बोलतो भ० थको त० तथा रू० रूप (शुद्ध) स० साधु वा० अथवा मा० दयावंतने वा० अथवा ही०हीणुं कुवचन बोले नि०जाति उघाडे खिं० मने करी निंदे ग० दोष उघाडे लोक समक्ष अ० साधुने देखीने उभो न थाय अ० कोई जातनो अ० माठो अ० अप्रीतिनो करणहार अ० अन्न वा० अथवा पा० पाणी वा० अथवा खा० सुखडी वा० अथवा सा० तंबोल वा० अथवा प० आपनारो भ० थाय इ० ए ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव अ० माठुं दी० मोटुं आ० आऊपा क० कर्म प० बांधे (कडुआ तुवडाथी नागसिरिनी माफक) ॥ ३ ॥

(उपर दीर्घायुशना कारणो बताव्या ते शुभ अने अशुभ बने प्रकारनुं होय तेथी पेहेला अशुभ दीर्घायुशना कारणो बतावेछे)

तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा। पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसावइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता निन्दित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीइकारएणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थः-वळी त्रण स्थानके जीव अशुभ ते दुःखनुं लांबुं आयुष्य कर्म बांधे ते कहे छे, जीव हिंसा करवाथी १, जुठुं बोलवाथी २, तथा रुप श्रमण माहणने वचने करी हिलना करतो निंदे ने जाती प्रमुखना दोष उघाडे, खीसना ते मने करीने द्वेष राखे, गरहा ते लोक समक्ष दोष प्रगट करे, अपमान करे, ते साधुने देखी उभो न थाय तथा अन्यतर कोइ जातीनुं अमनोज्ञ, रूपथी माठुं, अप्रीति, असंतोषनो करनार नागश्री ब्राह्मणीए साधुने कडवा तुंवडानुं शाक आप्युं एहवुं अशाता कारी अन्न पाणी मेवा मुखवास ए चार प्रकारना आहार वोहोरावे ३, ए त्रण स्थानके करी जीव अशुभ

लांबुं आयुष्य कर्म बांधे ॥ ३ ॥

अर्थः-ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव सु० भलु दी० मोटुं आ० आउषा क० कर्म प० बांधे त० तेज० कहुंछुं नो०नही पा०जीव अ० हीस्यां भ० करे नो० नही मु० जुठुं व० बोलतो भ० थको त० तथा रु० रुप (शुद्ध) स० साधु वा० अथवा मा० दयावंत वा० अथवा व० वांदे न० नमस्कार करे स० सत्कारे स० सन्मान करे क० कल्याणकारी मं० मंगलकारी दे० देव चे० ज्ञानवंत करीए तेम प० सेवा करवा योग्य म० मनोज्ञ पी० प्रीतकारी अ० अन्न पा० पाणी खा०सुपडी सा० मेवो प० आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव सु० सुभ दी० मोटुं आ० आउखा क० कर्मने प० बांधे ॥४॥

(शुभ दिर्घायुशना कारणो बतावेछे)

तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । नो पाणे अइवाइत्ता भवइ नो मुसावइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा वन्दित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्ता मणुन्नेणं पीइकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति ॥ ४ ॥

भावार्थः-वळी त्रण स्थानके जीव शुभते सुखनुं लांबुं आयुष्य कर्म बांधे ते कहे छे, जीव हिंशा नहीं करवाथी १, जुठुं नहीं बोलवाथी२, तथा रुप श्रमण माहणने वंदन करे, नमस्कार करे, वस्त्रादीकथी सत्कार दीए, सन्मान ते आसन आमंत्रे अने हे स्वामी ? तमे कल्याण (ते संपत्ती आपनार) कारी छो, मंगळ (विघ्न निवारण करनार) कारी छो, धर्म देव छो, ज्ञानवंत छो, पुजवा योग्य छो इत्यादी स्तुति विनयकरी साधुनी सेवाकरे, वळी मनोज्ञ प्रीतीकारी अन्न पाणी मेवो मुखवास ए चार प्रकारना आहार प्रति लाभे ३, ए त्रण स्थानके करी जीव शुभ (सुखनुं) लांबुं आयुष्य कर्म बांधे, भरत चक्रवर्तिए पुर्व भवे पांचसो साधुने आहर आणी आप्यो तेना प्रतापे भरत चक्रवर्ति थयो तथा मरुदेवी मातानी पेरे सुखनु लांबुं आयुष्य बांधे ॥ ४ ॥

अर्थः-त० त्रण गु० गुप्ती पं० कही त० ते ज० कहुंछु म० मन गु० गुप्ती व० वचन गुप्ती का० काया गुप्ती ॥ १ ॥

१० पेरा (प्राणातिपात न करवुं विगेरे गुप्ती होयतो थायछे माटे गुप्ती कहेछे)

तओ गुत्तीओ पन्नत्ताओ । तं जहा । मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ॥ १ ॥

भावार्थः-जीव हिंसादी न करे ते गुप्ती छे ते माटे गुप्ती कहे छे, त्रण प्रकारे गुप्ती कहेल छे ते कहे छे, मनगुप्ती ते माठा योगथी मन रोकवुं १, वचन गुप्ती ते पापकारी वचन न बोलवुं २, काय गुप्ती ते काया पापमां प्रवर्तावे नहीं ॥ १ ॥

अर्थः-सं० संयमवंत म० मनुष्यने त० त्रण गु० गुप्ती पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मन व० वचन का० काया ॥ २ ॥

(आ गुप्तीओ २४ दंडकमां विचारीएतो फक्त मनुष्यनेज होय ने ते पण संयत मनुष्यने होय पण नारक विगेरेने न होय. ते बतावेछे)

संजयमणुस्साणं तओ गुत्तीओ प-

न्नत्ताओ । तं जहा । मणवइकायगुत्ती ॥ २ ॥

भावार्थः–चौविस दंडक मांही संयमवंत मनुष्यने त्रण गुप्ती कहेल छे ते कहे छे, मनगुप्ती १, वचन गुप्ती २, कायगुप्ती ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः–त० त्रण अ० पापने योगे प्रवर्ते ते पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं म० मने करी पाप बांधे ते व० वचने पाप बांधे ते का० कायाए पाप बांधे ते ॥ ३ ॥

(गुप्तीओ कही हवे अगुप्ती कहे छे)

तओ अगुत्तीओ पन्नत्ताओ । तं जहा । मणअगुत्ती वइअगुत्ती कायअगुत्ती ॥ ३ ॥

भावार्थः-त्रण प्रकारे अगुप्ती कहेल छे ते कहे छे, मन अगुप्ती ते मनथी पाप बांधे १, वचन अगुप्ती ते वचने करी पाप बांधे २, काय अगुप्ती ते कायाए पाप बांधे ३, ए त्रण भेद छे॥३॥

अर्थः–ए एम ने० नारकीने जा० यावत थ०स्तानितकुमारने प०पंचेंद्रि ति०तिर्यंच जो० योनीने अ० असंजति म०मनुष्यने वा० वाणव्यंतरने जो० ज्योतिषीने वे० वैमानिकने अगुप्ती होय ॥ ४ ॥

(हवे विशेपथी २४ ए दंडकना संबंधमां अगुप्तीयो विशे कहे छे)

एवं नेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं असंजयमणुस्साणं वाणमन्तराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः–एम नारकी, दस भवनपती तिर्यंच पचेंद्री, असंजती मनुष्य, वाणव्यंतर जोतिषी, वैमानिक देवता ए सर्वेने त्रणे अगुप्ती होय, पांच स्थावरने एक काय अगुप्ती छे, त्रण विगलेंद्रीने वचन अने काय ए बे अगुप्ती छे ॥४॥

अर्थः–त० त्रण द० दण्ड पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं म० मनेकरी कर्म बंधायते व० वचने करी कर्म बांधेते का० कायाए करी पाप लागेते ॥ १ ॥

११ पेरा–(अगुप्तीयो पोताने अने पारकाने दंडभुत थाय छे तेथी दंडनी परुपणा कहे छे)

तओ दण्डा पन्नत्ता । तं जहा । मणदण्डे वइदण्डे कायदण्डे ॥ १ ॥

भावार्थः–अगुप्ती वंतने त्रण दंड (कर्मे दंडाय ते) कहेल छे ते कहे छे, मन दंड ते मनथी पाप बांधवे दंडाय १, वचन दंड ते वचने पाप बांधवे दंडाय २, काय दंड ते कायाए पाप बांधवे दंडाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः–वि० विगलेंद्रिय व० वर्जीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे ॥ २ ॥

विगलिन्दियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः–नारकीने त्रण दंड कहेल छे ते कहेछे, मन दंड १, वचन दंड २, काय दंड ३, एम एकेंद्री अने त्रण विगलेंद्री वर्जीने वैमानिक सुधी त्रण दंड छे, एकेंद्रीने एक काय दंड छे, त्रण विगलेंद्रीने वचन अने काय ए बे दंड छे॥२॥

अर्थः–ति० त्रण भेदे ग० निंदा पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मने करी वे० एक आत्माने तथा परने ग० निंदे व० वचने वे० एक ग० निंदे का० कायाए करी वे० एक ग० निंदे पा० पाप क० कर्मने अ० अण करवे गर्हणा होय ॥ १ ॥

१२ पेरा (दंडछे ते निंदवा योग्यछे तेथी गर्हा विशे कहेछे.).

तिविहा गरहा पन्नत्ता । तं जहा । मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ कायसा वेगे गरहइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए ॥ १ ॥

भावार्थः—दंड ते गर्हणीय एटले निंदनीक छे ते माटे त्रण प्रकारे गर्हा कहेल छे ते कहे छे, एक मनथी आत्माने तथा परने गर्हे एटले पापकर्म भुंडुं छे तेथी हवे हुं पापकर्म नहीं करु एहवो पोताना मनमां पस्तावो करे तथा बीजाने पण कहे १, एक पोताना मनमां पापकर्मनो पस्तावो करतो नथी पण फक्त वचनथीज आत्माने तथा परने गर्हे (निंदे) २, एक पाप कर्म अणकरवे कायाए गर्हे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—अ० अथवा ग० गर्हणा ति० त्रण पं० कही तं० ते ज० कहुंछु दी० घणा पे० एक अ० काळनी ग० गर्हणा करे ह० थोडा पे० एक अ० काळनी ग० गर्हणा करे का० कायाने पे० एक प० वर्तमान काळे गर्हणा करे पा० पाप क०कर्म अ० अणकरवेकरी ॥२॥

अहवा गरहा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । दीहं पेगे अद्धं गरहइ हस्सं पेगे अद्धं गरहइ कायं पेगे पडिसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए॥२॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे गर्हा कहेल छे ते कहे छे. एक घणा काळनी गर्हा करे एटले घणां काळ उपर पाप कर्म करेल होय तहनो पस्तावो करे १, एक थोडा काळनी गर्हा करे २, एक वर्तमान काळे पाप अणकरवे कायाने संवरी (रोकी) राखे ३, ए त्रण प्रकारे गर्हा कही ॥२॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० पचखाण पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं म० मनेकरी वे० एक प० पाप त्यजे व० वचनेकरी वे० एक प० पाप निषेधे का० कायाए करी वे० एक प० पाप न करे ॥ १ ॥

१३ पेरा (पचखाण विषे कहेछे)

तिविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणसा वेगे पच्चक्खाइ वयसा वेगे पच्चक्खाइ कायसा वेगे पच्चक्खाइ ॥१॥

भावार्थः—अनागत (भविष्य) काळनां पचखाण कहे छे, त्रण प्रकारे पचखाण कहेल छे, ते कहे छे, एक मनथी पचखाण करे छे १, एक वचनथी पचखाण करे छे २, एक कायाथी पाप कर्म अणकरवे पचखाण करे छे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ज० जेम ग० गर्हणाकरी त० तेम प० पचखाणने विषे वि० पण दो० बे आ० आलावा भा० जाणवा ॥ २ ॥

एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा भाणियव्वा ॥ २ ॥

भावार्थः—एम जेम ग्रहणा कहेलछे तेम पचखाणने विषे पण बे आळावा कहेवा. पाप कर्मनुं पचखाण ते परोपकारी छे अने वृक्ष पण परोपकारी छे ते माटे वृक्षनुं द्रष्टांत कहे छे॥२॥

अर्थः—त० त्रण रु० वृक्ष पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं प० पत्र सहित एक पु० एक फुल सहित फ० एक फल सहित ॥ १ ॥

१४ पेरा (पाप कर्मनुं पचखाण करनारा परोपकारी होयछे तेथी उदाहरण रुप वृक्षोनुं तथा तेना उपनय पुरुषोनी परुपणा करेछे)

तओ रुक्खा पन्नत्ता । तं जहा । पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे वृक्ष कहेल छे ते कहे छे, एक पत्र सहित १, एक फुल सहित २, एक फळ सहित ३ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० वृक्षनी ए० परे त० त्रण पु० पुरुष जा० जात पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं प० पत्र स० सहित रु० वृक्ष स० सरिषा ते विशेष उपगारी वचनादिके सूत्र सिद्धांत संभळावे पु० फुल उ० सहित रु० वृक्ष स० सरिषा ते अर्थ ... फ० फल सहित रु० वृक्ष स० ... सूत्र अर्थ वेना आपनारा ॥ २ ॥

एवामेव तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता । ... पत्तोवगरुक्खसमाणे पुप्फो- ... फलोवगरुक्खसमा- ... ॥ २ ॥

... वृक्षनी पेरे त्रण प्रकारना लोकोत्तर पुरुष कहेल छे ते कहे छे, पत्र सहीत वृक्ष सरीखा ते विशेष उपकारी वचनादिक सूत्र संभळावे १, फुल सहीत वृक्ष सरिखा ते ... अर्थना आपनार २, फळ सहीत वृक्ष सरिखा ते सुत्रार्थ वेना आपनार ३, ए त्रण प्रकारना पुरुष कह्या ॥ २ ॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुष जा० जाती पं० कही तं० ते ज० कहेछे ना० नाम पु० पुरुष ते नाम ठा० थापना पु० पुरुष ते पुरुषनी छवी द० द्रव्य पु० पुरुष ते पुरुषपणे उपजशेते ॥१॥

... (हवे पुरुषनो प्रस्ताव होवाथी पुरुष विशे सात सूत्रो कहेछे)

तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं जहा । नामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे ॥ १ ॥

भावार्थः—पुरुषना प्रस्तावथी पुरुषनुं लक्षण कहे छे, त्रण पुरुषनी जाति कहेलछे ते कहेछे, एक नाम पुरुष ते पुरुषनुं नाम १, एक स्थापना (आकार)पुरुष२, एक द्रव्य पुरुष ते(भविष्यमां) पुरुषपणे उपजशे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुषनी जा० जाती पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं ना० ज्ञान सहित पु० पुरुष दं० समकितवंत पु० पुरुष च० चारित्र सहित पु० पुरुष ॥ २ ॥

तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं जहा । नाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे ॥ २ ॥

भावार्थः—वळी त्रण भात पुरुषनी जाति कहेल छे ते कहे छे, ज्ञान पुरुष ते ज्ञान सहीत १, दर्शन पुरुष ते समकित सहित २, चारित्र पुरुष ते चारित्र सहित (३), ए त्रण भेद छे॥२॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुष जा० जाती पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं वे० वेद (पुरुष स्त्री नपुंसक) पु० पुरुष (पुरुष वेदने अनुभवे ते चि० दाढी मुछ साहित स्त्री पु० पुरुष वेष धरे अ० पुरुष नामे बोलावे ते पु० पुरुष घडो कुओ इत्यादि ॥ ३ ॥

तओ पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं जहा । वेदपुरिसे चिन्धपुरिसे अभिलावपुरिसे ॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण जातिना पुरुष कहेल छे ते कहे छे, वेद पुरुष ते पुरुष वेदने अनुभवे ते स्त्री पुरुष नपुंशक ए त्रणमां थाय छे १, चीन्ह पुरुष ते दाढी मुछ सहित स्त्री पुरुष वेष धरे पावइवत २, अभिलाप पुरुष ते पुरुषने नामे बोलाय ते घडो, कुवो, आंबो इत्यादि ३, ए त्रण भेद छे, ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण पु० पुरुष पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं उ० एक उत्तम पु० पुरुष म० मध्यम पु० पुरुष ज० जघन्य पु० पुरुष ॥४॥

तिविहा पुरिसा पन्नत्ता । तं जहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा ॥ ४ ॥

भावार्थः—वळी त्रण जातिना पुरुष कहेल छे ते कहेछे, उत्तम पुरुष १, मध्यम पुरुष २, जघन्य (नानो) पुरुष ३, ए त्रण भेदछे ॥४॥

अर्थः—उ० उत्तम पु० पुरुष ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ध० धर्मना दातार पु० पुरुष भो० भोगना भोगवनार पु० पुरुष क०आरंभकारी पु०पुरुष ध०धर्म पु० पुरुष अ० अरिहंतदेव भो० भोग पु० पुरुष च० चक्रवर्ति क० कर्म पु० पुरुष वा० वासुदेव ॥५॥

उत्तमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा। धम्मपुरिसा अरहन्ता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा ॥ ५ ॥

भावार्थः—उत्तम पुरुष त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक धर्म पुरुष ते क्षायिक समकितना उपार्जनार १, बीजा भोग पुरुष ते मनोहर भोगना भोगवनारा २, त्रीजा कर्म पुरुष ते महा आरंभना करनारा नर्कमां जानारा ३, ए त्रण भेद छे, धर्म पुरुष ते अरिहंत १, भोग पुरुष ते चक्रवर्ति २, कर्म पुरुष ते नियाणा बंध वासुदेव ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—म० मध्यम पु० पुरुष ति० त्रण भेदे प० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं उ० उग्रकुलना भो० भोगकुलना रा०राजन्यकुलना ॥६॥

मज्झिमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। उग्गा भोगा राइन्ना ॥ ६ ॥

भावार्थः—मध्यम पुरुष त्रण प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, उग्र कुळना ते ऋषभदेवे कोटवाळ पणे स्थाप्या १, भोग कुळना ते गुरु स्थानके स्थाप्या २, राजन्य कुळना ते क्षत्रीय पोताना सरखा ३, ए त्रण भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः—ज० जघन्य पु० पुरुष ति० त्रण प्रकारना पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं दा० दास भा० मुलये काम करे ते भा० कमाणीमां चोथो भाग लइ काम करे ते ॥७॥

जहन्नपुरिसा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। दासा भायगा भाइल्लगा ॥७॥

भावार्थः—जघन्य पुरुष त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, दास ते दासीना पुत्र १, भृतक ते मुल्यथी काम करे २, चोथो भाग भागलइ काम करे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे म० मच्छ प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं अ० इंडाथी उपन्या ते पो० वस्त्र वींटया जेणे ते सं० गर्भ विना उपजे ते ॥ १ ॥

१६ पेरा (मनुष्य पुरुषना त्र[illegible] प्रकार कह्या हवे सामान्यथी तिर्यंचोना जळ[illegible] त्रण प्रकार कहे छे.)

तिविहा मच्छा पन्नत्ता [illegible] जहा। अण्डया पोयया [illegible] ॥ १ ॥

भावार्थः—ए मनुष्य [illegible] कहुं, हवे तिर्यंच जळचरनुं कहे छे. [illegible] कहेल छे ते कहे छे [illegible] पोतज ते वस्त्र [illegible] २, स[illegible] गर्भ विना उपजे ३, ए त्रण भेद छे, ॥ १ ॥

अर्थः—अ० अंडज म० मच्छ [illegible] प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥२॥

अण्डया मच्छा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥ २ ॥

भावार्थः—अंडज मच्छ त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहेछे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३ ॥ २ ॥

अर्थः—पो० पोतज म० मच्छ ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥३॥

पोयया मच्छा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥३॥

भावार्थः–एमज पोतज मच्छना पण त्रण भेद ते स्त्री, पुरुष, नपुंसक, समुर्छिम मच्छ एक नपुंसकज छे तेमांही स्त्री पुरुषपणुं नथी ॥३॥

अर्थः–ति० त्रण प्रकारे प० पंखी प० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं अ० हंस प्रमुख पो० वागुल प्रमुख सं० खंजन प्रमुख ॥४॥

तिविहा पक्खी पन्नत्ता । तं जहा अण्डया पोयया संमुच्छिमा ॥ ४ ॥

भावार्थः–त्रण प्रकारे पक्षी कहेल छे ते कहे छे, अंडज ते हंश प्रमुख १, पोजत ते वागुल प्रमुख २, समुर्छिम ते खंजन प्रमुख ए सर्व पंचेद्री ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः–अ० अंडज प० पंखी ति० त्रण प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥५॥

अण्डया पक्खी तिविहा पन्नत्ता । तं जहा। इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥५॥

भावार्थः–अंडज पक्षी त्रण प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३ ॥५॥

अर्थः–पो० पोतज प० पंखी ति० त्रण प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥६॥

पोयया पक्खी तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥६॥

भावार्थः–एमज पोतज पक्षीना पण त्रण भेद ते स्त्री, पुरुष, नपुंसक, ए त्रण भेदछे ॥६॥

अर्थः–ए० एम ए० एणे अ० आलावे उ० हेए चाले ते वि० पण भा० जाणवा (७-९) ॥७॥

एवं एएणं अभिलावेणं उरपरिसप्पा वि भाणियव्वा [७–९] ॥ ७ ॥

भावार्थः–एम एणे अभीलापे करी हैया भेर चाले ते उरपरी सर्प ते पण त्रण प्रकारे कहेवा ॥ ७ ॥

अर्थः–भु० भुजाए चाले ते वि० पण भा० जाणवा नोळीया प्रमुख (१०–१२) ॥८॥

भुयपरिसप्पा वि भाणियव्वा ॥ [१०–१२] ॥ ८ ॥

भावार्थः–एमज भुजाथी चाले ते भुजपरी सर्प ते पण त्रण प्रकारे जाणवा ॥ ८ ॥

अर्थः–ए० एम चे० वळी ति० त्रण भेदे इ० स्त्रीओ पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं ति० तिर्यंचनी जो० योनीनी इ० स्त्रीओ म० मनुष्यनी इ० स्त्रीओ दे० देवतानी इ० स्त्रीओ

१७. एवं चेव तिविहाओ इत्थीओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ

भावार्थः–एवीज रीते त्रण प्रकारनी स्त्री कहेलछे ते कहे छे, तिर्यंचनी स्त्री १, मनुष्यनी स्त्री २, देवनी स्त्री ३, ए त्रण भेद छे.

अर्थः–ति० तिर्यंचनी जो० योनीनी इ० स्त्रीओ ति० त्रण प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहु छुं ज० माछलीओ थ० गाय प्रमुख ख० पंखीणीओ ॥१॥

१८ पेरा (तिर्यंचना त्रण प्रकार कह्या, हवे स्त्री पुरुष नपुंसकना त्रण प्रकार कहे छे.)

तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ ॥ १ ॥

भावार्थः–तिर्यंचनी स्त्री त्रण प्रकारे कहेलछे, जळचरी ते माछली प्रमुख १, थलचली ते गाय भेंस घोडी प्रमुख २, खेचरी ते चकली, हंसली, मोरली प्रमुख ३, ए त्रण भेदछे, ॥१॥

अर्थः–म० मनुष्यनी इ० स्त्रीओ ति० त्रण भेदे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं क० भरत

ऐरवत महाविदेह क्षेत्रनी अ० त्रीस अकर्म भुमिनी अ० छप्पन अंतर द्वीपनी ॥२॥

मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओअन्तरद्दीवियाओ ॥२॥

भावार्थः—मनुष्यनी स्त्री त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, असी ते तरवार प्रमुख शस्त्र बांधीने आजीवीका करे १, मसी ते लेखण रुशनाइए लखवानी आजीविका करे २, कृषी ते कोस, कोदाळी, पावडो प्रमुखथी खेतीनो धंधो करी आजीवीका करे ३, ए त्रण प्रकारे आजीवीका करे ते पांच भरत, पांच इरवत, पांच महावीदेह ए पंनर क्षेत्रना कर्म भूमी मनुष्यनी स्त्री १, पुर्वोक्त त्रण प्रकारनां कर्म रहित अने दश प्रकारनां कल्प वृक्षेकरी जीवे ते पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु, ए त्रीस क्षेत्रनां अकर्म भूमी युगळीयां मनुष्यनी स्त्री २, छप्पन अंतर द्विपनां युगळीया मनुष्यनी स्त्री ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे पु० पुरुप पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ति० तिर्यंच जो० योनिना पु० पुरुप म० मनुष्य पु० पुरुप दे० देवता पु० पुरुप ॥३॥

तिविहा पुरिसा पन्नत्ता । तं जहा । तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा ॥ ३ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारना-पुरुप कहेलछे, तिर्यंच योनिना पुरुप १, मनुष्य पुरुप २, देवपुरुप ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० तिर्यंच जो० योनीना पु० पुरुप ति० त्रण प्रकारे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ज० माछलां थ० हाथी ख० पंखीया ॥४॥

तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । जलचरा थलचरा खहचरा ॥ ४ ॥

भावार्थः—तिर्यंच योनिना पुरुप त्रण प्रकारे कहेलछे, जळचर पुरुप ते मच्छ प्रमुख १, थळचर पुरुप ते हाथी, घोडा प्रमुख २, खेचर (पक्षी) पुरुप सुडा, हंस, मोर प्रमुख ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—म० मनुष्य पु० पुरुप ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं क० पंनर कर्म भुमिना अ० त्रीस अकर्म भुमिना युगलीया अ० ५६ अंतर द्वीपना युगलीया ॥५॥

मणुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अन्तरद्दीवगा ॥ ५ ॥

भावार्थः—मनुष्य पुरुप त्रण प्रकारे कहेल छे, कर्म भुमिना १, अकर्म भुमिना २, अंतर द्विपना ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे न० नपुंसक पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ने० सात नरकना नपुंसक ति० तिर्यंच जो० योनिना न० नपुंसक म० मनुष्य नपुंसक ॥६॥

तिविहा नपुंसगा पन्नत्ता । तं जहा । नेरइयनपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सनपुंसगा ॥ ६ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे नपुंसक कहेल छे, साते नर्कना नारकी नपुंसक १, तिर्यंच योनिना नपुंसक २, मनुष्य नपुंसक ३, [देवता नपुंसक थाय नहीं] ए त्रण भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः—ति० तिर्यंच जो० योनीना न० नपुंसक ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं ज० जलचर थ० थलचर ख० पंखीना ॥७॥

तिरिक्खजोणियनपुंसगा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। जलचरा थलचरा खहचरा ॥ ७ ॥

भावार्थः—तिर्यंच योनोना नपुंसक कहेल छे ते कहेछे, जळचर नपुंसक १, थळचर नपुंसक २, खेचर नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥७॥

अर्थः—मनुष्य न० नपुंसक ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं क० कर्म भुमिना अ० अकर्म भुमिना अ०अंतरद्वीपना॥८॥

मणुस्सनपुंसगा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा। कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अन्तरदीवगा ॥ ८ ॥

भावार्थः—मनुष्य नपुंसक त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्म भुमीना नपुंसक १, अकर्म भुमीना नपुंसक २, अंतर द्विपना नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥ ८ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे ति० तिर्यंच जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥९॥

तिविहा तिरिक्खजोणिया पन्नत्ता। तं जहा। इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥ ९ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे सामान्य भावे तिर्यंच कहेल छे ते कहे छे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥ ९ ॥

अर्थः—ने० नारकीने त० त्रण ले० लेश्या पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं क० कृष्णलेशा नी० नीललेशा का० कापोतलेशा ॥१॥

१९ पेरा (जीवोनी स्त्री विगेरे परिणीति लेशाना वशपणाने लीधे थाय छे तेथी नारक विगेरे पदोमां लेशा त्रण स्थानकवडे कहेवामां आवे छे.)

नेरइयाणं तओ लेसाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥ १ ॥

भावार्थः—स्त्रीयादीक वेद ते लेशाथी बंधाय ते माटे लेशा कहे छे, नारकीने त्रण लेशा कही ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—अ० असुरकुमारने त० त्रण ले० लेशा सं० माठी पं० कही तं० ते ज० कहे छे क० कृष्णलेशा नी० नीललेश्या का० कापोतलेशा ॥ २ ॥

असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ। तं जहा। किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥२॥

भावार्थः—असुरकुमारने त्रण लेशा संकिलष्ट (भुंडो) कहेल छे [चोथी तेजुलेशा असुरकुमारने छे पण ते संकिलष्ट नथी] ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण॥२॥

अर्थः—ए० एम थ० स्थनितकुमारने ॥३॥

एवं थणियकुमाराणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम यावत् स्तनित कुमार लगे ए त्रण संकिलष्ट लेशा जाणवी ॥ ३ ॥

अर्थः—ए० एम पु० पृथ्वीकायने आ० अपकायने व० वनस्पतीकायने वि० पण ते० तेउकायने वा० वायुकायने बे० बेइन्द्रिने ते० तेइन्द्रिने च० चउरिंद्रिने वि० पण त० त्रण ले० लेशा ज० जेम ने० नारकीने ॥४॥

एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाण वि तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं बेइन्दियाणं तेइन्दियाणं चउरिन्दियाण वि तओ लेसाओ जहा नेरइयाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः–एम पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिकायने कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण लेशा जाणवी एहमां देवता आवी उपजे ते माटे तेजुलेशा पण छे ते माटे असुरकुमारना सुत्रमां कह्युं एम तेउकाय, वायुकाय, वेइंद्रीने तेइंद्री, चोरिंद्रीने कृष्ण १, नील२, कापोत ३, ए त्रण लेशा होय ॥ ४ ॥

अर्थः–प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंच जो० योनिनी त० त्रण ले० लेशा सं० पापनी पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं क० कृष्णलेशा नी० नीललेशा का० कापोतलेशा ॥५॥

पञ्चिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥ ५ ॥

भावार्थः–पंचेद्री तिर्यंच योनियाने त्रण लेश्या संकिलष्ट (भुंडी) कही ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, ने कापोत ३ ॥ ५ ॥

अर्थः–पंचेन्द्रि ति० तिर्यंच जो० योनिनी त० त्रण ले० लेशा अ० रुडी पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं ते० तेजुलेशा प० पद्मलेशा सु० शुक्ललेशा ॥ ६ ॥

पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ॥ ६ ॥

भावार्थः–पंचेद्री तिर्यंच योनीना जीवने त्रण लेशा असंकिलष्ट ते रुडी कहेल छे ते कहे छे तेजु १, पद्म २, शुक्ल ३ ॥ ६ ॥

अर्थः–ए० एम स० मनुष्यने वि० पण वा० व्यंतरने वि०पण ज०जेम अ०असुरकुमारने॥७॥

एवं मणुस्साण वि वाणमन्तराण वि जहा असुरकुमाराणं ॥ ७ ॥

भावार्थः–एम मनुष्यने पण जाणवी [संज्ञी तिर्यंच पंचेद्री तथा संज्ञी मनुष्यने छलेशा छे पण इहां त्रणनो बोल होवाथी त्रण उत्तम लेशा कहेल छे]. वाणव्यंतरने असुर कुमारनी पेरे त्रण संकिलष्ट ते माठीज लेशा होय ॥ ७ ॥

अर्थः–वे० वैमानिकने त० त्रण लेशा पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं ते० तेजुलेशा प० पद्म लेशा सु० शुक्ललेशा ॥ ८ ॥

वेमाणियाणं तओ लेसाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ॥ ८ ॥

भावार्थः–वैमानिक देवने त्रण असंकिलष्ट (भली) लेश्या कही छे ते कहे छे, तेजुलेशा १, पद्मलेशा २, शुक्ललेशा ३, ए त्रण भेद छे. ए पुर्वोक्त प्रमाणे चौविस दंडके लेशा कही अने जोतिषीने एक तेजुलेशा छे ते माटे इहां कहेल नथी तेहने चालवानो स्वभाव छे ते कहे छे ॥ ८ ॥

अर्थः–ति० त्रण ठा० थानके ता० तारा रु० रुप च० चले तं० ते ज० कहुंछुं वि० विकुर्वणा करतो वा० अथवा प० मैथुन सेवा करवाने वा० अथवा ठा० पोताना थानकथी वा० वली ठा० बीजे थानके सं० जातो ता० तारा रु० रुपे ज्योतिषी च० चले

२० पेरा (उपर वैमानीकनुं लेश्या द्वारवडे त्रण प्रकारे वर्णन कर्यु. जोतीषीयोने त्रण प्रकारे लेशा नहो होवाथी चलण धर्मवडे तेनुं वर्णन करेछे)

तिहिं ठाणेहिं तारारुवे चलेज्जा । तं जहा । विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे तारारुवे चलेज्जा ॥

भावार्थः–त्रणप्रकारे स्वस्थानकथी जोतिषी

तारा चले ते कहेछे, वैक्रेय विकुर्वणा करतां १, देवांगना साथे भोग करतां २, पोताना स्थानकथी बीजे स्थानके जातां अथवा कोइक महर्धिक देवता वैक्रेयरुप करतो होय तेने मार्ग आपवाने चले ३, ए त्रण भेद छे

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता वि० विजलीनी पेरे उध्योत क० करे तं० ते ज० कहुंछुं वि० वैक्रिय रुप करतो वा० अथवा प० देवांगना साथे भोग करतो वा० अथवा त० तथा रु० रुप (शुद्ध) वा० अथवा स० साधुने वा० अथवा मा० मोटा महानुभावने वा० अथवा इ० रुद्धि जु० आभरणनी ज्योती ज० कीर्ति व० बल वी० वीर्य पु० अभिमान प० पराक्रम उ० देखाडतो दे० देवता वि० वीजलीनीपरी झाटको विद्युतकार क० करे. ॥१॥

२१ पेरा (उपर ताराना देवनी चलणनी क्रीयाना कारणो कह्या, हवे देवोना विद्युतना (वीजळीना) तथा स्तनीत (गर्जना) नी क्रीयाना कारणो कहेछे.)

तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा। तं जहा । विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स वा समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण स्थानेक देवता दर्पवंत विजळीनी पेरे उद्योत करे ते कहे छे, वैक्रेय रुपादी विकुर्वणा करतो १, देवांगना साथे भोग करतो २, तथारुप जे श्रमणने माहणने महानुभावने रुद्धि, परिवार, विमानादीक, शरिर, आभरणादीकनी ध्युती (कांती), जशकीर्ति, बळ ते शरीरनी शक्ति १, वीर्य ते जीवनी हींमत २, पुरिसकार ते अभिमान ३, पराक्रम ते उध्यम ४, ए सर्व देखाडतो वीजळीनी पेरे उद्योत करे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता थ० मेघनीपरे गाजवुंते क० करे तं० ते ज० कहुंछुं वि० विकुर्वणा करतो ए० एम ज० जेम वि० विध्युतकार त० तेम थ० गर्जारव (गाजवुं) पि० पण ॥ २ ॥

तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा । तं जहा । विउव्वमाणे एवं जहा विज्जुयारं तहेव थणियसद्दं पि ॥ २ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवता मेघनी पेरे गर्जना करे छे ते कहे छे, विकुर्वणा करतो १, एम यावत जेम वीजळी करे तेमज मेघनी पेरे गर्जना पण त्रण प्रकारे जाणवी ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकमां अ० अंधकार सि० होय० तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंत वो० मोक्षजाते अ० अरिहंत प० भाष्यो ध० धर्म वो० विछेद जाते पु० द्रष्टिवाद प्रमुख सिद्धांत वो० विच्छेद जाते ॥१॥

२२ पेरा (लोकना अंधकार विगेरे दुर करवारुप उत्पात विगेरे पंदर सुत्रोथी कहेछे.)

तिहिं ठाणेहिं लोगन्धयारे सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहन्तपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे लोकमां अंधकार थाय ते कहे छे, अष्टमहाप्रातिहार्यवंत, अतिशयवंत एवा अरिहंत मोक्षमां जातां लोकमां अंधकार थाय, भावथी ज्ञानी गया माटे १, अरिहंतनो भाष्यो धर्म विच्छेदजातां२,भरत, ऐरवत आश्री पुर्वगत द्रष्टीवादादी सिद्धांत विच्छेद जातां ३ अंधकार देखाय, ए त्रण भावथी कह्या अने द्रव्यथी पण राजानुं मर्णथाय तथा देश नग-

रनो भंग थातां अंधकार देखाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकमां उ० अजवाळुं सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्मथाते अ० अरिहंत प० दिक्षा लेता अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥ २ ॥

तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेसु पवयमाणेसु अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥ २॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे मनुष्य लोक मांही अजवाळुं थाय ते कहेछे, अरिहंतनो जन्म थतां १, अरिहंत दिक्षा लिए त्यारे २, अरिहंतने ज्ञान उपजवाना महोत्सवने विषे ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताना भुवन प्रमुखने विषे अ० अंधकार सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंत वो० मोक्षजाते अ० अरिहंते प० परूपेल ध० धर्म वो० विच्छेद जाते थके पु० द्रष्टिवाद सिद्धांत वो० विच्छेद जाने थके ॥ ३ ॥

तिहिं ठाणेहिं देवन्धयारे सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहन्तपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वो[illegible]ज्जमाणे ॥ ३ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवताना भवनादिकने विषे अंधकार थाय ते कहे छे, अरिहंत मोक्ष जाता १, अरिहंतनो धर्म विच्छेद (नाश पामतां) जातां ते भरत एरवत क्षेत्र आश्री जाणवुं २, पुर्वगत द्रष्टीवादादी सिद्धांत विच्छेद जाता ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताने उ० उद्योत सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाते अ० अरिहंत प० दीक्षालेते अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥४॥

तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पवयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवताना भवनादिकने विषे उजवाळुं थाय ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लिये त्यारे २, अरिहंतने ज्ञान उपजे ते महिमाने विषे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताने सं० एकठा मलवुं सि० थाय मनुष्यमां तं० ते ज० कहेछे अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता अ० अरिहंत प० दीक्षालेता अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥५॥

तिहिं ठाणेहिं देवसंनिवाए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पवयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥ ५ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे पृथ्वीमां सर्व देवता एकठा मळे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थातां १, अरिहंत दिक्षा लिए त्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे तेहना महोत्सवने विषे सर्व देवता एकठा थाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—एम दे० देवता उ० समवाय ॥ ६ ॥

देवुक्कलिया ॥ ६ ॥

भावार्थः—एम देव समवाय ते उत्कलिका विषय ॥ ६ ॥

अर्थः—ए० एम दे० देवतानो क० हर्षना शब्द ॥७॥

एवं देवकहकहए ॥ ७ ॥

भावार्थः—देवतानो हर्षनो कलकल शब्द थाय ते पुर्वोक्त त्रण प्रकारे जाणवुं ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० इन्द्र मा० मनुष्य लो० लोकमांही ह० शिघ्र आ० आवे तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाते अ० अरिहंत प० दीक्षाले तेवारे अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० महिमानेविषे ॥८॥

तिहिं ठाणेहिं देविन्दा माणुसं लोगं हव्वमागच्छन्ति । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पव्वयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥८॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे सर्व चोसठ देवेंद्र मनुष्य लोकमां आवे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लीए त्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजवाना महोत्सवने विषे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ८ ॥

अर्थः—एम सा० इन्द सरिषा रुद्धिना धणी ॥९॥

एवं—सामाणिया ॥ ९ ॥

भावार्थः—एम सामानीक देवता ते इद्र सरिखी रुद्धीना धणी ॥ ९ ॥

अर्थः—ता० महत्तर सरिषा थानके ॥१०॥

तायत्तीसगा ॥ १० ॥

भावार्थः—त्रायत्रींसक ते गुरु तथा पीता सरिखा ॥ १० ॥

अर्थः—लो० इन्द्रना लोकपाल दे० देवता ॥११॥

लोगपाला देवा ॥ ११ ॥

भावार्थः—चार लोकपाळ ॥ ११ ॥

अर्थः—अ० अग्र म० महिषी दे० देवीओ ॥१२॥

अग्गमहिसीओ देवीओ ॥१२॥

भावार्थः—अग्र महिषी ते इद्राणीयुं ॥१२॥

अर्थः—प० त्रण पर्षदाना दे० देवता ॥१३॥

परिसोववन्नगा देवा ॥१३॥

भावार्थः—त्रण पर्षदाना देवता ॥ १३ ॥

अर्थः—अ० सातकटकना आधिपति दे० देवता ॥ १४ ॥

अणियाहिवई देवा ॥ १४ ॥

भावार्थः—कटकना अधिपति देवता ॥१४॥

अर्थः—अ० अंग र० रक्षक दे० देवता मा० मनुष्य लो० लोकमां ह० शिघ्र आ० आवे ॥१५॥

अङ्गरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छन्ति ॥ १५ ॥

भावार्थः—अंगरक्षक देवता ए सर्व इंद्रनो परिवार ते पुर्वोक्त त्रण कारणे मनुष्य लोकमां जलदी आवे ॥ १५ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता अ० सिंहासनथी उठे तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता जा० यावत तं० तेम चे० वळी ॥ १ ॥

२३ पेरा (मनुष्य लोकमां देवोने आववाना कारणो कह्या ते कारणो देवोने नमस्कार विगेरे करवाना कारण रुपछे ते पांच सुत्रो कहेछे.)

तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठेज्जा । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवता सिंहासनेथी उठे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लिये त्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे त्यारे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम आ० आसन्न च० चाले ॥२॥

एवं—आसणाइं चलेज्जा ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज एह त्रण कारणे आसन चाले ॥ २ ॥

अर्थः–सी० सींहनाद क० करे ॥ ३ ॥

सीहणायं करेज्जा ॥ ३ ॥

भावार्थः–एमज ए त्रण कारणे देवता विमानमां तथा पृथ्वीमां सिंहनाद करे ॥ ३ ॥

अर्थः–चे० वस्त्रनी उ० वृष्टि क० करे ॥४॥

चेलुक्खेवं करेज्जा ॥ ४ ॥

भावार्थः–एमज ए त्रण कारणे देवता वस्त्रनी वृष्टि करे ॥ ४ ॥

अर्थः–ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता ना चे० चैत्य रु० वृक्ष च० चले तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता जा० यावत त० तेम चे० वळी ॥ ५ ॥

तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः–त्रण कारणे देवातानां वृक्ष चळे (हाले) ते वृक्ष सुधर्मा सभाने वारणे होय ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लिये त्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे त्यारे ३, ए त्रण वखते महोत्सव करवा आवे ॥ ५ ॥

अर्थः–ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकांतिक दे० देवता मा० मनुष्य लो० लोकमां ह० शिघ्र आ० आवे तं० ते ज० कहुं छुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता अ० अरिहंत प० दीक्षा लेता थका अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उत्तपनना म० ओछवने विषे.

२४ पेरा (ग्याम करीने लोकान्तीक देवता मनुष्य क्षेत्रमां आववाना कारणो कहे छे)

तिहिं ठाणेहिं लोगन्तिया देवा माणुमं लोगं हव्वमागच्छन्ति । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पव्वयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥

भावार्थः–पांचमा ब्रह्मदेव लोकनी पासे कृष्न राजी छे तिहां लोकांतिक देवता वसे छे, ते देवता त्रण कारणे मनुष्य लोकमां आवे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दीक्षा लीये ज्यारे२, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे त्यारे ३, ए त्रण वखते महोत्सव करवा आवे

अर्थः–ति० त्रण दु० दुखे ओसिंगण थाय स० हे श्रमण आ० आयुपमन तं० ते ज० कहेछे अ० माता पि० पितानो ओसिगण न थाय भ० भरणपोपण करे ते शेठ स्वामीनो ध० धर्मना दातारनो ॥१॥

२५ पेरा (अरिहंत भगवान धर्माचार्य तथा महा उपकारी होवाथी अने तेमना उपकारनो वदलो वाळी शकाय तेम नही होवाथी भगवाननी पुजा विगेरे अर्थे देवो अत्रे आवेछे)

तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो । तं जहा । अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स ॥ १ ॥

भावार्थः–भगवंत कहे छे ते श्रमण आयुष्यन त्रण जणाना उपकारनो वदलो मुस्केल थी वाळी शकाय ! ते कहे छे माता पीतानो १, भरण पोपण करे ते (मालीक) स्वामीनो २, जेणे धर्म पमाडेल होय ते धर्माचार्यनो ३ ॥१॥

अर्थः–सं० नित्य प्रभाते त्रि० य० णं० वळी के० कोड कुळवंत पु० पुरुप अ० माता पि० पितानेस० सो ओपधे पा० पाकुं स० हजार ओपधे पा० पाकुं ते० तेले करी अ० मर्दन करे सु० सुरभि ग० गन्ध उ० उगटणु करे चोळावीने ति० त्रण उ० पाणीए म० नवरावीने स० सर्व अ० अलंकार वि० सोभित क० करीने म० मनोज्ञ था० हांडलीए पा० नीपनुं

सु० शुद्ध काचुं दाझेल नही अ० अढार जातिना व० शाक तेणे आ० सहित भो० भोजन भो० जमाडीने जा० जावजीव सुधी पि० वांसे व० उपाडीने प० चाले एटला वाना करे ते० तोहि अ० पण त० ते पुत्र अ० माता पि०पितानो दु०ओसिंगण न भ०थाय॥२॥

संपाओ वि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भङ्गेत्ता सुरभिणा गन्धट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवञ्जणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडिंसियाए परिवहेज्जा; तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ ॥ २ ॥

भावार्थः–(हवे केटलुं करता छतां पण ओसिंगण थाय नहीं ते कहे छे) कोइ कुळपुरुष नित्य प्रभाते माता पीताने शतपाक ते (सो औषध मेळवी तेल काढेलुं होय ते) सहस्र पाक (ते हजार औषध मेळवी तेल काढेलुं होय ते) तेले करी मर्दन करी सुगंध उश्न शितळ (ताढा) पाणीए स्नान करावी पछी बावना चंदन सुगंध पवित्र पाणीमां घसी शरिरे विलेपन करे पछी सर्व अलंकार आभ्रणे करी विभुषा (शोभा) वंत शरिर करे, बहु मुल्य देवदुष्य वस्त्र पहेरावे इत्यादी भक्ति भाव सहित करीने पछी मनोज्ञ (मनने गमतुं) मनोहर हांडलीमां पाकेलुं शुद्ध नीपजेलुं पण दाझेलुं नहीं तेम काचुं नहीं एहवुं अढार जातिना व्यंजने (शाक) करी सहीत भोजन जमाडीने जावजीव लगे वांसे (खभे)उपाडी चाले एटलां वानां करे तो पण ते पुत्र माता पितानो ओसिंगण न थाय एम श्री भगवंते कह्युं ॥ २ ॥

अर्थः–अ० हवे णं० वळी से० ते पुत्र तं० ते अ० माता पि० पिताने के० केवलिनो प० भाष्यो ध०धर्म आ० कहीने प० समजाविने प० भेद भेदांतर कहीने ठा० धर्मने विषे स्थापीने भ० थाय ते० ते धर्मनी करणीए त० ते अ० माता पि० पितानो सु० ओसिंगण भ० थाय॥३॥

अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुपडियारं भवइ ॥३॥

भावार्थः–(ते वारे शिष्य पुछतो हवो हे प्रभु ? ते पुत्र माता पितानां गुणनो ओसिंगण कीरीते थाय ? त्यारे प्रभु उत्तर कहता हवा के हे शिष्य !) हवे जो ते पुत्र माता पीताने कदापी केवलीनो भाष्यो धर्म कहे समजावे समझावीने परुपीने भेद भेदांतर कहीने धर्ममां स्थापी धर्ममां स्थिर करी धर्म करावे तो तेणे करी ते पुत्र माता पितानो ओसिंगण थाय, ए प्रथम प्रकार कह्यो १ ॥ ३ ॥

अर्थः–स० हेश्रमण आ० आउखावंत के० कोइक म० मोटो धनवंत द० दरिद्रीने स० उत्कृष्टो करे धन आपीने त० ते वार णं० पछी से० ते द० दरिद्री स० धने उत्कृष्टो स० थयो थको प० पछी पु० धन पाम्या केडे च० णं० वळी वि० घणा भो० भोगने स० समुदाए करी स० सहित थको या० ते वि० विचरे त० तेवार णं० पछी से० ते म० स्वामी शेठ अ० एकदा क० समये द० दरिद्री हु० थयो स० थको त० ते धनवंत थयो छे ते द० दरिद्रीने अ० पासे ह० शिघ्र आ० आवे त० ते णं० वारे से० ते द्र० दरिद्री ते० ते भ० स्वामीने स० सघळो द्रव्य अ०

पण द० देतो थको एटले पोते कांइ न रापतो थको ते० ते स्वामीने अ० वळी त० तेनो दु० ओसिंगण भ० थाय (नहीं)–॥४॥

समणाउसो केइ महच्चे दरिदं समुक्कसेज्जा तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमिइसमन्नागए यावि विहरेज्जा, तए णं से महच्चे अन्नया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अन्तियं हव्वमागच्छेज्जा, तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवइ ॥ ४ ॥

भावार्थः–हवे बीजो अधिकार कहेछे, भगवंत कहेता हवा के हे श्रमण आयुष्मन, कोइक म्होटो द्रव्यवंत पुरुष होय तेणे कोइक दरिद्री पुरुपने द्रव्य दइने उत्कृष्टो धनवंत करे ने दरिद्री पुरुपने द्रव्य करी उत्कृष्टो कीधा पछी ते पूर्व काले धन पाम्याथी घणा भोगने समुदाए करीने विचरे रहे, तेवार पछी ते म्होटा स्वामी जेणे दरिद्रीने धन दइने धनवान कीधो हतो ते शेठ एकदा समए दुष्ट कर्मना योगे दरिद्री थयो. धन रहित थयो तेवारे ते निर्धन थइ ते पोताना करेला धनवाननी पासे आवे तेवारे ते दरिद्री ते स्वामीने सघळुं द्रव्य आपे पाते कांइ नराखे तोपण ते दरिद्री ते स्वामीनो ओसिंगण न थाय ॥ ४ ॥

अर्थः–अ० हवे णं० जो से० ते तं० ते दरिद्री भ० शेठने के० केवळीनो प० भाख्यो ध० धर्म आ० ते आगल कहीने प० भेद करीने समजाविने प० परूपिने ठा० धर्मनेविषे स्थापनो भ० थको ते० तेणे ए० करी त०ते भ० स्वामीनो सु० ओसिंगण भ० थाय॥५॥

अहे णं से तं भट्टिं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ; तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुपडियारं भवइ ॥ ५ ॥

भावार्थः–(ते वारे शिष्य पुछतो हवो के हे प्रभु तो ते शीरीते ओसिंगण थाय ? ते वारे प्रभु कहेता हवाके हे शिष्य) ते दरिद्री पोताना स्वामीनी पासे केवळी परुप्यो धर्म कहे, प्रज्ञाए करी समजावीने धर्मने विषे स्थापे, द्रढ करी धर्म करावे एटले धर्म पमाडे तो तेणे करी ते स्वामिनो ओसिंगण थाय, ए बीजो प्रकार कह्यो ॥ ५ ॥

अर्थः–के० कोइक त० तथा रू० रुप पुरुष स० साधु वा० अथवा मा० कोईने हणतो नथी तेहने वा० वळी अ० पासे ए० एक अ० पण आ० आर्याने ध० धर्मनुं सु० भलुं व० वचन सो० सांभळीने नि० हृदए धारीने का० आउखु पुर्ण थके का० काळ कि० करीने अ० कोइक दे० देव लो० लोकनेविषे दे० देवतापणे उ० उपजे त० ते णं० वारे से० ते दे० देवता तं० ते ध० धर्माचार्य प्रत्ये दु० दुष्कालना वा० वळी दे० देशमांथी सु० सुगाल दे० देशमां सा० मुके कं० अटवीमांथी वा० वळी नि० वसतीमां क० मुके दी० घणा का० काळना वा० वळी रो० रोगनी पीडाए करीने अ० पराभव्यो छे ते रोग प्रति वि० मुकवे ते० एटले अ० प्रकारे त० ते ध० धर्मना आ० आपनारने दु० ओसिंगण भ० न थाय तो केम थाय ॥ ६ ॥

केइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अन्तियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म का-

लमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा कन्ताराओ वा निक्कन्तारं करेज्जा दीहकालिएणं वा रोगायङ्केणं अभिभूयं विमोएज्जा; तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ ॥ ६ ॥

भावार्थः-हवे त्रीजो धर्माचार्यनो प्रकार कहे छे, कोइक पुरुष तथारुप महोटा श्रमण साधु माहनने पासे एक पण आर्य निष्पाप ते जीव दयामय धर्मनां शुभ वचन प्रत्ये सांभळीने सम्यक प्रकारे धर्म करी आयुष्य पुर्णकरी काळ करीने अनेरा कोइक देवलोकने विषे देवता पणे उपजे ते वारे ते धर्माचार्यने दुर्भिक्ष दोहिली भीक्षा छे जे देशमां एटले दुकाळमांथी जीहां सुभिक्ष ते सुकाळ होय सोहीली भीक्षा-लाभे ते देशमां आणी मुके अथवा अटवीमां भुला पड्या होय तिहांथी वस्तीमां आणीमुके अथवा घणा काळनो रोग होय ते रोगनी पीडाथी पराभव्यो होय तेवारे देवशक्तिये करी ते रोगथी मुकावे तो पण ते धर्माचार्यनो धर्मना आपनारनो ओसींगण थाय नहीं ॥ ६ ॥

अर्थः-अ० हवे णं० जो से० ते देवता ते० ते ध० धर्माचार्यने के० केवली प० भाषीत ध० धर्मथकी भ० पड्यो स० थको ते प्रते भु० फरीने त्रि० वळी के० केवळी प० भाषीत ध० धर्म आ०समजावीने जा०यावत ठा०(धर्ममांही) स्थापतो भ० थको ते० तेणे ए० करी त० ते ध० धर्माचार्यनो मु०ओसिंगण भ० थाय ॥७॥

अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जो वि केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ; तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुपडियारं भवइ ॥ ७ ॥

भावार्थः-[ते वारे शिष्य पुछतो हवो के हे प्रभु त्यारे ते धर्माचार्यनो ओशींगण शी-रीते थाय ? ते वारे प्रभु कहेता हवा के हे शिष्य ?] जो कदापि ते धर्माचार्य केवळी भाषीत धर्मथी पड्या होय, भ्रष्ट थया होय तेहने फरी केवळी भाषित धर्म हेतु युक्तिये करी समझावी पाछो धर्ममां स्थापे [जेम अषाढाचार्यने देवता थयेला चेलाए समझावी करी धर्ममां स्थीर कर्या तेहनी पेर तथा तेतली प्रधानने जेम पोटीलोए प्रतिबोध्या तेहनी पेरे] तो ते धर्माचार्यनो ओसींगण थाय, ए सिवाय बीजी रीते थाय नहीं ३, ए त्रण भेद छे॥७॥

अर्थः-ति० त्रण ठा० स्थानके सं० सहीत अ० साधु अ० (जे संसारनो) अंत नथी अ० जेहनी आदी नथी दी० मोटो म० मार्ग छे जेहनो चा० चारगतिरुप सं० संसार कं० अटवीने प्रते वी० अतिक्रमे तं० ते ज० कहे छे अ० (रुद्धीयादीकनुं) न करीने णि०नियाणुं दि० समकीत सं० सहीतपणे जो० जोग वा० वेहवे (श्रुत समाधी राषवे)

२६ (संसारमांथी तरवाने धर्मना त्रण स्थान उतारी बतावे छे)

तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरन्तसंसारकन्तारं वीतीवएज्जा । तं जहा । अणियाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए जोगवाहियाए ॥

भावार्थः-हवे संसार तरवाना भेद कहे छे, त्रण स्थानके सहीत अणगार साधु, ते जेहनी आदी नथी, जेहनो अंत नथी, जेहनो लांबो

म्होटो मार्ग छे एहवीचार गती संसार रुपणी अटवी अतिक्रमे (ओलंघी जाय) पार पामे ते त्रण स्थानक कहे छे, धर्म करी रुद्धि प्रमुखनुं नियाणुं न करे १, समकित सहित पणे २, योग उपध्यान तप करे, श्रुत समाधी राखे एहवा साधु होय ते संसारनो पार पामे ३, ए त्रण भेद छे,

अर्थः–ति० त्रणभेद ओ० अवसर्पिणी पं० कही तं० ते ज० कहेछे उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जधन्य ॥ १ ॥

पेरा २७ (जुदा जुदा प्रकारनां काळ १४ सूत्रथी कहे छे)

तिविहा ओसप्पिणी पन्नत्ता। तं जहा। उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥ १ ॥

भावार्थः–संसार तरवो ते भवस्थीति काळ पुर्ण थयेल होय तो तेथी तराय ते माटे काळ विशेषनुं स्वरुप कहे छे, त्रण प्रकारे अवसर्पिणी काळ कहेल छे ते कहे छे, उत्कृष्ट १, मध्यम २, जघन्य ३ ॥ १ ॥

अर्थः–ए० एम छ० छ प्पि० य० वळी स० आराओ भा० जाणवा जा० ज्यां लगे दू० दुखमां दू० दुख (२–७) ॥ २ ॥

एवं छ प्पि य समाओ भाणियवाओ जाव दूसमदूसमा॥[२-७] ॥२॥

भावार्थः–एवीरीते छए आरा पडता पडता जाणवा, पहेलो आरो सुखम सुखमा ते उत्त-कृष्टो ओसर्पिणी काळ १, बीजा आराथी चोथा आरासुधी मध्यम २, पांचमो, छठो आरो ते जघन्य ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः–ति० त्रण उ० उत्सर्पिणी पं० कही तं० ते ज० कहे छे उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ८ ॥ ३ ॥

तिविहा उस्सप्पिणी पन्नत्ता । तं जहा । उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥ [८]॥ ३ ॥

भावार्थः–एम त्रण प्रकारे उत्सर्पिणी काळ कहेल छे ते कहे छे, उत्कृष्ट १, मध्यम २, जघन्य ३ ॥ ३ ॥

अर्थः–ए० एम छ० छ प्पि० य० वळी स० आरा भा० जाणवा जा० ज्यां लगे सु० सुषमा सु० सुष (९–१४) ॥ ४ ॥

एवं छ प्पि य समाओ भाणियवाओ जाव सुसमसुसमा [९-१४] ॥४॥

भावार्थः–एम छए आरा चढता चढता जाणवा, पेहेलो बीजो आरो जघन्य १, त्रीजो, चोथो, पांचमो मध्यम २, सुखमा सुखमा छठो आरो ते उत्कृष्टो काळ जाणवो ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः–ति० त्रण ठा० स्थानके अ० अण-छेद्यो पो० पुदगल (पोताना मेळे) च० चळे तं० ते ज० कहे छे आ० आहार लेता (जीवताणी ले) वा० वळी पो० पुदगल च० चळे वि० विक्रीयरुप करता वा० वळी पो० पुदगळ च० चळे ठा० एक स्थानकथी ठा० बीजे स्थानके सं० संक्रामता वा० वळी पो० पुदगण च० चळे ॥ १ ॥

२८ पेरा (अचेतन द्रव्यना धर्मना समान-पणाथी पुदगळ धर्म पांच सुत्रथी कहेछे)

तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा। तं जहा । आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ठाणाओ ठाणं संकामेज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ॥१॥

भावार्थः–काळ ते अचेत कह्यो, तेहनां सर-खाइपणामाटे पुदगळ धर्म कहे छे, त्रण प्रकारे

खड्गादीके अणछेद्यो पोतानी मेले समुदाय मांहीथी पुदगळ चळे ते कहे छे, जीव आहार पणे लेते स्वस्थानकथी पुदगळ चळे ते जीव ताणीले १, देवता मनुष्य वेक्रेय करे, पुदगळ ताणे ते वारे चळे, केमके वैक्रेयने वशवर्ति पुदगळ छे ते माटे २, एक स्थानकथी बीजे स्थानके संक्रम ते हस्तादीके करी मुक्तां थकां घणां होय ते मांहीथी पुदगळ चळे ३, ए त्रण भेदछे॥१॥

अर्थः–ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं०कही तं० ते ज० कहे छे क० आठ कर्म उ० उपधी स० पांच शरीरनी उ० उपधी बा० बाह्य (परिग्रह) भं० पात्रां म० माटी प्रमुखनी उ० उपधी ए० एम अ० असुर कुमारने भा० जाणवुं (एटले तेनेपण त्रण उपधी होय) ए० एम ए० एकेन्द्री ने० नारकी व० वरजीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीकने त्रण उपधी होय ॥२॥

तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभण्डमत्तोवही । एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः–पुदगळ ते उपधी ग्रहण रुप परिग्रह छे ते उपधीनुं स्वरुप त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्मोपधी ते आठ कर्म १, शरिर उपधी ते उदारिकादीक पांच प्रकारे २, बाहीर उपधी ते माटीनां कांसांनां पात्रादिक अथवा वस्त्र भरणादिक उपधी ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, एम एकेंद्री अने नारकी वर्जि एहने भांडादी उपधी नथी, बे इन्द्रीयथी मांडी वैमानीक सुधी त्रण प्रकारे उपधी जाणवी तेमांही एटलो विशेष जे कोइक बेइंद्रीयादीकने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, ॥ २ ॥

अर्थः–अथवा ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं० कही तं० ते ज० कहेछे स० सचित (पाषाणादीक) अ० अचित (वस्त्रादीक) मी० मिश्र (शरीरादीक) ए० एम ने० नारकीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ३ ॥

अहवा तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः–वळी त्रण प्रकारे उपधी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त उपधी १, अचित्त ते वस्त्रादीक उपधी २, मिश्र ते सचित्ताचित्त उपधी ३, ए त्रण प्रकारनी उपधी आंतरा रहीत वैमानीक चौवीस दंडके होय ॥ ३ ॥

अर्थः–ति०त्रण भेदे प० परिग्रह पं० कह्या तं० तेज० कहे छे क० आठकर्मनो प० परिग्रह स० सरीरनो प० परिग्रह बा० बाह्य भं० भांड म० पात्रादीक प० परिग्रह (वस्त्रादिक) ए० एम अ० असुरकुमारनो परिग्रह जाणवो ए० एम ए० एकेन्द्रीने ने० नारकी व० वर्जीने (एकेन्द्रीने नारकीने भांडादी नथी) जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ४ ॥

तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते । तं जहा । कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभण्डमत्तपरिग्गहे । एवंअसुरकुमाराणं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः–त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहे छे, कर्म परिग्रह ते आठ प्रकारे १, शरिर परिग्रह ते पांच प्रकारे २, बाहीर भांड पात्र वस्त्र आभरणादीकनो परिग्रह ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो, एम एकेंद्री अने नारकी वर्जि

बे इंद्रीयथी मांडी वैमानीक सुधी त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो ॥ ४ ॥

अर्थः-अ० अथवा ति० त्रण भेदे प० परिग्रह पं०कह्यो तं० ते ज०कहेछे स०सचित अ०अचित मी० मिश्र ए० एम ने० नारकीने नि० बीजो एसर्वेने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ५ ॥

अहवा तिविहे परिग्गहे पन्नते। तं जहा। सचित्ते अचित्ते मीसए। एवं नेरइयाणं निरन्तरं जाव वेमाणिया णं ॥ ५ ॥

भावार्थः-अथवा वळी त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहेछे, सचित परिग्रह १, अचित्त वस्त्राभरणादी परिग्रह २, मिश्र सचित्ताचित्त परिग्रह ३, ए त्रण प्रकारनो परिग्रह आंतरा रहीत वैमानिक सुधी चोवीस दंडके होय ॥५॥

अर्थः-ति०त्रण भेदे प० एकाग्रपणुं करवुं ते पं० कह्युं तं० तेज० कहे छे म० मननुं प० एकाग्रपणुं व० वचननुं प० एकाग्रपणुं का० कायानुं प० एकाग्रपणुं (कायाए पाप नकरे ए० एम पं० पंचेन्द्रीने होय जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक त्यांलगे (एकेन्द्रीने पूरी ३ नहोय) ॥१॥

२९ पेरा (जीवधर्मनुं त्रिविधपणुं कहेछे)

तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणप्पणिहाणे वइप्पणिहाणे कायप्पणिहाणे। एवं पञ्चिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥

भावार्थः-त्रण प्रकारे प्रणिधान ते मन प्रमुखनुं एकाग्रपणुं करवुं कहेल छे ते कहे छे, मन प्रणिधान ते मननुं एकाग्र पणुं १, वचन प्रणिधान ते वचननुं एकाग्रपणुं २, काय प्रणिधान ते कायानुं एकाग्रपणुं ३, एम वैमानीक सुधी चौवीस दंडक मांही जेटला संज्ञी पंचेद्री होय तेहने ए त्रणे प्रकारनुं प्रणिधान होय (एकेंद्री, त्रण विगलेंद्री, असंज्ञी पचेंद्रीने त्रण पुरां प्रणिधान न होय, तेहथी इंहा संज्ञी पचेंद्रीनेज त्रण प्रणिधान कहेल छे) ॥ १ ॥

अर्थः-ति० त्रण भेदे सु० सुभ प० प्रणीधान प० कह्या तं० ते ज० कहे छे म० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० सुभ प० प्रणीधान का० काय सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ २ ॥

(प्रणिधान शुभ अने अशुभ एम बे भेदछे)

तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥ २ ॥

भावार्थः-त्रण प्रकारे शुभ प्रणिधान कहेल छे ते कहे छे, मनसुप्रणीधान ते भलुं धर्ममां मननुं एकाग्रपणु १, वचनसुप्रणीधान ते सत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, कायसुप्रणीधान ते कायाए पाप नकरे अने धर्ममां प्रवर्तावना एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे ॥२॥

अर्थः-सं० संजमवंत म० मनुष्यने (साधुने) ति० त्रण भेदे सु० शुभ प० प्रणीधान पं० कह्या तं० ते ज० कहेछे म० मन सु०शुभ प० पणीधान व० वचन सु० शुभ प०प्रणीधान का० काया सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ ३ ॥

संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥३॥

खडगादीके अणछेद्यो पोतानी मेले समुदाय मांहीथी पुदगळ चले ते कहे छे, जीव आहार पणे लेते स्वस्थानकथी पुदगळ चले ते जीव ताणीले १, देवता मनुष्य वेक्रेय करे, पुदगळ ताणे ते वारे चळे, केमके वैक्रेयने वशवर्ति पुदगळ छे ते माटे २, एक स्थानकथी बीजे स्थानके संक्रम ते हस्तादीके करी मुक्तां थकां घणां होय ते मांहीथी पुदगळ चले ३, ए त्रण भेदछे॥१॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं०कही तं० ते ज० कहे छे क० आठ कर्म उ० उपधी स० पांच शरीरनी उ० उपधी वा० बाह्य (परिग्रह) भं० पात्रा म० माटी प्रमुखनी उ० उपधी ए० एम अ० असुर कुमारने भा० जाणवुं (एटले तेनेपण त्रण उपधी होय) ए० एम ए० एकेन्द्री ने० नारकी व० वरजीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीकने त्रण उपधी होय ॥२॥

तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभण्डमत्तोवही । एवं असुरकुमाराणं भाणियवं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः—पुदगळ ते उपधी ग्रहण रुप परिग्रह छे ते उपधीनुं स्वरुप त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्मोपधी ते आठ कर्म १, शरिर उपधी ते उदारिकादीक पांच प्रकारे २, बाहीर उपधी ते माटीनां कांसांनां पात्रादिक अथवा वस्त्रा भरणादिक उपधी ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, एम एकेंद्री अने नारकी वर्जि एहने भांडादी उपधी नथी, बे इन्द्रीयथी मांडी वमानीक सुधी त्रण प्रकारे उपधी जाणवी तेमांही एटलो विशेष जे कोइक बेइंद्रीयादीकने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, ॥ २ ॥

अर्थः—अथवा ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं० कही तं० ते ज० कहेछे स० सचित (पाषाणादीक) अ० अचित (वस्त्रादीक) मी० मिश्र (शरीरादीक) ए० एम ने० नारकीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ३ ॥

अहवा तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे उपधी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त उपधी १, अचित्त ते वस्त्रादीक उपधी २, मिश्र ते सचित्ताचित्त उपधी ३, ए त्रण प्रकारनी उपधी आंतरा रहीत वैमानीक चौवीस दंडके होय ॥ ३ ॥

अर्थः—ति०त्रण भेदे प० परिग्रह पं० कह्या तं० तेज० कहे छे क० आठकर्मनो प० परिग्रह स० सरीरनो प० परिग्रह बा० बाह्य भं० भांड म० पात्रादीक प० परिग्रह (वस्त्रादिक) ए० एम अ० असुरकुमारनो परिग्रह जाणवो ए० एम ए० एकेन्द्रीने ने० नारकी व० वर्जीने (एकेन्द्रीने नारकीने भांडादी नथी) जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ४ ॥

तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते । तं जहा । कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभण्डमत्तपरिग्गहे । एवंअसुरकुमाराणं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहे छे, कर्म परिग्रह ते आठ प्रकारे १, शरिर परिग्रह ते पांच प्रकारे २, बाहीर भांड पात्र वस्त्र आभरणादीकनो परिग्रह ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो, एम एकेंद्री अने नारकी वर्जि

बे इंद्रीयथी मांडी वैमानीक सुधी त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० अथवा ति० त्रण भेदे प० परिग्रह पं०कह्यो तं० ते ज०कहेछे स०सचित अ०अचित मी० मिश्र ए० एम ने० नारकीने नि० बीजो एसर्वेने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ५ ॥

अहवा तिविहे परिग्गहे पन्नते। तं जहा। सचित्ते अचित्ते मीसए। एवं नेरइयाणं निरन्तरं जाव वेमाणिया णं ॥ ५ ॥

भावार्थः—अथवा वळी त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहेछे, सचित परिग्रह १, अचित्त वस्त्राभरणादी परिग्रह २, मिश्र सचित्ताचित्त परिग्रह ३, ए त्रण प्रकारनो परिग्रह आंतरा रहीत वैमानिक सुधी चोवीस दंडके होय ॥५॥

अर्थः—ति०त्रण भेदे प० एकाग्रपणुं करवुं ते पं० कह्युं तं० तेज० कहे छे म० मननुं प० एकाग्रपणुं व० वचननुं प० एकाग्रपणुं का० कायानुं प० एकाग्रपणुं (कायाए पाप नकरे ए० एम पं० पंचेन्द्रीने होय जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक त्यांलगे (एकेन्द्रीने पूरी ३ नहोय) ॥१॥

२९ पेरा (जीवधर्मनुं त्रिविधपणुं कहेछे)

तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणप्पणिहाणे वइप्पणिहाणे कायप्पणिहाणे। एवं पञ्चिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे प्रणिधान ते मन प्रमुखनुं एकाग्रपणुं करवुं कहेल छे ते कहे छे, मन प्रणिधान ते मननुं एकाग्र पणुं १, वचन प्रणिधान ते वचननुं एकाग्रपणुं २, काय प्रणिधान ते कायानुं एकाग्रपणुं ३, एम वैमानीक सुधी चौवीस दंडक मांही जेटला संज्ञी पंचेंद्री होय तेहने ए त्रणे प्रकारनुं प्रणिधान होय (एकेंद्री, त्रण विगलेंद्री, असंज्ञी पचेंद्रीने त्रण पुरां प्रणिधान न होय, तेहथी इंहा संज्ञी पचेंद्रीनेज त्रण प्रणिधान कहेल छे) ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे सु० सुभ प० प्रणीधान प० कह्या तं० ते ज० कहे छे म० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० सुभ प० प्रणीधान का० काय सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ २ ॥

(प्रणिधान शुभ अने अशुभ एम बे भेदछे)

तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥ २ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे शुभ प्रणिधान कहेल छे ते कहे छे, मनसुप्रणीधान ते भलुं धर्ममां मननुं एकाग्रपणुं १, वचनसुप्रणीधान ते सत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, कायसुप्रणीधान ते कायाए पाप नकरे अने धर्ममां प्रवर्तावना एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे ॥२॥

अर्थः—सं० संजमवंत म० मनुष्यने (साधुने) ति० त्रण भेदे सु० शुभ प० प्रणीधान पं० कह्या तं० ते ज० कहेछे म० मन सु०शुभ प० पणीधान व० वचन सु० शुभ प०प्रणीधान का० काया सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ ३ ॥

संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते। तं जहा। मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे

भावार्थः—संयमवंत मनुष्य ते साधुने त्रण प्रकारे सुप्रणीधान कहेल छे ते कहे छे, मनसु प्रणीधान १, वचन सुप्रणीधान २, कायसु प्रणीधान ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे दु० माठुं प० प्रणीधान पं० कह्युं तं० ते ज० कहे छे म० मन दु० माठुं प० प्रणीधान व० वचन दु० माठुं (असत्य) प० प्रणीधान का० काया दु०माठुं (पाप करे ते) प० प्रणीधान ए० एम प० पचेन्द्रिने जा० ज्यां लगे वे०वैमानीकने ॥४॥

तिविहे दुप्पणिहाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे । एवं पञ्चिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे दुष्ट प्रणीधान कहेल छे ते कहे छे, मनदुष्ट प्रणीधान ते मन पापमां प्रवर्तावबामां एकाग्रपणुं १, वचन दुष्ट प्रणीधान ते असत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, काय दुष्ट प्रणीधान ते कायाए पाप करवामां एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे, वैमानीक सुधी चोविस दंडक मांही जेटला संज्ञी पचेंद्री जीव होय तेटलानेज ए त्रण प्रकारनां दुष्ट प्रणीधान होय, (एकेंद्री त्रण विगलेंद्री असंज्ञी पचेंद्रीने मननथी तेथी इहां गणेल नथी) ॥४॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे जो० योनी पं०कही तं० ते ज० कहे छे सी० टाढी उ० उनी सी० मिश्र योनी ए० एम ए० एकेन्द्रिने वि० बेन्द्रियादीकने ते० तेउ कायने व० वर्जीने (तेउकायने १ उष्ण योनी होय) सं० समुर्छिम पं० पंचेंद्री ति० तिर्यंच जो० योनियाने सं० समुर्छिम म० मनुष्यने य० संचये ॥ १ ॥

३० पेरा (योनी स्वरुप कहे छे)

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । सीया उसिणा सीयोसिणा । एवं एगिन्दियाणं विगलिन्दियाणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य ॥ १ ॥

भावार्थः—जीवनो अधिकार माटे त्रण प्रकारे योनी (जीवने उत्पन्न थवानुं स्थानक) शित (टाढी) योनी १, उस्न (उनी) योनी २, सितोस्न (काईक टाढी काईक उनी) योनी ३, ए त्रण भेद छे, अग्निने उस्न योनि, बीजा चार स्थावर, त्रण विगलेंद्री, नारकी, समुर्छिम तिर्यंच पचेंद्री, समुर्छिम मनुष्य पचेंद्री, एटलाने त्रण योनी, सर्व देवता, गर्भज तिर्यंच पचेंद्री, गर्भज मनुष्य पचेंद्रीने एक शितोस्न योनी जाणवी ॥१॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहेछे स० सचित अ० अचित मी० मिश्र ए० एम ए० एकेंद्रीने वि० विगलेंद्रीने सं० समुर्छित पं० पचेन्द्रीने ति० तिर्यंच जो० योनीयाने सं० समुर्छित म० मनुष्यने य० वळी (नारकीने अचित होय, गर्भजने मिश्रयोनी होय) ॥ २ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ता अचित्ता मीसिया । एवं एगिन्दियाणं विगलिन्दियाणं संमुच्छिमपञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य ॥ २ ॥

भावार्थः—बीजी पण त्रण योनी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त (जीव सहित) योनी १, अचित्त (जीव रहीत) योनी २, मिश्र (कांइक जीव सहित ने कांइक जीव रहीत) योनी३, ए त्रण भेद छे, एकेंद्री, समुर्छिम तिर्यंच पचेंद्री

समुर्छिम मनुष्य पचेंद्री, एटलाने त्रण योनी होय, देवता नारकीने एक अचित्त योनी होय, गर्भज मनुष्य तिर्यंचने एक मिश्र योनी होय॥२॥

अर्थः-ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहेछे सं० सांकडी वि० मोकळी सं० सांकडी वि० मोकळी ॥ ३ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । संवुडा वियडा संवुडवियडा ॥ ३ ॥

भावार्थः-वळी त्रण प्रकारे योनी कहेल छे ते कहे छे, संवृत योनी ते संकीर्ण सांकडी घडीना घर सरखी १, विवृत योनी ते मोकळी २, संवृत विवृत योनी ते कांइक सांकडी, कांइक मोकळी ३ ए त्रण भेद छे, एकेंद्रीने नारकीने संवृत योनी १, देवताने त्रण विगलेंद्रीने विवृत्त योनी २, गर्भज मनुष्य तिर्यंचने संवृत विवृत्त योनी ३ ॥ ३ ॥

अर्थः-ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहेछे कु० काछवानी माफक उन्नत सं० संपनी माफक आवृत वं० वांसना पत्र सरिपी ॥ ४ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । कुम्मुन्नया सङ्खावत्ता वंसीवत्तिया ॥४॥

भावार्थः-वळी त्रण प्रकारे योनी कहेल छे छे ते कहे छे, कुर्मोनत योनी ते काछवानी पेरे उची १, शंखावर्त योनी ते शंखनी पेरे आवर्त (वळीयां) फरती होय २, वंशी पत्ता योनी ते वांसना पत्र सरखी लांबी होय ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः-कु० काछवा सरीपी णं० वळी जो० योनी उ० उत्तम पु० पुरुषनी मा० माताने कु० कुर्मोन्नत णं० वळी जो० योनीने विषे ति० त्रण प्रकारना उ० उत्तम पु० पुरुष ग० गर्भे व० उपजे तं० ते ज० कहेछे अ० अरिहंत च० चक्रवर्ती व० बलदेव वा० वासुदेव ॥५॥

कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुन्नयाए णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमन्ति। तं जहा । अरहन्ता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ॥ ५ ॥

भावार्थः-कुर्मोन्नत योनी ते उत्तम पुरुषने उपजवानुं स्थानक छे, ए कुर्मोनत योनीने विषे त्रण प्रकारना उत्तम पुरुष गर्भमां उपजे ते कहे छे,अरिहंत १, चक्रवर्ति २, बळदेव वासुदेव ए बे साथे उपजे ते माटे एकठां कह्यां ३॥५॥

अर्थः-सं० संषावत्र णं० वळी जो० योनीनेविषे इ० चक्रवृतीनी पटराणी स्त्री र० रतनने होय सं० संषावत्त णं० वळी जो० योनीने विषे व० घणा जी० जीव य० वळी पो० पुदगल य० वळी व० उपजे वि० विणसे च० चवे उ० उपजे नो० नही चे० निश्चे णं० वळी नि० नीपजे नहीं ॥ ६ ॥

सङ्खावत्ता णं जोणी इत्थिरयणस्स । सङ्खावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमन्ति विउक्कमन्ति चयन्ति उववज्जन्ति नो चेव णं निप्फज्जन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः-शंखावर्त योनी चक्रवर्तिनी स्त्री रत्नने होय, ए शंखावर्त योनीने विषे घणा जीव अने जीवने ग्रहवा योग्य पुद्गळ ते जीव पुदगळ घणा उपजे अने विणसे चवे अने उपजे पण निपजे नहि एटले जन्म थाय नहीं ॥६॥

अर्थः-वं० वंसीपत्र णं० वळी जो० योनी पि० सामान्य ज० पुरुषने होय वं० वंसीपत्र णं० वळी जो० योनीने विषे व० घणा पि० सामान्य जन ग० गर्भ व० उपजे ॥ ७ ॥

वंसीवत्तिया णं जोणी पिहज्जण-

स्स। वंसीवत्तियाए णं जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भं वक्कमन्ति ॥ ७ ॥

भावार्थः—वशीपत्र योनी बीजा सामान्य मनुष्यने होय, ए वंशीपत्र योनीने विषे घणा सामान्य मनुष्य गर्भपणे उपजे, ए त्रण योनी मनुष्यने होय ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे त० तृण व० वनस्पती का० काया प० कह्या तं० ते ज० कहेछे सं० संख्यात जी०जीव त्रणयोनी अ०असंख्यात जी० जीव त्रणयोनी अ० अनंत जी० जीवनी

२१ पेरा (पहेला योनिथी मनुष्य कह्या अने बादर वनस्पति कायना अने मनुष्यना समान धर्मछे तेथी बादर वनस्पति काय प्ररुपेछे)

तिविहा तणवणस्सइकाइया पन्नत्ता। तं जहा। संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणन्तजीविया ॥

भावार्थः—मनुष्यनां स्वरुप सरखी बादर तृण वनस्पतिकाय छे ते कहे छे, त्रण प्रकारे वनस्पतिकाय कहेल छे ते कहे छे, संख्यात जीववाळी ते जाइनां फुल प्रमुख १, असंख्यात जीववाळी ते कमळ प्रमुखनो कंद, मुळ, खंध, छालगां असंख्याता जीव होय २, अनंताजीववाळी निल फुल प्रमुख ३, ए त्रण भेद छे.

अर्थः—ज०जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपने विषे भा० भरत वा० क्षेत्रे त० त्रण ति० तिर्थ पं० कह्या तं० ते ज० कहेछे मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास तिर्थ ॥ १ ॥

३२ पेरा (वनस्पतिकाय कह्या ते जलाश्रयमां घणा होयछे ते संबन्धथी जलाश्रय वाळा तीर्थनी परुपणा करेछे)

जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पन्नत्ता। तं जहा। मागहे वरदामे पभासे ॥ १ ॥

भावार्थः—जंबुद्विपना भरतक्षेत्रमां त्रण तिर्थ कहेल छे ते कहे छे मागध १, वरदाम २, प्रभास ३ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ए० एरवते पण त्रि० ए तिर्थ ॥२॥

एवं एरावए वि ॥ २ ॥

भावार्थः—एम एरवत क्षेत्रमां पण त्रण तिर्थ जाणवां ॥ २ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० महाविदेह वा० क्षेत्रे ए० एकेक च० चक्रवर्ती वि० विजयने विषे त० त्रण ति० तिर्थ पं० कह्या तं० ते ज० कहेछे मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास ॥ ३ ॥

जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए तओ तित्था पन्नत्ता। तं जहा। मागहे वरदामे पभासे ॥ ३ ॥

भावार्थः—जंबुद्विपना महाविदेह क्षेत्रमां एक चक्रवर्तिनी विजयमां त्रण तिर्थ कहेल छे ते कहे छे मागध १, वरदाम २, प्रभास ३ ॥३॥

अर्थः—ए० एम धा० धातकीपंड दी० द्वीपे पु० पुर्वदीशे वि० वळी ए त्रण तिर्थ प० पश्चीमदीशे वि० वळी ए त्रण तिर्थ पु० पुश्करवर दी० द्वीपने विषे पु० पुर्वदीसे वि० वळी त्रण तिर्थ प० पश्चीमदीसे वि० वळी त्रण तिर्थ ॥ ४ ॥

एवं धायईखण्डे दीवे पुरत्थिमद्धे वि पच्चत्थिमद्धे वि। पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे वि पच्चत्थिमद्धे वि ॥४॥

भावार्थः—एम धातकीखंड द्विपमां पुर्व दीशाए तथा पश्चिम दीशाए पुर्वोक्त त्रण त्रण तिर्थ जाणवां, एम पुष्करार्धने विषे पुर्वार्धमां तथा पश्चिमार्धमां पण पुर्वोक्त त्रण त्रण तिर्थ जाणवां ॥ ४ ॥

ડૉ. જીવરાજ ઘેલાભાઇએ શ્રી હરમન જેકોબી પાસે સુધરાવી

પ્રગટ કરેલાં પુસ્તકો.

૧.	શ્રી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર	(હાલ શીલીક નથી)
૨.	શ્રી દશવૈકાલીક સૂત્ર	કી. રૂ ૩—૦—૦
૩.	શ્રી બૃહત્ કલ્પ સૂત્ર.	૧—૪—૦
૪.	શ્રી વ્યવહાર સૂત્ર.	૩—૦—૦
૫.	શ્રી ઉપાસક દશાશ્રુત સ્કંધ	૩—૪—૦
૬.	શ્રી ઉત્તરાધ્યયન મૂળ પાઠ	૧—૪—૦
૭	શ્રી દશવૈકાલીક મૂળપાઠ	૦—૮—૦
૮.	શ્રી બૃહતકલ્પ મૂળપાઠ	૦—૮—૦

આ સૂત્રો ઇંગ્રેજી ફૂટનોટવાળા શ્રી હરમન જેકોબી સાહેબે સુધારેલા છે બીજ નકલો રહી છે. તાકીદ મંગાવો.

તે સિવાય

૧.	શ્રી નરચંદ્ર જૈન જ્યોતિષ બીજી આવૃત્તિ ઘણાજ સુધારા વધારા સાથે બહાર પડેલ છે. ... કીંમત	રૂ. ૨—૮—૦
૨.	શ્રી ઉપદેશ સાગર	૨—૦—૦
૩.	શ્રી સુબોધ જૈન સ્તુતિ	૧—૪—૦
૪.	ૐકારનો નકશો	૦—૮—૦
૫.	શ્રી લક્ષ્મીદેવી યંત્રનો નકશો (સમજણ સાથે)	૦—૮—૦

પુસ્તક મંગાવવાનાં ઠેકાણાં:—

૧ ડૉ. જીવરાજ ઘેલાભાઈ દોશી.
હા. સંઘવી મોહનલાલ પ્રાગજી.
નવા દરવાજા—અમદાવાદ.

૨ સંઘવી વાડીલાલ કાકુભાઈ.
સારંગપુર, તળીઆની પોળ—અમદાવાદ.

૩ ત્રીભોવનદાસ રગનાથદાસ શાહ.
આકાશેઠ કુવાની પોળ—અમદાવાદ.

૪ ભાવસાર જમનાદાસ ઈશ્વરદાસ.
વસો. (નડીઆદ.)

આ પુસ્તકનો અંદરનો ભાગ શ્રી પ્રજાહીતાર્થ પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ શાહપુર-અમદાવાદમાં
પટેલ ડાહ્યાભાઇ દલપતરામે છાપ્યો.